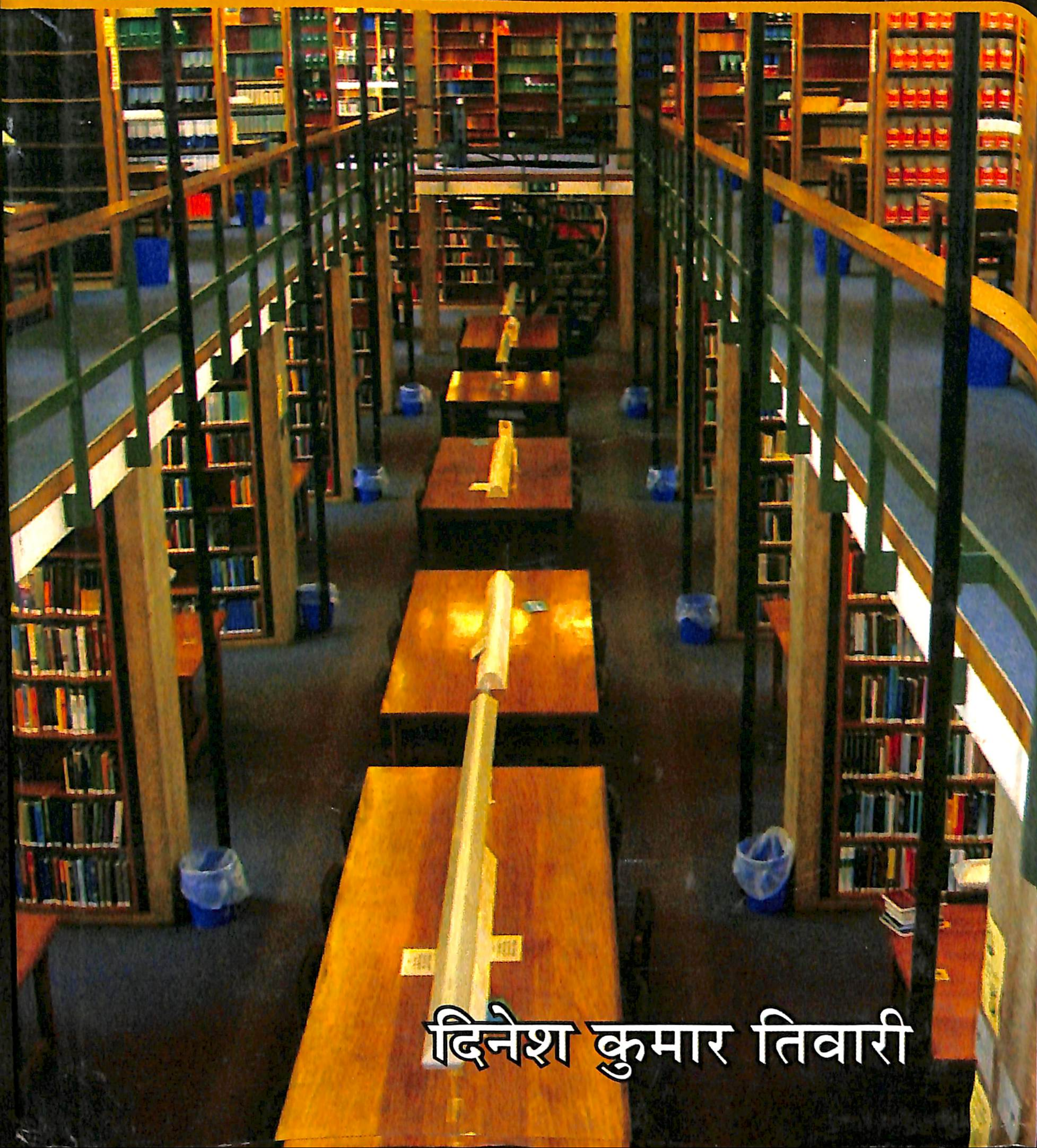
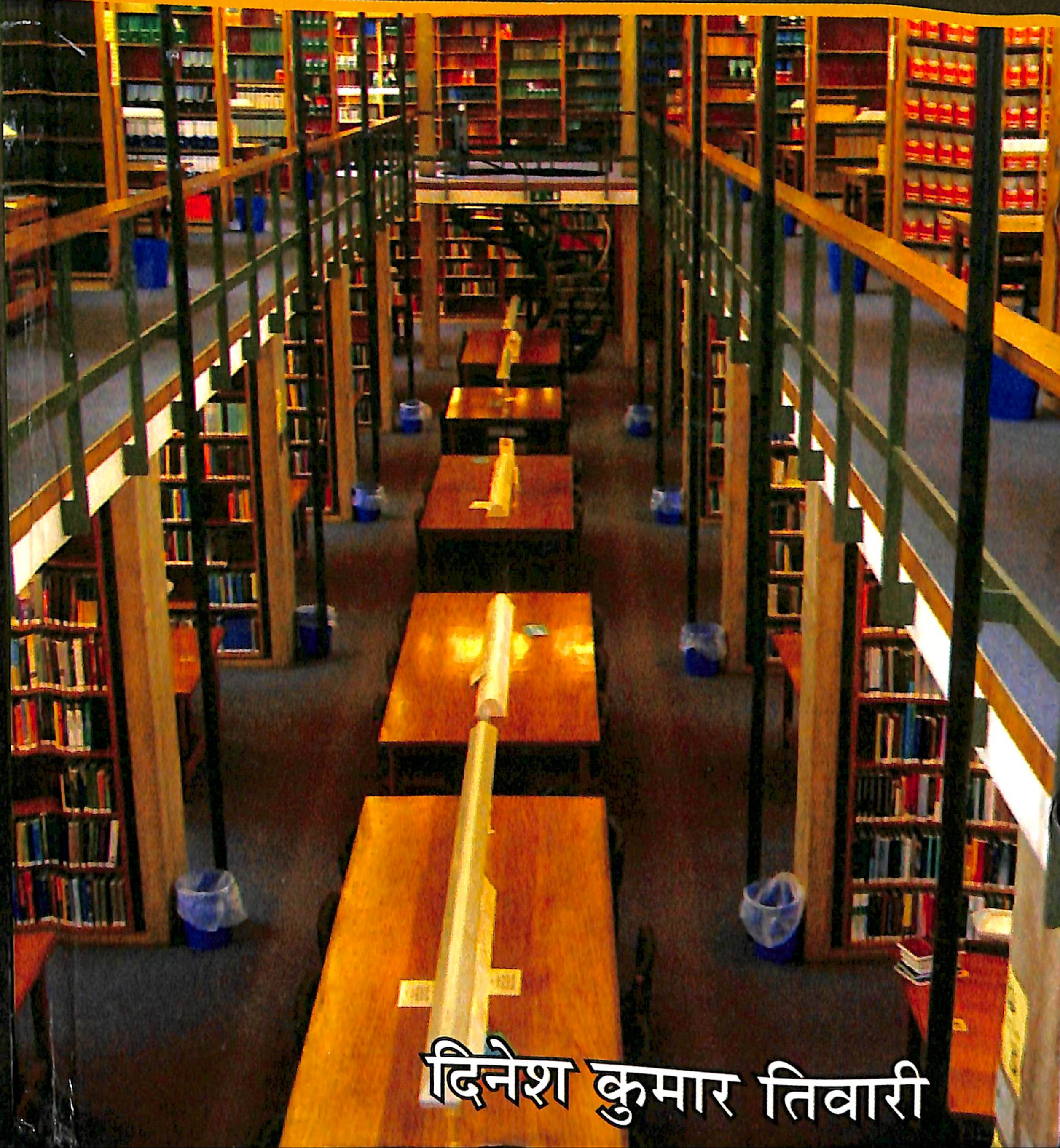
संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख सन्दर्भ एवं सूचना स्त्रोत



दिनेश कुमार तिवारी

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख सन्दर्भ एवं सूचना स्त्रोत



दिनेश कुमार तिवारी

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख सन्दर्भ एवं सूचना स्रोत

(Major Reference and Information Sources of Sanskrit and Oriental Learings)

दिनेश कुमार तिवारी

M.A., MLIS, M. Phil.

सहायक पुस्तकाध्यक्ष,

सं0सं0 वि0वि0, वाराणसी, (उ0प्र0)

2011

कला प्रकाशन

बी. 33/33 ए-1, न्यू साकेत कालोनी,

बी.एच.यू.वाराणसी

प्रकाशक :
कला प्रकाशन
बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,
बी० एच० यू०, वाराणसी-5
दूरभाष : 0542-2310682

प्रस्तुत संस्करण : 2011
ISBN : 978-93-80467-98-6
मूल्य : 600.00 रुपये

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :
कला कम्प्यूटर मीडिया
बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,
बी० एच० यू०, वाराणसी-5
दूरभाष : 0542-2310682

मुद्रक :
महावीर प्रेस
भेलूपुरा, वाराणसी

प्रथम समर्पण

"ॐ"

श्री श्री 108 श्री हरसू ब्रह्मबाबा जी

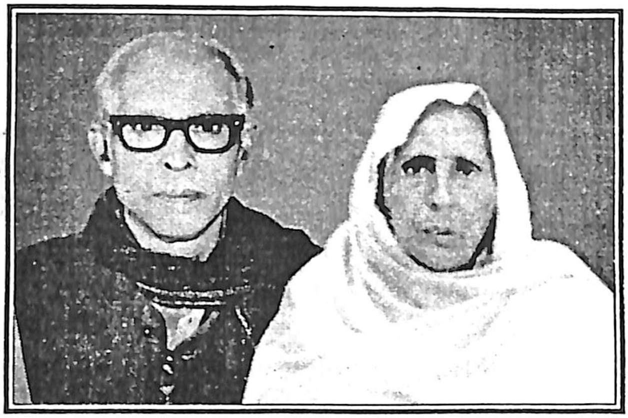
के पावन चरणों में सभक्ति

सादर सम्पर्पित !

द्वितीय समर्पण

"ॐ"

वन्दे पितरौ



पूज्य पिता श्री स्व. वासुदेव तिवारी एवं
श्रद्धामयी माँ स्व. श्रीमती रामसखी देवी के
स्तुत्य पावन चरणों में
सादर समर्पित ।

दिनेश कुमार तिवारी

भूमिका

प्रस्तुत ग्रन्थ "संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख सन्दर्भ एवं सूचना स्रोत (Major Reference and Information Sources of Sanskrit and Oriental Learnings) की विशेषता यह है कि इस कृति में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या की प्रायः सभी शाखाओं में योगदान करने वाले सन्दर्भ ग्रन्थ एवं महत्वपूर्ण सूचना स्रोतों को संकलित करके उनमें निहित सूचना सामग्रियों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है । इस प्रकार भारतीय विद्या के क्षेत्र में यह ग्रन्थ एक महत्वपूर्ण कृति है जिसमें वैदिक काल से लेकर अद्यतन संस्कृत साहित्य तथा प्राच्य भारतीय विद्या में जितने भी प्रकार के सन्दर्भ एवं महत्वपूर्ण सूचना स्रोतों के प्रकाशन हुए हैं, उनमें से अधिकांश को इसमें संकलित किया गया है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में कुल बारह अध्यायों के अधीन उपलब्ध सन्दर्भ एवं सूचना सामग्रियों का सविस्तार व्याख्या की गयी है । जैसे इसके प्रथम अध्याय में संस्कृत वाङ्मय एवं सन्दर्भ ग्रन्थ एक संक्षिप्त परिचय, द्वितीय अध्याय में सन्दर्भ एवं सूचना स्रोत, तृतीय अध्याय में "शब्दकोश' "चतुर्थ अध्याय में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख विश्वकोश, पंचम अध्याय में "संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख सुभाषित संग्रह, षष्ट अध्याय में "प्रमुख वाङ्मय सूची", सप्तम अध्याय में "महत्वपूर्ण जीवनी स्रोत," अष्टम अध्याय में "महत्वपूर्ण भौगोलिक स्रोत," नवम अध्याय में, "महत्वपूर्ण शासकीय प्रकाशन" एवं शोध पत्रिकाएँ, दशम अध्याय में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख भारतीय ग्रन्थालय, प्रकाशन प्रतिष्ठान एवं विश्व संस्कृत पुस्तक मेला, एकादशन अध्याय में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के आन लाइन शब्दकोश एवं विश्वकोश तथा इनफ्लिबनेट का योगदान" तथा द्वादश अध्याय में संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के प्रमुख विषयगत इलैक्ट्रानिक, डिजिटल एवं ऑन लाइन सूचना स्रोतों के रूप में अध्यायीकरण किया गया है ।

आधुनिक विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा केन्द्रों की भाँति ही प्राच्य तथा पारम्परिक विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा केन्द्रों में भी शैक्षिक गतिविधियों एवं शोध कार्य तीव्रगति से सम्पन्न किये जा रहे हैं । ऐसे में ग्रन्थालयों एवं सूचनाकेन्द्रों में कार्यरत कुशल सूचना व्यवसायिक कर्मियों, ग्रन्थालयियों तथा अन्य सहयोगी व्यवसायिकों द्वारा आचार्यों, शोधार्थियों एवं छात्रों को उत्तम कोटि की ग्रन्थालय एवं सूचना सेवा प्रदान किया जा सके को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना की गयी है।

इस प्रकार यह कृति संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित आचार्यों, शोधार्थियों तथा छात्रों के साथ ही साथ, ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान से सम्बन्धित अध्यापकों, शोधार्थियों तथा छात्रों के लिए भी विशेष उपयोगी है क्योंकि ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में सम्भवतः यह ग्रन्थ पहली कृति है जो आपके समक्ष प्रस्तुत है ।

दिनेश कुमार तिवारी

श्रद्धा-सुमन

भारतवर्ष के सभी धर्मों में वाराणसी का मुख्य स्थान है । यह गंगा के किनारे बसा पवित्र हिन्दू तीर्थ है । वाराणसी भारतीय हिन्दू सभ्यता, संस्कृति एवं धर्म का प्राचीन काल से ही एक प्रमुख नगर है । जहाँ पर भूतभावन भगवान बाबा विश्वनाथ जी एवं जगत जननी माँ अन्नपूर्णाका निवास है, जिसके भगवत कृपा के प्रभाव से ही मैं जिसे अति दुष्कर एवं असम्भव समझता था वह कार्य इतनी सरलता एवं सहजता से पूर्ण हुआ । अतः सर्वप्रथम बाबा विश्वनाथ एवं माँ अन्नपूर्णा के चरणों में प्रस्तुत कृति को श्रद्धासुमन के रूप में अर्पित करता हूँ ।

गुरूजनों के प्रतिश्रद्धा-सुमनो को अर्पित करना मेरा परम कर्तव्य है । अतः प्रथमतः मान्य गुरूवर पूज्य चरण प्रो. योगेन्द्र प्रताप दूबे, भूतपूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, का. हि. वि. वि., वाराणसी के चरणों में यह कृति सादर समर्पित है ।

अपनी तिसरी श्रद्धा सुमन उन गुरूजनों, सहयोगी मनीषी एवं विद्वानों तथा पारिवारिक सदस्यों को सादर अर्पित है, जिन्होंने इस कार्य में मेरा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग दिया है । इसमें पूज्य भ्रातृचरण श्री रमेश देव त्रिपाठी, न्यास संरक्षक, श्री हरसू ब्रह्म धाम न्यास परिषद्, चैनपुर, जिला-भभुआ, बिहार, श्री राजेश्वर त्रिपाठी, ग्रन्थालयी, श्री हरसू ब्रह्म धाम न्यासपरिषद ग्रन्थालय, चैनपुर जनपद-भभुआ, विहार, प्रो. अजित कुमार पाण्डेय, समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि., वाराणसी एवं श्री राधारमण पाण्डेय (पूर्व आचार्य) ज्योतिष विभाग, प्राच्य विद्या एवँ धर्म विज्ञान संकाय, का. हि.वि.वि., वाराणसी के चरणों में अपनी कृतज्ञता अर्पित करता हूँ ।

अपनी चतुर्थ श्रद्धा-सुमन डा. सूर्यकान्त, पुस्तकाध्यक्ष, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, डा0 राम अवतार ओझा, महाविद्यालय पुस्तकाध्यक्ष, शतीस चन्द्र स्नाकोत्तर महाविद्यालय, बलिया, उ. प्र., डा. जवाहर लाल उपाध्याय, पुस्तकाध्यक्ष, दी. द. उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर एवं डा. अंजनी कुमार मिश्रा, प्रधान सम्पादक, परिशीलन शोध पत्रिका (त्रैमासिक), वाराणसी को अर्पित करता हूँ जिन्होंने इस कार्य में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग किया है ।

अपनी पंचम श्रद्धा-सुमन अपने शुभेच्छु भाई, बहनों एवं मित्रों की सेवा में अर्पित करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में मेरा सहयोग एवं उत्साहवर्द्धन किया है । इनमें मेरा कनिष्ट भ्राता श्री नागेन्द्र कुमार तिवारी, अधिवक्ता, वाराणसी का इस कृति के पूर्णता में सराहनीय योगदान रहा है ।

अपनी छठवीं श्रद्धा-सुमन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के सरस्वती भवन ग्रन्थालय में कार्यरत उन सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारी संवर्ग को अर्पित करता हूँ, जिन्होंने यथासंभव इस कार्य के पूर्णता में सहयोग किया है । डा. प्रेम शंकर द्विवेदी, प्रबन्धक, कला प्रकाशन के प्रति मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने अतिव्यस्त्ता के बाद भी प्रस्तुत कृति को नियत समय पर प्रकाशित करने का सराहनीय कार्य किया है।

धन्यवाद ज्ञापन समाप्त करूँ इसके पूर्व मैं अपने पूरे परिवार के प्रत्येक सदस्यों का विशेष आभारी हूँ जिनके निरन्तर उत्साहवर्द्धन एवं सहयोग से यह कृति पूर्ण हो सकी है।

अक्षय तृतीया **दिनेश कुमार तिवारी**

6/05/2011

विषय-सूची

(Contents)

□□

प्रथम अध्याय

संस्कृत वाङ्मय एवं सन्दर्भ स्त्रोत-एक संक्षिप्त परिचय
(Sanskrit Vangmaya and Reference Sources - A Brief Introduction)

1. भूमिका (Introduction)-

संस्कृत साहित्य या वाङ्मब जितना प्राचीन है उत्तना ही विराट है । 'साहित्य' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है । जैसे सीमित प्रयोग एवं व्यापक प्रयोग । सीमित अर्थ के अन्तर्गत साहित्य के रचनात्मक एवं कलात्मक स्वरूप को सम्मिलित किया जाता है जो कि रसात्मक होता है। जबकि साहित्य के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत संचित ज्ञान राशि का समस्त ज्ञान भण्डार समाहित होता है। इसी को दूसरे रूप में वाङ्मय कहा जाता है । इसके अन्तर्गत रचनात्मक एवं रसात्मक साहित्य तथा अतिरिक्त ज्ञान एवं विज्ञान से सम्बन्धित समस्त विद्याएँ परिगणित होती हैं।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य एवं वाङ्मय दोनों के लिए एक ही शब्द लिटरेचर (Literature) का प्रयोग किया जाता है ।

2. संस्कृत वाङ्मय में सन्दर्भ ग्रन्थ-

संस्कृत वाङ्मय में उपाणि सूत्र या उणादि कोश एवं शब्दों की व्युत्पत्ति के लिए मानविय संस्कृत व्याकरण में उणादि सूत्रों का विशेष स्थान हैं । काशकृत्सन, शन्तनु, आपिशाली आदि आचार्यों के उणादि सूत्र इस समय प्राप्त नहीं है । परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने वेदभाष्य में उणादिकोश को बहुत महत्व दिया है।

संस्कृतशास्त्र के विद्वानों के मत में वैदिक वाङ्मय का सबसे प्राचीनतम कोश 'निघण्टु' है। इसके कुल पाँच अध्याय हैं तथा इसमें कुल पदों की संख्या 1786 है। जबकि चन्द्रमणि विद्यालंकार के अनुसार, "निघन्टुकोश की शब्द संख्या 1773 बतलायी गयी है, जिसमें तीसरे अध्याय के तेरहवें खण्ड के तेरह उपमासूचक शब्दों को नहीं गिना गया है। प्रथम तीन अध्यायों के संकलन का नाम "नैघन्टुक काण्ड" है । चतुथर का "नैगम" तथा पंचम अध्याय का नाम "दैवत" है । कालान्तर में यास्काचार्य की निघन्टु शैली पर ही एक ऐतिहासिक संस्कृत शब्दकोश को "अमरकोश" नामक शीर्षक के नाम से रचना की गयी है । संस्कृत वाङ्मय में सन्दर्भ ग्रन्थों की परम्परा में सन्दर्भ ग्रन्थ को नियमित, नियमित और

नियंत्रित रूप में निबद्ध करने का पहला प्रयास निरूक्तकार तथा निघन्टु रचना के उन्नायक यास्काचार्य के द्वारा सम्पन्न किया गया है । इसप्रकार संस्कृत वाङ्मय में सबसे प्राचीन सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में यास्क कृत 'निघन्टु' का उल्लेख मिलता है । क्योंकि यास्क ने ही पहली बार निघन्टु के साथ निरूक्त की परिकल्पना कर शब्द को अर्थ काविस्तार दिया और अर्थ को शब्द का आश्रय दिलाया । आकार में लघु होने पर भी कोश ग्रन्थ का ऐतिहासिक महत्व है, क्योंकि विश्व में उपलब्ध वाङ्मय में सबसे प्राचीन शब्दकोश होने का गौरव इसी सन्दर्भ ग्रन्थ को प्राप्त है । यास्क का "निरुक्त" कोश रचना की प्रक्रिया को एक नया आयाम प्रदान करता है । "निघन्टु" की शब्दकोशीयता "निरूक्त" में ज्ञान कोशीयता का रूप धारण करती है । यास्काचार्य का "निरूक्त" सम्भवतः इस दिशा में पहला कदम था, जिसने संस्कृत वाङ्मय में विश्वकोश अथवा ज्ञानकोश की रचनात्मक प्रक्रिया का बीज बोया। यास्काचार्य के पूर्व विश्वकोश या ज्ञान कोश की भावना के प्रथम प्रवर्तक के रूप में महर्षिनारद को स्थान दिया गया है, जो कि वेदशास्त्र, पुराण, कल्पशास्त्र विद्या आदि ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में अपने को पारंगत मानते थे ।

इसी प्रकार अमर सिंह द्वारा रचित "नाम लिंगानुसासन" जो अमरकोश के नाम से भी पूरे विश्व में एक महत्वपूर्ण संस्कृत सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध है । अमरकोश पर भारत में नहीं, बल्कि विश्व के अन्य देशो में भी इसपर अनेक टीकाएँ लिखी जा चुकी है। चौथी एवं पाँचवी शती में यह पद्यबद्ध रचना मूलतः पर्यायवाची शब्दकोश के रूप में प्रणीत हुआ तथा यही वह सन्दर्भ कृति है जिससे विश्वकोश के प्रणयन की प्रेरणा मिली है। इसके बाद धीरे-धीरे संस्कृत वाङ्मय में एक के बाद सन्दर्भ ग्रन्थों की रचना होने लगी । इसी क्रम में शाश्वत का "अनेकार्थ समुच्चय", हलायुध कोश के नाम से प्रसिद्ध "अभिधान रत्नमाला", यादव प्रकाश जी "वैजयन्ती," हेमचन्द्र का "अभिधान चिन्तामणि", महेश्वर द्वारा रचित "विश्वप्रकाश" एवं "शब्दभेद प्रकाश" दो महत्वपूर्ण कोशों के अतिरिक्त भंवरक कवि का "अनेकार्थ", अजय पाल का "नानार्थ संग्रह", धनंजय की "नाममाला", केशव स्वामी का "शब्दकल्पद्रुम", एवं मेदिनीकर का नानार्थशब्दकोश निर्मित किये गये । इन सभी शब्दकोशों में ज्ञान की अपेक्षा शब्दों पर अधिक दृष्टि थी ।

कोशरचनाकारों का ध्यान सामान्य ज्ञान की ओर आकृष्ट करने वाला प्रथम संस्कृत कोश तर्क वाचस्पति तारानाथ भट्टाचार्य द्वारा रचित "वाचस्पत्यम" (1823) ने किया है तथा राजा राधाकान्तदेव द्वारा रचित "शब्दकल्पद्रुम (1828-58) के शब्दों को वाचस्पत्यम् ने "वाक्" की विशाल परिधि में प्रसारित किया है । वास्तव में ये दोनों अपनी-अपनी दृष्टि में शब्दकोश और विश्वकोश दोनों तथ्यों को साथ लेकर रूपायित हुए हैं । साहित्य, व्याकरण, ज्योतिर्विज्ञान, तन्त्रशास्त्र, दर्शनशास्त्र, संगतिशास्त्र, काव्यशास्त्र, इतिहास, चिकित्सा आदि अनेक विषयों का विवेचन इन दोनों कोशों में न्यूनाधिक मात्रा में समाविष्ट हैं ।

इस प्रकार शब्दकोश को वाङ्मयकोश बनाने का पहला भारतीय प्रयास इन दोनों कोशों में सम्पन्न हुआ है जिसके फलस्वरूप इन दोनों कोशों को संस्कृत शास्त्र के महत्वपूर्ण विश्वकोश के रूप में मान्यता दी गयी है । इसी क्रम में आगे चलकर यूरोप के ख्यातिलब्ध संस्कृत विद्वानों में मोनियर विलियम्स, विल्सन आदि विद्वानों के साथ ही साथ संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के कुछ भारतीय मूल के विद्वानों ने संस्कृत शब्दकोश को अन्तर्राष्ट्रीय एवं बृहद रूप प्रदान करने तथा वाङ्मय शब्दसाधना को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान किये हैं। बामन शिव राम आप्टे द्वारा रचित "व्यावहारिक संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश" केवल एक शब्दकोश ही नहीं, बल्कि एक प्रकार से संस्कृत वाङ्मय कोश का ही एक प्रकार का प्रकारान्तर है । इसमें कोशकार ने शब्दों की व्याख्या करते समय रामायण, महाभारत आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों के अतिरिक्त, काव्यसाहित्य, स्मृति ग्रन्थ, शास्त्रग्रन्थ, दर्शनशास्त्र आदि संस्कृत वाङ्मय से सम्बन्धित ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का जो सोदाहरण व्याख्या प्रस्तुत किया है, उससे स्पष्ट होता है कि यह केवल एक शब्दकोश ही नहीं है, बल्कि प्राच्य विद्या की एक महत्वपूर्ण पद-निधि भी है । इसी प्रकार जर्मन विद्वान डा. राथ एवं बोथलिंक द्वारा प्रणीत जर्मन-संस्कृत कोश "वार्टरवच" (1858-75) में भी लगभग इसी प्रकार का प्रयास परिलक्षित होता है । फिर भी संस्कृत में एक पूर्ण वाङ्मय कोश की आवश्यकता बनी रही। 1829-1833 के दौरान अमेरिका में (Encyclopaedia Americana) "इनसाइक्लोपेडिया अमरीकाना" की रचना की गयी तथा इन्हीं विश्वकोशों के स्वरूप के अनुरूप भारतीय भाषाओं में भी साहित्यिक तथा साहित्येत्तर विश्वकोश के साथ ही साथ अन्य प्रकार के सन्दर्भ स्रोत भी निर्मित होने लगा । संस्कृत एवं प्राच्य विद्याओं के सन्दर्भ स्रोतों के अन्तर्गत विश्वबन्धुशास्त्री द्वारा प्रणीत 1929 में प्रकाशित "वैदिकशब्दार्थ पारिजात" एवं सात खण्डों में संकलित "वैदिक पदानुक्रमकोश", "ब्राह्मणोहदारकोश," उपनिषदुद्धारकोश जैसे महत्वपूर्ण सन्दर्भ कृतियों की रचना की गयी जो शब्दकोश एवं विश्वकोश के लक्षणों से युगपत अभिलक्षित हैं। इस दृष्टिकोण से चम्पूपति का "वेदार्थ शब्दकोश" तथा लक्ष्मणशास्त्री का "धर्मशास्त्रकोश" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पंडित राम अवतार शर्मा द्वारा प्रणीत "वाङ्मयार्णव" वर्तमान शताब्दी का संस्कृत शास्त्र का एक महत्वपूर्ण कोश है, जिसे सन् 1967 में प्रकाशित किया गया है ।

भारत की स्वाधीनता के पश्चात् लगभग सभी भारतीय भाषाओं में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित सन्दर्भ ग्रन्थों का प्रणयन बड़ी प्रचुरता के साथ होने लगा, जिसके फलस्वरूप प्रायः प्रत्येक भारतीय भाषा में विश्वकोशों की रचना हुई । तेलगु भाषा समिति ने 1967 से 1975 के मध्य सोलह खण्डों में "विज्ञान सर्वस्वम्" के नाम से भाषा, साहित्य, दर्शन, इतिहास, भूगोल, भौतिकी, रसायन, विधि, अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र आदि अनेक विषयों में विश्वकोश का प्रकाशन किया । इसी प्रकार मलयालम भाषा में 1970 के दौरान "विश्वविज्ञान कोशम्" का प्रकाशन किया गया । स्वाधीनता के पूर्व ही

मराठी भाषा में कई महत्वपूर्ण सन्दर्भ ग्रन्थों की रचना की जा चुकी थी तथा स्वतन्त्रता के बाद इस क्षेत्र में पंडित महादेव शास्त्री द्वारा सम्पादित "भारतीय संस्कृति कोश विशेष रूप से एक उल्लेखनीय सन्दर्भ कृति है । बंगाल में बंगीय साहित्य परिषद द्वारा इसी के आस-पास पाँच खण्डों में "भारतकोश" नामक विश्वकोश का प्रकाशन किया गया । जो आज भी भारतीय साहित्य के जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त उपादेय है । इसी प्रकार हिन्दी में वाराणसी के नागरी प्रचारिणी सभा ने बारह खण्डों में "हिन्दी विश्वकोश" का प्रकाशन किया। साहित्य अकादमी द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित (Encyclopaedia of Indian Literature) "इन साइक्लोपिडिया ऑफ इण्डियन लिटेरेचर" भी भारतीय साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण विश्वकोश है । परन्तु संस्कृत वाङ्मय को लेकर कोई विशेष प्रयास नहीं हुआ । यद्यपि डा. राजवंश सदाय "हीरा" जैसे विद्वान ने इस दिशा में उल्लेखनीय प्रयास अवश्य किया है । उनके द्वारा प्रणीत दो महत्वपूर्ण कोश "संस्कृत साहित्य कोश" तथा "भारतीय शास्त्र कोश" सन् 1973 में प्रकाशित किये गये हैं । ये दोनों कोश हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित "हिन्दी साहित्य कोश की भांति संस्कृत वाङ्मय के पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए । किन्तु समग्र संस्कृत वाङ्मय का विवेचन प्रस्तुत करने वाला सर्वांगीण विश्वकोश का एक प्रकार से अभाव ही रहा जिसे संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान डा. श्रीधर भास्कर वर्णेकर ने "संस्कृत वाङ्मय कोश" को सम्पादित कर इस अभाव को कुछ सीमा तक दूर करने का सफल प्रयास किया है ।

संस्कृत भाषा एवं साहित्य भारत की प्राचीनतम भाषा एवं साहित्य मानी जाती है, क्योंकि अनेक भाषाओं की उत्पत्ति का मूल संस्कृत ही है । फिर भी संस्कृत भाषा में आधुनिक प्रकार के विश्वकोश, शब्दकोश एवं अन्य प्रकार के सन्दर्भ कृतियों की संख्या अन्य आधुनिक विषयों से सम्बन्धित सन्दर्भ कृतियों की तुलना में बहुत कम है । जबकि प्राचीन काल से लेकर अद्यावधि भारत सहित विश्व के अन्य देशों के ग्रन्थालयों में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के संगहीत हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रहों में अब भी अधिक संख्या में कोशग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं। इनके अधिकाधिक उपयोग हेतु संस्कृत के साथ ही साथ अन्तर्विषयी स्वरूपों पर अधिकाधिक शोध किया जाना उचित प्रतीत होता है ।

3. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के अन्य सन्दर्भ एवं सूचना स्रोत-

शब्दकोश, हस्तलिखित संग्रह कोश, संस्कृत शब्द और उनके अन्य भाषीय पर्याय कोश, अन्यान्यशास्त्रों के परिभाषिक शब्दकोश, महत्वपूर्ण ग्रन्थों की अकारादिवर्णानुक्रमिका इत्यादि विविध प्रकार का कोश वाङ्मय प्राचीन काल से आधुनिक काल तक यथावसर निर्माण होता रहा । चिकित्सात्मक एवं शोधात्मक कार्य करने वाले विद्वानों का कार्य ऐसे कोशों के उपयोग द्वारा बहुत सरल हो जाता है । यह भी निर्विवाद है संस्कृत कोश वाङ्मय का प्रारम्भ निघन्टु से हुआ । निघन्टु की रचना वैदिक मन्त्रों के स्पष्टीकरण के लिए की गयी। यास्काचार्य का निरूक्त निघन्टु रचना का ही भाष्य है । इसी प्रकार अनेक प्राचीन संस्कृत

के कवियों ने अनेक उपयोगी कोशों की रचना की । जिनमें मुरारि, मयूर, वामन, श्रीहर्ष, विल्हण इत्यादि साहित्यकार प्रमुख हैं। श्रीहर्षकृत "श्लेषार्थपद संग्रह" उत्तरकालीन साहित्यकारों के लिए बहुत सराहनीय रहा ।

कोश रचना की परम्परा में मध्य एशिया के काश्गर में आठ पृष्ठों का एक कोश प्राप्त हुआ जिसका लेखक कोई बौद्ध पण्डित माना जाता है । लेकिन इस कोश में काल और नाम विदित नहीं है, परन्तु यही अज्ञात कर्तृक एवं अज्ञात नामा अपूर्ण ग्रन्थ आधुनिक ऐतिहासिकों के मतानुसार संसार का प्रथम कोश माना जाता है । अन्यान्य टीका ग्रन्थों मे कत्यायनकृत नाममाला, वाचस्पतिकृत 'शब्दार्णव' विक्रमादित्य कृत संसारावर्त, व्याडिकृत उत्पलिनी इत्यादि प्राचीन कोशों के नाम मिलते हैं; परन्तु सम्पूर्ण भारत मे लोकप्रिय कोश है अमर सिंहकृत 'नामलिंगानुशासन' जो अमर कोश नाम से विशेष प्रचलित है । प्रस्तुत कोश के तीन काण्डों में दस हजार शब्दों का संग्रह मिलता है । इस कोश में नाम के साथ ही उसके लिंग का भी परिचय मिलता है । ईसवी सन् छठी शताब्दी के पूर्व ही इस कोश का चीनी भाषा में अनुवाद हो चुका था । अमरकोश के प्रभाव के फलस्वरूप ही सातवीं शताब्दी से लेकर सतरहवीं शताब्दी तक अनेक पद्यात्मक शब्दकोशों की रचना होती रही। इनमें से कुछ कोशों का विवरण इस प्रकार निम्नवत हैं–हारावली या त्रिकाण्डकोश-लेखक-पुरूषोत्तमदेव ई. सातवी शती ।

धनंजयनिघन्टु या नाम माला-लेखक-धनंजय । अनेकार्थनाममाला-लेखक-धनंजय ।

वैजन्यती - लेखक - यादव प्रकाश (11वीं शती) ।

अभिधानरत्नमाला - लेखक - हलायुध दसवीं शती ।

शब्दकल्पद्रुम-लेखक-केशव स्वामी - बारहवीं शती ।

विश्वप्रकाश - लेखक - महेश्वर - बारहवीं शती ।

नानाथररत्नमाला - लेखक - अभय पाल - बारहवीं शती ।

अभिधान चिन्तामणि - लेखक - हेमचन्द्र - बारहवीं शती ।

नानार्थरत्नमाला - लेखक - इरूगपद दण्डाधिनाथ चौदहवीं शती ।

नानार्थशब्दकोश - लेखक - मेदिनीकर - चौदहवीं शती ।

शब्दचन्द्रिका एवं शब्द रत्नाकर - लेखक- वामन भट्ट । 15वीं शताब्दी ।

सुन्दर प्रकाश-शब्दार्णव - लेखक - पद्यसुन्दर-सोलहवीं शती ।

कल्पद्रुम - लेखक - केशव देवज्ञ - सतरहवीं शती ।

नाम संग्रह माला - लेखक - अप्पय्य दीक्षित । सतरहवीं शती ।

इस प्रकार अन्यान्य कोश रचनाकारों ने शब्दों की व्यवस्था अन्यान्य पद्धति से की है, जैसे किसी कोश में लिंगानुसार, किसी में शब्द की अक्षरसंख्या के अनुसार, किसी में अक्षरक्रमानुसार तो किसी-किसी में पर्यायी शब्दों की संख्या के अनुसार शब्द व्यवस्था की

गयी है । संस्कृत एवं प्राच्य विद्या में इन कोशों के अतिरिक्त एकाक्षर कोश द्विरूपकोश, त्रिरूपकोश इत्यादि अज्ञातकर्तृक कोश भी लिखे गये हैं । उदाहरण स्वरूप "महाव्युत्पत्तिकोश" में बौद्ध धर्म में प्रचलित विशिष्ट संज्ञाओं का स्पष्टीकरण मिलता है । सोरहवीं शताब्दी में फारसी शब्दों के संस्कृत पर्यायों के लिए "पारसी प्रकाश" नामक एक कोश लिखा गया। पारसी प्रकाश के पहले ही कर्णपूर ने संस्कृत-पारसिक प्रकाश की रचना की थी । शाहजहाँ के काल में ज्योतिष के प्रसिद्ध विद्वान वेदांगराय ने ज्योतिष विषयक शब्दों का फारसी प्रकाश नाम से एक कोश लिखा था ।

शिवाजी महाराज ने अपने सभा पंडित रघुनाथ हणमंते द्वारा राज्य व्यवहारकोश की रचना करवायी । इस पद्यात्मक कोश में तत्कालीन मुसलमानीं राज्यों मे प्रचलित फारसी राजकीय शब्दों के संस्कृत पर्याय को भी सम्मिलित किया गया है । इस राजव्यवहार कोश की यह प्रमुख विशेषता है । तदुपरान्त आधुनिक काल में संस्कृत के अन्य भाषीय पर्याय देने वाले अकारादिवर्णानुसार सूचीप्राय कोशों की रचना प्रारम्भ हुआ । इस श्रेणी के कुछ महत्वपूर्ण कोशों का उल्लेख निम्नवत है–डिक्शनरी आफ बेंगाली एण्ड संस्कृत-लेखक ग्रेब्ज हाग्रून-1833 में लन्दन में मुद्रित । संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी-लेखक-बेनफे । 1866 में लन्दन में मुद्रित ।

संस्कृत एण्ड इंग्लिश डिक्शनरी - लेखक - रामजसन । 1870 में लन्दन में मुद्रित। प्रैक्टिकल संस्कृत डिक्शनरी - लेखक आनन्द राम बरूआ । 1877 में कलकत्ता से प्रकाशित ।

संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी - लेखक - केपलर । 1891 में ट्रांसवर्ग में मुद्रित ।

संस्कृत - इंग्लिश डिक्शनरी - लेखक - मोनियर विलियम्स - 1899 ।

सरस्वतीकोश - लेखक जीवराम उपाध्याय - 1912 मे मुरादाबाद से प्रकाशित।

स्टूडेन्टस इंग्लिश - संस्कृत डिक्शनरी लेखक - वामन शिवराम आप्टे । सर्वप्रथम सन् 1924 में मुम्बई से प्रकाशित ।

संस्कृत - हिन्दी कोश - लेखक द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी । 1917 में लखनऊ से प्रकाशित ।

संस्कृत-हिन्दी कोश - लेखक - विश्वम्भर नाथ शर्मा । 1924 में मुरादाबाद से प्रकाशित ।

प्रैक्टिकल - संस्कृत डिक्शनरी - लेखक - मैक्डोनेल । सन् 1924 में लन्दन में मुद्रित ।

पद्मचन्द्रकोश - लेखक गणेश दत्त शास्त्री - सन् 1925 में लाहौर से मुद्रित ।

संस्कृत-गुजराती शब्दादर्श-लेखक - गिरिजाशंकर मेहता, सन् 1924 में अहमदाबाद से प्रकाशित ।

सार्थ वेदार्थ निघन्टु - लेखक - शिवराम शास्त्री शिंगे । यह कोश वैदिक - मराठी कोश का एक प्रमुख उदाहरण है ।

आदर्श हिन्दी - संस्कृत कोश - लेखक - राम स्वरूप शास्त्री । 1936 में वाराणसी से प्रकाशित ।

आधुनिक संस्कृत हिन्दी कोश - लेखक-ऋषीश्वर भट्ट । सन् 1955 में आगरा से प्रकाशित ।

संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ - लेखक - द्वारका प्रसाद शर्मा एवं तारिणीश झा । सन् 1957 में प्रयाग से प्रकाशित ।

व्यवहार कोश - लेखक - सदाशिव नरायण कुलकर्णी । यह सन् 1951 में नागपूर से प्रकाशित है ।

इन शब्दकोशों के अतिरिक्त विविध शास्त्रीय कोशों को भी अर्वाचीन काल में निर्मित किया गया जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण कोशों का विवरण इस प्रकार निम्नवत हैं–

धातुरूप चन्द्रिका - रचनाकार -व्ही. व्ही. उपाध्याय ।

धातुरत्नाकर - रचनाकार - श्रीधरशास्त्री पाठक (आठ भाग में)

अष्टाध्यायी शब्दानुक्रमणिका-श्रीधरशास्त्री पाठक ।

महाभाष्य शब्दानुक्रमणिका - श्रीधरशास्त्री पाठक ।

संस्कृत धातुरूप कोश - कृ. भा. वीरकर ।

संस्कृत शब्द रूप कोश - कृ. भा. वीरकर ।

तिङ्न्तार्णवतरणि कोश - कृ. भा. वीरकर ।

प्रत्ययकोश - गुंडेराव हरकरे ।

न्यायकोश - भीमाचार्य झलकीकर द्वारा रचित ।

मीमांसाकोश - केवलानन्द सरस्वती - (चार भागों में) ।

निघन्टुमणिमाला या वैदिक कोश- मधुसूदन विद्या वाचस्पति ।

गोज्ञानकोश - पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ।

ऐतरेय ब्राह्मण आरन्यक कोश - केवलानन्द सरस्वती ।

कौषीतकी ब्राह्मण आरन्यक कोश ।

वैदिक कोश - रचनाकार - हंसराज ।

सामवेद पादनाम् अकारादि वर्णानुक्रमणिका - रचनाकार - स्वामी विशेश्वरानन्द एवं स्वामी नित्यानन्द ।

धर्मकोश - रचनाकार - लक्ष्मणशास्त्री जोशी ।

धर्म कोश - (उपनिषत्काण्ड)- रचनाकार - लक्ष्मण शास्त्री जोशी ।

स्मृति तत्वम् - रघुनन्दन भट्टाचार्य द्वरा रचित । इसमें कुल 28 स्मृतियों का संग्रह हैं ।

स्मृतीनां समुच्चय - यह 27 स्मृतियों के संग्रह के लिए प्रसिद्ध कोश है ।

पुराण विषय अनुक्रमणिका - यशपाल - टंडन द्वारा रचित ।

पुराणशब्दानुक्रमणिका - तीन भागों में डी. आर. दीक्षित द्वारा निर्मित ।

महाभारत शब्दानुक्रमणिका ।

भरतकोश - यह नाट्य संगीत विषयक पारिभाषिक शब्दकोश है । भारतीय राजनीतिक कोश (कालिदास खण्ड) - रचनाकार वेंकट शास्त्री जोशी ।

वैदिक पदानुक्रम कोश - रचनाकार - विश्वबन्धुशास्त्री ।

यह कोश सात भागों में पहले चरण में मुद्रित हुआ ।

सर्वतन्त्र सिद्धान्त - पदार्थ लक्षण संग्रह ।

वैदिक शब्दार्थ पारिजात ।

कौटिलीय अर्थशास्त्र पद सूची - कुल तीन भागों में मुद्रित हुआ ।

पुरातन जैनवाक्य सूची । जैन स्तोत्र रत्नाकर ।

व्रह्मस्तोत्ररत्नाकर - इसमें 500 स्तोत्रों का संग्रह है।

कहावत रत्नाकर संस्कृत - हिन्दी एवं अंग्रेजी कहावतों का संग्रह ।

आधुनिक संस्कृत शब्दकोश के निर्माण परम्परा में सन् 1942 में डा. सुमन्त मंगेश कत्रे के नेतृत्व में पूणे के डेकन कालेज में एक महत्वपूर्ण परियोजना प्रारम्भ किया गया। इस कोश परियोजना के अन्तर्गत ई. पू. चौदहवीं शती से ई. सन् आठरहवीं शती तक संस्कृत भाषा में निर्मित सर्वांगीण प्रकार के दो हजार ग्रन्थों से पाँच लाख शब्दों का संग्रह, उनकी व्युत्पत्ति, अर्थांतर एवं विविध ग्रन्थों में उनके प्रयोग इत्यादि अनेक प्रकार की जानकारी उपलब्ध करायी जा सके को दृष्टिगत करते हुए इसे प्रारम्भ किया गया है । इस दौरान कोश निर्माण के क्षेत्र जो महत्वपूर्ण कार्य हुआ वह था कि प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की सूचियाँ बनना । संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के यूरोपीय विद्वान पंडित मैक्समूलर स्वयं भारतीय हस्तलिखित ग्रन्थों में निहित विपुल ज्ञान भण्डार का बार-बार प्रशंसा किया है । उन्होंने इण्डिया, व्हाट इट कैन टीच अस' नामक अपने ग्रन्थ के द्वारा भारत के हस्तलिखित भण्डारों की ओर पूरे विश्व के संस्कृत एवं प्राच्य विद्या कें विद्वानों का चित्त आकृष्ट किया जिसके फलस्वरूप कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचीरूप कोश निर्माण का कार्य प्रारम्भ किये।

सन् 1784 में कलकत्ता में रायल ऐशियाटिक सोसायटी की स्थापना होकर संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के विभिन्न विषयों के हस्तलिखित ग्रन्थों का संचयन प्रारम्भ हुआ।

इस सोसायटी के द्वारा सर विलियम जोन्स एवं उनकी पत्नी ने एक साथ मिलकर सन् 1807 में संस्कृत ग्रन्थ संग्रह की प्रथम सूची प्रकाशित की । सन् 1807 में हेनरी टॉमस कालेब्रूक को एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बेंगाल नामक संस्था का अध्यक्ष पद प्राप्त हुआ। उनके द्वारा संगृहीत सारे हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थ, लन्दन के इण्डिया ऑफिस में सुरक्षित रखे गये । इसी सोसाइटी द्वारा सन् 1817 से 1834 तक पंडित हरिप्रसाद शास्त्री के नेतृत्व में ग्रन्थ सूची के प्रथम सात भागो को निर्मित किया गया तथा शेष भागों के सम्पादन कार्य श्री चिन्ताहरण चक्रवर्ती तथा चन्द्रसेन गुप्त द्वारा सन् 1945 तक संचालित होता रहा ।

मैक्समूलर की प्रेरणा से प्रभावित होकर एक अन्य विद्वान डा. बूल्हर-भारत में आये। उन्होंने पैरीस, लन्दन तथा ऑक्स फोर्ड आदि स्थानों पर संस्कृत ग्रन्थों की जानकारी प्राप्त की। बाम्बे संस्कृत सीरीज नामक ग्रन्थमाला का प्रकाशन को उन्होंने शासकीय सहायता से शुरू कराया । डा. बूल्हर मुम्बई राज्य की शोध संस्था के अध्यक्ष नियुक्त हुए तथा वे स्वयं अपने निर्देशन में लगभग 2300 महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थों का संशोधन एवं सम्पादन करवाया जिससे प्रभावित होकर श्री राजेन्द्र लाल मित्र ने "नोटिसेस ऑफ संस्कृत मॅन्युस्क्रिप्टस" नामक ग्रन्थ के नौ खण्डों का प्रकाशन किया । इसके अग्रिम दो खण्डों को हर प्रसाद शास्त्री ने प्रकाशित किये । विंटरनिट्स ने बोडलियन ग्रन्थालय के संग्रह की सूची निर्मित करने कार्य शुरू किया । डा. कीथ ने डा. स्टीन की इंडियन इन्स्टट्यूट ऑक्सफोर्ड में सुरक्षित संग्रह की सूची तैयार की जो 1903 में ऑक्सफोर्ड के कलेरेन्डन प्रेस द्वारा मुद्रित हुई । इसी प्रकार बोडलियन ग्रन्थालय के पालि ग्रन्थों की सूची निर्मित करने का कार्य फ्रैंकफर्टर ने सन् 1882 में पूर्ण किया । 1825-1901 के दौरान डा. वेबर ने बर्लिन के राजकीय पुस्तकालय के संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थों की बृहत्सूची तैयार की । जबकि सन् 1869 में कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कालेज के ग्रन्थ संग्रह की बृहत्सूची आफ्रेट ने तैयार की। सन् 1870 में जेम्स डी. अलीज ने कोलम्बो में भारतीय संस्कृत ग्रन्थों की सूची प्रकाशित की । 1870 में ही एन.सी. बर्नेल ने लन्दन के इण्डिया ऑफिस के संस्कृत ग्रन्थों की सूची का प्रकाशन किया । सन् 1880 में "क्लासीफाईड इन्डेक्स टू दि संस्कृत मॅन्युस्क्रिप्टस इन दि पैलेस ऑफ तंजौर" नामक खण्ड को बर्नेल ने लन्दन से प्रकाशित किया । इसी प्रकार ज्यूलियस एकलिंग ने सन् 1887 एवं 1896 में लन्दन से संस्कृत ग्रन्थों की दो सूचियाँ प्रकाशित की । 1935 में कीथ और टॉमस की सूची तथा ओल्डेन वर्ग की सूची का प्रकाशन लन्दन में हुआ । सन् 1883 में जोसिल बंडाल और राइस डेव्हिडस ने कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय में संस्कृत और पालि ग्रन्थों की सूची प्रकाशित की । इसी क्रम में 1874 के मध्य डॉ0एफ0 कील हार्न ने भारत के संस्कृत ग्रन्थों की सूची प्रकाशित की। डा. कीलहार्न का दूसरा महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि सन 1880-81 के मध्य मुम्बई राज्य के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची को श्री काशीनाथ कुंटे के सहयोग से तैयार करवाकर सन्

1881 में उसे प्रकाशित करवाया । इसी तरह से पीटर्सन के बृहत् सूची को 1883 तथा 1898 में कुल छः खण्डों में प्रकाशित किया गया। इसके साथ ही साथ पीटर्सन ने अलवर नरेश के संग्रह की सूची को भी संकलित किया। इस कार्य को पूर्ण करने का दायित्व पीटर्सन के बाद डा. रामकृष्ण गोपाल भंडारकर को सौंपा गया। डा. भण्डारकर ने 1917 से 1929 तक की अवधि में ओरिएन्टल लाइब्रेरी, पुणे के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूचियों को सात खण्डों में प्रकाशित किये । जबकि रायल एशियाटिक सोसाइटी के संग्रह की जिन सूचियों को श्री हरिदामोदर वेलणकर ने तैयार किया उनको क्रमशः 1926, 1928 तथा 1930 में प्रकाशित किया गया । तंजोर के सरस्वती महल के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची सन् 1880 में बर्नेल ने तैयार की । तदन्तर यह कार्य पी.पी.एस. शास्त्री ने सम्भाला तथा निर्मित इस बृहत्सूची को कुल 19 खण्डों में प्रकाशित किया गया । तंजौर के सरस्वती महल ग्रन्थालय में लगभग पचीस हजार से अधिक हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहीत हैं। दक्षिण भारत में हस्तलिखित ग्रन्थों के ग्रन्थ सूची का कार्य सर्वप्रथम गुस्ताव ओपर्ट ने शुरू किया । उनके द्वारा सम्पादित दो खण्ड सन् 1880 एवं 1885 में प्रकाशित हुए । मैसूर और कूर्म राज्य में ग्रन्थ सूची का सम्पादन कार्य लेबिज राईस ने किया । इनके द्वारा निर्मित सूची को सन् 1884 में बंगलोर से प्रकाशित किया गया। मद्रास सरकार की ओरिएन्टल मॅन्युस्क्रिप्टस लाईब्रेरी की ओर सन् 1893 में निर्मित प्रथम सूची का प्रकाशन हुआ । तदनन्तर यह कार्य शेषागिरी शास्त्री ए, शंकरन आदि विद्वानों के अधीन संचालित होता रहा । सन् 1984 तक इस ग्रन्थालय द्वारा हस्तलिखित ग्रन्थों के निर्मित सूचियों को कुल 30 से अधिक खण्डों में प्रकाशित किया जा चुका है ।

वर्तमान चेन्नई के अन्तर्गत स्थित अडयार थियोसोफिकल सोसाइटी के ग्रन्थालय में हस्तलिखित ग्रन्थों का एक विशाल ग्रन्थ संग्रह है । सन् 1920 एवं 1928 में इस संग्रह से सम्बन्धित "ए कैटलॉग आफ दि संस्कृत मैन्युस्क्रिप्टस" नामक दो खण्ड प्रकाशित हुए। सन् 1942 में डा. कुन्हन राजा एवं के. माधव कृष्ण शर्मा ने वैदिक भाग की सूची प्रकाशित की । जबकि 1947 में व्ही. कृष्णम्माचार्य ने व्याकरण भागों की सूची तैयार की । सन् 1895 से 1906 तक कलकत्ता संस्कृत कालेज ग्रन्थालय के हस्तलिखित संग्रह की सूची को पं. हृषीकेश शास्त्री एवं शिव चन्द्र गुंई ने तैयार की । कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा सन् 1930 में असमीज मॅन्युस्क्रिप्टस नामक दो सूची खण्डों को प्रकाशित किया गया जिनमें संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थों का भी उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार वाराणसी के सरस्वती भवन ग्रन्थालय में भी सवालाख से अधिक पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है । हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के इस विशाल संग्रह से सम्बन्धित अबतक कुल तेरह खण्डों में तथा इकतिस भागों में निर्मित विवरण पंज्जिकाओं को प्रकाशित किया जा चुका है । जम्मू-काश्मीर के रघुनाथ मन्दिर के ग्रन्थालय के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची पंज्जिका को डा. स्टीन ने तैयार किया, जिसे सन् 1894 में मुम्बई से प्रकाशित किया गया । पं. रामचन्द्र काक और हर

भट्ट शास्त्री ने काश्मीर नरेश के पुस्तकालय की हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची तैयार किये जिसे 1907 में मुम्बई से प्रकाशित किया गया । बड़ौदा की केन्द्रीय ग्रन्थालय के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची जी.के. गोड़े एवं के. एस. राम स्वामी शास्त्री ने तैयार किये तथा इसे सन् 1925 में गायक वाड़ ओरियन्टल सीरीज् की ओर से प्रकाशित किया गया । डा. काशी प्रसाद जायसवाल एवं ए. बनर्जी ने मिथिला के हस्तलिखित संग्रहों की सूची तैयार किये जिसको बिहार - उड़ीसा रीसर्च सोसाइटी ने 1927 से 1940 के मध्य कुल चार खण्डों में प्रकाशित कराया । उज्जयिनी की ओरियन्टल मैन्युस्क्रिप्टस लाईब्रेरी द्वारा सन् 1936 एवं 1941 में दो सूची पंज्जिकाओं को प्रकाशित किया गया । गायकवाड़ ओरियन्टल सीरीज् ने अपने हस्तलिखित संग्रहों के प्रथम विवरण पंजिका को 1937 में बड़ौदा में प्रकाशित कराया जबकि इसका दूसरा खण्ड को सन् 1942 में प्रकाशित किया गया ।

इसी प्रकार जैसलमेर राज्य के ग्रन्थालय के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची पंज्जिका को भी गायकवाड़ ओरियन्टल सीरीज के द्वारा ही प्रकाशित किया गया । त्रिवेन्द्रम् के सरकारी ग्रन्थालय में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थों के कुल आठ भागों में निर्मित विवरण पंज्जिकाओं को 1985 तक प्रकाशित किया गया है ।

4. पालि एवं बौद्ध वाङ्मय में सन्दर्भ ग्रन्थ-

बौद्ध विद्वानों, कवियों एवं दार्शनिकों द्वारा व्यक्तिगत रूप से ग्रन्थ रचना का कार्य कनिष्क के समय से प्रारम्भ हुआ । कनिष्क के काल में ही बौद्ध विद्वान एवं कवि अश्वघोष ने "बुद्ध चरित" तथा "सौन्दरनन्द" नामक महाकाव्यों की रचना की । इसके पहले ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में मिलिन्द और नागसेन का दार्शनिक संवाद "मिलिन्दपन्ह" नामक ग्रन्थ निर्मित किया जा चुका था । इसी शताब्दी के महा कच्चायन द्वारा नेत्ति प्रकरण" की रचना हुई थी । जिसमें अभिधर्म पिटक की शैली में त्रिपिटकों के गूढ़ अर्थों की व्याख्या की गयी है। इसके अतिरिक्त परवर्ती बौद्ध साहित्य में अनेक मूर्धन्य विद्वानों जैसे आचार्य बुद्धघोष, भदन्त, बुद्ध दत्त, स्थविर, धम्मपाल, नागार्जुन, वसुबन्ध एवं असंग तथा धर्मकीर्ति द्वारा बौद्ध वाङ्मय में अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की गयी । इसी प्रकार बौद्ध दर्शन से सम्बन्धित अनेक दार्शनिक विद्वानों जैसे प्रभाकर गुप्त, विनीत देव, देवेन्द्र बुद्धि, शंकरानन्द, जितेन्द्र बुद्धि, कल्याणरक्षित रविगुप्त, अर्चट, शान्तभद्र, दुर्वेक भिक्षु, कर्णकगोमिन एवं धर्मोत्तर द्वारा आठवीं सदी तक बौद्ध दर्शन पर अनेक ग्रन्थों की रचना की गयी थी ।

बौद्ध वाङ्मय के अन्तर्गत जिन ग्रन्थों को सम्मिलित किया गया है, वे ग्रन्थ पालि एवं संस्कृत दोनों भाषाओं में लिखित हैं। इस साहित्य का बहुत अधिक अंश त्रिपिटक में समाविष्ट है । त्रिपिटक विविध विद्वानों द्वारा लिखित अथवा संकलित विविध ज्ञान विषयों का वृहद ज्ञान भण्डार है । धर्म, नीति एवं आचार वर्ग में बौद्ध वाङ्मय के लगभग कुले सोलह ग्रन्थों को सम्मिलित किया जा सकता है । जो कि इस प्रकार निम्नांकित हैं–सामञ्ञफलसुत्त, अम्बट्ठसुत्त, सोणदण्डसुत्त, महालिसुत्त, कस्स्पसीह्लादसुत्त, छः अन्यसुत्त, महांसतिपद्ठान

एवं पायसिराजञ्ञ सुत्त, पाथिकवग्ग, मज्झिमनिकाय, संयुत निकाय, अङ्गुत्तर निकाय, खुद्दक पाठ, धम्मपद, इतिवुत्तक, विनयपिटक, बुद्धघोषकृत विसुद्धिमग्ग एवं अन्य अट्ठकथाएँ आदि।

इसी तरह दर्शन वर्ग के अन्तर्गत पालि भाषा में रचित ग्रन्थों जैसे, ब्रह्मजाल सुत्त, जालियसुत्त, महानिदानसुत्त, मज्झिम निकाय के दार्शनिक सुत्त, संयुत निकाय के दार्शनिक सुत, पटिसम्भिदामग्ग, अभिधमपिटक, धम्म सङ्गणि, विभङ्ग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञति, कथावत्थु, यमक, पट्ठान, नेत्तिप्पकरण, पेटको पदेस एवं मिलिन्द पन्ह आदिप्रमुख हैं; तथा संस्कृत में रचित तीन ग्रन्थों-महाप्रज्ञा-पारमिताशास्त्र, मध्यमककारिका, विग्रह व्यावर्तनी, अभिधर्मकोश तथा प्रकरण पाद को स्थान दिया गया है ।

साहित्य वर्ग के अन्तर्गत बौद्ध साहित्य से सम्बन्धित ग्रन्थों को उनकी भाषाओं के आधार पर पालि एवं संस्कृत भाषा में वर्गीकृत किया गया है । विबरखुणी संयुत, सुत्त निपात, थेरगाथा, थेरीगाथा, निद्देस, दीपवंश एवं महावंश आदि ग्रन्थों की भाषा पालि है। पुराकथा एवं मिथक वर्ग के अन्तर्गत जिन ग्रन्थों को सम्मिलित किया गया है उनमें कूटदन्तसुत्त, महा-पदानसुत्त, महासुदस्सनसुत्त, जनवसमसुत्त, महागोविन्दसुत्त, महासमसुत्त व सङ्कपन्हसुत्त है। मज्झिमनिकाय का मखादेव सुत्त, संयुत्तनिकाय में पुराकथा एवं मिथक में विमानवत्थु एवं पेतवत्थु, अपदान, बुद्धवंश, जातक एवं चरियापिटक के साथ ही साथ संस्कृत भाषा में रचित कुछ बौद्ध ग्रन्थों जैसे–महावस्तु, ललितविस्तार एवं सद्धर्म पुण्डरीक अवदान को भी सम्मिलित किया गया है । इतिहास एवं जीवनी संवर्ग के अन्तर्गत बौद्ध वाङ्मय के जिन ग्रन्थों को सम्मिलित किया गया है उनमें दीघनिकाय का महापरिनिब्बासुत्त, मज्झिम निकाय के कुछ सुत्त, जीवनी एवं इतिहास से सम्बद्ध संयुत निकाय के संयुत, उदान तथा खन्धक आदि महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं। बौद्ध वाङ्मय के अन्तिम वर्ग तन्त्र एवं गुह्याचार में आटानाटियसुत्त को सम्मिलित किया गया है, जो कि सुत्तपिटक के दीघनिकाय के महावग्ग का नवम सुत्त है ।

इस प्रकार बौद्ध वाङ्मय एवं पालि साहित्य में आठवीं सती तक अनेक ग्रन्थों की रचना की गयी, फिर भी बौद्ध वाङ्मय एवं पालि साहित्य में सन्दर्भ ग्रन्थों का अभाव सा प्रतीत होता है । चौथी शताब्दी में बौद्ध दार्शनिक वसुबन्ध द्वारा संस्कृत भाषा में "अभिधर्मकोश" नामक ग्रन्थ की रचना की गयी है जो बौद्ध दशरन की एक महत्वपूर्ण कृति है । इसमें कुल आठ कोश स्थान है तथा उसमें कुल 600 कारिकाएँ हैं जिन पर वसुबन्ध ने स्वयं ही भाष्य लिखा था ।

5. प्राकृत वाङ्मय में सन्दर्भ ग्रन्थ-

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक संस्कृत, पालि एवं प्राकृत आदि भारतीय भाषाओं के कोश साहित्य पर विहंगमवलोकन से निम्नलिखित पद्धति दृग्गोचर होती हैं । जैसे

एकार्थक या पर्यायार्थक - यथा निघण्टु, अमरकोश आदि । निरूक्तात्मक यथा निरूक्त कोश आदि । देशी शब्दों का संग्राहक-अभिधान राजेन्द्र, शब्द कल्पद्रुम तथा जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश आदि । विविध भाषा कोश तथा सूक्ति संग्राहक कोश ।

संस्कृत वाङ्मय की भांति ही प्राकृत वाङ्मय समृद्ध एवं व्यापक है । प्राचीनकाल में भारत के दूर प्रान्तों में प्राकृत भाषा बोल-चाल की भाषा थी । प्राकृत भाषा में अर्द्धमागधी एवं शौरसेनी जैन आगम ग्रन्थों की भाषाओं का सर्वप्रथम स्थान आता है । अशोक शिलालेख जो ई. पूर्व लगभग 250 वर्ष के हैं, प्राकृत भाषा में विरचित हैं।

अर्द्धमागधी भाषा में निबद्ध आगम साहित्य के अंग प्रविष्ट एवं अंगबाह्य दो भेद हैं। अंग प्रविष्ट के अन्तर्गत द्वादशाङ्गी का स्थान आता है । अंतिम दृष्टिवाद की परम्परा लूप्त हो गयी है । इस प्रकार प्राचीन काल में आश्रमों एवं गुरूकुलों में आचार्यों द्वारा दिये गये उपदेशों को सुनकर ही याद रखा जाता था । अध्ययन काल में ही गुरू द्वारा शब्दों के विभिन्न अर्थों का निरूपण कर दिया जाता था । उस समय प्राकृत वाङ्मय में कोश नामक अलग कोई साहित्य नहीं था । इस प्रकार आचारांगादि में अनेक स्थानों पर एकर्थक एवं पर्यायार्थक तथा निरूक्तिमूलक शब्दों का विनियोजन किया गया है । प्राकृत वाङ्मय में सन्दर्भ ग्रन्थ परम्परा के अन्तर्गत सबसे प्राचीन कोश ग्रन्थ का नाम "भगवतीसूत्र" है । इसमें शताधिक शब्दों के पर्याय या एकार्थक शब्द विन्यस्त हैं। जीव, क्रोध, मान, माया, लोभ, आज्ञा, अर्ह, यथाश्रुत, प्राणी आदि अनेक शब्दों के एकार्थक शब्द उपलब्ध हैं। चूर्णि साहित्य में अनेक स्थलों पर पर्याय शब्द उदिष्ट हैं। विशेष ज्ञान के लिए चूर्णि साहित्य का अवलोकन आवश्यक है । आगम एवं उनके व्याख्या साहित्य की प्राकृत कोश-साहित्य के उदगम स्थल हैं। तबतक स्वतन्त्र रूप से प्राकृत साहित्य का कोई भी कोश ग्रन्थ उपलब्ध नहीं था ।

इस प्रकार धनपाल द्वारा रचित "पाइयलच्छीनामाला" प्राकृत साहित्य का प्रथम ज्ञान कोशग्रन्थ है । पाइयलच्छी के बाद आचार्य हेमचन्द्र ने "देशीनाममाला" कोश ग्रन्थ की रचना की थी । यह प्राकृत एवं देशी शब्दों के ज्ञान के लिए बहुत महत्वपूर्ण कोश ग्रन्थ है । इसमें भारतीय एवं आर्यभाषाओं के अनेक शब्दों की सांगोपांग - जीवन-यात्रा प्रस्तुत की गयी है । इसके बाद बनारस के प्रसिद्ध विद्वान पं. दामोदरशास्त्री ने "उक्ति व्यक्ति प्रकरण" नामक कोश ग्रन्थ का निर्माण किया । इसका दूसरा नाम प्रयोग प्रकाश भी है। देश्य भाषा के शब्द संग्राहक ग्रन्थों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है । फिर 17वीं शताब्दी में एक जैन विद्वान साधु सुन्दर गणि ने "उक्ति रत्नाकर" की रचना की थी । इसमें देश्य भाषा के अनेक प्रकार के उक्तिमूलक शब्दों का संग्रह किया गया है तथा इसका दूसरा नाम "औक्तिक पद" भी है ।

आधुनिक काल में प्राकृत वाङ्मय के अन्तर्गत प्राकृत साहित्य एवं कोश ग्रन्थों के क्षेत्र में जर्मन विद्वान होएफर ने सन् 1836 में अपने शोध निबंध "डे प्राकृत हियलेक्टो लिब्रिदुओं" में विचार प्रकट किया था । इसी समय लास्सन एवं आल्सफोर्ड ने प्राकृत भाषा

एवं बोलियों को आधार बनाकर महत्वपूर्ण शोधकार्य किया तथा 1879 में डॉ. बूलर ने ही ''पाइयलच्छीनाममाला'' का सम्पादन कर गॉटिगन से प्रकाशित करवाया ।

स्वतन्त्र प्राकृत कोश निर्माण की आवश्यकता महसूस करते हुए सन् 1912 में इटली के विद्वान डॉ. ल्यूई. जी. स्वाली ने प्राकृत कोश निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया किन्तु उसी समय विश्वयुद्ध की भयावह स्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण यह कार्य पूर्ण न हो सका ।

''अभिधान राजेन्द्र कोश'' जैसे महान ग्रन्थ से इस परम्परा का सूत्रपात होता है तथा अबतक लगभग एक दर्जन से अधिक स्वतन्त्र कोश ग्रन्थों का निर्माण हो चुका है । प्राकृत वाङ्मय के इन आधुनिक कोशों में ''अभिधान राजेन्द्र कोश'', ''जैन कक्को कोश,'' ''अर्धमागधी कोश,'' ''पाइयसद्दमहण्णवकोश'', ''प्राकृत - हिन्दी कोश'', ''एकार्थक कोश'' ''देशीशब्दकोश'', ''निरूक्तकोश'' एवं ''कुन्द-कुन्द शब्द कोश'' प्रमुख कोश ग्रन्थ हैं ।

इस प्रकार संस्कृत वाङ्मय के अन्तर्गत सन्दर्भग्रन्थों की रचना प्रक्रिया के ऐतिहासिक अन्वेषण में संस्कृत रचनाकारों तथा संस्कृत साहित्य का सर्वाधिक योगदान रहा है । वर्तमान में उपलब्ध सन्दर्भ ग्रन्थो के अनेक रूपों में से संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ऐतिहासिक अन्वेषण में सन्दर्भ स्रोत के शब्दकोश एवं विश्वकोश केवल दो ही रूपों को प्रधानता दी गयी थी । फिर भी संस्कृत एवं प्राच्य भारतीय विद्या में रुचि रखने वाले कुछ यूरोपीय विद्वानों के प्रयास से संस्कृत वाङ्मय में सन्दर्भ स्रोतों के अन्तर्गत शब्द कोशों एवं विश्वकोशों से हटकर कुछ अन्य रूपों की भी रचना की गयी हैं, जैसे– Catalogus Catalogorum by Theodore Aufrecht, Bibliographie Vedique by Louis Renou, A Vedic Concordance by Maurice Bloomfield, Vedic index of names and subjects by A.A. Macdonnell and A.B. Keith. A Concordance to the Principal Upanishads and Bhagavadgita by Jacab (1891), Max Muller's Word Index to Rigveda. मैक्समूलर के इस कृति को सन् 1872 एवं 1874 में दो खण्डों में प्रकाशित किया गया तथा इस ग्रन्थ का पुनर्संस्करण सन् 1908 में स्वामी विश्वेश्वरानन्द एवं स्वामी नित्यानन्द के सहयोग से सम्पन्न किया गया । Worterbuch zum rigveda by Grasmann (1873).

संस्कृत एवं प्राच्य भारतीय विद्या में रूचि रखने वाले यूरोपीय विद्वानों के साथ ही साथ प्राच्य विद्या में रूचि रखने वाले कुछ भारतीय विद्वानों ने भी संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित सन्दर्भ स्रोतों के अन्तर्गत शब्द कोशों एवं विश्वकोशों से हटकर सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के अन्य रूपों की रचना में महत्वपूर्ण योगदान किये हैं। इनमें स्वामी विश्वेश्वरानन्द, स्वामी नित्यानन्द, आर. एन.डाण्डेकर, डा. वी. राघवन, डा. के कुन्जुन्नीराजा, एन. विजिनाथन आदि प्रमुख हैं। A Complet Index of All the Words in the Yajurveda, Vedic Bibliography और New Catalogus Catalogorum आदि इन भारतीय विदों की प्रमुख रचनाएँ हैं।

6. संस्कृत वाङ्मय एवं सूचना प्रद्यौगिकी-

कम्प्यूटर एवं संचार प्रद्यौगिकी के आगमन के फलस्वरूप इन्टरनेट एवं वेब तकनीक ने अन्य क्षेत्रों की तरह संस्कृत वाङ्मय के प्रकाशन के क्षेत्र में भी अपना पर्दापर्ण कर दिया है, जिससे प्रकाशन के क्षेत्र में संस्कृत एवं भारतीय विद्या से सम्बन्धित संस्थाओं को एक नयी दिशा ई अथवा जिडिटल प्रकाशन की प्राप्ति हुई है। इस तकनीक के माध्यम से संस्कृत वाङ्मय से सम्बन्धित सन्दर्भ स्रोतों का प्रकाशन इलैक्ट्रॉनिक रूपों में किया जाता है। मुद्रित के भांति ही ई - प्रकाशन में भी विविध प्रकार के सन्दर्भ एवं सूचना सामग्री जैसे–ई-शब्दकोश, ऑनलाइन शब्दकोश, डिजिटल शब्दकोश, ई–विश्वकोश, ई-बुक्स, ई-पत्रिकाएँ, ई-मैग्जीन एवं ई-वुलेटिन आदि प्रकाशित हो रहे हैं । ई-सन्दर्भ एवं सूचना स्रोत समान्यतया ग्रन्थों का जिडिटल रूपांतरण है जो इलैक्ट्रॉनिक विधियों से संग्रहीत एवं प्राप्त किये जा सकते हैं ।

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित प्राचीन एवं दुर्लभ सन्दर्भ ग्रन्थों एवं अद्यतन सूचना एवं सन्दर्भ स्रोतों के इलैक्ट्रानिक प्रकाशन में अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । Cologne Digital Sanskrit Dictionaries, Online Sanskrit Dictionary, Andre's Signoret's French-Sanskrit Dictionary, A Scanned Sanskrit - German Dictionary by Delbruck, E-Biographical Dictionary और Internet Encyclopaedia of Philosophy आदि संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में इलैक्ट्रॉनिक सन्दर्भ ग्रन्थ के प्रमुख उदाहरण हैं ।

इस प्रकार ई-सन्दर्भ एवं सूचना स्रोत मुद्रित सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों की तुलना में अधिक उपयोगी एवं सूचना प्रद होती हैं, तथा इन्हें बिना किसी बाधा के प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. वर्णेकर, श्रीधर भास्कर, संस्कृत वाङ्मय कोश, प्रथम खण्ड, कोलकत्ता, भारतीय भाषा परिषद, 1988 ।
2. विद्यालंकार, सुभाष, योगशब्द कोश, दिल्ली, प्रतिभा प्रकाशन, 2005 ।
3. सिंह, परमानन्द बौद्ध साहित्य में भारतीय समाज, वाराणसी, मा. गा. का. वि. पी., 1996 ।
4. पाण्डेय, हरिशंकर, प्राकृतरूप रचना कोश, दिल्ली, न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, 2001 ।
5. http : //www. Sanskrti-lexicon.uni-koeln.de/
6. http : //www. Sanskrti-documents.org/dict/
7. Internet Encyclopaedia of Philosophy.

द्वितीय अध्याय

सूचना एवं सन्दर्भ स्त्रोत, अर्थ एवं परिभाषा
(Reference and Information Sources, Meaning and Definitions)

प्राच्य भारतीय विद्या एवं संस्कृत साहित्य अपनी विशेषता के लिए पूरे विश्व में ख्यातिलब्ध है तथा अन्य साहित्यों की भाँति ज्ञान विस्फोट की इस वर्तमान युग में इसमें भी अपार वृद्धि हुई है । इसके फलस्वरूप संस्कृत वाङ्मय से सम्बन्धित सूचना उपयोक्ताओं की आवश्यकताओं में निरन्तर वृद्धि दर्ज की गयी है । उपयोक्ताओं की इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्राच्य भारतीय विद्याओं एवं संस्कृत साहित्य में उपलब्ध सूचनाओं के विपुल भण्डार को एक बार-पुनः व्यवस्थित करने की आवश्यकता है जिससे अन्य साहित्यों की तरह इस क्षेत्र के उपयोक्ताओं को भी वर्तमान में उपलब्ध सभी प्रकार के सूचना स्त्रोतों जैसे प्रलेखीय, गैर प्रलेखीय, इलेक्ट्रानिक, इन्टरनेट एवं डिजिटल आदि रूपों से अवगत कराया जा सके । चिन्तन करते रहना मनुष्य की प्रकृति है, और इसी चिन्तन, मनन आदि गतिविधियों के फल स्वरूप सूचना का जन्म होता है । वर्तमान में 'सूचना' शब्द को शक्ति के रूप में जाना जाता है अर्थात् जिसके पास सूचना है वही शक्तिशाली है । भारतवर्ष प्राचीन काल से ही पूरे विश्व का सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करता रहा, इसकी मुख्य वजह थी कि भारत के पास सांस्कृतिक सूचनाओं का विपुल भण्डार था जो विश्व के और किसी देश अथवा राष्ट्र के पास नहीं था । इससे साफ-साफ स्पष्ट है कि सूचना ही शक्ति है। जिन देशों में सूचना संग्रहण, प्रदाय एवं उन्हें सर्वसुलभ बनाने की सुविधा है, उन देशों में राजनैतिक, प्रद्यौगिक एवं आर्थिक सुदृढ़ता अधिक होती है । सूचना विस्फोट के इस वर्तमान युग में सूचना का प्रयोग एक आवश्यक वस्तु के रूप में हो रहा है ।

सूचना का निर्माण विभिन्न मानवीय क्रिया-कलापों एवं घटनाओं के फलस्वरूप होता है । व्यक्ति एवं संस्थाएं दोनों ही अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सूचनाओं का उपयोग करते हैं । शोध एवं अनेक विकासात्मक प्रयोग के द्वारा नवीन सूचनाओं का जन्म होता है, तदनन्तर इन्हीं सूचनाओं के आधार पर और कई नयी सूचनाओं का श्रृजन होने लगता है।

1. अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definitions)-

'सूचना' शब्द अंग्रेजी भाषा के (Information) का रूपान्तर है । डाटा (Data), तथ्य (Fact), बुद्धि (Intellegent) और ज्ञान (Knowledge) जैसे शब्दों को सूचना के

पर्यायवाची के रूप में सम्मिलित किया गया है । इसलिए सूचना का वास्तविक अर्थ जानने के लिए कुछ परिभाषाओं पर विचार करना उचित होगा । Webster's New Twentieth Century Dictionary, 1983 के अनुसार, "सूचना शब्द से आशय किसी भी प्रकार से संग्रहीत अध्ययन-अथवा शिक्षण द्वारा ग्रहण की गयी उन तथ्यों अथवा समंकों से है, जो लिखित या मौखिक रूप में तथ्यों, संमकों या ज्ञान पर आधारित हों।"[1]

Random House Dictionary of English Language, 1983 के अनुसार, ज्ञान वह है जो तथ्य अथवा परिस्थिति विशेष के सम्बन्ध में प्राप्त अथवा सम्प्रेषित हुआ हो, ऐसा कोई भी ज्ञान, जिसे सम्प्रेषण, शोध अथवा शिक्षण द्वारा संचित किया गया हो।"[2]

इस प्रकार रैन्डम हाउस डिक्सनरी ऑफ इंगलिश लैंग्वेज द्वारा प्रस्तुत परिभाषा में सूचना के पर्यायवाची के रूप में डाटा, तथ्य, बुद्धि, परामर्श, सूचना, ज्ञान तथा विवेक जैसे शब्द समूहों को सम्मिलित किया गया है । इन शब्दों का सम्बन्ध सूचना नामक आवधारण से है । अतएव ये सूचना के पर्यायवाची हैं। सूचना का सम्प्रेषण शब्दों अथवा मौखिक सम्प्रेषण अथवा लिखित रूप में होता है । सूचना अध्ययन अथवा शिक्षण द्वारा उपयोग की जाती है तथा इसका संचयन किसी भी रूप में किया जा सकता है । सामान्य रूप से लोग सूचना और ज्ञान को पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग करते हैं, परन्तु इन दोनों शब्दों के अर्थों में सूक्ष्म अन्तर भी है । इस प्रकार सूचना प्रतिमानों को अधिक संगठित रूप में व्याख्या द्वारा प्रस्तुत कर इन्हें ज्ञान में परिवर्तित किया जा सकता है ।

इस प्रकार ज्ञान दो रूपों में निहित होता है–(i) Tacit Knowledge जिसे प्रगट न किया गया हो अथवा व्यक्तिात ज्ञान एवं (ii) Explicit Knowledge स्पष्ट रूप से व्यक्त किया हुआ ज्ञान अथवा वस्तुनिष्ठ ज्ञान । ग्रन्थालयों, सूचना एवं प्रलेखन केन्द्रों में ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित कृतियों में उपलब्ध ज्ञान का विश्लेषण करने, सम्प्रेषित एवं प्रसारित करने में सूचना व्यवसायिकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है ।

2. सन्दर्भ स्त्रोत (Reference Sources)-

पुस्तकालयों में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देना सन्दर्भ विभाग द्वारा सम्पन्न होता है। पुस्तकालय में सन्दर्भ 'प्रश्नों की उत्तर देने की विधि एक समान होते हुए भी प्रयुक्त खोज की विधियों का कोई निश्चित आधार नहीं होता है। विभिन्न पुस्तकालयों में साहित्यिक खोज नीति, ग्रन्थों की पर्याप्त उपलब्धी एवं सन्दर्भ ग्रन्थालयी की कार्यक्षमता एवं अनुभव पर निर्भर करती है ।

इस प्रकार पुस्तकालयों में सन्दर्भ स्त्रोतों के माध्यम से पाठकों द्वारा पूछे गये संदर्भ प्रश्नों के उत्तर दिये जाते हैं; अर्थात् जिन स्त्रोतों के माध्यम से पाठकों के सन्दर्भ प्रश्नों के उत्तर दिये जाते हैं, उन्हें सन्दर्भ स्त्रोत कहा जाता है ।

सन्दर्भ शब्द का शाब्दिक अर्थ-

-'सन्दर्भ' शब्द संस्कृत-धातु "दृभ" जिसका अर्थ है बाँधना या बुनना, में "सम्" उपसर्ग लगाकर बना है । संस्कृत कोष के अनुसार, "सन्दर्भ का अर्थ है एक साथ बाँधने वाला, संयोजित करने वाला, मिलाने वाला या बुनने वाला । इन सब अर्थों का मूल तत्व है दो या अधिक वस्तुओं का संयोग । अर्थात् पाठक एवं पाठ्य सामग्री के मध्य सम्पर्क स्थापित करना ।[3]

पुस्तकालयों में सन्दर्भ स्रोत में उन ग्रन्थों को सम्मिलित किया जाता है, जिन्हें पुस्तकालय से बाहर ले जाने का प्रावधान नहीं होता । परन्तु ग्रन्थालयों में सन्दर्भ ग्रन्थों के अतिरिक्त बहुमूल्य एवं दुर्लभ-ग्रन्थ भी उपलब्ध होते हैं । क्या उन सभी को सन्दर्भ ग्रन्थ की श्रेणी में रखा जा सकता है, ऐसा नहीं है । इसलिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि सन्दर्भ स्रोत के अन्तर्गत किस प्रकार के ग्रन्थों को सम्मिलित किया जा सकता है । A.L.A. Glossary of Library Terms के अनुसार, "सन्दर्भ कृतियाँ जो इस उद्देश्य से निर्मित की गयी होती है–वह कृति जो अपेक्षाकृत लगातार अध्ययन करने के उसके विषय वस्तु के अनुसार की इस ढंग से निर्मित एवं संकलित की गयी होती है जिससे किसी निश्चित सूचना सामग्री का अवलोकन किया जा सके ।"[4] ऐसी कृति को सन्दर्भ ग्रन्थ कहा जाता है। इस प्रकार सन्दर्भ स्रोत वे कृतियाँ होती हैं जिन्हें विशेष प्रकार से विशिष्टढंग से निर्मित किया गया होता है जिनको विशिष्ट प्रकार की सूचना के लिए उपयोग में लाया जाता है । सन्दर्भ स्रोत के अन्तर्गत शब्दकोश (Dictionary) अब्दकोश (Year Books), निर्देशिकाएँ (Directories) विश्वकोश (Encyclopadias) एवं गगेटिययर (Gazetteers) को सम्मिलित किया जा सकता है । इनके अतिरिक्त सन्दर्भ प्रश्नों का उत्तर देने के लिए जिस किसी प्रलेख या अभिलेख का उपयोग किया जाता है ऐसे सारे प्रलेखों या अभिलेखों को सन्दर्भ स्रोत कहा जाता है । सभी प्रकार के ग्रन्थालयों में त्वरित एवं दीर्घ कालीन सन्दर्भ सेवा प्रदान किय जाते हैं। उपयोक्ताओं द्वारा वांछित सन्दर्भ प्रश्नों के उतर देते समय उपयोक्तओं की प्रकृति एवं ग्रन्थालयों की श्रेणी का विशेष ध्यान रखना पड़ता है । सार्वजनिक ग्रन्थालय, शैक्षणिक ग्रन्थालय एवं विशिष्ट ग्रन्थालय में त्वरित एवं दीर्घकालीन सन्दर्भ प्रश्नों के समाधान हेतु अलग-अलग विधियों को उपयोग में लाया जाता है । त्वरित सन्दर्भ सेवा में उपयोक्ताओं के सन्दर्भ प्रश्नों के उत्तर या तो स्वयं सन्दर्भ कर्मी देता है, या तो उपयोक्ता के प्रश्न से सम्बन्धित स्रोत के विषयवस्तु एवं उपयोग में उसे सहायता करता है ।

दीर्घकालीन सन्दर्भ सेवा में त्वरित सन्दर्भ सेवा की तुलना में अधिक समय लगता है। उपयोक्ताओं द्वारा पूछे गये ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने में सन्दर्भ ग्रन्थालयी को एक से अधिक ग्रन्थों में से सूचना खोजनी पड़ती है तथा यह सेवा सभी प्रकार की ग्रन्थालयों में दी जा सकती है। इस प्रकार दीर्घकालीन सन्दर्भ सेवा के अन्तर्गत उपयोक्ताओं के सन्दर्भ प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आधे घण्टे से लेकर एक दिन या सप्ताह लग सकते हैं । दीर्घ

कालीन सन्दर्भ प्रश्नों का उत्तर ग्रन्थालय में उपलब्ध सूचना के विभिन्न स्रोतों में से खोजना पड़ता है। त्वरित सन्दर्भ प्रश्नों की तुलना में दीर्घ सन्दर्भ प्रश्न जटिल प्रकृति के होते हैं । कभी-कभी ऐसे सन्दर्भ प्रश्नों का उत्तर ग्रन्थालय में उपलब्ध सूचना स्रोतों से खोजने पर भी नहीं मिलता है तो इस स्थिति में या तो अन्य ग्रन्थालयों में उपलब्ध सूचना स्रोतों का उपयोग किया जाता है या सम्बन्धित प्रश्नकर्ता को निर्देशपरक सेवा प्रदान की जाती है । निर्देश परक सेवा को रेफरल सेवा के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है । रेफरल सेवाएँ उपयोक्ता को पूछे गये प्रश्न से सम्बन्धित ग्रन्थ अथवा सूचनाएँ प्रदान नहीं करती हैं, बल्कि इसमें उपयोक्ता को स्रोतों से सम्बन्धित अन्य सूचना केन्द्रों, ग्रन्थालयों, शोध संस्थानों, द्वितीयक प्रकाशनों या विषय विशेषज्ञों के बारे में बताया जाता है कि वे सब कहाँ प्राप्त होंगे । रेफरल सेवाएँ स्वयं या ग्रन्थालय एवं सूचना केन्द्रों में प्रदत अन्य सेवाओं के सहयोग से कार्य कर सकती हैं। एक छोटे भौगोलिक क्षेत्र में उपयोक्ताओं को विना किसी बाधा के रेफरल सेवाएँ प्रदान की जा सकती है ।

वर्तमान में कम्प्यूटर एवं संचार प्रद्यौगिकी के उपयोग ने ग्रन्थालय एवं सूचना केन्द्रों द्वारा प्रदत्त विभिन्न पारम्परिक सेवाओं के साथ-साथ पूर्व प्रचलित सन्दर्भ सेवा को डिजिटल अथवा इलेक्ट्रॉनिक सन्दर्भ सेवा के रूप में परिवर्तित कर दिया है ।

डिजिटल सन्दर्भ सेवा मुख्य रूप से इन्टरनेट आधारित सन्दर्भ सेवा है, तथा इसको (Ask-An-Expert) आस्कएन-एक्सपर्ट या (Ask-A-Librarian) आस्क - ए- लाइब्रेरियन के नाम से भी जाना जाता है । इस सेवा में सन्दर्भ प्रश्न के उत्तर प्राप्त करने के लिए उपयोक्ताओं को अपने इ-मेल के द्वारा इन्टरनेट पर उपलब्ध निर्धारित प्रपत्र को भरकर सम्बन्धित यू.आर.एल. पर प्रेषित करना पड़ता है । इस प्रकार जिडिटल सन्दर्भ सेवा में सन्दर्भ प्रश्नों का उत्तर इन्टरनेट पर विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से विभिन्न-ग्रन्थालयों के सूचना विशेषज्ञों के द्वारा दिया जाता है । डिजिटल सन्दर्भ विशेषज्ञों को वॉलून्टीयरस या मेन्टरस भी कहा जाता है । अलग-अलग विषयों में अनेक बेवसाइटों पर प्रश्न एवं उत्तर से सम्बन्धित डेटाबेसों एवं ए. सेट ऑफ एफ.ए. क्यूस पैकेजों का निर्माण किया गया है। इन डेटाबेसों एवं पैकेजों से इन्टरनेट पर उपयोक्ताओं को सन्दर्भ प्रश्नों का उत्तर तत्काल प्राप्त होता है । डिजिटल सन्दर्भ सेवा प्रदान करने में स्रोतों एवं विशेषज्ञों से सम्पर्क स्थापित करने में वर्चूअल सन्दर्भ डेस्क (http : //www. Vrd. org) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

हस्तगत या पारम्परिक सन्दर्भ सेवा की तुलना में डिजिटल सन्दर्भ सेवा में उपयोक्ताओं द्वारा इन्टरनेट के उपयोग हेतु एक निश्चित शुल्क का भुगतान करना पड़ता है, क्योंकि अब भी बहुत से ऐसे स्वचालित ग्रन्थालय एवं सूचना केन्द्र हैं जो डिजिटल सन्दर्भ सेवा प्रदान करने में असमर्थ हैं । सन्दर्भ ग्रन्थ (Refeence Books)-सूचना की ऐसी कृतियाँ हैं जिन्हें सन्दर्भ कृति कहते हैं; वे प्राथमिक एवं मौलिक स्रोतों की सूचना सामग्री को अत्यधिक व्यवस्थित ढंग से इस क्रम में प्रस्तुत करती हैं जिससे अध्येता को सरलतापूर्वक

अभिष्ट सूचना प्राप्त हो सके । यद्यपि वांछित सूचना सन्दर्भ कृतियों से प्राप्त होता है जो इनमें निहित होता है, तथापि इन्हें गौण सूचना स्रोतों की श्रेणी में रखा जाता है । ऐसी कृतियों में विश्वकोश (Encyclopaedias), शब्दकोश (Dictionaryes), हैण्डबुक एवं मैन्यूल (Handbooks and Manuals), सारणियाँ (Tables) एवं सूत्र पुस्तिकाएँ (Formularies) आदि होती हैं। द्वितीयक सूचना स्रोतों की ये कृतियाँ महत्वपूर्ण सूचना के स्रोत मानी जाती हैं जो नित्यप्रति के उद्यत एवं त्वरित सन्दर्भ के कार्य एवं सेवा हेतु प्रयुक्त की जाती है । इनमें निहित सूचना सामग्रियों को इस ढंग से प्रस्तुत एवं आकलित किया गया होता है जिससे नित्य प्रति की वांछित सूचना को सरलता पूर्वक सुलभ किया जा सके ।

4. **सूचना स्रोत (Sources of Information)**- विभिन्न प्रकार के प्रकाशित सूचना स्रोतों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है।

(1) प्रलेखीय स्रोत (Documentary Sources).

(2) अप्रलेखीय स्रोत (Non-Documentary Sources).

प्रलेखीय स्रोतों में निहित सूचना के आधार पर उनको तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है–

प्राथमिक सूचनास्रोत, द्वितीयक सूचना स्रोत एवं तृतीयक सूचना स्रोत ।

4.1 प्राथमिक सूचना स्रोत (Primary Sources)-

प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत शोध अथवा प्रयोग या मानवीय क्रिया कलापों के द्वारा निर्मित सूचनाओं को सम्मिलित किया जाता है । ऐसी सूचनाएँ जिसे सर्वप्रथम जिन प्रलेखों या अभिलेखों के द्वारा उपलब्ध कराये जाते हैं ऐसे प्रलेखों या अभिलेखों को प्राथमिक सूचना का स्रोत कहा जाता है । ये मुद्रित एवं अमुद्रित दोनों प्रकार के हो सकते हैं । जैसे किसी पत्रिका में किसी विषय से सम्बन्धित प्रथम बार प्रकाशित कोई लेख, दैनिक समाचार पत्रों के प्रतिवेदन, मोनोग्राफों शोध प्रबन्धों एवं पाण्डुलिपियाँ । सूचना के इन प्राथमिक स्रोतों को मूल स्रोत कहते हैं । सभी विषयों से सम्बन्धित शोध कार्यों के लिए प्राथमिक सूचना स्रोत अति आवश्यक होते हैं क्योंकि यही स्रोत विशेषज्ञों को शोध कार्य के विकास में आधार प्रदान करते हैं ।

प्राथमिक सूचना स्रोतों के आधार पर नवीन सूचनाओं की रचना की जाती है तथा शोधकार्य की पुनरावृत्ति को रोकने में अधिक सुविधा होती है ।

प्राथमिक सूचना स्रोतों की श्रेणियों के अन्तर्गत प्रकाशनों के अनेक रूपों को सम्मिलित किया गया है, जैसे शोध पत्रिकाएँ (Research Journals), धारावाहिक (Serials), मैगजीन (Magazine), बुलेटिन (Bulletin), सम्मेलन कार्यवाही (Proceedings) मानक (Standards), एकस्व (Patents), शोध प्रबन्ध (Dissertations), व्यसायिक साहित्य (Trade Literature), सरकारी प्रकाशन (Government Publications), मानचित्र एवं चार्ट्स (Maps and Charts) तथा अप्रकाशित स्रोत (Unpublished Sources).

(1) शोध पत्रिकाएँ (Research Journals)-

नवीन सूचनाओं के प्रसार के लिए पत्रिकाएँ एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं । 17वीं सदी के मध्य में शोधों एवं प्रयोगों द्वारा प्राप्त परिणामों के सूचनाओं के प्रसार एवं प्रचार हेतु पत्रिकाओं का प्रचलन प्रारम्भ हुआ । इसको एक खुले अभिलेख (an open record) के रूप में विकसित किया जिसमें प्रत्येक शोधकर्त्ता अपने विचारों अथवा मतों की समीक्षा अथवा आलोचना हेतु अपने साथी वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत करते रहे । यद्यपि वर्तमान में उपलब्ध पत्रिकाओं में केवल वास्तविक शोध एवं खोजों से सम्बन्धित वास्तविक सूचना ही नहीं मिलती, बल्कि विशिष्ट विषयों से सम्बन्धित प्रशासनिक एवं व्यक्तिगत समाचार के साथ-साथ समाज के अन्य क्षेत्रों से सम्बन्धित लेखों के सारांश एवं पुस्तक समीक्षा आदि से सम्बन्धित सूचनाएँ भी मिलती है।

शोध पत्रिकाओं के अन्तर्गत इसके अन्य रूपों जैसे बुलेटिनस या विज्ञप्तियाँ, जर्नलस, प्रोसीडिंग्स एवं ट्रान्जंकसन्स आदि को सम्मिलित किया जाता है । ये पत्रिकाएँ एक निश्चित अन्तराल पर प्रकाशित होते रहते हैं। यद्यपि वार्षिकी एवं समाचार पत्र भी एक निश्चित अन्तराल पर प्रकाशित होते हैं, लेकिन इनको पत्रिका की श्रेणी में सम्मिलित नहीं किया जाता है । शोधों एवं प्रयोगों से सम्बन्धित वास्तविक सूचना का अधिकांश भाग पत्रिकाओं के द्वारा ही प्राप्त होता है । पुस्तकों की तुलना में अद्यतन सूचनाएँ पत्रिकाओं के माध्यम से बहुत कम समय में उपलब्ध होती है, जबकि ऐसी सूचनाएँ शोध कर्ताओं को पुस्तकों के माध्यम से देर से प्राप्त होती हैं ।

इस प्रकार नये-नये शोधों के परिणामों की सूचना को शोधकर्ताओं को उपलब्ध करवाने में इनके द्वारा एक सप्ताह समय लगता है, जबकि यही सूचना पुस्तक के द्वारा दो या तीन वर्ष में प्राप्त होते हैं । वर्तमान में शोध गति विधियों में वृद्धि के साथ-साथ ज़िसगति से शोधकार्य संचालित किये जाते हैं उसी के अनुपात में वास्तविक सूचनाओं को शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित की जाती है ।

इस प्रकार पत्रिकायें शोध अथवा विशिष्ट ग्रन्थालयों के संकलन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं ।

उदाहरण

1. सरस्वती सुषमा, 1942, वाग्रणसी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय, त्रैमासिकी ।
2. Journal of Dharama, 1975, Banglore, Ouarterly.
3. Journal of American Oriental Socoety, 1851, USA, Conneticus, Quarterly.

4. महस्विनी (विद्यापीठ शोध पत्रिका), 1999, तिरूपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठम, छमाही ।
5. अर्वाचीन संस्कृतम्, 2008, नयी दिल्ली, देववाणी परिषद्, त्रैमासिक ।
6. Journal of Indian Council of Philosophical Research, 1983, New Delhi, I.C.P.R., Quarterly.
7. Sri Venkateswara University Oriental Journal, 1957, Tirupati, O.R.I.S.V.U,
8. Journal of Sukrtindra Oriental Research Institute, 1999, Kerela, University of Kerala, Six Monthly.
9. श्रमण, 1950, जैनशोध संस्थान, वाराणसी, हिन्दी, संस्कृत ।
10. शोध प्रभा, नई दिल्ली : श्री लाल बहादुर केन्द्रीय सं.वि., 1978. संस्कृत ।

(2) धारावाहिक (Serials)-

शोध पत्रिका की भांति धारावाहिक भी सामयिकी का एक रूप है तथा इन धारावाहिकों के माध्यम से भी हो रहे विभिन्न क्षेत्रों में शोधों एवं प्रयोगों के द्वारा प्राप्त नयी सूचनाओं का विवरण भी शोधकर्त्ताओं एवं विद्वानों को एक निश्चित अन्तराल पर उपलब्ध करायी जाती है । क्रमिक अथवा धारावाहिक प्रकाशन खण्डों में प्रकाशित होती है।

(3) शोध प्रतिवेदन (Research Report)-

शोध प्रत्रिकाओं के बाद शोध प्रतिवेदन एक महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत है । यह शोध की प्रगति के सम्बन्ध में नवीनतम सूचना प्रदान करते हैं । यह एक सामयिक प्रकाशन है। इसका हर खण्ड और अंक विषय विवेचन की दृष्टि से पूर्ण एवं स्वतन्त्र होता है पर विषय के उद्देश्यों के अनुसार उसके मुख्य विषय के एक क्षेत्र से सम्बन्धित रहते हैं। इनका प्रकाशन खण्डों में होता है ।

मौलिक शोध की तुलना में औद्योगिक शोध एवं विकास में इन प्रतिवेदनों का अधिक महत्व होता है । ऐसे प्रतिवेदनों का संकलन सामयिक साहित्य के रूप में किया जाता है। इस प्रकार औद्योगिक शोधों एवं विकासों में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं शोधकर्त्ताओं के लिए ये प्रतिवेदन महत्वपूर्ण सूचना स्रोत हैं।

(4) शोध विप्रबन्ध (Research Monographs)-

शोध विप्रबन्ध भी प्राथमिक सूचना काएक महत्वपूर्ण स्रोत होता है । इन शोध विप्रबन्धों को शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित करना सम्भव नहीं हो पाता हो इसलिए इन शोध विप्रबन्धों को प्रतिवेदन रूप में अलग से प्रकाशित किया जाता है, जो पूर्णतः एकांगी होते हैं। इन्हें शोध मोनोग्राफ भी कहा जाता है तथा यह लेखक अथवा शोधकर्त्ता के मौलिक एवं पिछले अप्रकाशित कार्य के प्रस्तुतीकरण से पूर्व वर्तमान सिद्धान्तों एवं प्रयोगों का

संक्षिप्तिकरण करता है । यह किसी विषय विशेष में चल रहे शोध गतिविधियों के एक ग्रन्थमाला के रूप में प्रकाशित होता है । शोध विप्रबन्ध में मौलिक शोधों के निष्कर्षों एवं परिणामों से सम्बन्धित तथ्यों अथवा विवरणों को प्रकाशित किया जाता है । सामान्यतः शोध विप्रबन्ध भी अन्य ग्रन्थों से भिन्न नहीं होती, लेकिन इसमें निहित सूचना अत्यन्त सीमित होती हैं ।

(5) सम्मेलन कार्यवाही (Conference Proceedings)-

शिक्षण संस्थाएँ, एवं अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठन ज्ञान के सभी क्षेत्रों में समय-समय पर स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठी, सम्मेलन एवं कार्यशाला का आयोजन करते रहते हैं। इन कार्यवाहियों के माध्यम से विषय विशेषज्ञों, विद्वानों, वैज्ञानिकों एवं शोधकर्त्ताओं को अपने विचारों के विनिमय का अवसर प्राप्त होता है। सम्मेलन के दौरान जितने भी लेख पढ़े जाते हैं वे सभी लेख सूचना के मुख्य स्रोत होते हैं । वर्तमान समय में सम्मेलन कार्यवाहियों को मुद्रित के साथ साथ ई ग्रन्थ में भी प्रकाशित किया जाता है। इससे विषय विशेषज्ञों एवं शोधकर्ताओं को सम्मेलन कार्यवाहियों से सम्बन्धित सूचना प्राप्त करने में अधिक कठिनाई नहीं होती ।

(1) 42 वाँ अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन विशेषांक । सं.सं. वि.वि.- वाराणसी, 2008 ।

(2) 42वाँ अखिल भारतीय प्राच्यविद्या स्मृति विशेषांक / सं.सं. वि. वि.-वाराणसी, 2008 ।

(3) विश्व संस्कृत सम्मेलन-विशेषांक / सं.सं.वि.वि.-वाराणसी : सं.सं.वि.वि., 2008 ।

(6) मानक (Standards)-

विभिन्न-क्रियाकलापों अथवा सामग्रियों या वस्तुओं के उपयोग में एकरूपता बनाये रखने के लिए गुणों के आधार पर मानक निर्धारित किये जाते हैं। मानक एक ऐसी पुस्तिका है जिसमें उत्पादों की परिभाषा, विधि, गुणवत्ता तथा सही माप आदि के बारे में पूर्ण सूचना सही माप आदि के बारे में पूर्ण सूचना दी हुई होती है ।

वैज्ञानिक शोधों में मानकों का उपयोग अति आवश्यक माना गया है । विश्व के अधिकांश देशों में उद्योगों एवं व्यापारिक गतिविधियों में गुणवत्ता बनाये रखने के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मानकों के उपयोग को अनिवार्य कर दिया गया है। इस प्रकार मानक भी प्राथमिक स्रोत का एक प्रकार है। भारतीय मानक संस्थान (Bureau of Indian Standard) प्रतिवर्ष 300 मानक स्थिर करता है।

(7) एकस्व (Patents)-

सूचना के प्राथमिक स्रोतों के अनेक प्रकारों में से एकस्व भी एक है। एकस्व के आविष्कारकर्त्ता अथवा निर्माणकर्त्ता को एक भौगोलिक परीधी के अन्तर्गत शासकीय मान्यता

एवं स्वीकृति तथा पंजीकरण की अनुमति प्रदान की जाती है जिससे उनको शासन की ओर से यह सुविधा मिल जाती है कि आविष्कारकर्त्ता एक निर्धारित समय तक उपयोग अथवा विक्रय करने का अधिकार रखेगा तथा अन्य दूसरा कोई व्यक्ति या संस्था आविस्कारकर्त्ता के एकस्व पर किसी प्रकार का दावा नहीं कर सकता। नये-नये उत्पादों से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए एकस्वों का उपयोग किया जाता है । प्रत्येक देशों में एक राष्ट्रीय एकस्व संस्था होता है जहाँ से वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, अभियन्ताओं एवं अन्य आविष्कारकर्त्ताओं को उनके नये-नये आविष्कारों के लिए एकस्वों की मान्यता दी जाती है।

(8) शोध प्रबन्ध (Dissertations)-

सभी प्रकार के विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में शोध करने की सुविधा होती है। शोधकर्त्ता को सम्बन्धित विषय में एम.फिल. अथवा पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त करने हेतु विषय विशेषज्ञ के मार्ग निर्देशन में शोध प्रबन्ध लिखकर-सम्बन्धित संस्था में जमा करना पड़ता है । इन शोध प्रबन्धों में दी गयी सूचना, आंकड़े ठोस एवं प्रमाणित होते हैं। इस प्रकार शोध प्रबन्ध में मौलिक सूचना उपलब्ध होने के कारण अधिकांश शोधकर्त्ता अपने शोधकार्य में इनका उपयोग करते हैं ।

(9) व्यावसायिक साहित्य (Trade Literature)-

औद्योगिक एवं व्यापारिक गतिविधियों से सम्बन्धित सूचना स्रोतों को व्यावसायिक साहित्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है । विभिन्न व्यापारिक एवं औद्योगिक संगठन या एजेन्सियाँ अपने उत्पादों की सूचना को विभिन्न रूपों में जैसे प्राविधिक बुलेटिन, मूल्य-तालिका, लघु हस्त-पुस्तिकाएँ एवं संस्था पत्रिकाओं के रूप में प्रकाशित किये जाते हैं। अन्य मुद्रित पुस्तकों की भांति व्यावसायिक साहित्य की बिक्री पुस्तक विक्रेताओं द्वारा नहीं की जाती है । दूर-दर्शन एवं इन्टरनेट के आ जाने से व्यावसायिक साहित्य से सम्बन्धित अधिकांश सूचना उपयोक्ताओं को इन माध्यमों से प्राप्त होते हैं । इस प्रकार व्यावसायिक सूचना प्राप्त करने का यह महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत होता है ।

(10) सरकारी प्रकाशन (Government Publications)-

सरकारी प्रकाशन का अभिप्राय उन शासकीय प्रकाशन से है जिनकी उत्पत्ति शासन के द्वारा हुई हो । इसमें शासन की नीतियाँ, निर्णय, विधान सम्बन्धी कार्य, न्यायिक कार्य के साथ-साथ अन्य गतिविधियाँ एवं प्रगतियों को प्रकाशित किया जाता है । शासकीय प्रकाशनों की श्रृंखला तथा कोड संख्या होते हैं। ये प्रलेख अभिज्ञान के सामान्य साधन माने जाते हैं । इनकी व्यवस्था करने वाली एजेन्सी तथा प्रस्तुत करने वाली संस्थाएँ इन कोड संख्याओं का प्रयोग करती हैं ।

सरकारी प्रकाशन पाठकों के लिए निम्नलिखित तीन कारणो से महत्वपूर्ण एवं उपयोगी होते हैं–

(1) यह एक मात्र सामाजिक, आर्थिक समझौते जैसे जनसंख्या शिक्षा, समाज कल्याण, उद्योग, व्यापार आदि का सांख्यिक आंकड़ों की सूचना प्राप्त करने का स्रोत है।

(2) यह एक मात्र नियमित जानकारी प्राप्त करने का स्रोत है । जैसे नियम और कानून, नागरिक अधिकारों की सीमा, व्यापारिक संघों के अधिकार आदि ।

(3) दो प्रकार की नयी सूचना के स्रोत एकस्व तथा मानचित्रों के द्वारा सामान्य जन को सूचना देते हैं ।

भारत के राष्ट्रीय ग्रन्थालय, कोलकता में सरकारी प्रकाशनों के संग्रहण, एवं उपयोग हेतु इण्डियन ऑफीसीयल डॉकूमेन्ट सेक्सन तथा फोरन आफीसीयल डॉकूमेन्ट सेक्सन दो अलग-अलग विभागों की स्थापना की गयी है । सरकारी गतिविधियों के फलस्वरूप उत्पन्न नयी सूचना सर्वप्रथम सरकारी प्रकाशनों के माध्यम से ही उपलब्ध होती है ।

(11) मानचित्र एवं चार्ट्स (Maps and Charts)-

मानचित्र एवं चार्ट्स का भी अपना एक सूचनात्मक महत्व है । चौरस वस्तु पर पृथ्वी के तल का चित्रण मानचित्र है तथा इनके संग्रह को मानचित्रावली कहते हैं । तल के चित्र को चार्ट कहा जाता है । पर्यटन, भ्रमण, सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करने तथा विभिन्न प्रकार के शोधगतिविधियों को पूरा करने हेतु इनकी आवश्यकता पड़ती है । यह भौगोलिक जानकारी प्रदान करने के सूचना के महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत हैं साथ ही साथ, इनके द्वारा राष्ट्र, राजनैतिक क्षेत्र, पैदावार, वर्षा आदि की भी सूचना प्राप्त होती है ।

(12) अप्रकाशित स्रोत (Unpublished Sources)-

प्राथमिक स्रोत के अप्रकाशित स्रोतों के अन्तर्गत साहित्य, मानविकी और समाज विज्ञान के क्षेत्र में ऐसे स्रोतों की संख्या अधिक होती है । कई बार ऐतिहासिक लाभ हेतु भी इस प्रकार के अप्रकाशित स्रोतों का उपयोग किया जाता है। हस्तलिखित ग्रन्थों को अप्रकाशित स्रोत में सम्मिलित किया जा सकता है । इसके अतिरिक्त इसमें प्रयोगशाला नोटबुक, स्मरण पत्र एवं ज्ञापन, व्यक्तिगत डायरी, व्यक्तिगत पत्र, कम्पनी फाइल, आन्तरिक शोध प्रबन्ध, चित्रावली, सिक्के, संस्मरण, मौखिक इतिहास तथा कैसेट में संग्रहित साक्षात्कार की सूचना आदि आते हैं ।

इस प्रकार इन सभी सूचना स्रोतों की सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषयों का अध्ययन करने में आवश्यकता पड़ती है । इसीलिए इन्हें प्राथमिक सूचना स्रोतों की श्रेणी में रखा जाता है।

4.2 द्वितीयक सूचना स्रोत (Secondary Information Sources)-

प्राथमिक सूचना स्रोतों के आधार पर ही द्वितीयक सूचना स्रोत निर्मित किये जाते हैं। प्राथमिक सूचना स्रोतों में उपलब्ध सूचनाओं को इस प्रकार विन्यसित एवं प्रस्तुत किया जाता है जिससे पाठक कम से कम समय में उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है। बहुत से प्राथमिक स्रोत जब समय पर उपलब्ध नहीं होते तो ऐसी स्थिति में उनके बारे में जानने के लिए द्वितीयक स्रोत एक मात्र साधन होते हैं । इसमें विषय का विवेचन व्यवस्थित रूप से आवश्यकतानुसार संक्षेप में अथवा विस्तार के साथ आवश्यक ग्रन्थात्मक विस्तार के साथ किया जाता है । ये मुख्यतया तीन प्रकार के होते हैं–

1. वे सूचना स्रोत जो प्राथमिक सूचना स्रोतों में उपलब्ध सामग्री की अनुक्रमणिका बनाते हैं या उनके साथ मूल लेखक का सार भी प्रस्तुत करते हैं । इनका उद्देश्य एक विषय पर प्रकाशित सूचना की जानकारी देना होता है । अनुक्रमणिकाएँ, वाङ्मय सूचियाँ एवं सार पत्रिकाएँ को इसी श्रेणी में सम्मिलित किये जाते हैं। मुद्रित पाठ्य-सामग्री की भी व्यवस्थित सूची को वाङ्मय सूची कहा जाता है । जबकि सारपत्रिकाओं में लेखों के संक्षिप्त सारांश दिये होते हैं । इसी प्रकार अनुक्रमणिका में सामायिकियों में प्रकाशित लेखों की विषय शीर्षकों की व्यवस्थित सूची संचित रहते हैं ।

2. दूसरी श्रेणी में उनसूचना स्रोतों को सम्मिलित किया जा सकता है जो किसी एक विषय पर विस्तृत, सूचना देते हैं । ऐसे सूचना स्रोतों को प्राथमिक साहित्य का सर्वेक्षण करके तैयार किया जाता है । इसके उदाहरण है समीक्षाएँ एवं प्रबन्ध लेख ।

3. तीसरे प्रकार में वे स्रोत-सम्मिलित हैं जिसके प्राथमिक सूचना स्रोतों से सूचना एकत्रित कर एक विषय पर पुनः सूचना प्रतिवेदित की जाती है । इनमें विश्वकोश, हस्तपुस्तिकाएँ एवं अन्य समकक्ष स्रोतों को सम्मिलित किया जाता है ।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के कुछ विद्वान लेखकों ने सूचना के द्वितीयक स्रोत के श्रेणी में जिन रूपों को रखा है, उनका विवरण निम्न है–

जॉर्ज एस बॉन के अनुसार, "सूचना के द्वितीयक स्रोत के अन्तर्गत वाङ्मय सूचियाँ, अनुक्रमणिकरण एवं सारपत्रिकाएँ, सर्वेक्षण प्रकार (समीक्षा, प्रबन्धक, विनिबन्ध) एवं सन्दर्भ पुस्तकों को सम्मिलित किया गया है ।"

इसी प्रकार सी. डब्लू हैन्सन ने सूचना के द्वितीयक स्रोत के अन्तर्गत सारकरण एवं अनुक्रमणिकरण पत्रिका, प्रपत्रिकाएँ, उद्धरण अनुक्रमणिका, विषय वाङ्मय सूची, समीक्षा तथा सर्वेक्षण आदि को सम्मिलित किया है ।

द्वितीयक सूचना स्रोतों को निम्न श्रेणी में विभक्त किया गया है।

(1) वाङ्मय सूची (Bibliography)-

वाङ्मय सूची से तात्पर्य है वह सूची जो किसी लेखक विशेष, विषय विशेष, समय विशेष पर लिखित ग्रन्थों अथवा पत्रिका में प्रकाशित लेखों का व्यवस्थित तथा विवरणात्मक

सूची है। पुस्तकालयों में पुस्तक चयन के उपकरण के रूप में इनका प्रयोग किया जाता है । वाङ्मय सूचियों के प्रकारों के अन्तर्गत-सार्वभौमिक वाङ्मय सूची, राष्ट्रीय वाङ्मय सूची, व्यावसायिक वाङ्मय सूची, विषयगत वाङ्मय सूची एवं लेखक वाङ्मय सूची को सम्मिलित किया गया है । ये अकसर लेखक या विषय के द्वारा वर्णानुक्रमिक, कालानुक्रमिक या प्रकरणानुसार व्यवस्थित होती हैं । यह व्यापक या चयनित हो सकती है ।

इन वाङ्मय सूचियों के माध्यम से उपयोक्ताओं को अपने अभिरूचि की पुस्तक या अन्य सामग्री खोजने में सहायता मिलती है । संस्कृत वाङ्मय में हस्तलिखित ग्रन्थों से सम्बन्धित कैटलॉगस कैटलागोरम (Catalogus Catalogorum) एवं न्यू कैटलॉगरु कैटलोगोरम (New Catalogus Catalogorum) महत्वपूर्ण वाङ्मय सूचियाँ हैं ।

(2) सामयिक प्रकाशन (Periodicals)-

समस्त सामयिक प्रकाशन-मौलिक सूचना प्रदान नहीं करते । बहुत से ऐसे सामयिक प्रकाशन है जो प्राथमिक सूचना स्रोतों में अभिलेखित विकासों की व्याख्या करने एवं मत देने में विशिष्ट हैं ।

(3) अनुक्रमणीपत्रिका (Indexing Journals)-

अनुक्रमणी पत्रिका प्राथमिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले लेखों की आख्याओं का नियमित संकलन है । नयी पुस्तकों, पम्फलेट्स आदि की आख्याएँ भी इसमें सम्मिलित होती हैं । ये पत्रिकाएँ एक निश्चित अन्तराल पर प्रकाशित होती हैं। इसका विषय क्षेत्र प्रायः एक वृहद् विषय होता है ।

अनुक्रमणी पत्रिकाओं की सहायता से एक विषय पर साहित्य खोजा जा सकता है। संस्कृत एवं प्राच्य विद्याओं में भी अनुक्रमणिकाओं का प्रकाशन हुआ है ।

(4) सारांश पत्रिका (Astracting Journals)-

सारांश पत्रिका को द्वितीयक सूचना स्रोत की श्रेणी में सबसे अधिक महत्व दिया गया है । सारांश प्रलेखों के उद्देश्यों, कार्यक्षेत्र एवं उपलब्धियों का संक्षिप्तीकरण है । इस प्रकार सारांश पत्रिकाओं से तात्पर्य नियमित रूप से प्रकाशित तथा सुव्यवस्थित पत्रिकाओं से होता है जिनके अन्तर्गत संक्षेप में प्राथमिक स्रोतों की पत्रिकाओं के लेख जो उन विशिष्ट विषयों से सम्बन्धित हो, नव शोध विप्रबन्धों, प्रतिवेदनों, प्रमाणकों तथा अन्य प्राथमिक प्रकाशनों को संकलित किया होता है । इसमें लेख के सारांश के साथ ही साथ उसका ग्रन्थपरक विवरण भी दिया रहता है । इसका मुख्य उद्देश्य ऐसे उपयोक्तओं को जानकारी देना है जो किसी कारणवस या समयाभाव के कारण मौलिक प्रलेख तक पहुँचने में असमर्थ होते हैं।

(5) प्रगति समीक्षा (Reviews of Progress)-

प्रगति समीक्षा प्राथमिक साहित्य का सर्वेक्षण होती है । समीक्षात्मक साहित्य एक विशिष्ट विषय पर एक विस्तृत लेख होता है । इनका मुख्य उद्देश्य दी गयी निश्चित अवधि

के साहित्य को क्रमबद्ध एवं परस्पर सम्बन्धि करना है । यह सम्बन्धित विषय के विकास एवं प्रवृत्तियों को भी बताती है । ये सामयिक प्रकाशन के लेखों के रूप में या नियमित रूप से जैसे मासिक, द्विमासिक या त्रैमासिक पत्रों के संग्रह के रूप में प्रकाशित हो सकती है।

इस प्रकार प्रगति समीक्षा के द्वारा नयी समस्या की पृष्ठभूमि की सूचना प्राप्त की जा सकती है । इसमें दी गयी सन्दर्भ सूची विषय की निश्चित अवधि के लिए उत्तरम ग्रन्थ सूची के रूप में उपयोग किये जा सकते हैं ।

(6) सन्दर्भ ग्रन्थ (Reference Books)-

सन्दर्भ ग्रन्थ वाह्य स्मृति सहायक साधन है तथा किसी विशेष उद्देश्य के लिए इनका उपयोग किया जाता है । सन्दर्भ ग्रन्थों का अवलोकन खास तथ्य से स्पष्टीकरण एवं पुष्टिकरण के लिए किया जाता है । ए. एल. ए. ग्लौसरी ऑफ लाइब्रेरी टर्मस के अनुसार, "निश्चित विषयों की जानकारी के लिए सन्दर्भ ग्रन्थ की रचना विशिष्ट संयोजन पद्धति के द्वारा की जाती है । इसका अध्ययन निरन्तर कदाचित ही किया जाता है और इसका उपयोग पुस्तकालय के अन्दर ही सीमित रहती है ।"

इसी प्रकार डा. एस. आर. रंगनाथन ने भी सन्दर्भ ग्रन्थ की परिभाषा की है–"सन्दर्भ पुस्तक ज्ञात सूचनाओं का संकलन एवं संगठन इस प्रकार करती है कि अभिष्ट सूचना तत्काल एवं विषय के रूप में सामने आती है ।[11]

इस प्रकार सन्दर्भ ग्रन्थों में सूचना एक दूसरे से सम्बन्धित नहीं होती तथा इन्हें शुरू से अन्त तक नहीं पढ़ा जाता है । इन ग्रन्थों का उपयोग ज्यादातर ग्रन्थालयों के भीतर ही किया जाता है । सन्दर्भ ग्रन्थ के श्रेणियों का विवरण इस प्रकार निम्नलिखित है–शब्दकोश (Dictionary) सन्दर्भ पुस्तकों में शब्दकोश का स्थान सबसे पहले आता है क्योंकि इस स्रोत का उपयोग सभी श्रेणी के पाठकों द्वारा प्रारम्भ से ही शुरू कर दिया जाता है । शब्दकोश ऐसा ग्रन्थ है जो किसी भाषा, विशिष्ट विषयों एवं लेखकों के शब्दों से सम्बन्धित होता है । संस्कृत एवं प्राच्य विद्या में यास्क द्वारा विरचित निघण्टु एवं निरूक्त प्राचीनतम कोश है ।

शब्दकोश मुख्यतः दो प्रकार के हो सकते हैं–

(1) सामान्य शब्दकोश (General Dictionary) एवं

(2) विषयगत शब्दकोश (Subject Dictionary) :

सामान्य शब्दकोश में एक अथवा अधिक भाषाओं के शब्दों की अर्थ दी हुई होती है। जिन शब्दकोशों में दो भाषाओं में शब्द दिये होते हैं उन्हें द्विभाषी (Bilingual) तथा दो से अधिक भाषाओं के शब्द दिये होने पर बहुभाषी शब्दकोश (Multitingual Dictionary) कहा जाता है । उदाहरणार्थ–

1. Sanskrit English Dictionary by Monier Williams.

2. Sanskrit-German Dictionary.

3. Sanskrit - Hindi Dictionary by Vaman Shivram Apte.

4. English Sanskrit Dictionary by Monier Williams.

5. Neeta's Sanskrit - Hindi - English Dictionary.

विषयगत शब्दकोश में किसी एक विषय के सभी प्रमुख शब्दों की अर्थ या परिभाषा दी हुई होती है तथा इसमें शब्दों का विन्यसन वर्णानुक्रम में होता है । उदाहरणार्थ–

1. संस्कृत सङ्गणक शब्द कोश/सम्पादन द्वारा श्रीनिवास वररवेदी - हैदराबाद : संस्कृत परिषद, उ.वि.वि., 2009 ।

2. धर्म और संस्कृति कोश / अरूण.-नई दिल्ली राधा पब्लिकेशन्स, 2007 ।

3. Dictionary of Mythology / Lewis Spence.-

4. वैदिक कोश / सूर्यकान्त - बनारस : का.हि.वि.वि., 1963 ।

विश्वकोश (Encyclopaedia)-

विश्वकोश ऐसा ग्रन्थ है जिसमें समस्त ज्ञान के आवधारणाओं को पूर्णतः स्पष्ट किया गया होता है । विश्वकोश में ज्ञान की विभिन्न शाखाओं की सामान्य सूचना प्रदान करने वाले सूचनात्मक लेख होते हैं। विश्वकोशों में विषय से सम्बन्धित सूचनाओं का विन्यसन वर्णानुक्रम में होता है । इस प्रकार विश्वकोश ज्ञान के भण्डार होते हैं तथा किसी विषय के पृष्ठभूमि एवं इतिहास से सम्बन्धित सूचना खोजने के लिए इनका उपयोग किया जाता है। विश्वकोश को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है, जैसे–

(1) सामान्य विश्वकोश (General Encyclopaedia) एवं

(2) विशिष्ट विश्वकोश (Special Encyclopaedia)

सामान्य व्रिश्वकोश में सभी प्रकार के ज्ञान सामग्री का विषयानुसार सारांश लेख सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप में वर्णित होते हैं । Encyclopaedia Britannica एवं Encyclopaedia Americana इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। विशिष्ट विश्वकोश के अन्तर्गत एक विषय या किसी विषय विशेष से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्रित करके आलेखों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है । विशिष्ट विश्वकोश को विषय विश्वकोश के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसमें किसी विषय विशेष के सभी पक्षों के नाम से सूचना वर्णनानुक्रम में व्यवस्थित होते हैं विज्ञान, समाज-विज्ञान, धर्मशास्त्र एवं प्राच्य विद्या एवं मानविकी के क्षेत्र अनेक विश्वकोशों को प्रकाशित किया गया है । उदाहरणार्थ–

1. Encyclopaedia of Religion and Ethics- James Hastings.

2. Encyclopaedia of Philosophy/ George W. Friedrich .

3. Encyclopaedia of Hinduism.

4. Encyclopaedia of Upanishades / Ravi Narayan Pandey. - New Delhi : Anmol Publications, 2007.
5. Encyclopaedia of Vedanta / P.R.P. Sharma.- New Delhi : Anmol Publications, 2007.
6. Encyclopaedia of Buddhist Tantra/Shiv Shankar Tiwari.-New Delhi : Anmol Publications, 2009.
7. Encyclopaedia of Vedas/P.R.P. Sharma.-New Delhi. Anmol Publications, 2007.

हस्तपुस्तिका (Handbooks)- हस्तपुस्तिकाओं में मिश्रित सूचनाओं को सुव्यवस्थित एवं संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है । इसमें आंकड़े, विधियाँ, सिद्धान्त, सूत्र, सारणियाँ, चित्र एवं तथ्यात्मक सूचनाएँ आदि उपलब्ध होते हैं । यह वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों एवं प्राविधिक कार्य से सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा अधिक उपयोग की जाती है ।

नियम पुस्तिका (Manual)-विभिन्न प्रकार के संस्थाओं में कौन-कौन से कार्य किस-किस रूपों में करना है के सम्बन्ध में नियम पुस्तिका से सही दिशा निर्देश मिलता है। नियम पुस्तिका का उपयोग चिकित्सा, प्राविधिक, औद्योगिक एवं तकनीकी क्षेत्रों के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में किया जाता है ।

सारणियाँ (Tables)-सारणियाँ तथ्य प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं । अधिकांश हस्तपुस्तिकाओं में तथ्य सारणियों के रूप में दिये होते हैं । सारणियों के सहायता से वांछित सूचना प्राप्त करने में पाठकों के समय की बचत होती है ।

अनुवाद (Translations)-सूचना के द्वितीयक स्रोत के अन्तर्गत अनुवादित सामग्रियों को भी सम्मिलित किया जाता है । विज्ञान एवं प्रद्यौगिकी से सम्बन्धित विदेशी भाषा में उपलब्ध साहित्य को अन्य भाषाओं में अनुवादित करके इन स्रोतों को निर्मित किया जाता है ।

प्रबन्ध ग्रन्थ (Treatise)-प्रबन्ध ग्रन्थ भी एक प्रकार से सन्दर्भ एवं सूचना प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण साधन होते हैं । ऐसे ग्रन्थों की रचना किसी विषय विशेष पर उपलब्ध बिस्तृत सूचनाओं के आधार पर की जाती है । किसी शोध के लिए सम्बन्धित विषय में प्रबन्ध ग्रन्थ अधिक मात्रा में प्राथमिक ज्ञान सामग्री उपलब्ध कराते हैं । परन्तु बहुत दिनों तक इनकी नवीनता विद्यमान नहीं रहती तथा कुछ समय बाद ये पुराने हो जाते हैं।

विप्रबन्ध (Monograph)-विप्रबन्ध को मोनोग्राफ भी कहा जाता है । यह प्रबन्ध ग्रन्थ की तुलना में किसी एक विषय या सीमित विषय से सम्बन्धित सूचना प्रस्तुत करता है। प्रबन्ध एवं विप्रबन्ध में भिन्नता होने के बाद भी दोनों का उद्देश्य एक समान होता है।

पाठ्य पुस्तक (Text Books)-पाठ्य पुस्तक कक्षा अध्ययन प्रणाली में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करती है । पाठ्य पुस्तकों में विषय

विशेष से सम्बन्धित सूचना को पाठकों के स्तर को ध्यान में रखकर सम्पूर्ण जानकारी को सरल भाषा में लिखी हुई होती है । इसलिए पाठ्य पुस्तकों के निर्माण में अध्यापन प्रणाली एवं विद्यार्थियों के स्तर को विशेष महत्व दिया जाता है । इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को किसी विशेष विषय की मौलिक जानकारी देना होता है ।

4.3 तृतीयक सूचना स्रोत (Tertiary Information Sources)-

तृतीयक सूचना स्रोत का लक्ष्य प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के बारे में जानकारी प्रदान करना होता है । इनमें विषय से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री नहीं होती है बल्कि विषय के प्राथमिक एवं द्वितीयक सूचना स्रोतों की जानकारी होती है सूचना विस्फोट के इस युग में बिना तृतीयक स्रोत की सहायता लिये प्राथमिक एवं द्वितीयक सूचना स्रोत का जानकारी करना एक कठिन कार्य है । तृतीयक सूचना स्रोतों के अन्तर्गत जिन रूपों को सम्मिलित किया जाता है वे इस प्रकार निम्नलिखित हैं–

(1) संदर्शिकाएँ (Guides)-ए.एल.ए. ग्लोसरी ऑफ लाइब्रेरी टर्मस के अनुसार "संदर्शिका एक हस्तपुस्तिका है जो यात्रियों को किसी स्थान विशेष जैसे शहर, क्षेत्र या देश से सम्बन्धित सूचना उपलब्ध कराती है; या ऐसी कोई अन्य हस्तपुस्तिका जो किसी भवन या अजायबघर के बारे में सूचना प्रदान करती है ।

सामान्य संदर्शिकाओं के अतिरिक्त साहित्यिक सन्दर्शिकाएँ महत्वपूर्ण होती है । सन्दर्शिकाओं का मुख्य उद्देश्य एक विषय के ग्रन्थात्मक संरचना को प्रस्तुत करना है । इन संदर्शिकाओं के माध्यम से पाठकों को किसी विषय विशेष के साहित्य की विस्तृत सूचना प्रदान करने में सुविधा होती है । किसी विषय के मूल्यांकन एवं प्रारम्भिक स्थिति से लेकर उसके विकास की जानकारी उपलब्ध कराना भी इन संदर्शिकाओं का कार्य होता है। इनमें विषय विशेष की जानकारी के जगह उनके सूचना स्रोतों की विवरण दी हुई होती है ।

(2) वाङ्मय सूचियों का वाङ्मयसूची (Bibliography of Bibliographies)- विभिन्न प्रकार की वाङ्मय सूचियों में वृद्धि के कारण सूचना के इस स्रोत की आवश्यकता महसूस की गयी । इनमें उन वाङ्मय सूचियों की एक तालिका रहती है जिनसे उपयोक्ताओं को किसी-विशिष्ट विषय या अनेक विषय पर सम्बन्धित प्रलेखों की सूचियों से अवगत करना होता है जिससे उनको मुद्रित प्रलेखों तक पहुँचने में सुविधा होती है। ग्रन्थात्मक नियंत्रण की दृष्टि से इस तरह के वाङ्मय सूचियों का प्रकाशन अत्यन्त आवश्यक है । इनका विषय क्षेत्र सामान्य एवं विशिष्ट दोनों प्रकार से सम्बन्धित होता है । यह पृथक प्रकाशित पुस्तक, पुस्तक के अंश, सामयिक प्रकाशनों के लेख या अन्य प्रकार के प्रलेख के रूप में हो सकती हैं।

उदाहरण-

A Bibliography of Bibliographies in Religion by J.G. Barrows. Am Arbor, Michigan : Edwards, 1955.

(3) निर्देशिकाएँ (Directiories)-निदेर्शिका में व्यक्तियों, शैक्षणिक संस्थाएँ, व्यावसायिक संगठनों एवं पत्रिकाओं से सम्बन्धित सूचना होती है । इन सूचनाओं में पत्रिकाओं, संस्थाओं, संगठनों एवं व्यक्तियों के नाम एवं पतों की व्यवस्थित सूची दी हुी होती है तथा इनकी विषय क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत होती हैं। निर्देशिकाओं के अन्त में अनुकमणी दिये रहते हैं जिसके सहायता से उपयोक्ता अपनी वांछित सूचना आसानी से खोज सकता है । निर्देशिकाएँ दो प्रकार की होती है, जैसे–

(1) सामान्य निर्देशिकाएँ (**General Directories**) एवं

(2) विशिष्ट निर्देशिकाएँ (**Special Directories**)

उदाहरणार्थ-

Ulrich International Periodical Directory, and

Indian Library Directory.

(4) शोध प्रगति सूची (Lists of Research in Progress)-शोध प्रगति सूची के माध्यम से किसी एक संस्था या प्रयोगशाला या एकरूप संस्थाओं के समूह से सम्बन्धित शोध गतिविधियों की सूचना मिलती है । यह सूची एक नये प्रकार का प्रकाशन है । इसमें सूचना के अन्तर्गत योजना का विवरण, शोधकर्त्ता के नाम, शोध की अवधि तथा धन मुहैया कराने वाली संस्था का नाम आदि दिये रहते हैं । निसकेयर भारत में इस प्रकार की सूचियाँ संकलित करता है । इसके साथ ही साथ, भारतीय - विश्वविद्यालय संघ के द्वारा प्रकाशित "यूनिवर्सीटी न्यूज" (**University News**) के अन्त में विभिन्न विश्वविद्यालयों में जमा किये गये शोध शीर्षकों की सूची प्रकाशित किया जाता है ।

4.4 अप्रलेखीय स्रोत (Non-Documentary Sources)-शोध सम्बन्धी गतिविधियों में सूचना के सम्प्रेषण की दृष्टि से अप्रलेखीय स्रोतों का बहुत अधिक महत्व होता है । इस प्रकार के स्रोत विज्ञान एवं प्रद्यौगिकी के क्षेत्र में संचार का महत्वपूर्ण अंग होते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं–

औपचारिक (**Formal**) एवं अनौपचारिक (**Informal**) सूचना स्रोत ।

औपचारिक स्रोतों में विश्वविद्यालय, शोध संस्थाएँ, संगठन, उद्योग, विद्वत संस्थाएँ, राजकीय विभाग एवं परामर्श केन्द्र आदि सम्मिलित हैं। अनौपचारिक स्रोतों के अन्तर्गत सहपाठियों के साथ वार्तालाप, व्यक्तियों से भेंट, व्यवसायिक सभाओं में उपस्थिति, बैठकों एवं विशिष्ट गोष्ठियों में भाग लेना आदि सम्मिलित हैं। अनौपचारिक स्रोत सूचना सम्प्रेषण का एक शसक्त माध्यम है क्योंकि विषय विशेषज्ञों से वार्तालाप द्वारा प्राथमिक या द्वितीय स्रोतों की सूचना का पता चल जाता है । ये स्रोत अधिक सुविधाजनक होते हैं क्योंकि प्रलेखीय स्रोतो द्वारा विषय का प्रत्यक्ष स्पष्टीकरण सरलता से नहीं किया जा सकता जबकि इन स्रोतों में विषय का प्रत्यक्ष स्पष्टीकरण बहुत आसानी से किया जा सकता है।

डा. एस.आर. रंगनाथन के अनुसार सूचना स्रोतों या प्रलेखों को निम्नचार श्रेणियों में विभक्त किया गया है–

1. परम्परागत प्रलेख (Conventional Documents)-सामान्यतः पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ एवं सामायिकियों को परम्परागत प्रलेखों की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है। इसके अन्दर मौलिक विचार एवं अनुसन्धान आदि के निष्कर्ष की सूचना दी हुई होती है।

2. नवीन परम्परागत प्रलेख (Neo-Conventional Documents)-इस श्रेणी के अन्तर्गत एकस्व (Patents), मानक (Standards), विशिष्टियाँ (Specifications) एवं आधार सामग्रियों को सम्मिलित किया गया है ।

3. अपरम्परागत प्रलेख (Non Conventional Documents)-अपरम्परागत प्रलेखों के अन्तर्गत सूक्ष्म प्रतियाँ (Microforms), श्रव्य (Audio), दृश्य (Visual), श्रव्य दृश्य (Audio Visuals) के साथ ही साथ कम्प्यूटर एवं संचार प्रद्यौगिकी आधारित मेगनेटिक टेप, मेगनेटिक डिस्क, फ्लापी डिस्क, मोशन पिक्चर्स फिल्मस, सी.डी. रोम एवं डि.बी.डि0 आदि को सम्मिलित किया गया है ।

4. मेटा प्रलेख (Meta Document)-सामान्यतः मेटा प्रलेख श्रव्य दृश्य सामग्री का ही एक रूप है । यह परम्परागत प्रलेखों के भौतिक स्वरूप की तुलना में इनके स्वरूप में कुछ भिन्नता होती है । इसमें मानव विचार धारा के स्थान पर परिघटनाओं का अभिलेख होता है । वर्तमान में मेटा प्रलेख के स्थान पर मेटा डेटा (Meta data) शब्द को अधिक से अधिक उपयोग किया जाता है ।

5. सन्दर्भ एवं सूचना स्त्रोतों का मूल्यांकन-
(Evaluation of Reference and Information Sources)

सभी प्रकार के ग्रन्थालयों में उपलब्ध पाठ्य सामग्रियों में विभिन्न श्रेणी के ग्रन्थ संग्रहित होते हैं तथा इन मुद्रित ग्रन्थों को दो वर्गों में विभक्त किया जाता है, जैसे पाठ्य पुस्तक एवं सन्दर्भ ग्रन्थ । अध्ययन एवं अध्यापन में पाठ्य-पुस्तकों का अधिकाधिक उपयोग किया जाता है क्योंकि विषय विशेष के सम्बन्ध में मूलभूत ज्ञान उपलब्ध कराने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । जबकि सन्दर्भ ग्रन्थ वे ग्रन्थ हैं जिनका उपयोग किसी निश्चित सूचना के लिए ग्रन्थालय के अन्दर किया जाता है ।

वर्तमान में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों का अधिकांश भाग मुद्रित रूपों में उपलब्ध हो रही हैं । साथ ही साथ कुछ सन्दर्भ स्रोतों का प्रकाशन डिजिटल एवं ऐलेक्ट्रॉनिक रूपों में भी तिव्रता के साथ प्रकट होते जा रहे हैं । इसलिए ग्रन्थालयों में जिन सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के द्वारा पाठकों के सन्दर्भ प्रश्नों के उत्तर दिये जाते हैं उन स्रोतों का मूल्यांकन किया जाना आवश्यक होता है । बिना मूल्यांकन के यह पता नहीं चल पाता कि कौन सा सन्दर्भ किस स्तर तक उपयोग के लिए उचित है । इसलिए मूल्यांकन ही एक ऐसा मापक है जिससे यह ज्ञात होता है कि कौन सन्दर्भ स्रोत उपयोग

के लिए उपयुक्त है अथवा अनुपयुक्त । संस्कृत साहित्य एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में सन्दर्भ एवं सूचना के स्रोत-बहुत बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं । इन उपलब्ध स्रोतों में यह तय करना कि कौन सा सन्दर्भ स्रोत उत्तम प्रकार के श्रेणी का है तथा कौन सा स्रोत उत्तम प्रकार के श्रेणी का नहीं है । जिन सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों से सन्दर्भ प्रश्नों के उचित उत्तर प्रदान किये जा सकते हैं, वे उत्तम श्रेणी के सन्दर्भ स्रोत हैं ।

सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के अन्तर्गत जिन मुद्रित ग्रन्थों का मूल्यांकन करना आवश्यक है । सन्दर्भ ग्रन्थालयी को ऐसे ग्रन्थों के विभिन्न प्रकारों, उपयोग, स्वरूप एवं उनमें निहित सूचनाओं की पूरी-पूरी जानकारी करनी चाहिए ।

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में उपलब्ध सन्दर्भ में एवं सूचना स्रोतों के प्रकार निम्नलिखित हैं–

1. शब्दकोश (Dictionary)
2. विश्वकोश (Encyclopaedia)
3. वाङ्मयसूची (Bibliography)
4. प्रस्तुत सन्दर्भ स्रोत (Ready Reference Sources)
5. भौगोलिक स्रोत (Geographical Sources)
6. जीवनी स्रोत (Biographical Sources)
7. शासकीय स्रोत (Government Documents)
8. पेटेन्ट (Patent)
9. मानक (Standard)
10. अनुक्रमणीकरण स्रोत (Indexing Sources)
11. सारकरण स्रोत (Abstracting Sources)
12. सम सामयिक घटनाओं से सम्बन्धित स्रोत (Current Affair Sources), एवं
13. अन्य स्रोत (Other Sources), जिसमें कम्प्यूटर आधारित, श्रव्य दृश्य एवं अन्य शुक्ष्म रूपों को सम्मिलित किया जा सकता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थालयी से पूछे जाने वाले प्रश्नों को मोटे तौर पर चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे–

1. सामान्य सन्दर्भ प्रश्न (Current Reference Question)
2. गहन सन्दर्भ प्रश्न (Exhaustive Reference Question)
3. प्रतिदिनी सन्दर्भ प्रश्न (Everyday Reference Question)
4. कैचिंग अप सन्दर्भ प्रश्न (Cateching up Ref. Question)

इस प्रकार पाठकों द्वारा पूछे गये सन्दर्भ प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर सन्दर्भ ग्रन्थालयी सन्दर्भ स्रोतों से उचित उत्तर खोजकर उन्हें प्रदान करता है ।

सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों का मूल्यांकन सार्वजनिक ग्रन्थालयों की तुलना में शैक्षणिक एवं विशिष्ट ग्रन्थालयों में सन्दर्भ ग्रन्थालयी को पाठकों को उचित सेवा प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के प्रकृति एवं उपयोग की जानकारी के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए ।

सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के मूल्यांकन के लिए अपनायी गयी विधियों में भिन्नता हो सकती है अतः उनके गुण एवं दोषों की जाँच के लिए कुछ आधार होना आवश्यक है। निम्नांकित तत्वों के आधार पर सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों का मूल्यांकन किया जा सकता है–

1. प्रमाणिकता (Authority)-सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों की प्रमाणिकता के सम्बन्ध में इन ग्रन्थों के लेखक या लेखकों, प्रकाशकों, वितरकों, संकलन कर्ताओं आदि की योग्यताओं, अनुभव आदि के आधार पर सन्दर्भ ग्रन्थालयी द्वारा निश्चित की जाती है।

2. विषय क्षेत्र (Scope)-अधिकांश ग्रन्थालयों में सन्दर्भ ग्रन्थों के अधिग्रहण के समय में ही यह तय कर लिया जाता है कि ग्रन्थ के अवतरण तथा भूमिका एवं विषय सूची से ही यह तय कर लिया जाता है कि अमूक सन्दर्भ ग्रन्थ किस विषय क्षेत्र से सम्बन्धित है। इस प्रकार सन्दर्भ ग्रन्थालयी के लिए सन्दर्भ ग्रन्थ के क्षेत्र एवं उपयोगिता का सत्यापन करना आवश्यक होता है।

3. प्रतिपादन शैली (Treatment)-सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के प्रतिपादन शैली की जानकारी ग्रन्थ में निहित सूचनाओं के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है । जैसे ग्रन्थ में दी गयी सूचनाएँ कितनी सही एवं विश्वसनीय हैं ।

ग्रन्थ में किसी विषय के प्रति विशेष झुकाव है अथवा नहीं । विषयों को उनके महत्व के अनुसार स्थान मिला अथवा नहीं । आदि-आदि ।

सन्दर्भ ग्रन्थों में विन्यसन का स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है । ग्रन्थ-विन्यासन के अनेक प्रकार होते हैं जैसे भौगोलिक, कालानुक्रमिक, वर्गीकृत, वर्णानुक्रमिक आदि। इनके माध्यम से वांछित सूचना को प्राप्त करने में बहुत सुविधा होती है ।

4. आरूप (Format)-सन्दर्भ ग्रन्थों के वाह्य स्वरूप के अन्तर्गत ग्रन्थ की जिल्द, ग्रन्थ के अक्षर, ग्रन्थ में दी गयी रंगीन चित्र, रेखा चित्र एवं मानचित्र आदि को सम्मिलित किया जा सकता है । इसलिए प्रत्येक सन्दर्भ ग्रन्थालयी को यह हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी सन्दर्भ ग्रन्थ ग्रन्थालय संकलन में पहुँचने के पहले ही ग्रन्थ के वाह्य स्वरूपों में किसी प्रकार की कोई त्रूटि तो नहीं है । यदि उनमें कोई त्रूटि हो या अपूर्ण सूचना निहित हो तो ऐसे सन्दर्भ ग्रन्थों को संकलन में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।

(5) अध्येता (Audience)-सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के अन्तर्गत शब्दकोशों का सर्वाधिक उपयोग होता है, जबकि अन्य प्रकार के सन्दर्भ ग्रन्थों को उनके अध्येताओं के आधार पर विभाजित करना सन्दर्भ ग्रन्थों की भाषा, विषय-क्षेत्र तथा शैली पर निर्भर करता है।

6. सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के मूल्यांकन के लिए आधार सामग्री-

सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के मूल्यांकन के लिए सन्दर्भ ग्रन्थालयी को सन्दर्भ ग्रन्थों के विभिन्न भागों जैसे आख्या पृष्ठ (Tittle Page), पुरोवाक् (Preface), मूलपाठ (Main text), भूमिका (Introduction), विषय सूची (Contents) एवं अनुक्रमणी (Index) में निहित सूचनाओं की पुरी-पुरी जानकारी होनी चाहिए । सन्दर्भ ग्रन्थ के मूल्यांकन में ग्रन्थ के इन्हीं भागों से महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त हो सकती है । इनका विवरण इस प्रकार निम्नलिखित हैं–

1. शीर्षक पृष्ठ (Title Page)-सन्दर्भ 'ग्रन्थ' के सम्बन्ध में शीर्षक पृष्ठ से ग्रन्थपरक पूर्ण सूचना प्राप्त की जा सकती है । ग्रन्थपरक सूचना ग्रन्थ की पूर्ण शीर्षक, उपशीर्षक या सामानान्तर शीर्षक, ग्रन्थकार का नाम एवं उपाधि सम्पादक/अनुवादक, प्रकाशकों के नाम, स्थान एवं वर्ष, खण्ड, भाग एवं आई.एस.बी.एन. (ISBN) से सम्बन्धित सूचना को सम्मिलित किया जा सकता है । इसके साथ ही साथ इस पृष्ठ पर ग्रन्थ के संस्करण, सर्वाधिकार वर्ण एवं ग्रन्थमाला आदि की सूचना भी दी हुई होती है ।

2. पुरोवाक् (Preface)-पुरोवाक से ग्रन्थ के विषय के सम्बन्ध में पूर्ण सूचना प्राप्त हो सकती है । कुछ सन्दर्भ ग्रन्थों में पुरोवाक लेखक के स्थान पर किसी अन्य विषय विशेषज्ञ या प्रतिष्ठित विद्वानों के द्वारा दी जा सकती है । पुरोवाक् का स्थान ग्रन्थ के प्रारम्भिक भाग में निर्धारित होती है तथा ग्रन्थ में निहित सूचना के सम्बन्ध में अद्योपान्त जानकारी प्राप्त हो सकती है ।

3. भूमिका (Introduction)-किसी भी प्रकार के सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के मूल्यांकन में ग्रन्थ की भूमिका बहुत उपयोगी होती है । ग्रन्थ की भूमिका के अन्तर्गत-ग्रन्थ से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाएँ-जैसे ग्रन्थ के उद्देश्य, ग्रन्थकार की योजना, ग्रन्थ की विशेषताओं एवं सीमाओं के साथ ही साथ प्रविष्टियों के व्यवस्थापन आदि के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं।

4. विषय-सूची (Table of Contents)-सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों के मूल्यांकन में विषय सूची की सहायता से ग्रन्थ में निहित अध्यायों के शीर्षकों की जानकारी करने में बहुत सहायता मिलती है । कुछ सन्दर्भ ग्रन्थों में विषय सूची के अन्तर्गत अध्यायों की शीर्षकों का संक्षिप्त वितरण दिया रहता है जबकि कुछ ग्रन्थों में शीर्षकों का विस्तृत विवरण के साथ उल्लेख किया गया होता है । अधिकांश ग्रन्थों में विषय-सूची का स्थान शीर्षक पृष्ठ अथवा प्राकक्कथन के बाद होती है । जबकि विदेशी प्रकाशन के कुछ ग्रन्थों में इसे ग्रन्थ के अन्तिम भाग में दिया रहता है । इस प्रकार ग्रन्थ में निहित विषय का कार्यक्षेत्र, विशेषताओं एवं सीमाओं की जानकारी प्राप्त करने में विषय-सूची की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है ।

5. मूलपाठ (Main Text)-विषय-सूची के बाद सन्दर्भ ग्रन्थों के मूल्यांकन में मूलपाठ को महत्वपूर्ण सूचना स्रोत के रूप में उपयोग किया जा सकता है । क्योंकि मूलपाठ के अन्तर्गत ही ग्रन्थकारों के कार्यों की पूर्ण विवरण दिया रहता है । ग्रन्थ में निहित विषय के सूचनों के सम्बन्ध में पर्याप्त ग्रन्थ सन्दर्भ सूचियाँ दी है अथवा नहीं, सूचना अद्यतन है अथवा प्राचीन, सूचना विश्वनिय है अथवा नहीं, आदि बातों की जानकारी ग्रन्थ के मूल पाठ से की जा सकती है ।

6. अनुक्रमणी (Indexes)-अधिकांश सन्दर्भ ग्रन्थों एवं सूचना स्रोतों के मूलपाठ में दिये गये व्यक्तियों के नामों, प्रकरणों, विषयों एवं स्थानों एवं महत्वपूर्ण तथ्यों आदि की विस्तृत तालिका प्रस्तुत की गयी होती है । अनुक्रमणियों का विन्यसन वर्णानुक्रमण में या कालक्रमानुसार या भौगोलिक क्रमानुसार व्यवस्थित की गयी होती है । जिन सन्दर्भ एवं सूचना स्रोतों में अनुक्रमणी दी गयी होती है; ऐसे ग्रन्थों की अधिक उपयोगिता होती है।

इस प्रकार सन्दर्भ स्रोत चाहे मुद्रित रूप में या ईलैक्ट्रानिक अथवा डिजिटल रूपों में हो इन सभी प्रकार के सन्दभर स्रोतों के मूल्यांकन में उपर्युक्त वर्णित विन्दुओं के आधार पर सन्दर्भ ग्रन्थालयी द्वारा अवलोकन किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है ।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. WEBSTER's new twentieth century dictionary of English Language New York, Collins World, 1978.
2. THE RANDOM House Dictionary of English Language. Bombay, Tulsi Shah Enterprises, 1964.
3. गुप्ता, पवन कुमार एवं पवन, उषा : सन्दर्भ सेवा एवं सूचना स्रोत, द्वितीय संस्करण, जयपुर, आर.वी.एस.ए. पब्लिशर्स, 1998 ।
4. THOMPSON, E.H. : ALA Glossary of Library Terms with a selection of terms in related fields. Chicago, ALA, 1943.
5. GROGAN, D. : Science and technology : An Introduction to literature, 4th ed., London, Clive Binglay, 1982.
6. GUHA, B. : Documentataion and Information. Calcutta : World Press, 1983.
7. त्रिपाठी, एस.एम. एवं गौतम, जे. एन. : सूचना एवं सन्दर्भ के प्रमुख स्रोत, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 2005 ।
8. कौशिक, पूर्णिमा : सन्दर्भ सेवा : सिद्धान्त एवं व्यवहार, जयपुर, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा.लि. 2002।
9. ARORA, Jagadish : Applications of New Information Techonolgy in Libraries and Information Centres. (I Conlis 2004) Kolkata, National Library, 2004.

□□

तृतीय अध्याय

शब्दकोश

(Dictionaries)

1. भूमिका एवं अर्थ-

भारतीय वाङ्मय में प्राचीनतम शब्दकोश वैदिक संहिताएँ हैं। संस्कृत वाङ्मय में शब्दकोश का महत्त्व आचार्य पाणिनि ने उद्घोषित किया था । इसे वेद पुरूष का श्रोत कहा है-"निरूक्तं श्रौत मूच्यते" अर्थात् जैसे शरीर में श्रौतेन्द्रिय की आवश्यकता है ठीक वैसे ही अर्थबोध के लिए शब्दकोश की आवश्यकता है । शब्दकोश से शब्दों के निश्चित अर्थ का बोध होता है । सभी सन्दर्भ स्त्रोतों में शब्दकोश का उपयोग सबसे अधिक किया जाता है तथा सभी वर्ग के उपयोक्ता इनसे परिचित होते हैं। भाषा के ज्ञान के लिए यह आवश्यक साधन है । सिद्धान्तमुक्तवली एवं शब्दशक्ति प्रकाशिका में संकेत ग्रह के आठ साधनों में से "शब्दकोश" को एक प्रमुख साधन माना गया है ।

शब्द कोश शब्दों के अर्थ, उत्पत्ति, विकास, विलोम शब्द, सामानार्थक शब्द उच्चारण, प्रयोग एवं वर्तनी आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करते हैं । शब्दकोश अंग्रेजी भाषा के (Dictionary) शब्द का रूपान्तरण है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द डिक्शनेरियम (Dictionarium) से हुई है । जिसका अर्थ शब्दकोश या शब्दों का संग्रह है । आधुनिक ग्रन्थों में शब्दकोश की जो परिभाषाएँ दी गयी हैं उनके आधार पर शब्दकोशों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है---

1. सामान्य शब्दकोश, तथा
2. विषयागत शब्दकोश

सामान्य शब्दकोश से सम्बन्धित वैबस्टर्स न्यू इन्टरनेशनल डिक्सनरी में जो परिभाषा दी गयी है, वह इस प्रकार है, "यह एक सन्दर्भ ग्रन्थ है जिसमें साधारणतया शब्द वर्णानुक्रम में विन्यसित रहते हैं और उसमें उनके रूप, उच्चारण, कार्य, अर्थ उत्पत्ति तथा अर्थपरक मुहाबरेदार प्रयोग संकलित रहते हैं।"

विषयगत शब्दकोश के सम्बन्ध में जो परिभाषा दी गयी है, वह इस प्रकार है, "यह एक सन्दर्भ ग्रन्थ है जो विषय विशेष या कार्य से सम्बद्ध शब्दों या नामों की सूची अंकित कर उनके अर्थ एवं उपयोग की वर्णन करता है।"

उपर्युक्त इन दोनों परिभाषाओं के अतिरिक्त विलियम ए. काट्ड एवं लुइस शोर्स जैसे आधुनिक विद्वानों ने भाषागत एवं सामान्य शब्दकोशों के सम्बन्ध में अपने विचार दिये है। लुइस शोर्स के अनुसार, "भाषागत शब्दों के संग्राहात्मक ग्रन्थ को कोश कहते हैं। इसके शब्द वर्णानुक्रम अथवा अन्य किसी निश्चित क्रम में संयोजित रहते हैं और उनकी अर्थपरक व्याख्या तथा अन्य सूचनाएँ उसी भाषा में या अन्य भाषा में दी रहती हैं।" विलियम ए. काट्ज के अनुसार, "सामान्य शब्दकोश के दो उद्देश्य होते हैं जैसे, पहला-मुख्य उद्देश्य एवं दूसरा गौण उद्देश्य । मुख्य उद्देश्य के परिपेक्ष्य में किसी भी शब्दकोश का यह मौलिक एवं प्राथमिक उद्देश्य होता है कि उसमें शब्दों तथा पदों की वर्तनी, शब्दार्थ, अभिप्राय, उच्चारण और शब्द विन्यास का उल्लेख अवश्य होना चाहिए ।

गौण उद्देश्य का अभिप्राय यह है कि किसी भी शब्दकोश में कोई एक ही अक्षर की व्युत्पत्ति, प्रमुख स्थानों के नाम स्पष्टतया नदी, पर्वत, अथवा अन्य कोई वस्तु, ऐतिहासिक महत्व के प्रमुख महापुरुषों के नाम, पौराणिक एवं बाइबिल में वर्णित महा पुरुषों तथा महत्वपूर्ण तथ्यों एवं प्रकरणों का वर्णन, विदेशी पदों, मुहावरों एवं वाक्यांशों, पर्यावाची एवं विलोम शब्दों, संकेताक्षरों तथा सामान्य ग्राम्य भाषा के पदों का उल्लेख किया गया होना चाहिए ।

भारतीय परिपेक्ष्य में संस्कृत के प्राचीन कोश रचना कारों द्वारा शब्दकोश के सम्बन्ध में जो परिभाषाएँ दी गयी हैं, वे आधुनिक विद्वानों के परिभाषाओं से अतिप्राचीन है जिनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है । संस्कृत वाङ्मय में शब्दकोश की प्रथम परिभाषा हलायुधकार ने दी है–कोषः शब्दादिसंग्रह यथा अमरकोषः अर्थात् शब्दों के संग्रह को शब्दकोश कहते हैं ।

संस्कृत भाषा के कुछ अन्य प्राचीन शब्दकोशों जैसे अभिधानरत्नमाला, अभिधान चिन्तामणि में शब्द पर्यायज्ञापक को अभिधान कोश कहा गया है । जिसमें विशिष्ट क्रमानुसार शब्दों का संग्रह हो तथा जिसके अध्ययन से शब्दों की प्रकृति, विभिन्न अवयवों एवं अर्थों का ज्ञान होता है उसे शब्दकोश कहते हैं ।

शब्दकोश की प्रकृति एकार्थक, पर्यायार्थक या निरूक्तिमूलक शब्दों का संग्रह हो सकती है, लेकिन सबका अभिप्राय शब्दार्थ बोध ही होता है । शब्दकोश के वैकल्पिक नामों में शब्दावली (Glossary), विदेशी भाषा शब्दकोश (Lexicon), थिजारस (Thesaurus) आदि को सम्मिलित किया जा सकता है ।

2. शब्दकोशों के प्रकार (Types of Dictionaries)-

कोश में निहित शब्दों के विषय के आधार पर निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

(A) सामान्य शब्दकोश (General Dictionary)

(B) विषयगत शब्दकोश (Subject Dictionary)

(C) पारिभाषिक शब्दकोश (Difinitional Dictionary)

सामान्य शब्दकोश में सभी प्रकार के शब्दों की वर्णानुक्रमिक सूची होती है । ये आकार में वृहद अथवा संक्षिप्त हो सकते हों। इनमें प्रयुक्त भाषा के आधार पर इसे तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(1) एकभाषिक कोश (Monolingual Dictionary)

(2) द्विभाषी कोश (Bilingual Dictionary)

(3) बहुभाषी कोश (Multilingual Dictionary)

विषयगत शब्दकोश में किसी विशिष्ट विषय के शब्दों की वर्णानुक्रमिक सूची के साथ ही साथ शब्दों के अर्थ एवं उनकी परिभाषा भी दी हुई होती हैं। उदाहरण :-

1. वैदिक कोश / सूर्यकान्त - वाराणसी, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, 1963 ।
2. योग शब्दकोश/सुभाष विद्यालंकार-दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 2005 ।
3. भारतीय पुरा इतिहास कोश /अरूण- नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशन्स, 2009, (दो खण्ड)
4. संस्कृत सङ्गणक शब्द कोश /श्रीकान्थ जमदाग्नि एवं श्री निवास वारखेदी- हैदराबाद : संस्कृत परिषद्, उ.वि.वि. 2009 ।

पारिभाषिक शब्दकोश में किसी विषय से सम्बन्धित शब्द की संक्षिप्त व्याख्या अथवा उसकी परिभाषा दी गयी होती है । इसमें विषय से सम्बन्धित शब्दों अथवा पदों की विन्यसन वर्णानुक्रम में व्यवस्थित होती हैं । उदाहरणार्थ–

1. A Concise Dictionary of Philosophy/K. Srinivas and V. K. Sastry. - New Delhi : D.K. Printworld (p) Ltd, 2007.

2. भारतीय दर्शन परिभाषा कोश/दीनानाथ शुक्ल-दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 1993।

3. संस्कृत नाट्यकोश / रामसागर त्रिपाठी-यह कोश दो खण्डों में संकलित है । इसके प्रथम खण्ड का शीर्षक "नाटक कोश" है तथा दूसरे खण्ड का शीर्षक "शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली कोश" है ।

4. Indian Philosophical Terms : Glossary and Sources/Kala Acharya, Editor. New Delhi : Somaiya Pubications Pvt. Ltd., 2004, 712.P.

शब्दकोशों में प्रयुक्त भाषा के आधार शब्दकोश के निम्नवर्णित तीन प्रकार हो सकते हैं जैसे–एक भाषिक कोश (Monolingual Dictionary) इसके किसी एक भाषा के पदों या शब्दों की वर्णानुक्रमिक सूची होती है । उदाहरणार्थ–

1. हलायुध कोश : (अभिधान रत्नमाला) । जयशंकर जोशी, सम्पादक-लखनऊं : हिन्दी समिति, 1957, 747 पृ.।

2. Kosha or Dictionary of the Sanskrit Language by Amar Singh with English interpretations and notations/H.T. Colebrooke. Delhi : Nag Publishers, 1990.
3. अमरकोष : अमर सिंह; श्रीमन्नालाल अभिमन्यु-वाराणसी : चौखम्बा विद्या भवन, 2009 ।
4. अमरकोष : नामलिंगानुशासनम् अमर सिंह; हिन्दी चन्द्रिका व्याख्या द्वारा चन्द्रधारी सिंह कल्पितनाम हिमकेर सिंह-दरभंगा तन्त्रवती गीता भवन, 1957, 416, 121 पृ. ।
5. अमर कोष / अमर सिंह, विश्वनाथ झां द्वारा सुधा व्याख्या - दिल्ली मोतीलाल बनारसीदास, 1969 ।
6. नामलिंगानुशासनं नाम अमर कोष : / अमर सिंह; भानुजी दीक्षित, रामाश्रमी व्याख्या; हरगोविन्द शास्त्री; सम्पादक-वाराणसी चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफीस, 1970 11, 664,64 पृ.
7. Amarmandena/V. Raghavan; Editor Poona : Deccan College, 1949. 43p.
8. कोश कल्पतरू / विश्वनाथ; मधुकर मंगेश पाटकर तथा के. वी. कृष्णमूर्ति; सम्पादकद्वय-पूना डेक्कन कालेज, 1957 1, 315 पृ.
9. लिंगानुशासनवर्गः/मुकुन्दशर्मा.-गढ़वाल : मुकुन्द शर्मा. 1962. 312 पृ.
10. कल्पद्रुमकोश :/केशव; राम अवतारशर्मा; सम्पादक-बड़ौदा : ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट, 1928 (दो भाग में)
11. अभिधान चिन्तामणि / हेमचन्द्रा चार्य; व्याख्या द्वारा हरगोविन्द शास्त्री-वाराणसीः चौखम्बा विद्या भवन, 1964. 519 पृ.
12. वाङ्मयार्णव / राम अवतार पाण्डेय - वाराणसी : ज्ञानमण्डल लिमिटेड, 1966. 815 पृ.
13. पाइअ - लच्छी नाम माला । धन पाल; स्मपादन द्वारा बैचरदास जीवराज दोशी.- मुम्बई : शादीलाल जैन, 1960, 122 पृ.
14. पाइअ-सद्द-महण्णवो/हरगोविन्ददास विक्रमचन्द्र शेठ; सम्पादन द्वारा वासुदेव शरण अग्रवाल एवं दल सुखभाई मालविया वाराणसी प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, 1963. 952, 64 पृ. ।

द्विभाषिक कोश (Bilingual Dictionary) में दो भाषाओं के शब्दों या पदों की वर्णानुक्रमिक सूची होती है । उदाहरणार्थ–

1. A Sanskrit - English Dictionary/Williams, Monier.-Delhi : Motilal Banarasidas, 1970. xxxii, 1333p.
2. Pratical-Sanskrit English Dictionary/Vaman Shivaram Apte.-Delhi : Motilal Banarasidas, 1966. 7, 10107 p.
3. संस्कृत - हिन्दी कोश/वामन शिवराम आप्टे - दिल्ली : मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्रा.लि. 1996 ।
4. हिन्दी-संस्कृतशब्दकोश/वासुदेव द्विवेदी वाराणसी : सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय, 1954. 122 पृ.
5. Sanskrit- English Dictionary : etymologically and philosophically arranged with special references to Cognate Indo-European Language/Monier Williams, 1970.
6. Tibetan-Sanskrit Dictionary/ed. by Lokesh Chandra.-New Delhi : International Academy of Indian Culture, 1961, 12 Vols.
7. A Dictionary in Sanskrit and Englihs / H.H. Wilson. 2nd ed.-Calcutta : Collage of Fort Willaim, 1832.
8. आधुनिकसंस्कृतहिन्दीकोश / ऋषीश्वर नाथ भट्ट; सम्पादक.-आगरा : राम प्रसाद एण्ड सन्स, 1955. 542, 18 पृ.
9. Dictionary in Sanskrit and English/W. Yates. - Calcutta : Baptest Mission Press, 1846. iv, 928 p.
10. पालि - हिन्दी शब्दकोश /भ.आ. कौसल्यायन दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
11. Kurzgedfabtes etymologisches Worterbuck desAttindischen : A Conciese etymological Sanskrit Dictionary /Manfred Mayrhofer.- 1963. Vol. 11.(D.-M.).
12. शब्द रत्न समन्वयकोश/शाहजी; विटठल राम लल्लू रामशास्त्री; सम्पादक.- बड़ौदा : ओरियन्टल इन्स्टीच्यूट,1932. 605 पृ.

इसी प्रकार बहुभाषिक कोश (Multilingual Dictionary) में दो से अधिक भाषाओं के शब्दों या पदों की वर्णानुक्रमिक सूची होती है । उदाहरणार्थ–

1. Sanskrit- Hindi - English Dictionary/Ved Prakash Shastri and Ramesh Kumar Pandey.-New Delhi : Neeta Prakashan, 1999.
2. Exhaustive English, Hindi - Sanskrit Dictionary / Raghuvira. - Nagpur : International Academy of English Literature, 1954.

3. प्राकृत रूप रचनाकोश / हरि शंकर पाण्डेय- दिल्ली : न्यू भरतीय बुक कॉरपोरेशन, 2001, 319 पृ.
4. धम्मपद कोश (पालिं, संस्कृत-हिन्दी) /श्री कच्छेदी लाल गुप्त - वाराणसी : चौखम्बा विद्या भवन, 2009 ।
5. Sanskrit - English - Tebetan Vocabulary /Alexander Csomade Koros.- Delhi : Indian Books Centre, 2007. 2 Vols.

3. शब्दकोश की उपयोगिता (Use of Dicionaries) निम्नवर्णित सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए शब्दकोशों का उपयोग किया जाता है–

1. शोध एवं शैक्षिक गतिविधियों में शब्दकोश बहुत उपयोगी होता है ।
2. शब्दों की उत्पत्ति, इतिहास, उच्चारण, वर्तनी, पर्यायवाची तथा विलोम शब्द जानने के लिए शब्दकोश का उपयोग होता है ।
3. शब्दों के संकेताक्षर, संकेत चिह्न, सामाजिक चिह्न की प्रमाणिकता तथा शब्द विन्यास के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए शब्दकोश का उपयोग किया जाता है
4. शब्दों एवं उनके अर्थों के आधार पर किसी देश की सांस्कृतिक, सामाजिक आदिपरिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ।
5. भाषा विज्ञान के अध्ययन एवं अध्यापन में शब्दकोश का उपयोग किया जाता है ।
6. विदेशी भाषाओं के शब्दों का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश का उपयोग किया जाता है ।
7. उद्धरणों, मुहाबरों, कहावतों तथा आदि भाषाओं के शब्दों के मूल रूप के परिज्ञान के लिए शब्दकोश का उपयोग आवश्यक होता है ।
8. प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तियों के नामों तथा प्रमुख ऐतिहासिक्र एवं भौगोलिक स्थानों के नामों की जानकारी के लिए भी शब्दकोश का उपयोग किया जाता है ।

4. शब्दकोशों का मूल्यांकन–समय के साथ-साथ सभी प्रकार के शब्दकोशों के रचना के क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई है जिसके फलस्वरूप अनेक नवीन शब्दकोशों को प्रकाशित किया गया । सूचना विस्फोट एवं धन की कमी के कारण किसी भी ग्रन्थालय के लिए सभी प्रकार के उपलब्ध शब्दकोशों का अधिग्रहण करना सम्भव नहीं है । इन परिस्थितियों में शब्द कोशों का क्रय करने से पहले ग्रन्थालयों में उनका मूल्यांकन किया जाता है क्योंकि किसी भी शब्दकोश को पूर्णतः उपयुक्त एवं पूर्ण नहीं माना जा सकता है । इस परिपेक्ष्य में डा. जॉनसन ने शब्दकोशों की तुलना घड़ियों से करते हुए कहा था कि

"किसी स्रोत के न होने से किसी अनुपयोगी स्रोत का ही होना अच्छा है और जो सर्वोत्तम है वह भी पूर्णतया शुद्ध एवं स्वयं में परिपूर्ण नहीं हो सकता है । "इस प्रकार प्रत्येक शब्दकोश के कुछ गुण एवं कुछ अवगुण होते हैं । शब्दकोशों का मूल्यांकन करने के लिए निम्नलिखित जाँच बिन्दुओं को निर्धारित किया गया है :–

1. **प्रमाणिकता**-किसी भी शब्दकोश की प्रमाणिकता उसके लेखक अथवा संकलनकर्ता तथा अन्य सहयोगियों एवं प्रकाशकों की ख्याति एवं प्रसिद्धि के आधार पर सुनिश्चित की जाती है । लेखकों अथवा संकलनकर्त्ता की प्रमाणिकता का मूल्यांकन उनकी योग्यता एवं अनुभव के आधार पर किया जाता है । शब्दकोश के मूल्यांकन में शब्दकोश के प्रकाशन का इतिहास भी उसकी प्रमाणिकता का एक महत्वपूर्ण आधार होता है । एक निश्चित अवधि पर संशोधित एवं अद्यतन होने वाले शब्दकोशों की विश्वनियता एवं प्रमाणिकता अधिक होती है ।
2. **विषय विस्तार एवं उद्देश्य**-शब्दकोश के विषय विस्तार का मूल्यांकन कोश रचनाकार द्वारा पदों अथवा शब्दों के चयन के आधार पर तथा शब्द भण्डार के आकार को जाँच कर किया जा सकता है । किसी भी प्रकार के शब्दकोश चाहे वह सामान्य शब्दकोश हो या भाषागत या विषयगत हो उसके विषय क्षेत्र एवं उद्देश्य का मूल्यांकन उसके भूमिका एवं प्रस्तवना के अध्ययन एवं अवलोकन करके किया जा सकता है । किस प्रकार के उपयोक्ताओं के लिए शब्दकोश को संकलित किया गया है के आधार पर उसके उद्देश्य को ज्ञात करने में सहायता मिलती है।
3. **विन्यासपद्धति एवं शब्द की प्रतिपादन शैली**-अधिकांश शब्दकोशों में शब्दों का विन्यसन वर्णानुक्रम में व्यवस्थित होता है । पदों अथवा शब्दों को अक्षर-प्रति अक्षर (Letter by Letter) या शब्द दर शब्द (Word by Word) व्यवस्थित किया जा सकता है । प्रविष्टियों के क्रम, व्यवस्थापन तथा स्वरूप में सुसंगतता होनी चाहिए।

   शब्दकोशों के प्रविष्टि में शब्दों के वर्तनी, उच्चारण, अक्षर-विन्यास, परिभाषा, प्रयोग, पर्यायवाची एवं विलोम शब्दों के आधार पर शब्दकी प्रतिपादन शैली का पता लगाया जा सकता है।
4. **आकार-स्वरूप**-शब्दकोश के मूल्यांकन में उसके भौतिक आकार का भी मूल्यांकन किया जा सकता है । शब्दकोश का क्रय करते समय आकार, जिल्दसाजी, कागज की गुणवत्ता, मुद्रण एवं उसके आकर्षक स्वरूप पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

5. **विशिष्ट विशेषताएँ-**कुछ शब्दकोशों में विश्वकोशीय शब्दकोशों की विशेषताएँ पायी जाती हैं, जिनके फलस्वरूप इनका मूल्य बढ़ जाता है तथा ये त्वरित सन्दर्भ उपकरण का कार्य करते हैं जैसे विभिन्न स्थानों के भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विवरण, विभिन्न-क्षेत्रों के प्रसिद्ध हस्तियों के जीवन चरित का विवरण, प्रमुख एवं विख्यात राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक संस्थाओं तथा संगठनों के नाम, मानचित्र, शब्दों के चित्रलेख तथा ऐसे शब्दों का विवरण जिनकी व्याख्या कठिन हो, फूलों, फलों, वनस्पतियों, कीटों, पशु-पक्षियों, स्वचालित यंत्रों एवं मोटरकारों के रंग-बिरंगे चित्रों के साथ उनके प्राकृतिक रंग और आनुपातिक आकार इत्यादि के आधार ग्रन्थालय में अधिग्रहण करने से पूर्व उत्तम कोटि के शब्दकोशों का मूल्यांकन कर लेना चाहिए ।

5. **सामान्य शब्दकोश (General Dictionaries)-**

हलायुध कोश (अभिधान रत्नाकर) जयशंकर जोशी, सम्पादक लखनऊ : हिन्दी समिति, 1957. 746 पृ.

हलायुध कोश संस्कृत भाषा का एक अतिप्राचीन शब्दकोश है तथा इसको "अभिधान रत्नमाला" के नाम से भी जाना जाता है । इसके सम्पादन का कार्य जयशंकर जोशी के द्वारा सम्पन्न किया गया है तथा इसे सरस्वती भवन-ग्रन्थालय, सं.सं. वि.वि. के सरस्वती भवन प्रकाशन माला 12 के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस शब्द कोश के संकलन में कुल पृष्ठों की संख्या 1 से लोकर - 746 तक है तथा इस कोश को सर्वप्रथम (950 ई.) में संकलित किया गया था ।

प्रस्तुत शब्दकोश में पृष्ठ संख्या 1 से लेकर पृष्ठ सं. 102 तक प्रथम काण्डम से पंचम काण्डम में श्लोकों का वर्णन है, जबकि पृष्ठ संख्या 103 से लेकर 746 तक संस्कृत भाषा के शब्दों को उनके अर्थों सहित "अ" से "ह" तक वर्णानुक्रम में विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

ग्रन्थ में शब्दों का विन्यसन अक्षर प्रति अक्षर किया गया है जिससे संस्कृत भाषा में रूचि रखने वालों पाठकों द्वारा इसका उपयोग करने में कोई परेशानी नहीं होती है ।

इस प्रकार यह संस्कृत भाषा में एक अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सामान्य शब्दकोश है।

अनेकार्थ शब्दकोश (मेदिनीकोश) । मेदनी कर...संस्कृत साहित्य के प्राचीन कोशों में "अनेकार्थ शब्दकोश" या "मेदनीकोश" भी एक महत्वपूर्ण शब्दकोश है । इस कोश के रचयिता का नाम मेदिनीकर है और यही कारण है कि प्रस्तुत कोश "मेदनीकोश" के नाम से प्रसिद्ध है । इस कोश का मुख्य भाग शब्द वर्ग है जिसमें कान्तवर्ग से हान्त वर्ग तक के शब्दों का समावेश है । अर्थात् पहले वे शब्द दिये गये हैं जिनका अन्त 'क' अक्षर से होता है, फिर जिनका अन्त 'ख' अक्षर से होता है, फिर 'ग' अक्षर से होने वाले और अन्त में 'ह' अक्षर से होने वाले शब्द हैं ।

हलायुध के अभिधान रत्नमाला के भांति ही यह शब्दकोश भी संस्कृत भाषा में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए महत्वपूर्ण शब्दकोश है ।

अमरकोष :/ अमर सिंह; श्री मन्नालाल अभिमन्यु - वाराणसी : चौखम्बा विद्याभवन, 2001 ।

प्रस्तुत कोश संस्कृत के प्राचीनतम कोशों में सम्मानीय स्थान प्राप्त महत्वपूर्ण शब्द कोश है । अब तक अमरकोष पर कई भाषाओं में अनेक टीकाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं । संस्कृत साहित्य में यास्क के "निघण्टु" एवं "निरूक्त" के बाद अमरकोष ही सबसे प्राचीन कोश ग्रन्थ है तथा इसकी रचना निघण्टु शैली पर ही आधारित है ।

इस प्रकार प्रस्तुत कोश में लगभग दस हजार शब्द हैं तथा प्राचीन समय में ये सब कोश कण्ठस्थ किये जाते थे क्योंकि ये सब कोश ग्रन्थ पद्य में रचे गये हैं। भारत ही नहीं बल्कि भारत के बाहर के देशों के संस्कृत भारत के बाहर के देशों के संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ख्यातिलब्ध प्रकाशकों द्वारा समय-समय पर इस महत्वपूर्ण शब्दकोश पर अनेक टीकाएँ प्रकाशित की जा चुकी हैं ।

संस्कृत के अध्येताओं के लिए यह महत्वपूर्ण शब्दकोश है ।

A Sanskrit English-Dictionary / Wellinans, Monier.-Delhi : Motilal Banarasidas, 1970, xxxii, 1333 p.

मोनियार विलियमस की प्रसिद्ध अंग्रेजी-संस्कृत शब्दकोश का प्रथम संस्करण ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से सन् 1899 ई. में प्रकाशित हुआ । इस शब्दकोश में सम्मिलित शब्दों की संख्या एक लाख अस्सी हजार है । इस कोश के संकलनकर्ता मोनियर विलियम ऑक्सफोर्ड वि.वि. में वोडेन चेयर-पर नियुक्त प्राध्यापक थे तथा इनसे पहले इस चेयर पर नियुक्त प्राध्यापक एम. एच. विल्सन थे । जिन्होंने संस्कृत - अंग्रेजी कोश के लिए लगभग दो हजार संस्कृत की धातुओं को क्रमबद्ध भी किया था । किन्तु वे यह काम पुरा न कर पाये और अपनी संकलित सामग्री मोनियर विलियम को सौंप दी ।

इस शब्दकोश का भारतीय संस्करण संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ख्यातिलब्ध-प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास के द्वारा प्रकाशित किया गया है । अबतक इस शब्दकोश में अनेक संशोधन हो चुके हैं । वर्तमान में इसका इलैक्ट्रानिक रूप भी उपलब्ध है ।

इस प्रकार यह संस्कृत शब्दकोश एक मानक कृति है तथा अंग्रेजी भाषा के माध्यम से संस्कृत का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों, विद्वानों एवं शोधार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी शब्द कोश है ।

संस्कृत-हिन्दी कोश / वामन शिवराम आप्टे दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. 1986, 1996.

प्रस्तुत "संस्कृत हिन्दी कोश" वामन शिवराम आप्टे की विख्यात "The Students Sanskrit- English Dictionary" का राष्ट्रभाषा हिन्दी में सर्वप्रथम अनुवाद है । शब्दकोश के इस हिन्दी संस्करण में तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं, जैसे प्रायः सभी मूल शब्दों की व्युत्पत्ति इसमें दी गयी है, जिससे यह संस्कृत के उपयोक्ताओं के लिए और अधिक उपयोगी बन गया है ।

दूसरी विशेषता के अन्तर्गत पाठकों की सामान्य जानकारी के लिए इसमें उपसर्ग और प्रत्यय का संक्षिप्त दिग्दर्शन करा दिया गया है ।

इस महत्वपूर्ण शब्दकोश का तिसरी विशेषता यह है कि इसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में शब्दों का नया संकलन जोड़ दिया गया है । इस महत्वपूर्ण शब्दकोश के प्रकाशन से पूर्व संस्कृत से हिन्दी में कोई अच्छा कोश उपलब्ध नहीं था । जो एक, दो उपलब्ध थे भी तो उनमें बहुत थोड़े ही शब्दों को स्थान मिला है, जिससे विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ पुरी नहीं होती । इस शब्दकोश में कुल पृष्ठों की संख्या 1400 तक है । इस कोश के उपयोग हेतु इसमें पाठकों के लिए आवश्यक निर्देश भी दिये गये हैं। इसमें संकलित शब्दों के क्रम देवनागरी के वर्णानुक्रम में विन्यसित है । इसमें पृष्ठ संख्या 1 से 16 तक इस कोश से सम्बन्धित प्रारम्भिक सूचना संकलित हैं ।

इस प्रकार संस्कृत हिन्दी वृहत् कोश एक मानककृति है जो संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के सभी उपयोक्ताओं के लिए अत्यन्त सूचनाप्रद एवं उपयोगी शब्दकोश है ।

A Dictionary - English & Sanskrit / Willianms, Monier.- Varanasi : Motilal Banarasidass, 1971, 859 p., 3rd edn.

मोनियर विलियम ने संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश के साथ ही साथ एक अंग्रेजी-संस्कृत शब्द कोश भी तैयार किया था जो सन 1851 में पुरा हो गया था । इसी प्रसिद्ध शब्दकोश का भारतीय संस्करण का प्रकाशन मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक के माध्यम से सम्पन्न हुआ ।

इस शब्दकोश में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का संस्कृत रूपान्तरण वर्णानुक्रम में व्यवस्थित हैं। इसमें अंग्रेजी शब्दों का विन्यसन अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर-"A" से "H" तक आने वाले सभी शब्दों को संकलित किया गया है । इसमें जितने भी अंग्रेजी शब्द संकलित हैं, उन्हीं शब्दों के नीचे उनका अर्थ संस्कृत भाषा में वर्णित है । इस कोश के संकलन में कुल 859 पृष्ठों का उपयोग किया गया है तथा इसमें प्रारम्भिक पृष्ठों की संख्या कुल बारह हैं जिन्हें रोमन अंक में प्रदर्शित किया गया है ।

इस कोश ग्रन्थ के आरम्भ में Contractions, Errata तथा प्रस्तावना का विवरण संकलित है । संस्कृत भाषा के माध्यम से अंग्रेजी भाषा को सीखने में यह एक मानक कृति

जो विद्वानों, अनुवादकों, विद्यार्थियों एवं अन्य उपयोक्ताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है ।

Practical Sanskrit-English Dictonary/Vaman Shivaram Apteced. by P.K. Gode and C.G. Karve. - Rev. and enl.-Poona : Prakashan, 1957-1959. 3 Vols.

मोनियर विलियम द्वारा निर्मित संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश के वृहदाकार रूप के कारण ही वामन शिवराम आप्टे ने संस्कृत भाषा के इस कोश का संकलन किया है । जो पाठक मोनियर विलियम के बड़े कोशों का उपयोग नहीं कर सकते उनके लिए यह कोश बहुत सुविधाजनक है । इसका प्रथम संस्करण 1890 में प्रकाशित हुआ था । इस कोश में पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या देने का भी प्रयत्न किया गया है तथा इसमें संकलित शब्दों का क्षेत्र न्याय, अलंकार, वेदान्त, व्याकरण एवं नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित है ।

इस शब्द कोश की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं, पहला यह कि इसमें 4000 शब्दों की जो संस्कृत व्याकरण, लेखकों के नामों, कृतियों अथवा पाण्डुलिपियों के रूपमें उपलब्ध ग्रन्थ हैं उनकी एक शब्द सूची (Concordance) दी गयी है । जबकि दूसरी विशेषता यह है कि इसके दो परशिष्टों में 475 मुहावरों एवं कहावतों की एक सारिणी दी गई है । इस प्रकार संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित विद्यार्थियों, विद्वानों एवं शोधार्थियों के लिए यह एक अत्यन्त उपयोगी शब्द कोश है ।

Sanskrit - Hindi - English Dictionary /VedPrakash Shastri and Ramesh Kumar Pandey.-New Delhi : Neeta Prakashan, 1999. 266 p.

प्रस्तुत कोश बहुभाषी कोश का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है. । संस्कृत-हिन्दी एवं अंग्रेजी के 8000 शब्दों को इसमें संकलित किया गया है । इसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, प्रत्यय एवं उपसर्ग पर भी प्रकाश डाला गया है । इस कोश में कुल ग्यारह परिशिष्टों के माध्यम से संस्कृत भाषा से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों जैसे प्रत्यय, उपसर्ग, अव्यय, छन्द, अलंकार परिचय, न्याय, पौराणिक ऐतिहासिक नामों के साथ ही साथ भौगोलिक स्थानों के नामों का भी उल्लेख किया गया है । जबकि 10वें और 11वें परिशिष्ट में ख्यातिलब्ध लेखकों, एवं संवैधानिक शब्दों का वर्णन किया गया है। इन सबके अतिरिक्त इस शब्दकोश में विद्यार्थियों के लिए कुछ निर्देश, संकेत सूची एवं अनुक्रमणी भी दिया गया है ।

यह एक अत्यन्त उपयोगी एवं अद्यतन शब्दकोश है तथा छपाई साफ एवं स्पष्ट है। भौतिक आकार अच्छा है । संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के विषयगत शब्दकोशों के कुछ प्रमुख उदाहरण–

6. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के विषय गत शब्द कोश :

विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी के भांति ही संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में भी दिन प्रति दिन सामान्य एवं विषयगत शब्दकोश प्रभावशाली होते जा रहे हैं। फिर भी विज्ञान, प्रद्यौगिकी, तथा चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में जिस प्रकार वैज्ञानिक शब्दकोशों

की बहुलता है। संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में अभी इनकी संख्या बहुत कम है । प्रायः अधिकांश विषय शब्दकोश का प्रकृति विश्वकोशीय होते हैं। भारतीय परिपेक्ष्य में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के विकास में योगदान करने वाले अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों के साथ ही साथ वैदिक शोध संस्थानों एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख प्रकाशन प्रतिष्ठानों ने सराहनीय कार्य किया है ।

1. वैदिकपदानुक्रमकोष / विश्ववन्धु एवं भीमदेव; सम्पादक - होशियार पुर : विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, 1942-1959 (बहुखण्डीय) ।
2. हिन्दू धर्म कोश / राजबली पाण्डेय; सम्पादक - लखनऊ, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, हिन्दी समिति प्रभाग, 1978. 706 पृ.
3. Dictionary of World Gods and Goddess /T. Rengarajan.-Delhi : Eastern Book Linkers, 2008. vi, 318 p.
4. सर्वधर्म कोश / राम सरूप रसिकेश - वाराणसी : चौखम्बा विद्या भवन, 2009।
5. Vedic Etymology /Fatah Singh.-Delhi : National Publishing House, 1960. 253+3 p.
6. वैदिक कोश /मधुसूदन शर्मा - जयपुर : बाल चन्द्रालय, 1828. 72 पृ.
7. Etudes sur le Vocabulaire du Rigveda . Louis Renou.- Pandichery : Institute Frangaise Indologie, 1958. 69 p.
8. वैदिक इण्डेक्स (वैदिक कोश) / मैक डोनेल एवं कीथ; हिन्दी अनुवाद द्वारा रामकुमार राय.-वाराणसी : चौखम्बा विद्याभवन, 2009 (दो भागों में) ।
9. Vedic Index of names and Subjects /A.A. Macdonelle and A.B. Keith.-Delhi : Motilal Banarasidas, 1958.2 Vols.
10. Vedic Concordance / Maurice Bloomfield.-Delhi : Motilal Banarasidas, 1964. xxii, 1078 p.
11. वैदिक कोश / सूर्यकान्त - बनारस : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 1963.596 पृ.
12. वैदिक वाङ्मय निर्वचन कोश / रूप किशोर शास्त्री - दिल्ली प्रतिभा प्रकाशन, 2001 XVI, 250 P.
13. श्रौतप्रायश्चितकोश / रवीन्द्र मुले-दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 2004. XVI 304 पृ.
14. व्रतकोश / जगन्नाथशास्त्री होशिंग - वाराणसी : सं.स.वि.वि., 2006. 400 पृ.

15. श्रौत कोश / आर. एन. डाण्डेकर - पूना : वैदिक संशोधन मण्डल, 1958. (दो भागों में) ।

16. उपनिषद्वाक्य महाकोशः/गजानन शम्भू साधले.- वाराणसी : चौखम्बा विद्या भवन, 2009 ।

17. इण्डेक्स टु शाबर भाष्य / जे. ए. जैकब. - वाराणसी : सं. सं. वि.वि., 2006. 152 पृ. (अनुवादित).

18. A Concise Dictionary of Philosophy / K. Srinivas and V. Kutumba Sastry.-New Delhi : D.K. PrintWorld (p) Ltd., 2007. Xi, 426 p.

19. Encyclopaedic dictionary of Philosophy . Nirmal Kumar Verma.-New Delhi : Crescent Publishing Coroprations, 2006. 3 Vols.

20. Indian Philosophy A-3/Christopher Bartley.-New Delhi : New Age Books, 2005. 196 p.

21. Dictionary of Philosophy / Dagobert D. Runes.-15th. Rev. ed.-New York : Philosophical Library, 1960. 343 p.

22. A Dictionary of Philosophy/ ed. by M. Resenthal and P. Yulin.-Moscow : Progress Publishers, 1967. 494 p.

23. Indian Philosophical Terms-Glossary and Sources / Kala Acharya; Chief Editor.-New Delhi : Somaiya Publications Pvt. Ltd., 2004. xiii, 712 p.

24. भारतीय दर्शन परिभाषा कोश । दीनानाथ शुक्ल - दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 1993. 300 पृ.

25. भारतीय दर्शन वृहत्कोश । बच्चू लाल अवस्थी "ज्ञान"–दिल्ली : शारदा पब्लिशिंग हाउस, 2004. (चार खण्डों में)

26. विशिष्टा द्वैतकोश / एस. एम. एस. वरदाचार्य; सम्पादक.-वंगलोर : मेलुकोटे : यादवाद्रि, 1997 (बहु खण्डीय).

27. योगशब्द कोश / सुभाष विद्यालंकार - दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 2005 XVI 230 पृ.

28. इण्डेक्स टु वाल्मीकि रामायण। मनमथ राय.-वाराणसी : सं.सं. वि.वि. 2006. 264 पृ.

29. रघुकोश : संस्कृत - हिन्दी पर्यायों का संग्रह । रघुनाथ दत्त बन्धु - दिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास, 1962. 508 पृ.

30. संस्कृत साहित्य कोश / राम जी उपाध्याय–वाराणसी : चौखम्बा विद्या भवन, 2009 ।

31. संस्कृतनाट्यकोश / राम सागर त्रिपाठी - दिल्ली : चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 1997 (दो खण्डों में) ।
32. बालमीकीय रामायण कोश / राम कुमार राय - वाराणसी : चौखम्ब संस्कृत भवन, 2007. 421 पृ.
33. कालिदास पर्यायकोश / त्रिभुवननाथ शुक्ल - दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 2008 (दो भागों में)
34. महाभारत कोश / राम कुमार राय - वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत सीरीज, 1964. 158 पृ.
35. Dictionary of Vedas /T. Rengarajan.- Delhi : Eastern Book Linkers, 2004, 434 p.
36. वैदिककोश चन्द्रशेखर एवं अनिल कुमार उपाध्याय दिल्ली : नाग प्रकाशक, 1995 (दो खण्डों में) 973 ज. 29 सेमी.
37. Theosophical Glossary / H.P. Blavatsky.-New Delhi : Asian Publication Series, 1993. 389 p. 22 Cm.
38. Dictionary of Aurobindo's Yoga . M.P. Pandit.-1966.
39. Dictionary of Panini / Sumitra Mangesh Katre.- 3 Vols.
40. संस्कृत वाङ्मय कोश / श्रीधर भास्कर वर्णेकर; सम्पादक - कोलकाता : भारतीय भाषा परिषद, 1988. (तीन खण्डों में)
41. वाङमयार्णवः/ राम अवतार पाण्डेय - वाराणसी : ज्ञान मण्डल लिमिटेड, 1966 815 पृ.
42. Dictionary of Sanskrit on historical Principles/Poona : Deccan College, 1949. 8, xxxvp.
43. A Dictionary of Sanskrit Grammar / K.V. Abhankar.-Baroda : G.O.S., 1961. 134 p.
44. पुराणकथाकोश । गौरी नाथ शास्त्री सम्पादक - सीतापुर :- नैमिषरन्य :पौराणिक तथा वैदिक अध्ययन एवं अनुसन्धान संस्थान, 1983 (बहुखण्डीय) ।
45. कूर्म महापुराण विषयानुक्रम कोश उमाशंकर त्रिपाठी; सम्पादक - वाराणसी : सं. वं.वि.वि. 1990. 728 पृ. 1967. (पाँच भागों में)
46. नाममाला / धनञ्जय; भाष्य द्वारा अमर कृति, सम्पादन द्वारा सम्भुनाथ त्रिपाठी- काशी : भारतीय ज्ञान पीठ, 1950.138 पृ.
47. भारतीय पुरा इतिहास कोश / अरूण-नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशसन्स, 2009। (दो भागों में)

48. Dictionary of Hindu Architeture/P.K. Acharya.-Oxford : Oxford University Press, 1927.

49. Dictionary of mythology / Lewis Spence.-London : Cassell, D., 198 p.

50. Short Dictionary of mythology / P.C. Woodceck.-New York : Philosophical Library, 1953.127 p.

51. संस्कृत सङ्गणक शब्दकोश (Sanskrit Dictionary of Computers) / Compliled by Srikantha Jamadagni; ed. by Srinivas Varakhedi.-Hyderabad : Sanskrit Parishad, 2009

52. रामचरित मानस पदानुक्रम कोश / त्रिभुवन नाथ शुक्ल - दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 2010।

Dictionary of Sanskrit on Historical Principles - Poona : Deccan College, 1949.-8, XXXV P.

यह शब्द कोश संस्कृत का विश्वकोशीय शब्दकोश है तथा इसका प्रथम संस्करण 1949 ई. में डेकन कालेज, पूना के सौजन्य से प्रकाशित हुआ था । इसके प्रधान सम्पादक ए. एम. घटेज थे । इस कोश में संस्कृत शब्दकोश के ऐतिहासिक सिद्धान्तों की प्रकृति, क्षेत्र एवं समस्याओं से सम्बन्धित जानकारी दी गयी है । इसके साथ ही साथ इसमें ग्रन्थों के लेखक, सम्पादक, संस्करण, संकेताक्षर, सन्दर्भों की पद्धति तथा संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित ग्रन्थों के काल क्रम की तालिका भी प्रस्तुत है।

इस शब्दकोश की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें संस्कृत के सभी पक्षों से सम्बन्धित उपयुक्त एवं महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । इसके पदों अथवा शब्दों की अनेक पक्षों की दृष्टि, उनकी व्युत्पत्ति, प्राचीन तथा वर्तमान प्रयोग के साथ ही साथ अन्य भाषा वैज्ञानिक पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है ।

प्रस्तुत शब्दकोश के निर्माण की प्रक्रिया एक परियोजना के तहत सन् 1948 ई. में प्रारम्भ किया गया तथा इसे कई खण्डों में प्रकाशित करने की योजना बनी । परन्तु अभी तक इसके शेष खण्ड प्रकाशित नहीं हो सके हैं, जिससे यह शब्दकोश अभी भी पूर्ण नहीं है ।

फिर भी इस शब्दकोश के प्रथमखण्ड से इतना तो स्पष्ट है कि संस्कृत भाषा, साहित्य तथा प्राच्य विद्या में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों एवं अध्यताओं के लिए जब यह अपने शेष खण्डों के साथ प्रकाशित होगा तो एक अत्यन्त उपयोगी एवं सूचनाप्रद शब्दकोश होगा।

वैदिक पदानुक्रम कोष । विश्वबन्धु एवं भीमदेव; सम्पादक-होशियारपुर : विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, 1942-59. (पाँच भाग-सोलह खण्ड)।

प्रस्तुत ग्रन्थ "वैदिक पदानुक्रमकोष" पुरे विश्व में वैदिक साहित्य का अद्वितीय कोश ग्रन्थ है । स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों से प्रभावित होकर स्वामी विश्वेश्वरानन्द तथा स्वामी नित्यानन्द ने सन् 1903 में संयुक्त रूप से एक पूर्ण वैदिक शब्दकोश के संकलन का कार्य आरम्भ किये जिसमें वैदिक संहिता के चारो सिद्धान्तों-ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद को सम्मिलित किया गया । "वैदिक पदानुक्रमकोष" के प्रकाशन के पूर्व सन् 1929 में एक "वैदिक-शब्दार्थ-पारिजात" नाम से वैदिक साहित्य का एक पूर्ण शब्दकोश प्रकाशित किया गया । इसी परियोजना के तहत इसके अगले चरण में बारह हजार पृष्ठों का एक "वैदिक पदानुक्रम कोश" या "A Vedic Word Concordance" नामक एक बहुखण्डीय वैदिक पदानुक्रमकोश के निर्माण की नीव रखी गयी । इस पदानुक्रम कोश के संकलन में जिन ग्रन्थों को आधार स्वरूप में अपनाया गया उनमें Worter buch zum Rig-Veda-Grassmann (1873), Index Verborum to Atharveda-Whitney (1881), Word Index to Atharveda-Max-Muller (1998) और Rig-Veda-Padasuchi by Vaidik Sansodhan Manal, Poona (1951) आदि प्रमुख हैं ।

इस प्रकार विश्वेश्वरा वैदिक शोध संस्थान, होशियापुर के भारतीय मनीषियों के द्वारा सन् 1942 से लेकर 1949 तक इस वृहद् वैदिक पदानुक्रमकोश को पाँच भागों तथा सोलह खण्डों के प्रकाशित किया गया ।

कोश में भाग तथा खण्डानुसार संकलित विषयों का विवरण निम्नलिखित है–

भाग - 1; खण्ड - 1 : भूमिका, संहिता एवं 'अ'
भाग - 1; खण्ड - 2 : संहिता एवं 'आ'-'घ'
भाग - 1; खण्ड - 3 : संहिता एवं 'च' - 'न'
भाग - 1; खण्ड - 4 : संहिता एवं 'प' - 'ल'
भाग - 1; खण्ड - 5 : संहिता एवं "व"-"स"
भाग - 1; खण्ड - 6 : संहिता एवं भाग 'ह' एवं 'च' परिशिष्ट
भाग - 2; खण्ड - 1 : ब्राह्मणारण्यक "अ" - "ण"
भाग - 2; खण्ड - 2 : ब्राह्मणारण्यक "त"- "ह"
भाग - 3; खण्ड - 1 : उपनिषद भूमिका एवं "अ"- "न"
भाग - 3; खण्ड - 2 : उपनिषद् एवं 'प'-'ह', परिशिष्ट
भाग - 4; खण्ड - 1 : वेदाङ्ग एवं 'अ'- 'उ'
भाग - 4; खण्ड - 2 : वेदांग सूत्र एवं 'ग्रह'-'न'
भाग - 4; खण्ड - 3 : वेदाङ्ग एवं 'प'-'ल'
भाग - 4; खण्ड - 4 : वेदाङ्ग एवं 'व'-'ह'
भाग - 5; खण्ड - 1 : आदितोनुक्रम :

भाग - 5; खण्ड - 2 :

इस प्रकार यह वैदिक पदानुक्रमकोश निश्चय ही एक वैदिक साहित्य का एक उत्तम शब्दकोश है । वैदिक - एवं संस्कृत साहित्य के विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा अध्यापकों के लिए यह एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ कृति है ।

हिन्दू धर्म कोश / राजबली पाण्डेय; सम्पादक, लखनऊ उ0प्र0 हिन्दी संस्थान हिन्दी समिति प्रभाग, 1978, प्रथम संस्करण.

यह शब्दकोश प्राच्य विद्या एवं संस्कृत वाङ्मय के अन्तर्गत विषय शब्दकोश का प्रमुख उदाहरण है । इस शब्दकोश की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें हिन्दू धर्म में वर्णित विविध विषयों के सभी पदों या शब्दों को विशेष स्थान दिया गया है । हिन्दू धर्म के जिन प्रमुख क्षेत्रों को इसमें संग्रहित किया गया है उसमें धार्मिक वाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थ, धर्म प्रवर्तक, आचार्यों, लेखकों, धार्मिक गति विधियों में योगदान करने वाले संत एवं महात्माओं, पूजा पद्धति, कर्मकाण्ड, उपासना एवं योग, व्रत, उत्सव, देवमण्डल, अर्द्ध देवयोनि, धर्म विज्ञान, धर्मशास्त्र, धार्मिक तथा नैतिक आचार, तीर्थ, पवित्रनदी, पर्वतादी, धार्मिक सम्प्रदाय तथा लोक विश्वास आदि प्रमुख हैं।

इस शब्दकोश के संकलन हेतु जिन स्रोतों को आधार स्वरूप अपनाया गया है उनमें वैदिक संहिताएँ, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरन्यक, उपनिषद्, वेदाङ्ग, सूत्रग्रन्थ श्रौत, धर्म और गृह्य, रामायण और महाभारत, पुराण, उपपुराण, स्मृति-ग्रन्थ, दार्शनिक साहित्य, के साथ ही साथ भाष्य तथा निबन्ध ग्रन्थ, तन्त्र तथा आगम, प्रादेशिक भाषाओं का धार्मिक साहित्य, साम्प्रदायिक धार्मिक साहित्य, धार्मिक सुधारणाओं तथा आन्दोलनों के इतिहास ग्रन्थ, लोक धर्म का लिखित अथवा मौखिक साहित्य आदि प्रमुख हैं।

इस शब्दकोश की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें मुख्यतया वैदिक परम्परा से विकसित धार्मिक सम्प्रदायों का ही समावेश किया गया है । इसमें हिन्दू धर्म के विविध विषयों का संक्षिप्त परिचय देवनागरी के वर्णानुक्रम में वर्णित है ।

यह कोश धर्मशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए एक अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ स्रोत है।

पुराणकथाकोश / गौरीनाथ शास्त्री; सम्पादक सीतापुर : नैमिषारण्य : पौराणिक तथा वैदिक अध्ययन एवं अनुसन्धान संस्थान, 1983, (बहु खण्डीय)।

"पुराणकथाकोश" पुराण वाङ्मय से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण वृहत विषयकोश है। इस वृहत विषय कोश की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें पुराण साहित्य से सम्बन्धित ऐसे अनेक आख्यान, उप आख्यान, चरित्र एवं कथाओं के वर्णन को सम्मिलित किया गया है जिनके द्वारा मानव समाज अपना चारित्रिक विकास एवं सामाजिक उत्थान कर सकता है । इसमें समस्त पौराणिक कथाओं और चरित्रों का संग्रह एक स्थल पर उपलब्ध हो सके, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस महनीय शब्दकोश का संकलन किया गया है।

पुराण में उपलब्ध विशाल साहित्य के आधार - प्रस्तुत विषय शब्दकोश को कई खण्डों में प्रकाशित करने की योजना बनी तथा सब पुराणों में अति प्राचीन "ब्रह्मपुराण" को इसके प्रथम खण्ड में संकलित करने की योजना तैयार की गयी । अतः प्रथम खण्ड में 'ब्रह्मपुराण' से सम्बन्धित कथाओं के संग्रह का उल्लेख किया गया है । इसी प्रकार इसके द्वितीय खण्ड में "मत्स्यपुराण" में वर्णित कथाओं के संग्रह को, एवं तृतीय खण्ड में "विष्णुपुराण" में वर्णित कथाओं के संग्रह का विवरण प्रस्तुत है । तदन्तर इसी क्रम में अन्य पुराणों में वर्णित कथाओं के संग्रहों का विवरण अलग-अलग खण्डों में प्रस्तुत किये गये हैं।

इस प्रकार यह शब्द कोश पुराण साहित्य में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं अध्यापकों के लिए एक सर्वोत्तम सन्दर्भ कृति है ।

कूर्म महापुराणविषयानुक्रम कोश / उमाशंकर त्रिपाठी; सम्पादक :- वाराणसी : सं. सं. वि.वि., 1990. 728 पृ.

प्रस्तुत ग्रन्थ "कूर्म महापुराण विषयानुक्रम कोश" पुराण साहित्य का एक महत्वपूर्ण विषय शब्द कोश है । इस विषय शब्दकोश के अन्तर्गत कूर्ममहापुराण में आये हुए विषयों के पदों की अर्थ एवं विश्लेषण को अकारादि क्रम में प्रस्तुत किया गया है । यह शब्दकोश कूर्म महापुराण विषयानुक्रम कोश का पूर्वार्द्ध खण्ड है तथा इसके उत्तरार्द्ध खण्ड के प्रकाशन होना अभी शेष है ।

इसमें आये हुए विषयों से सम्बन्धित पदों की व्याख्या संस्कृत में प्रस्तुत है। इस पूर्वार्द्ध खण्ड के संकलन में कुल 728 पृष्ठों का प्रयोग किया गया है । अतः यह शब्दकोश पुराण साहित्य में रूचि रखने वाले पाठकों की सूचना आवश्यकता की दृष्टिकोण से एक अत्यन्त उपयोगी विषय शब्दकोश है ।

ब्रह्मवैवर्त्त महापुराण विषयानुक्रमकोश - वाराणसी : सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्याल, 2006. 376 पृ.

यह शब्दकोश हिन्दू धर्मशास्त्र का एक विषय शब्दकोश है तथा इसका प्रथम संस्करण 2006 ई. में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रकाशन संस्थान से प्रकाशित हुआ है ।

इस शब्दकोश में ब्रह्मवैवर्त्त महापुराण में वर्णित विषयों से सम्बन्धित विवरणों को आकारादि क्रम में विन्यसित किया गया है । साथ ही साथ इस महापुराण में वर्णित विषयों का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है । इस शब्दकोश को स.म.अ.मा. (49) के रूप में प्रकाशित किया गया है ।

यह कोश पुराण के विद्यार्थियों, शोधछात्रों तथा अध्यापकों के लिए बहुत ही उपयोगी शब्दकोश है।

वामन महापुराण विषयानुक्रमकोश - वाराणसी : सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 2006. (दो भागों में)।

यह शब्दकोश भी हिन्दू धर्म शास्त्र का विषय शब्दकोश है तथा इसका प्रथम संस्करण 2006 ई. में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रकाशन संस्थान से प्रकाशित हुआ है । इस शब्दकोश की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें वामन महापुराण में आये हुए विषयों के पदों / शब्दों को अकारादि क्रम में प्रस्तुत किया गया है ।

इस शब्दकोश को दो खण्डों में संकलित किया गया है तथा इसे सरस्वती भवन अध्ययन माला क्रमांक (46) के अन्तर्गत प्रकाशित किया गया है । इस प्रकार वामन महापुराण से सम्बन्धित यह एक महत्वपूर्ण शब्दकोश है जिसका प्रकाशन विश्व प्रसिद्ध सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय के अधीन हुआ है।

Dictionary of World Gods and Goddess/T. Rengarjan.-Delhi : Eastern Book Linkers, 2008. vi, 3/8 p.

इस शब्दकोश में विश्व में प्रचलित सभी धर्मों के प्रसिद्ध देवी - देवताओं के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सूचनाओं को संकलित किया गया है । इसमें संकलनकर्त्ता ने विश्व के प्रधान धर्मों एवं संस्कृति से सम्बन्धित एक काल क्रमनुसार महत्वपूर्ण सारणी का उल्लेख किया है जिसके आधार पर विश्व के किसी भी देश के प्रसिद्ध देवी-देवताओं के सम्बन्ध में तत्काल जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

इस कोश की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें वर्णित प्रधान देवी-देवताओं से सम्बन्धित विवरण अंग्रेजी के वर्णानुक्रम में आधे से एक पृष्ठ में लगभग विन्यसित हैं जिसमें इन प्रसिद्ध देवी-देवताओं की उत्पत्ति काल, पूजा का समय, पर्यायवाची, धार्मिक केन्द्र कला सन्दर्भ, साहित्यिक स्रोत, विवरण तथा इनके महत्वों को विशेषरूप से सम्मिलित किया गया है ।

इस शब्दकोश को कुल 318 पृष्ठों में संकलित किया गया है, जिसमें छः पृष्ठों का प्रधान धर्मों से सम्बन्धित एक भौगोलिक सूची संकलित है । इसके अतिरिक्त विद्यिार्थियों के सुविधा के लिए पृष्ठ सं. 263 से 309 तक एक अनुक्रमणी का भी उल्लेख किया गया है । परन्तु प्रस्तुत कोश में उप देवता अथवा यक्ष, गन्धर्व (Demigods), भूत-प्रेत (Demons) तथा पौराणिक महापुरुषों (Mythological Heroes) को कोई स्थान नहीं दिया गया है । फिर भी यह कोश अनेक दृष्टिकोण से धर्मशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है ।

धर्म और संस्कृति कोश /अरूण -नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशन्स, 2007 (दो भागों में) 650 पृ.

प्रस्तुत शब्दकोश में धर्म और संस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों जैसे धर्मजन-कोश, धर्मसूत्रकोश, मानस मन्थन, सुभाषितकोश एवं अद्भुत किन्तु सत्य जैसे विषयों को

शामिल किया गया है । इसमें अद्‌भुत और आश्चर्यजनक घटनाओं एवं प्रसंगों का रोचक वर्णन कोश के रूप में प्रस्तुत किया गया है । इस शब्दकोश को कुल दो भागों में संकलित किया गया है तथा इसमें कुल 847 उक्तियों का वर्णन है । इसके प्रथम भाग का पहला शब्द जीवन आधार धर्म है, जबकि द्वितीय भाग में अन्तीम शब्द "लिंकन और केनेडी" के रूप में वर्णित है।

इस शब्दकोश की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसके अध्ययन से विद्यार्थियों की ज्ञानवृद्धि तो होगी ही साथ ही साथ उनका मनोरंजन भी होगा ।

A Concise Dictionary of Philosophy / K. Srinivas and V. Kutumba Sastry.-New Delhi : D.K. Print World (p) Ltd., 2007. Xi, 426 P.

प्रस्तुत शब्दकोश "A concise Dictionary of phelosophy" दर्शनशास्त्र का एक उत्तम एवं आधुनिक विषय शब्दकोश है तथा इसका प्रथम संस्करण 2007 ई. में प्रकाशित हुआ है । इस शब्दकोश की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें दर्शनशास्त्र के विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित पदों/शब्दों की परिभाषा एवं अर्थों का विवरण अद्यतन शब्दकोशों की वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है । इसमें प्रविष्टियों को रोमन लिपि के वर्णमाला 'A' से 'Z' के क्रम में विन्यसित किया गया है तथा संस्कृत आधारित शब्दों को डाईक्रिटीकल चिह्नों के साथ प्रस्तुति के बाद भी व्यवस्थापन-क्रम एक समान ही है । फिर भी उच्चरण को लेकर इनमें भिन्नता परिलक्षित है ।

इसमें विन्यसित प्रत्येक पद के व्याख्या के सामने कोष्ठक में उसके मूल भाषा का भी उल्लेख है तथा इन मूल भाषाओं की संक्षिप्तिकरण का विवरण भी अलग से दी गयी है । पाठकों द्वारा इसका अधिकाधिक उपयोग हो इस हेंतु ग्रन्थ के आरम्भ में कुछ आवश्यक दिशा निर्देशों का भी उल्लेख है । इसके अन्त में नित्य प्रति उपयोग होने वाले कुछ विदेशी मूल के पदों (उनके अर्थों सहित) एक विस्तृत शब्दावली सूची भी दी गयी है ।

इस प्रकार यह विषय शब्दकोश दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा अध्यापकों के लिए एक अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ कृति है जो अंग्रेजी माध्यम से दर्शनशास्त्र के अध्ययन, अध्यापन तथा शोध कार्य में रूचि रखते हैं ।

Encyclopaedic Doctionary of Pholosophy / Nirmal Kumar Verma.- New Delhi : Crescent Publishing Corporation, 2006. 3 Vols.

प्रस्तुत ग्रन्थ दर्शनशास्त्र का एक विश्वकोशीय शब्दकोश है तथा इसका प्रथम संस्करण 2006 ई. में प्रकाशित हुआ है । दर्शनशास्त्र के इस वृहहदशब्दकोश को कुल तीन खण्डों में प्रकाशित किया गया है । इसके अन्तर्गत दर्शनशास्त्र के सभी पदों, अवधारणाओं तथा आन्दोलनों को विशेष स्थान दिया गया है । साथ ही साथ प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक दर्शन के सभी-शाखाओं को भी इसमें सम्मिलित किया गया है।

इसमें संकलित सभी दार्शनिक पदों की परिभाषा एवं उनके अर्थों को अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत की गयी है ।

Indian Philosophy A-Z / Christopher Bartlly.-New Delhi : New Age Books, 2005. 196 p.

प्रस्तुत ग्रन्थ "Indian Philosophy A-Z" विषयशब्दकोश एक प्रमुख उदाहरण है। इस कोश ग्रन्थ में संकलन कर्ता भारतीय दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित सभी शाखाओं से पदों/शब्दों को एकत्रित करके उनके अर्थों तथा प्रयोगों को अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत करने का उत्तम प्रयास किया है ।

इस कोश ग्रन्थ के मुख्य भाग में A से Z के क्रम में भारतीय दर्शन के सभी पदों की अंग्रेजी-संस्कृत शब्दावली के साथ ही साथ डाईक्रीटीकल चिह्न के साथ ग्रन्थ में वर्णित प्रधान शीर्षकों से सम्बन्धित एक अन्य शब्दावली का भी उल्लेख है ।

दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों तथा अध्येताओं के लिए यह शब्दकोश बहुत उपयोगी कोशग्रन्थ है । इसके प्रत्येक खण्ड में वर्णित शीर्षकों का क्रम अंग्रेजी वर्णमाला के क्रम में विन्यसित है जिनका विवरण निम्नवत है–

खण्ड - 1 : A Class -Donor Gametes;

खण्ड - 2 : Double Blind Experiement Objectivty; and

खण्ड - 3 : Objectivity in Ethics - ZZZZ

इस प्रकार यह एक ऐसा शब्द कोश है जिसमें दार्शनिक पदों की उचित परिभाषाओं के साथ ही साथ उनसे सम्बन्धित अन्य विवरणों का भी उल्लेख प्रस्तुत है । इसलिए दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं सामान्य पाठकों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी एवं सूचना प्रद - शब्दकोश है ।

Indian Philosophical Terms : Glossary and Sources / Kala Acharya; Editor-New Delhi : Somaiya Publications, 2004. 712 p.

प्रस्तुत ग्रन्थ "IndianPhilosophical Terms; glossary and Sources" भारतीय दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दकोश है । इस शब्दकोश में भारतीय धर्म एवं दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित विभिन्न पदों की अर्थ एवं परिभाषा अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत की गयी है । चूँकि भारतीय धर्मशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित प्राचीन साहित्य ज्यादातर संस्कृत, पालि एवं प्राकृत भाषा में उपलब्ध हैं, फिर भी इस परिभाषिक शब्दकोश में भारतीय दर्शन शास्त्र के सभी शाखाओं से सम्बन्धित विषयों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है ।

इस पारिभाषिक शब्दकोश में प्रत्येक पद की व्याख्या के साथ ही साथ उससे सम्बन्धित परिचयात्मक टिप्पणियों का भी वर्णन किया गया है । यह सर्वविदित है कि

भारतीय दर्शन शास्त्र का क्षेत्र बहुत व्यापक है, फिर भी भारतीय दर्शन में विद्यमान सभी शाखाओं तथा विचारों से सम्बन्धित पदों की विस्तृत, स्पष्ट तथा आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत करने का उत्तम प्रयास किया गया है ।

इसके संकलन में भारतीय दर्शन के जिन क्षेत्रों को आधार स्वरूप अनुसरण किया गया है उनमें सांख्य योग, न्यायवैषेशिक, पूर्वमीमांसा, वेदान्त, चार्वाक दर्शन, जैनदर्शन तथा बौद्धदर्शन आदि प्रमुख हैं । इसके अतिरिक्त इसमें दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित सामान्य पदों के साथ ही साथ तकनीकी पदों की भी व्याख्या प्रस्तुत की गयी है । इस शब्दकोश के संकलन में कुल 712 पृष्ठों का उपयोग किया है जिसमें पृष्ठ संख्या 1 से लेकर 200 तक के अन्तर्गत भूमिका का उल्लेख किया गया है, जबकि पृष्ठ 219 से लेकर 682 पृष्ठ तक अनुक्रमणी का उल्लेख है । इसमें लिप्यन्तरण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय मानकों का उपयोग किया गया है ।

इस प्रकार यह कृति भारतीय दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों एवं अध्येताओं के लिए एक महत्वपूर्ण त्वरित सन्दर्भ स्रोत है ।

Theosophical Glossary / H.P. Blavatsky.- New Delhi : Asian Publication Services, 1993.

यह ग्रन्थ ईश्वरी ज्ञान से सम्बन्धित शब्दों अथवा पदों की एक परिभाषिक शब्दकोश है। इसे सन् 1892 में पहली बार प्रकाशित किया गया था फिर इसका पुन संस्करण सन् 1986 में प्रकाशित हुआ था । जबकि 1993 में इसे पुनः प्रकाशित किया गया ।

इसमें ईश्वरी ज्ञान से सम्बन्धित पदों अथवा शब्दों के परिभाषा एवं अर्थों को अंग्रेजी वर्णमाला के वर्णानुक्रम में A से Z के क्रम में प्रस्तुत किया गया है । इसमें भारतीय भाषाओं जैसे संस्कृत, पालि, तिब्बतन के साथ ही साथ ग्रीक, लैटिन, हिब्रु एवं परशियन भाषा के शब्दों को भी सम्मिलित किया गया है । इसमें पूर्वी एवं पश्चिमी जगत के विद्वानों एवं धर्मगुरुओं से सम्बन्धित सूचना को भी विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है ।

इसके संकलन में कुल 389 पृष्ठों का उपयोग हुआ है तथा यह एक उत्तम सन्दर्भ स्रोत हैं ।

भारतीय दर्शन वृहत्कोश / बच्चूलाल अवस्थी "ज्ञान" - दिल्ली : शारदा पब्लिशिंग हाउस, 2004. (बहुखण्डीय)।

प्रस्तुत ग्रन्थ "भारतीय दर्शन वृहतकोश" भारतीय दर्शन शास्त्र का एक महत्वपूर्ण शब्दकोश है । यह वृहत शब्दकोश 2004 ई. में चार खण्डों में प्रकाशित हुआ है । इसमें दार्शनिक शब्दों के व्युत्पत्ति लभ्य एवं स्वरूपगत अर्थ के प्रतिपादक शास्त्रीय उद्धरणों का संकलन, समायोजन के साथ ही साथ यथावसर तुलनात्मक विवेचन की तटस्थ मीमांसा, पदों के व्याख्यान की समग्रता को प्रमाणित करने का प्रयास भी किया गया है । भारतीय दार्शनिक वाङ्मय मानविय चिन्तन का चरमोत्कर्ष है, जिसमें ऋषियों की तत्वार्थ दर्शिनी

प्रतिभा द्वारा उन्मीलित ज्ञान राशि ने शब्दों का प्रमाणिक आकार ग्रहण किया है । विविध दार्शनिक प्रणालियों में प्रयुक्त शब्द किसी विशिष्ट प्रस्थान के सन्दर्भ में अपना पारम्परिक अर्थ रखते हैं; जिसमें यथावत बोध के अभाव में किसी दर्शनभेद को यथार्थतः समझना अत्यन्त दुष्कर हो जाता है । यही कारण है कि इस महत्त्वपूर्ण कृति के निर्माण के बाद भी ग्रन्थकार ने समग्रता का अभिमान नहीं किया है । इसमें आचार्यों के ग्रन्थों का यथापेक्ष संकलन, समायोजन तथा लेखन ही प्रस्तुत लेखक का कार्य रहा है । इसलिए उसने किसी मत की समीक्षा करते हुए अपने मत का अभिनिवेश नहीं रखा है, जो कि इस बृहत्कोश की सबसे बड़ी लेखकीय उपलब्धि है। इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में पृष्ठ सं. i से xii तक संकेत सहित ग्रन्थनाम सूची का उल्लेख है तथा भारतीय दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों की सन्दर्भ ग्रन्थ सूची भी संनिहित है । इसमें वर्णित दर्शनानुसार शब्द शीर्षक सूची के अन्तर्गत भारतीय दर्शन के अनेक क्षेत्रों से सम्बन्धित शब्दों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करके प्रदर्शित किया गया है ।

इस सन्दर्भ ग्रन्थ के अन्तर्गत अचिन्त्य भेदाभेदभाव (वेदांत), अद्वैत वेदान्त, आयुर्वेद दर्शन, चार्वाक दर्शन, जैन दर्शन, द्वैत वेदान्त, (माध्व), द्वैताद्वैत (निम्बार्क), न्याय दर्शन, प्रत्यभिज्ञा दर्शन (काश्मीर शैवाद्वैत), बौद्ध दर्शन, बौद्ध दर्शन (माध्यमिक शून्यवाद) बौद्धदर्शन (योगाचार विज्ञानवाद), बौद्ध दर्शन (वैभाषिक सर्वास्तिवाद), बौद्ध दर्शन (सौत्रान्तिक सर्वास्तिवाद), मीमांसा दर्शन (कुमारिल), मीमांसा दर्शन (प्रभाकर), मीमांसा दर्शन (मण्डन मिश्र), योग दर्शन, विशिष्टताद्वैत वेदान्त, वेदान्त दर्शन, वैशेषिक दर्शन, व्याकरण दर्शन, शाक्त दर्शन, शुद्धाद्वैत वेदान्त, शैव दर्शन (द्वैत, विशिष्टातैत, दाक्षिणात्य, नकुलीश), सांख्य दर्शन जैसे भारतीय दर्शनशास्त्र के सभी शाखाओं को सम्मिलित किया गया है ।

यह शब्दकोश अबतक प्रकाशित भारतीय दर्शन के सभी शब्दकोशों में वृहतशब्दकोश होने के साथ ही साथ हिन्दी भाषा में प्रकाशित अद्यतन एवं सर्वाधिक उपयोगी कोश है । भारतीय दर्शनशास्त्र में रूचि रखनेवाले सभी श्रेणी के पाठकों के लिए यह एक बहुमूल्य कृति है ।

योग शब्दकोश / सुभाष विद्यालंकार - दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 2005. 199 पृ.

प्रस्तुत ग्रन्थ योगशब्दकोश में संकलनकर्ता ने योगदर्शन तथा योग के विभिन्न अंगों को सुलभ बनाने के लिए विषय से सम्बन्धित दार्शनिक शब्दों को इस रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कि सामान्य बुद्धि वाले गोगाभिलाषी भी ऐसे शब्दों के सामान्य अर्थों से आसानी से परिचित हो सकें ।

इस कोश ग्रन्थ में योग दर्शन तथा योग से सम्बन्धित जिन शब्दों को स्थान दिया गया है उनके अर्थों को वर्णानुक्रम में अक्षर 'अ' से 'ह' के क्रम में विन्यसित किया गया है।

इस प्रकार यह शब्दकोश वर्तमान परिवेश में योग जिज्ञासुओं एवं विद्वत समाज के लिए बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है ।

भारतीय पुरा इतिहासकोश / अरूण-नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशसन्स, 2009 (दो भागों में)

प्रस्तुत 'भारतीय इतिहास पुराकोश' प्राचीन भारतीय इतिहास से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाओं की जानकारी करने हेतु एक बहुमूल्य कृति है । इसमें ऐतिहासिक साक्ष्यों का वर्णन विचारित तिथियों के अनुसार संकलित है । इस शब्दकोश को दो खण्डों में संकलित किया गया है ।

इसके प्रथम भाग में लगभग 5000 ईसा पूर्व से लेकर 600 ईसा पूर्व तक के ऐतिहासिक शाक्ष्यों का कोश क्रम के रूप में उल्लेख किया गया है । इसके खण्डों में जिन क्षेत्रों को आधार बनाया गया है उनमें पृथ्वी की आयु, मनुष्य का जन्म, पुराणों में इतिहास, भारत सिन्धू, त्रिदेव, आठ प्रकार के विवाह, सभ्यता का चक्र तथा आर्य कहाँ से आये आदि सम्मिलित है ।

इस शब्दकोश के दोनों खण्डों को मिलाकर कुल 760 पृष्ठों का उपयोग किया गया है जिसमें प्रथम खण्ड का पृष्ठांकन 1 से लेकर 360 तक है, जबकि दूसरे खण्ड में 361 से लेकर 760 तक है ।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व के विद्यार्थियों के लिए यह बहुत उपयोगी ग्रन्थ है ।

कालिदास पर्यायकोश / त्रिभुवन नाथ शुक्ल-दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 2008 (दो भागों में)।

यह संस्कृत साहित्य का विषय शब्द कोश है तथा इसका प्रथम संस्करण 2008 ई. में प्रकाशित हुआ है । संस्कृत साहित्य में पर्याय या समानार्थक शब्द एक से होते हुए भी उनकी अर्थच्छाइयों में सूक्ष्म अन्तर होता है । इन्हीं अन्तरों को दृष्टिगत करते हुए कालिदास के काव्यों में उनके द्वारा प्रयुक्त शब्दों तथा उनके पर्यायों को अकारादि क्रम से प्रस्तुत करते हुए उन शब्दों की व्युत्पत्ति, अर्थ, उद्धरण, सन्दर्भ तथा उद्धरणों का हिन्दी में अनुवाद आदि को इस कोश में प्रस्तुत किया गया है ।

इस कोश के प्रथम भाग में पदों की व्यवस्थापन हिन्दी वर्णमाला के प्रथम अक्षर 'अ' से प्रारम्भ होकर 'त्र' अक्षर से समाप्त हुआ है । इसमें रघुवंशम् के प्रत्येक वाक्यों को पहले संस्कृत में दिया गया है फिर उसका हिन्दी में अनुवाद किया गया है । इस प्रकार रघुवंशम् के कुल 291 शब्दों तथा 1343 पर्यायों को आकारादि क्रम से प्रस्तुत किया गया है ।

इसी प्रकार इस कोश के द्वितीय भाग को पुनः तीन खण्डों में संकलित किया गया है । प्रथम खण्ड में "कुमार सम्भवम्" द्वितीय खण्ड में "मेघदूतम" तथा तृतीय खण्ड में "ऋतु संहार" के पर्यायों का संकलन प्रस्तुत किया गया है । इस प्रकार द्वितीय भाग के प्रथम खण्ड में "कुमार सम्भवम्" के 151 शब्दों के कुल 660 पर्यायों का सन्दर्भ सहित विवेचन किया गया है । जबकि इसके द्वितीय खण्ड में "मेघदूतम" के 107 शब्दों 371 पर्यायों के साथ ही साथ तृतीय खण्ड में "ऋतुसंहार" के 85 शब्दों के 352 पर्यायों का आकारादि क्रम से सन्दर्भ एवं उद्धरण सहित विवेचन प्रस्तुत किया गया है । कालिदास के सम्पूर्ण काव्य साहित्य में कुल 634 शब्दों के 2726 पर्यायों का इसमें प्रयोग हुआ है ।

इस प्रकार यह शब्दकोश संस्कृत साहित्य के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों एवं लेखकों के लिए एक बहुमूल्य सन्दर्भ कृति है ।

संस्कृत नाट्यकोश / राम सागर त्रिपाठी - दिल्ली : चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 1997 (दो खण्डों में)

यह कोश संस्कृत साहित्य का एक विषय शब्दकोश है तथा इसका प्रथम संस्करण 1997 ई. में प्रकाशित हुआ है । इस शब्दकोश को दो खण्डों में प्रकाशित किया गया है। इसके प्रथम खण्ड में संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित नाटकों के संकलन को प्रस्तुत किया गया है, जबकि इसके द्वितीय खण्ड का शीर्षक "शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली कोश" है। इसमें नाटकों की नामावली को विषयानुसार वर्गीकृत रूप में प्रस्तुत की गयी है तथा इसके अन्त में शास्त्रीय सिद्धान्तों का परिशिष्ट में उल्लेख भी किया गया है ।

इस प्रकार यह कोश संस्कृत साहित्य के विद्यार्थियों के लिए बहुत अधिक उपयोगी है ।

बालमीकीय रामायण कोश-राम कुमार राय - वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत भवन, 2007, 421 पृ. ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवान श्रीराम के अद्योपान्त जीवन से सम्बद्ध सम्पूर्ण घटना क्रम का विवरण संकलित है । इसके साथ ही साथ इसमें भगवान श्री राम के जीवन चरित्र के अतिरिक्त रामायण में आये अन्य सभी पात्रों के योगदानों एवं विभिन्न क्रिया-कलापों को भी सुन्दर ढंग से वर्णित किया गया है ।

प्रस्तुत कोश में बाल्मीकीय रामायण में आये नामों और विषयों की व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका को प्रस्तुत किया गया है । इस कोश में मूलविषय के अन्तर्गत शब्दों का विन्यसन पृष्ठ संख्या 3 से लेकर 422 तक विन्यसित है, तदनन्तर तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं, जिनमें क्रमशः बाल्मीकी रामायण में निंकलने वाले पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों तथा अस्त्र-शस्त्रों के नाम और उनके एक-एक सन्दर्भ संकेत भी दिये गये हैं । इसमें शब्दों के अर्थों का विन्यसन वर्णानुक्रम में विन्यसित है।

इस प्रकार यह कोश संस्कृत साहित्य एवं रामायण साहित्य के अध्येताओं तथा जिज्ञासुओं के लिए उनकी सूचना आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत है ।

Buddhist Hybrid Sanskrit Grammar and Dictionary / Franklin Edgertion.-London : Oxford University Press, 1953. (2 Vols.)

इस विशिष्ट शब्दकोश में बौद्ध धर्म के साथ ही साथ संस्कृत व्याकरण को भी सम्मिलित किया गया है । इस शब्दकोश को दो खण्डों में प्रकाशित किया गया है तथा इसकी भाषा अंग्रेजी है । इसके प्रथम खण्ड का शीर्षक "Grammar" है, जिसमें व्याकरण से सम्बन्धित विभिन्न विषयों का उल्लेख प्रस्तुत है । जबकि इसके दूसरे खण्ड का शीर्षक "Dictionary" है । इस द्वितीय खण्ड में पालि, अर्द्धमागधी, प्राकृत, अपभ्रंश और देशी शब्दों के अर्थ को अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया गया है । इसके साथ ही साथ इसमें मध्यम भारतीय शब्दों (Middle Indic Words) के आंशिक अनुक्रमणी का भी उल्लेख है ।

इस प्रकार यह विशिष्ट शब्दकोश प्राच्य विद्या के पाठकों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ कृति है।

संस्कृत सङ्गणक शब्दकोश (Sanskrit Dictionary of Computers) / Compiled by Srikantha Jamadagni; edited by Srinivas Varakhedi.-Hyderabad : Sanskrit Parishad, R.S.S., U. University, 2009.

यह शब्दकोश एक प्रकार से विषय से सम्बन्धित विशिष्ट शब्दकोश है तथा इसका प्रथम संस्करण 2009 ई. में प्रकाशित हुआ है । सम्भवतः यह अपने प्रकार का प्रथम विशिष्टशब्दकोश है जिसमें सङ्गणक (Computer) से सम्बन्धित लगभग दो हजार शब्दों को संस्कृत भाषा में रूपान्तरित किया गया है । इस शब्दकोश के प्रकाशन से संस्कृत माध्यम से अध्ययन, शोधकार्य एवं अध्यापन करनेवाले विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा अध्यापकों द्वारा कम्प्यूटर का अधिकाधिक प्रयोग में बहुत अधिक सहायता मिल सकती है।

प्राच्य विद्या तथा संस्कृत में ऐसे विशिष्ट शब्दकोशों की बहुत अधिक आवश्यकता है जिससे संस्कृत माध्यम से प्रद्यौगिकी, चिकित्सा विज्ञान तथा तकनीकी आधारित में नया परिवर्तन आ सके । यह शब्दकोश कम्प्यूटर में रूचि रखने वाले पाठकों के साथ-ही-साथ संस्कृत के पाठकों के लिए भी बहुत ही उपयोगी शब्दकोश है ।

मानस संख्यावाचक अन्त्याक्षरी कोश /कमता कमलेश - दिल्ली : प्रतिभा प्रकाशन, 2010 xvi, 728 पृ.

यह कोश भारत के विश्व प्रसिद्ध लोक ग्रन्थ रामचरित मानस पर आधारित है। इसमें रामचरित मानस में वर्णित समस्त चौंपांई, दोहा, सोरठा, छन्द तथा श्लोक की गणना करके उन्हें अकारादि क्रम से व्यवस्थित किया गया है । इस प्रसिद्ध शब्दकोश का प्रथम संस्करण

2010 ई. में प्रकाशित हुआ है । इसके संकलन में कुल-728 पृष्ठों का उपयोग किया गया है ।

इस प्रकार यह ग्रन्थ पूरे विश्व में प्रथम संख्यावाची कोश है जो रामचरित मानस के शोधार्थियों, विद्वानों, प्रचारकों, कथावाचकों, मानस मर्मज्ञों तथा सन्तों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं सूचनाप्रद शब्दकोश है ।

वास्तुशब्दार्णव (वास्तु शब्दावली)/ सुरेन्द्र कुार पाण्डेय - इलाहाबाद : साहित्य भण्डार, 2007 140 पृ.

यह शब्दकोश वास्तुशास्त्र का एक नवीनतम विषय शब्दकोश है तथा इस शब्दकोश की मुख्य विशेषता यह है कि वास्तुशास्त्र में उल्लिखित व प्रतिपादित समस्त विधान व व्यवस्थाओं से सम्बन्धित सभी शब्दों / पदों का हिन्दी एवं संस्कृत से अंग्रेजी में रूपान्तर प्रस्तुत है । इसके साथ ही साथ बीच-बीच में आवश्यकतानुसार मूल सन्दर्भ एवं श्लोकों का भी वर्णन प्रस्तुत किया है।

वास्तुशास्त्र में अनेक ऐसे शब्द हैं जिनका हिन्दी व अंग्रेजी दोनों के ज्ञान के बिना वास्तु की पुरी समझ नहीं हो पाती । इस दृष्टिकोण से यह वास्तुशब्दार्णव शब्दकोश बहुत ही उपयोगी है । आज वास्तु विद्या के प्रति जनमानस में जो रूचि दिखाई पड़ती है । ऐसी परिस्थिति में वास्तु विद्या का शास्त्र सम्मत ज्ञान नितांत अपेक्षित है ।

अतः इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत कोश में लगभगं 2000 वास्तु शास्त्र के शब्दों की अर्थ एवं व्याख्या प्रस्तुत की गयी है जिससे वास्तु विद्या में रूचि रखने वाले उपयोक्तओं के लिये यह एक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

पालि एवं प्राकृत भाषा के शब्दकोश : संस्कृत की भांति ही पालि एवं प्राकृत भाषा भी अतिप्राचीन भारतीय भाषाएँ हैं, परन्तु संस्कृत भाषा की तुलना में पालि एवं प्रकाृत भाषा में निघण्टु, निरूक्त तथा अमरकोष जैसे महत्वपूर्ण शब्दकोशों का प्रारम्भ से ही अभाव रहा है । पालि एवं प्राकृत भाषा एवं साहित्य में रूचि रखने वाले कुछ आधुनिक विद्वानों, लेखकों तथा कोश रचनाकारों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान किया है, जिनका विवरण निम्नवत है–

7. पालिभाषा के शब्दकोश-

1. Pali glossary including the words of all Pali reader and of the Dhammapad / Andersen, Dines, comp.-London : Luzac, 1901. 2 vols.
2. Levi, Sylvain and others, ed.
   Hobogirin dictionnaire encyclopedique du Buddhisme dapres, les sources Chinoises et Japonaises. Tokyo, Maisen Franco-Japonaise, 1929. iv; 2002 p.

3. Popular Dictionary of Buddhism / Christmas. Humphreys.London : Arco Publication, 1962. 224 p.
4. Pali Dictionary / Vimal Chandra Loha. London : Pali text Society, [ ].
5. Dictionary of Pali Proper Names / G.P. Malalasekhara.-London : Indian Text Series, 1937-38. 2 Vols.
6. Word Index of abhidharam Kosha / S. Pradhan; Compilor.-Delhi : Indian Books Centre, 2007.
7. Dictionary of Buddhist Proper Names / Chizen Akanuma - Delhi : Indian Book Centre, 2007.
8. Historical Dictionary of Buddhism /Charles S. Prebish. - Delhi : Indian Books Centre, 2007.
9. Buddhist Hybrid SanskritGrammar and Dictionary / Franklin Edgertion. - London : Oxford University Press, 1953. 2 Vols.
10. Vinaya Koshaya; Pali - Sihnalese / Morastuve Susanrastna Thero.- Panadure : M.F.C. Perera, 1958. (Two Vols.)
11. Pali Engish Dictionary / T.W. Rhys. Davids.-
12. English - Pali Dictionary / A.P. Buddhadatta Mahathera.-
13. पालि कोश संगहो एकक्खर कोश ।
बी.सी. जैन - नागपुर : आलोक प्रकाशन।
14. धम्मपदकोश (पालि-संस्कृति-हिन्दी) ।
श्रीकच्छेदी लाल गुप्त - वाराणसी : चौखम्बा विद्या भवन, 2009 ।
15. पालि -हिन्दी शब्दकोश / भ. आ. कौसल्यायन - दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, ।
16. पालितिपिटक सद्दानुक्कमणिका - वाराणसी : सम्पूर्णा नन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 2006 (दो भागों में)
17. Mahav yutpatti /.E.P. Menaefv; Editor.-St. Peterburg, 1910. 272 p.
18. Popular Dictionary of Buddhism /Humphrays, Christmas . - London : Arco Publications, 1962. 224 p.

8. प्राकृत भाषा के शब्द कोश-

पाइअ - लच्छीनाम माला। धनपाल; बैचरदास जीवराज दोशी, सम्पादक- मुम्बईः शादी लाल जैन, 1960, 122 पृ.

प्रस्तुत कोश प्राकृत भाषा में धनपाल द्वारा रचित यह प्रथम स्वतन्त्र शब्दकोश के रूप में उपलब्ध होता है । इस प्रसिद्ध कोश का संकलन संवत 1029 में धनपाल द्वारा की गयी थी । इस कोश की रचना में निघण्टु एवं अमरकोष की पद्धति का अनुसरण किया गया है । इस शब्दकोश में कुल 279 गाथाएँ है। प्रथम गाथा में मंगला चरण तथा कोश

के अन्त के चार गाथाओं में कोश रचनाकार ने स्वपरिचय दिया है तथा शेष 274 गाथाओं में कुल 998 शब्दों के पर्यायवाची शब्दों का संकलन है ।

यह कोश प्राकृत भाषा की एक मानक कृति के साथ ही साथ संस्कृत एवं भाषा विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी शब्दकोश है ।

देशीनाम माला शब्द कोश/आचार्य हेमचन्द्र ।

प्रस्तुत शब्दकोश की रचना आचार्य हेमचन्द्र ने प्राकृत भाषा के व्याकरण की पूर्ति के लिये किया है । प्राकृत भाषा में तीन प्रकार के शब्द प्रचलित हैं। देशी नाम माला के अन्तर्गत संकलित शब्दों से स्पष्ट होता है कि इसमें संकलित सभी शब्द देशी नहीं है। इस शब्दकोश में कुल शब्दों की संख्या 3978 हैं, जिसमें तत्सम 100, संशययुक्त तद्भव 528, गर्भित तद्भव 1850 तथा अव्युत्पादित शब्द 1500 हैं। इसमें मूलपाठ अपभ्रंश गाथा छन्द में निबद्ध है। देशी शब्दों के बाद गाथाओं में ही उनके पर्याय दे दिये गये हैं।

देशी शब्दों के स्पष्टीकरण के लिए स्वरचित उदाहरण गाथाएँ भी उद्धृत हैं। गाथा, संस्कृत टीका और उदाहरण देशी नाममाला का मूल स्वरूप है। यह शब्दकोश आठ वर्गों में विभक्त है । इसमें कुल 783 गाथाएँ निबद्ध हं। शब्दों का विन्यसन वर्णानुक्रम में किया गया है । वर्ग के आरम्भ में द्वय अक्षर -उसके बाद त्रय अक्षर, चतुरक्षर, पंचाक्षर शब्दक्रम से आठ अक्षरों तक के शब्दों का निर्देश है ।

इस प्रकार यह शब्दकोश आधुनिक भारतीय भाषाओं के साथ ही साथ प्राचीन भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन में बहुत उपयोगी है । इसमें संकलित कुछ शब्द कौल, संथाल, मुण्डा, द्रविड़ आदि भाषाओं में भी मिलते हैं ।

पाइअ-सद्द-महण्णवो । हरगोविन्ददास विक्रमचन्द्र सेठ; वासुदेवशरण अग्रवाल एवं दलसुख भाई मालवणिया; सम्पादक-वाराणसी : प्राकृत ग्रन्थपरिषद्, 1963. 952,64 पृ.

प्रस्तुत शब्दकोश की रचना कलकत्ता विश्व विद्यालय के प्राध्यापक पं. हरगोविन्ददास विक्रमचन्द्र सेठ ने किया है । इस कोश के सम्पादन का कार्य वासुदेवशरण अग्रवाल एवं दलसुख भाई मालवणिया के सहयोग से पूर्ण किया गया है । इस शब्दकोश में एक 50 पृष्ठ की भूमिका प्रस्तुत की गयी है जो प्राकृत साहित्य के अध्येताओं के लिए बहुत उपयोगी स्रोत है। इस कोश के निर्माण में संकलनकर्त्ता ने स्वेताम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्धित 300 ग्रन्थों का उपयोग किया है ।

इस शब्दकोश की कई महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं जो कि इस प्रकार निम्नलिखित हैं– पहला यह कि प्राकृत साहित्य के एक पूर्व शब्दकोश "अभिधान राजेन्द्र शब्दकोश के कमियों को पूरा करने का प्रयास किया गया है । प्रत्येक शब्द के साथ किसी न किसी ग्रन्थ का प्रमाण दिया गया है । एक शब्द के संभावित अनेक अर्थों का निर्देश किया गया है तथा संदिग्ध पाठ को कोष्ठक में प्रश्न चिह्न के साथ प्रस्तुति दी गयी है ।

प्राकृत साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह कृति अत्यन्त उपयोगी एवं सूचना प्रद शब्दकोश है ।

अभिधान राजेन्द्र कोश

प्रस्तुत कोश जैन दर्शन के परिभाषिक शब्दों के व्याख्या के लिए एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत है । इस ग्रन्थ के रचनाकार श्री विजयराजेन्द्र सुरीश्वर ने इस कोश में प्रमाण और उद्धरणों से पुष्ट न केवल सारे शब्दों को संकलित किया है, बल्कि शब्दों से परे जो विचार विश्वास और अनुश्रुतियाँ हैं, उनका भी समावेश किया है ।

इसका प्रथम प्रकाशन मध्य प्रदेश के रतलाम नगर में हुआ । यह महाकोश सात भागों में विभाजित है। इन सात भागों का प्रकाशन ई. सन् 1910 से आरम्भ होकर ई. सन् 1925 में पूर्ण हुआ ।

इस प्रकार यह कोश प्राकृत एवं जैन दर्शन के अध्येताओं तथा शोधार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है ।

जैन कक्को

यह एक द्विभाषिक कोश है । इसमें प्राकृत शब्दों का गुजराती में अनुवाद किया गया है । ई. सन् 1812 में अहमदाबाद से इस कोश को प्रकाशित किया गया था । इसके रचनाकार श्री बल्लभी 'छगन लाल है ।

अर्धमागधी कोश

लोम्बाड़ा सम्प्रदाय के स्थानक वासी साधु मुनि रत्नचन्द्र इस कोश के रचनाकार हैं। इस कोश का प्रथम प्रकाशन गुजराती में हुआ था । आगे चलकर इसका हिन्दी तथा अंग्रेजी रूपान्तर भी प्रकाशित हुआ । यह कोश कुल पाँच भागों में विभाजित है तथा लगभग 4500 पृष्ठों में संकलित हैं । इसके प्रथम भाग का प्रकाशन, ई. सन् 1923 में, द्वितीय-1927, तृतीय - 1929, चतुर्थ-1932 तथा पंचम - 1938 में किया गया।

इस प्रकार यह पंचमाषाकोश है । प्राकृत के शब्द संस्कृत, गुजराती, हिन्दी`वं अंग्रेजी भाषाओं में रूपांतरित किये गये हैं।

प्राकृत-हिन्दी कोश

प्राकृत एवं भारतीय भाषाओं के अग्रणी विद्वान डा. के आर. चन्द्र ने मूल 'पाइयसद्द महण्णवो' का संक्षिप्त और लघुकार आकार में प्राकृत-हिन्दी कोश का सम्पादन किया जिसका प्रकाशन जैनविकास फण्ड, अहमदाबाद से ई. सन् 1987 में हुआ ।

प्रस्तुत कोश प्राकृत भाषा के प्राथमिक विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है। इसमें आकारादि क्रम से शब्दों की संयोज़ना की गयी है । प्राकृत शब्दों के बाद लिंग निर्देश, कोष्ठक में संस्कृत रूप तदन्तर उनके हिन्दी में अर्थ बताये गये हैं। इसमें एक शब्द के साथ

सम्भावित अन्य शब्दों को जोड़कर अर्थ निरूपण किया गया है । यह कोश कुल 980 पृष्ठों में संकलित है तथा प्राकृत के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है।

एकार्थक कोश

प्रस्तुत कोश ग्रन्थ समणी कुसुम प्रज्ञा द्वारा सम्पादित है तथा इसका प्रकाशन जैन विश्वभारती द्वारा सन् 1984 में किया गया । यह कोश गद्य-पद्य मिश्रित रूपों में संकलित है। यह कोश ग्रन्थ कुल 41+396 पृष्ठों में संकलित है । प्रारम्भिक 41 पृष्ठों में स्तकथ्य, पुरोवचन प्रस्तुति, ग्रन्थ संकेत सूची आदि विन्यस्त है । इसमें मूल 1417 तथा लगभग 200 आवान्तर एकार्थक शब्दों (1700) का संकलन किया गया है । इसके अन्त में तीन परिशिष्ट है। प्रथम परिशष्ट में प्रयुक्त शब्दों की आकारादि क्रम से सूची दी गयी है, जबकि द्वितीय परिशिष्ट में एकार्थक शब्दों का टिप्पण एवं प्रमाम वर्णित है । तृतीय परिशिष्ट में आकारादि क्रम से धातुओं के साथ संस्कृत में उनके अर्थों का निरूपण किया गया है । इसमें शब्दों का संकलन अर्धमागधी आगम एवं टीका साहित्य से किया गया है । जैन पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान के लिए यह कोश बहुत उपयोगी है ।

देशी शब्द कोश

प्रस्तुत कोश का सम्पादन आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा किया गया है तथा जैन विश्व-भारती द्वारा सन् 1988 में प्रकाशित किया गया है । आचार्य हेम चन्द्र के देशी नाममाला के बाद देशी शब्दों के अर्थ ज्ञान के लिए यह कोश सबसे महत्वपूर्ण कृति है ।

यह कोश ग्रन्थ कुल 66+570 पृष्ठों में विन्यसित है । शुरू के 66 पृष्ठों में आर्शिवचन, पुरोवाक् भूमि का एवं सम्पादकीय है, जबकि शेष 439 पृष्ठों में ग्रन्थ का मूल विषय संकलित है ।

इस कोश में कुल 10000 संसन्दर्भ देशी शब्दों का संग्रह तथा 3381 आगमेत्तर प्राकृत एवं अपभ्रंश ग्रन्थों के तथा 1745 धातुएँ संकलित है । इस प्रकार इसमें कुल 15126 शब्दों का संकलन दर्ज है ।

निरुक्त कोश

प्रस्तुत कोश का प्रकाशन सन् 1984 में जैन विश्वभारती द्वारा सम्पन्न हुआ । यह कोश लगभग चार सौ पृष्ठों में संकलित है । इसमें प्रारम्भ से 30 पृष्ठों तक प्राक्कथन आदि तथा शेष 368 पृष्ठों में मूल ग्रन्थ एवं शुद्धा सुद्धि पत्रों का विवरण है । प्राक्कथन में डा. नथमल टाटिया द्वारा निरूक्त सिद्धान्त का विवेचन एवं प्रस्तुति तथा साध्वी द्वय श्री सिद्ध प्रज्ञा एवं साध्वी श्री निर्वाण श्री द्वारा निरूक्त के स्वरूप एवं प्रकारादि पर प्रकाश डाला गया है।

मूल ग्रन्थ में प्राकृत शब्दों के बाद कोष्ठक में संस्कृत रूप देकर संस्कृत या प्राकृत में निर्वचन प्रस्तुत किया गया है । इसमें निहित निर्वचन के हिन्दी अनुवाद भी उपलब्ध है।

इस प्रकार यह कोश प्राकृत के विद्यार्थियों के साथ ही साथ शोधार्थियों के लिए भी बहुत उपयोगी है ।

कुन्द-कुन्द शब्द कोश

सुखाडिया विश्व विद्यालय, उदयपुर के प्राकृत एवं जैन विद्या विभाग के प्राध्यापक डा. उदयचन्द्र जैन ने आचार्य कुन्द-कुन्द के वाङ्मय को आधार बनाकर एक लघुकाय कुन्द-कुन्द शब्दकोश का निर्माण किया, जिसका प्रकाशन श्री दिगम्बर जैन संरक्षण समिति, विवेक विहार, दिल्ली द्वारा सन् 1991 में किया गया ।

कुन्द-कुन्द शब्द कोश साहित्य के अध्येताओं के लिए बहुत उपयोगी सन्दर्भ स्रोत हैं। इसमें यथास्थान कुन्द-कुन्द साहित्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या भी दी गयी है ।

प्राकृतरूप रचना कोश / हरिशंकर पाण्डेय. दिल्ली : न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, 2001, 319 पृ.

प्रस्तुत कोश 'प्राकृत रूप रचना कोश' प्राकृत साहित्य में डा. हरिशंकर पाण्डेय का एक महत्वपूर्ण योगदान है । इसमें आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण में निर्दिष्ट उदाहरणों को आधार बनाया गया है । इसमें वर्णित शब्दों के मूल प्राकृत रूप, संस्कृत रूप-कोष्ठक में तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी कोशगत अर्थ के बाद आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण के नियमों के अनुसार साधविका भी दी गयी है ।

इस कोश में प्रारम्भ के XXI पृष्ठों में भूमिकां एवं प्रक्कथनादि का वर्णन है, जबकि मूलग्रन्थ को वर्णानुक्रम में 317 पृष्ठों में विन्यसित किया गया है तथा पृष्ठ संख्या 318 से 319 तक पर सन्दर्भ ग्रन्थ सूची का संकेत है । इस प्रकार यह कोश प्राकृत विद्या एवं प्राच्य विद्या के विद्यार्थियों, शोध-कर्त्ताओं एवं अध्यापकों के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपयोगी सन्दर्भ स्रोत है ।

❑❑

चतुर्थ अध्याय

विश्वकोश

(Encyclopaedia)

1. भूमिका एवं अर्थ-

एनसाइक्लोपिडिया (Encyclopaedia) ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है ज्ञान चक्र या ज्ञान के भण्डार का एकत्रिकरण। पश्चिमी जगत में विश्वकोश के अवधारणा की कल्पना अरस्तु के काल से मानी जाती है जबकि भारत में इसकी कल्पना बहुत पहले की जा चुकी थी । इस प्रसंग में श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा सम्पादित ग्रन्थ "संस्कृत वाङ्मय-कोश" के प्रथम खण्ड में वाङ्मुख के प्रथम पृष्ठ पर जो साक्ष्य अंकित है वह इस प्रकार निम्न है–

"संस्कृत वाङ्मय में विश्वकोश अथवा ज्ञानकोश की रचनात्मक प्रक्रिया का प्रथम-प्रयास महर्षि कश्यप का निघण्टु एवं यास्काचार्य का निरूक्त सम्भवतःइस दिशा में पहला कदम था । आदि शंकराचार्य छान्दोग्य उपनिषद के भाष्य में नारद और सनतकुमार के प्रसंग में नारद द्वारा उल्लिखित अनेक विद्याओं में से एक देव विद्या की व्याख्या करते हुए उसको निरुक्त की संज्ञा देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि विश्वकोश या ज्ञान कोश की भावना के प्रथम प्रवर्तक नारद ही थे जो कि वेद, पुराण, कल्प, शस्त्र विद्या आदि ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में अपने को पारंगत मानते थे ।"

अतः वैदिक वाङ्मय में विश्वकोश की अवधारणा अति प्राचीन-प्रतीत होता है। परन्तु आधुनिक विश्वकोशों के निर्माण का युग 19वीं सदी से माना जाता है जिसमें विश्व के अनेक देशों में सामान्य एवं विषयगत विश्वकोशों का प्रकाशन तिव्रगति से होना प्रारम्भ हुआ । इसमें अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैण्ड, तथा जर्मनी आदि अनेक देशों ने सक्रिय योगदान देकर अनेक महत्वपूर्ण विश्वकोशों का निर्माण किया । अतः भारत में भी इसका प्रभाव पड़ा जिसके फलस्वरूप आधुनिक पद्धति पर आधारित विश्वकोश निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। सर्व प्रथम संस्कृत भाषा में "वाचस्पत्यम्" (1823) तथा शब्द कल्पद्रुम (1828-58) नामक दो कोश ग्रन्थ अपनी दृष्टि में शब्दकोश और विश्वकोश दोनों तत्वों को साथ लेकर रूपायित हुए हैं। साहित्य व्याकरण, ज्योतिष तन्त्र, दर्शन, संगति, काव्य शास्त्र, इतिहास, चिकित्सा आदि अनेक विषयों का सूचनात्मक लेखों का संग्रह इन दोनों विश्वकोशों

में संग्रहित है । इस प्रकार भारत में आधुनिक विश्वकोशों की संकलन प्रक्रिया में इन दो कृतियों के संकलनकर्ताओं ने महत्वपूर्ण योगदान किया है । तदनन्तर कुछ पाश्चात्य तथा प्राच्य विद्वानों इस नूतन परम्परा को आगे बढ़ाया ।

अंग्रेजी में "इनसाइक्लोपिडिया अमरीकाना" (1829-33) आदि विश्वकोशों के स्वरूप के अनुरूप भारतीय भाषाओं में साहित्यिक तथा साहित्येत्तर विश्वकोश धीरे-धीरे निंमित होना प्रारम्भ हुआ । इस परिपेक्ष्य में विश्वबन्धु शास्त्री का वैदिक शब्दार्थ पारिज़ात (1929) प्रथमतः उल्लेखनीय कृति है । इसके अतिरिक्त उन्होंने "वैदिक पदानुक्रमकोश" (सात खण्डीय), ब्राह्मणोद्धारकोश, "उपनिषदोहदारकोश" आदि की भी रचना की जो संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के महत्वपूर्ण विश्वकोश के लक्षणों से युगपत अभिलक्षित है ।

भारत की स्वाधीनता के पश्चात् लगभग सभी भारतीय भाषाओं में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न-विश्वकोशों की रचना हुई । परन्तु संस्कृत एवं प्राच्य विद्या में विश्वकोश की इस अखिल भारतीय चिन्तन धारा में कोई विशेष एवं उल्लेखनीय प्रयास नहीं हुआ । इस कमी को श्रीधर भास्कर वर्णेकर ने "संस्कृत वाङ्मय कोश" के रूप में एक महत्वपूर्ण विश्वकोश की रचना की जो संस्कृत के अध्येताओं के लिए एक बहुमूल्य कृति है । सामान्य शब्दों में विश्वकोश का अभिप्राय ऐसे ग्रन्थ से है जिसमें सभी विषयों से सम्बन्धित उपयोगी सूचना या किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन किया रहता है । विश्वकोश की निर्माण प्रक्रिया में अनेक विद्वानों, लेखकों व सम्पादकों का सामूहिक योगदान निहित रहता है, क्योंकि इनकी रचना सभी श्रेणी के पाठकों की सूचना आवश्यकता को ध्यान में रखकर की जाती है । जो बहुत ही श्रमपूर्ण एवं व्यव साध्य कार्य है ।

2. परिभाषाएँ-

विश्वकोश वह कृति है जो सम्पूर्ण संग्रहित ज्ञान भण्डार को सुसंगठित रूप एवं क्रमबद्ध अवस्था में प्रस्तुत करता है जिससे सभी श्रेणी के पाठक अपने रूचि के अनुरूप विषय से सम्बन्धित अद्यतन ज्ञान प्राप्त करते हैं । ए.एल.ए. ग्लोसरी ऑफ लाइब्रेरी टर्म्स के अनुसार, "विश्वकोश वह साहित्य है जिसमें ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में सम्बन्धित विषयों पर वर्णानुक्रम या किसी अन्यक्रम में सूचनात्मक लेखों का संग्रह व्यवस्थित रहते हैं या किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्धित उपयोगी सूचनाओं की संग्रह है ।"

मानविकी परिभाषाकोश के अनुसार, विश्वकोश वह कृति है जो ज्ञान की सभी शाखाओं के विषय में सूचना दे । अर्थात् जिस ग्रन्थ में किसी एक विषय की सम्पूर्ण सूचना वर्णानुक्रम में दी हुई रहती है उसे विश्वकोश कहते हैं ।"

लुइस शोर्स के अनुसार-"विश्वकोश सन्दर्भ स्त्रोतों की प्रमुख कृति है । यह मानव जाति के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान का केवल साररूप नहीं है, बल्कि मौलिक सन्दर्भ स्त्रोतों में अनुसृत रचना की परिकल्पना का सर्वस्व है।"

3. प्रकार-

इसमें संग्रहित सूचनाओं के आधार पर विश्वकशोंको दो भागो में विभाजित किया जा सकता है । 1. सामान्य विश्वकोश एवं 2. विशिष्टया विषयगत विश्वकोश । विलियम ए. काट्ज महोदय ने विशिष्ट विश्वकोशों को विषय विश्वकोश की संज्ञा दी है तथा विषय विश्वकोश की संज्ञा दी है तथा विषय विश्वकोश को पुनः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे कोश रूप एवं सर्वेक्षणात्मक रूप । इसीप्रकार भौतिक स्वरूप के आधार पर भी विश्वकोश को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे–

1. बच्चों एवं वयस्क के विश्वकोश, एवं
2. खण्डों के आधार पर विश्वकोश जैसे एक खण्डीय एवं बहुखण्डीय विश्वकोश।

4. उपयोगिता एवं महत्व-

1. विषय के सम्बन्ध में प्रश्नों की जानकारी प्राप्त होती है ।
2. विभिन्न विषय के सामान्य ज्ञान के अतिरिक्त अन्य आवश्यक सूचनाओं जैसे आँकड़ों, वर्ष तथा नामों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।
3. विश्वकोशों के माध्यम से प्रमुख व्यक्तियों के जीवन चरित्र के विषय में ज्ञान प्राप्त की जा सकती है ।
4. विश्वकोश में जिन लेखों का संग्रह दिया रहता है उनके प्रमाण हेतु लेख के अन्त में पुस्तक सूची दी हुई होती है जो पाठकों के लिए मार्ग निर्देशन का कार्य करती है ।

अत विश्वकोश की मात्र ऐसी कृति है जिसमें वांछित सूचनाओं के साथ ही साथ सन्दर्भ प्रश्नों के उत्तर भी आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं ।

5. विशेषताएँ-

1. यह ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित सूचना सामग्रियों का प्रमाणिक एवं अद्यतन स्रोत है तथा इसका क्षेत्र एक राष्ट्र में सीमित न होकर पुरा विश्व होता है।
2. इसमें ज्ञान से सम्बन्धित सभी शाखाओं की सूचनाओं को व्यवस्थित तथा साररूप में संकलित रहता है ।
3. पाठकों की श्रेणी एवं विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के विश्वकोश उपलब्ध हैं।
4. कुछ विश्वकोशों में सूचनाएँ लम्बे लम्बे लेखों के रूप में जबकि कुछ में छोटे-छोटे लेखों द्वारा सूचनाएँ संकलित रहती है।
5. इसमें विविध विषयों के ऐतिहासिक सूचनाओं के वर्णन के साथ ही साथ वर्तमान स्थिति, विवरण एवं व्याख्या, सम्बन्धित विद्वानों का संक्षिप्त जीवनी एवं इसके

प्रकाशन वर्ष तक के विषय से सम्बन्धित महत्वपूर्ण आँकड़े आदि प्रस्तुत किये रहते हैं ।

6. समस्याएँ-

1. समय के साथ-साथ विश्वकोश पुराने हो जाते हैं ।
2. इनको अद्यतन बनाये रखने के लिए नये-नये संस्करण निकालने पड़ते हैं जिसमें बहुत अधिक श्रम एवं धन की आवश्यकता होती है।
3. विश्वकोश को अद्यतन रखने हेतु पूरक अथवा वार्षिकी भी प्रकाशित करनी पड़ती है जो बहुत खर्चीला है ।
4. कुछ कुछ विश्वकोशों का किसी विषयक्षेत्र या किसी एक देश के प्रति झुकाव होता है, वह उचित नहीं है ।

7. मूल्यांकन-

सभी श्रेणी की ग्रन्थालयों में सन्दर्भ स्रोतों के रूप में विश्वकोशों का अधिकाधिक उपयोग किया जाता है। अतः ग्रन्थालयी को शुद्ध एवं त्रुटि रहित प्रकाशित विश्वकोशों के चयन और उनके अधिग्रहण में कुछ सावधानी अवश्य रखनी चाहिए । क्योंकि कोई भी ग्रन्थालय के पास इतना धनराशि नहीं होता कि सारे प्रकाशित विश्वकोशों को उनके द्वारा क्रय किया जा सके । इसलिए ग्रन्थालयी एवं ग्रन्थ चयन समिति द्वारा कोई भी विश्वकोश क्रय करने से पूर्व कुछ मूल्यांकन कर लेना चाहिए ।

सामान्य एवं विशिष्ट विश्वकोशों का मूल्यांकन निम्नलिखित जाँच विन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है-

1. प्रमाणिकता
2. विषय क्षेत्र
3. प्रणयन
4. व्यवस्थापन
5. भौतिक स्वरूप
6. संशोधन
7. सीमाएँ
8. विशिष्ट विशेषताएँ

उपर्युक्त तथ्यों के आधार यह पता लगाया जा सकता है कि कौन सा विश्वकोश किस प्रकार के ग्रन्थालयों में अधिग्रहण के योग्य है अथवा नहीं । प्रस्तुत अध्याय में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित विषय विश्वकोशों पर प्रकाश डाला गया है, क्योंकि सामान्य विश्वकोशों से सम्बन्धित विस्तृत विवरण सन्दर्भ सेवा एवं सूचना स्रोत के कई ग्रन्थों में पाये जा सकते हैं, जबकि संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के विषयगत विश्वकोशों का विस्तृत विवरण

का उल्लेख नहीं किया गया होता है । इसीलिए संस्कृत एवं प्राच्य विद्या में रूचि रखने वाले उपयोक्तओं की सूचना आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इन विशिष्ट विश्वकोशों के सम्बन्ध में उन्हें अवगत कराना आवश्यक प्रतीत होता है।

8. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के विषयगत विश्वकोशों के कुछ प्रमुख उदाहरण—

1. वाचस्पत्यम् / तारानाथ भट्टाचार्य, सम्पादक - वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, 1962 (छः भागों में)
2. शब्दकल्पद्रुम / राधाकान्त देव.- वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, 1967 (पाँच भागों में)।
3. विज्ञान सर्वस्वम् / तेलुगु भाषा समिति - आंध्र प्रदेश, 1967-75 (16 खण्डों में)।
4. विश्वविज्ञान कोशम् /साहित्य प्रवर्तक सहकार समिति : कोट्टायम : केरल.- 1970 ।
5. हिन्दी विश्वकोश / राम प्रसाद त्रिपाठी; सम्पादक.-वाराणसी : नागरी प्राचरिणी सभा, 1960-1970 (बारह खण्डों में) ।
6. हिन्दी विश्वकोश /नागेन्द्र नाथ वसु; सम्पादक दिल्ली : बी. आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, 1987. (पचीस खण्डों में) ।
7. हिन्दी विज्ञान संहिता / एम. सत्यनारायण; सम्पादक - मद्रास हिन्दी विकास समिति, (बारह खण्डों में) ।
8. हिन्दी विश्वभारती : ज्ञान-विज्ञान का प्रमाणिक विश्वकोश / कृष्ण बल्लभ द्विवेदी; सम्पादक - लखनऊ : हिन्दी विश्वभारती ।
9. संस्कृत वाङ्मय कोश / श्रीधर भास्कर वर्णेकर; सम्पादक - कोलकता : भारतीय भाषा परिषद्, 1988 (तीन खण्ड) ।
10. विश्व संस्कृत सूक्ति कोश / ललित प्रभ सागर :- मथुरा : भाषा भवन, 2000 (तीन खण्ड) ।
11. बृहद् विश्व सूक्ति कोश (Encyclopaedia of Quotations) / श्याम बहादुर वर्मा - नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 2000. (तीन खण्ड) ।
12. भारतकोश / बंगीय साहित्य परिषद् - कोलकता : बंगीय साहित्य परिषद, 1973 (पाँच खण्डों में) ।
13. बांगला विश्वकोश / सं. भट्टाचार्य - कलकत्ता : (सात खण्ड में)।
14. भगवद-गोमण्डल - बृहत् गुजराती विश्वकोश / राजकोट : प्रवीन प्रकाशन, 1944-55 (नौ खण्डों में) ।

15. शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का विश्वकोश / मधुसूदन त्रिपाठी - दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशन्स, 2007 268 पृ.
16. Encyclopaedia of Religion and Ethics / James Hastings; Editor - Edinburgh : T.& T. Clark, 1908. (Twelve Vols. + Index)
17. Encyclopaedia of Religion / Maurice A. Canney - Delhi : Nag Publishers, 1976, 397 p.
18. Encyclopaedia of Philosophy / George Wilhelm Friedirich Hegel; tr. by Gustav Emi Muller - New York : Philosophical Library, 1959. 287 p.
19. The Encyclopaedia of Philosophy / Paul Edwards; Editor -New York: Macmillan Conpany and the Free Press, 1967. (Eight Volumes).
20. Encyclopaedia of Indian Philosophy / Karl H. Porter; Editor - Delhi : Motilal Banarasidas, 1977. (Five volumes).
21. Encyclopaedia of Indian Philosophy / Subodh Kapoor; Editor.- New Delhi : Cosmo Publications, 2002. (Nine Vols.)
22. Encylopaedia of Indian Philosophy / Vraj Kumar Panday - New Delhi : Anmol Publications, 2007. (Two Vols.)
23. Encyclopaedia of Vedic Philosophy / Subodh Kapoor, Editor - New Delhi : Cosmo Publications, 2002. 275 o.p.
24. Encyclopaedia of Vedic Philosophy / P.R.P. Sharma - New Delhi : Anmol Publications Pvt. Ltd., 2007. 312 P.
25. Encyclopaedia of Vedanta Philosophy / Subdh Kapoor; Editor-New Delhi : Cosmo Publications, 2002. 1650 p.
26. Encyclopaedia of Vedanta / P.R.P. Sharma - New Delhi : Anmol Publications, 2007. 324 p.
27. Encyclopaedia of Hindu Philosophy / Subodh Kapoor, Editor - New Delhi : Cosmo Publications, 2002. 587 P.
28. Encyclopaedia of Upanishad and its Philosophy / Subodh Kapoor; Editor- New Delhi : Cosmo Publications, 2002 (Five volumes).
29. Encyclopaedia of Upnaishads / Ravi Narayan Pandey - New Delhi : Anmol Publications Pvt. Ltd., 2007. 336 p.
30. Encyclopaedia of Vedas / P.R.P. Sharma - New Delhi : Anmol Publications, Pvt. Ltd., 2007. 264 p.
31. Puranic Encyclopaedia / Vettan Muni - Varanasi : Indological Publications, 1998.
32. Encyclopaedia of Tantra /Sadhu Shantidev.- New Delhi : Cosmo Publications, 1999. (Five Volumes).
33. Encyclopaedia of Indian Ocultism / Lewis Spence -New York : State home press, 1959. 24, 44 op.
34. Encyclopaedia of Indians Mythology / Swami Ram Shanker Das.- New Delhi : Anmol Publications Pvt. Ltd., 2007. vii; 356 p.

35. Encyclopaedia of Indian Music / Krishnananda Vyasadeva Ragsagar - Delhi : Pratibha Prakasahan, 2008 (Two Volumes)
36. Encyclopaedia of Indian Erotics / Ram Kumar Rai - Varanasi : Prachya Prakashan, 1998.
37. Encyclopaedia of Astrology / Nicolas de Vore - New York : Philosophical Library, 1947. Xii; 435 p.
38. Combridge Encyclopaedia of Astronomy / CambindgeUniversity-Cambridge University Press, 1977, 481 p.
39. Encylopaedia of Indian Literature / Sahitya Academy - New Delhi : Sahitya Academy, 1988.
40. Encyclopaedia of Sanskrit Literature / Mamta Pandey - New Delhi : Anmol Publications Pvt. Ltd. 2008. (Two Volumes).
41. Encyclopaedia of India / Calcutta . 1906.
42. Geographical Encyclopaedia of Ancient and Medieval India / K.D. Bajpai-Varanasi : Iogical Publications, 1998.
43. Encyclopaedia of Quototions / Shyam Bahadur Verma.-New Delhi : Prabhat Prakashan, 2000. (Tree Volumes).
44. Encyclopaedia of Yoga / Ram Kumar Rai - Varanasi : Prachya Prakashan, 1998.
45. Encyclopaedia of Sects and Religious Doctorines.
46. Encyclopaedia of Educational Philosophy /Prem chand Yogi-New Delhi : Crescent Publishing Corporation, 2008 (Five volumes).
47. Linguistic Survey of India / G.A. Grierson;' Camp.-Calcutta : Govt. Printing Press, 1903-1928. (Eleven Volumes).
48. Encyclopaedia of Buddhism /G.P. Malasekhera; Editor- Ceylon : Govt. Press, 1960. 152 p.
49. Encyclopaedia of Buddhist Tantra /Shiv Shankar Tiwary - New Delhi: Anmol Publications Pvt. Ltd., 2009. 305 p.
50. Encyclopaedia of Buddhist Art and Architecture / Shiv Shankar Tiwary-New Delhi : Anmol Publications, Pvt. Ltd., 2009. 293 p.
51. Encyclopaedic dictionary of Religions. New York : Corpus Publications, 1979. (3 vols).
52. Encyclopaedia of American Religion.

1. वाचस्पत्यम् / तारानाथ भट्टाचार्य, सम्पादक - वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, 1962 (छः भागों में)

भारतीय विश्वकोश की परम्परा में "वाचस्पत्यम" का स्थान सबसे पहले आता है। क्योंकि यही वह विश्वकोश है जिसने भारतीय विश्वकोश के रचनाकारों को एक मजबूत आधार दिया । इसमें कोई अतिस्योक्ति नहीं कि इसका प्रमुख स्वर वाक् रहा है । फिर भी

इतना तो स्पष्ट है कि "वाचस्पत्यम" ने "शब्द कल्पद्रुम" के शब्द को वाक् की विशाल परीधि में प्रसारित किया है ।

संस्कृत के इस ऐतिहासिक विश्वकोश में भारतीय विद्या के विभिन्न विषयों जैसे साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, तन्त्र, दर्शन, संगीत, काव्यशास्त्र, इतिहास तथा चिकित्सा आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित सूचनाओं का विशद विवेचन प्रस्तुत है।

2. शब्दकल्पद्रुम / राधाकान्त देव - वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, 1967 (पाँच भागों में)

भारतीय संस्कृत वाङ्मय में "वाचस्पत्यम" के बाद "शब्दकल्पद्रुम" विश्वकोश को दूसरा महत्वपूर्ण स्थान मिला । परन्तु वाचस्पत्यम की तुलना में शब्दकल्पद्रुम का विवेचन शब्द की परिधि से बहुत आगे नहीं जा सका । फिर भी इस विश्वकोश की महत्ता को कम नहीं आँका जा सकता है ।

प्रस्तुत विश्वकोश की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें संस्कृत साहित्य एवं प्राच्य विद्या के विभिन्न क्षेत्रों जैसे साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, तन्त्र, दर्शन, संगीत, काव्यशास्त्र, इतिहास तथा चिकित्सा शास्त्र आदि विषयों का विशद विवेचन प्रस्तुत है।

प्राच्य विद्या एवं संस्कृत साहित्य के अध्ययन, अध्यापन एवं शोध में रूचि रखने वाले अध्येताओं के लिए यह रचना एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ कृति है ।

3. विज्ञान सर्वस्वम् / तेलुगु भाषा समिति - आंध्राप्रदेश, 1967-75 (सोलह खण्डों में) ।

यह विश्वकोश तेलुगु भाषा में रचित है । इस विश्वकोश का प्रकाशन तेलुगु भाषा समिति द्वारा सन् 1967 से 1975 दौरान सम्पन्न हुआ । यह कुल सोलह खण्डों में संकलित है ।

इसमें भाषा, साहित्य, दर्शन, इतिहास, भूगोल, भौतिकी, रसायन, विधि, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित सूचनाओं का विशाल संग्रह प्रस्तुत है ।

4. विश्वविज्ञानकोशम् / साहित्य प्रवर्तक सहकार समिति (कोट्टायम, केरल), 1970

प्रस्तुत विश्वकोश मलयालम भाषा का एक उत्तम विश्वकोश है तथा सन् 1970 में साहित्य प्रवर्तक सहकार समिति (कोट्टायम, केरल) द्वारा इसे प्रकाशित किया गया है।

इस विश्वकोश में भारतीय प्राच्य विद्या तथा आधुनिक विषयों से सम्बन्धित सूचनाओं के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण प्रवृष्टियों को मलयालम भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय विश्वकोश परम्परा में प्रस्तुत कृति एक अमूल्य निधी है।

5. हिन्दी विश्वकोश /राम प्रसाद त्रिपाठी; प्रधान सम्पादक - वाराणसी नागरी प्रचारिणी सभा, 1960-1970 (बारह खण्डों में)।

हिन्दी विश्वकोश भारतीय ज्ञान जगत में रूचि रखने वाले अध्येताओं के लिये एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत है । इसमें भारतीय अभिरूचि के विषयों तथा प्रकरणों का विशद् विवेचन प्रस्तुत किया गया है । इसमें निहित साहित्य को बारह खण्डों में हिन्दी वर्णमाला के क्रम में व्यवस्थित किया गया है ।

इसके प्रत्येक खण्ड में लघु अथवा विस्तृत लेखों का विवरण है तथा इन लेखों के लेखक विद्वानों का हस्ताक्षर भी प्रस्तुत किये गये है । इसके प्रत्येक खण्ड में आवश्यकतानुसार रंगीन चित्रों के अतिरिक्त, अनेक रेखाचित्र चित्रफल तथा मानचित्रों का भी समावेश किया गया है । इसके अन्तिम खण्ड में 68 पृष्ठों की अनुक्रमणिका दी गयी है जिसके माध्यम से पाठकों द्वारा सूचना खोजने में सहायता मिलती है ।

इस प्रकार हिन्दी-भाषा भाषि पाठकों एवं ग्रन्थालयों के लिए यह एक उपयोगी सन्दर्भ ग्रन्थ है ।

6. हिन्दी विश्वकोश / नागेन्द्रनाथ वसु; सम्पादक दिल्ली : बी. आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, 1987 (पचीस खण्डों में)

प्रस्तुत हिन्दी विश्वकोश नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी द्वारा प्रकाशित हिन्दी विश्वकोश की तुलना में अधिक विस्तृत है क्योंकि इसको कुल पचीस खण्डों में संकलित किया गया है । इसके प्रथम प्रकाशन का दायित्व सन् 1915 में कोलकता के नागेन्द्र नाथ वसु को सौंपा गया था ।

इस विशालतम विश्वकोश की सबसे प्रमुख विशेषता है यह कि इसमें लगभग पौने दो लाख के आस-पास भारतीय विद्या से सम्बन्धित महत्वपूर्ण प्रविष्टियों को हिन्दी में प्रस्तुत किया गया है।

इसके साथ ही साथ, इसमें चित्र, रेखाचित्र तथा चार्ट से सम्बन्धित सूचनाओं को भी प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय विद्या के अध्ययन, अध्यापन एवं शोध में संलग्न अध्येताओं के लिए प्रस्तुत कृति अपने तथ्य परक सूचनाओं के कारण एक उपयोगी सन्दर्भ स्रोत है ।

7. संस्कृत वाङ्मयकोश / श्रीधर भास्कर वर्णेकर; सम्पादक - कोलकताः भारतीय भाषा परिषद, 1988 (तीन खण्डों में)

"संस्कृत वाङ्मय कोश" संस्कृत वाङ्मय का एक विश्वकोशीय शब्दकोश है तथा इसका प्रथम संस्करण 1988 ई. में प्रकाशित हुआ था । इस वृहतकोश को कुल तीन खण्डों में प्रकाशित किया गया है। एक प्रकार से भारतीय भाषा परिषद का सबसे महत्वपूर्ण एवं गरिमामय प्रकाशन है । संस्कृत वाङ्मय जितना प्राचीन है उतना ही विराट है। इस कोश

के प्रथम खण्ड का शीर्षक "ग्रन्थकार" है, द्वितीय खण्ड का शीर्षक "ग्रन्थ" है तथा तृतीय खण्ड का शीर्षक "परिभाषा (उत्तरार्ध) है । समग्र संस्कृत वाङ्मय का विवेचन प्रस्तुत करने वाला सर्वांगीण कोश का अभी तक एक प्रकार से अभाव ही रहता । परन्तु संस्कृत के प्रतिष्ठित विद्वान डा. श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा सम्पादित इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ "संस्कृत वाङ्मय कोश" के माध्यम से इस अभाव को दूर करने का विनम्र प्रयास भारतीय भाषा परिषद, कोलकता ने किया है ।

प्रस्तुत सन्दर्भ ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में ग्रन्थकार ने संस्कृत वाङ्मय के बृहत साहित्य को समृद्ध करने वाले उन सारे ग्रन्थकारों के योगदानों तथा उनके विषय क्षेत्रों की व्याख्या बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । इसके प्रथम खण्ड में पूर्व पीठिका के रूप में संस्कृत वाङ्गमय दर्शन के नाम से समस्त संस्कृत वाङ्गमय के अन्तरंगों का दिग्दर्शन बारह प्रकरणों में किया गया है । इस कोश के प्रथम खण्ड में लगभग 2700 प्रविष्टियों का निवेशन है, जबकि इसके द्वितीय खण्ड में प्रविष्टियों की संख्या 9000 से अधिक है।

इस कोश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें केवल संस्कृत साहित्य की प्रविष्टियाँ ही नहीं, बल्कि धर्म, दर्शन, ज्योतिष, शिल्प, संगीत आदि अनेक विषयों पर संस्कृत में रचित विशाल तथा वैविध्य पूर्ण वाङ्गमय का संक्षिप्त परिचय समाविष्ट है । इसलिए यह केवल संस्कृत साहित्य कोश न होकर संस्कृत वाङ्गमय कोश के नाम से प्रसीद्ध है। इसके अन्तर्गत संस्कृत वाङ्गमय की प्रायः सभी शाखाओं में योगदान करने वाले ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों का एकत्र संकलित किया गया है । इसके प्रथम खण्ड में ग्रन्थकारों तथा द्वितीय खण्ड में ग्रन्थों का परिचय वर्णानुक्रम से ग्रंथित हुआ है । प्रथम खण्ड के शीर्षक संस्कृत वाङ्गमय दर्शन के अन्तर्गथ कुल तेरह प्रकरणों का उल्लेख किया गया है, जिनका विवरण निम्नवत है–

संस्कृत भाषा
वेद वाङ्गमय
वेदांग वाङ्गमय
पुराण इतिहास
न्याय वैशेषिक दर्शन,
सांख्य योगदर्शन,
तांत्रिक वाङ्गमय
मीमांसा और वेदान्त,
जैन, बौद्ध वाङ्गमय,
काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र और साहित्य,

ललित साहित्य, तथा

अर्वाचीन संस्कृत वाङ्मय

इसके साथ ही साथ इसमें ग्रन्थकार परिचय एवं परिशिष्टों का वर्णन है । ग्रन्थकार परिचय के अन्तर्गत कुल 2715 प्रविष्टयों का अकारादि अनुक्रमानुसार उल्लेख किया गया है। इसमें परिशिष्टों के अन्तर्गत अनेक क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। इनके अध्यायीकरण में हिन्दी वर्णमाला के अक्षर (क) से (ड.) क्रम का उल्लेख है। इस प्रकार इस कोश का प्रथम खण्ड कुल 573 पृष्ठों में संकलित है ।

द्वितीय खण्ड

कोश के द्वितीय खण्ड में लगभग 9000 से अधिक ग्रन्थ विषयक प्रविष्टियों का उल्लेख है । इस भाग में परिशिष्टों के विषय के अन्तर्गत अज्ञात कर्तृक ग्रन्थ, स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत साहित्य प्रदेशानुसार चयन, प्रदेशानुसार ग्रन्थकार नामसूची, देशभक्तिनिष्ठ साहित्य, संस्कृत विद्या के आश्रयदाता और उनके आश्रित ग्रन्थकार, आत्माराम विरचित वाङ्मयकोश, साहित्यशास्त्र, ललित वाङ्मय (काव्य, स्रोत), नाट्य वाङ्मय, सुभाषित ग्रन्थ, कोश ग्रन्थ और संस्कृत वाङ्मय, प्रश्नोत्तरी 1200 से अधिक संस्कृत वाङ्मय विषयक प्रशन उत्तरों का संग्रह आदि की विस्तृत सूचना संकलित है । इसके द्वितीय खण्ड के अन्त में संस्कृत वाङ्मय प्रश्नोत्तरी का उल्लेख अन्तिम पृष्ठ संख्या 560 के अतिरिक्त अलग से पृष्ठ सं. 1 से 58 तक है ।

तृतीय खण्ड

इस खण्ड को परिभाषा खण्ड (उत्तरार्द्ध) के नाम से सम्बोधित किया गया है । इस खण्ड को पाँच भागों में विभाजित किया गया है, जैसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और न्याय संग्रह । इस प्रकार परिभाषिक शब्दों की जिन विशेषताओं को ध्यान में रखकर इस खण्ड में सोदाहरण विवेचन किया गया है वह निश्चित रूप से भारतीय विद्या के जिज्ञासु पाठकों के लिए शास्त्रीय ग्रन्थों के अध्ययन में अधिकाधिक सहायक हो सकेगी । इस खण्ड में कुल 20304 प्रविष्टियों को व्यवस्थित किया गया है । इसमें निहित कुल 20304 प्रविष्टियों का विवरण विभिन्न वर्गों के माध्यम से पृष्ठ सं. 1 से आरम्भ होकर पृष्ठ संख्या 782 पर समाप्त हुआ है ।

इस प्रकार यह संस्कृत वाङ्मय कोश जो तीन खण्डों में है और जिसका प्रकाशन भारतीय भाषा परिषद, कोलकता ने 1988 में किया है, यह निश्चित रूप से संस्कृत वाङ्मय के सभी श्रेणी के पाठकों, शोधकर्ताओं एवं अध्यापकों के लिए यह कोश एक अमूल्य सन्दर्भ कृति है ।

8. भारतकोश / बंगीय साहित्य परिषद्, कोलकता, 1973

प्रस्तुत विश्वकोश को सन् 1973 में बंगीय साहित्य परिषद्, कोलकता के सहयोग से प्रकाशित किया गया है । यह कृति कुल पाँच खण्डों में प्रकाशित है ।

यह कृति भारतीय साहित्य के जिज्ञासुओं के लिए बहुत अधिक उपयोगी है ।

9. **शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का विश्वकोश / मधुसूदन त्रिपाठी - दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशन्स, 2007. 268 पृ.**

प्रस्तुत कृति "शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का विश्वकोश" को ओमेगा प्रकाशन, दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित किया गया है । इसमें शिक्षा दर्शन एवं मनोविज्ञान से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यों को कुल पाँच भागों में विभाजित कर अलग-अलग शीर्षकों के रूप में प्रस्तुत किया गया है । जैसे–शिक्षा दर्शन, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा के सामाजिक परिप्रेक्ष्य, महान शिक्षाशास्त्री तथा बाल विकास ।

इस प्रकार यह विश्वकोश शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं शोध कर्ताओं के लिए बहुत ही उत्तम सन्दर्भ स्रोत है।

10. **Encyclopaedia of Religion and Ethics / James Hastings; Editor.- Edinburgh : T & T Clark, 1908 (13 Vols.).**

प्रस्तुत "विश्वकोश" इनसाक्लिोपीडिया ऑफ रिलिजन एण्ड एथिक्स" जेम्स हेस्टिंगस द्वारा सम्पादित पूरे विश्व में धर्म और नैतिक शास्त्र का सर्वोत्तम एवं विशालतम विश्वकोश है तथा अनुक्रमणिका सहित कुल तेरह खण्डों में प्रकाशित है ।

इस प्रकार धर्म एवं नैतिकशास्त्र के साथ ही साथ पूरे विश्व में प्रचलित सभी धर्मों के आचरण एवं आचार संहिता, विश्वास, आस्थाएँ, नैतिक विधान, लोक कथाओं, पौराणिकता, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र से सम्बन्धित यह एक विशिष्ट विषय विश्वकोश है ।

इस विश्वकोश की विषयवस्तु के अन्तर्गत धर्मशास्त्र तथा नैतिक शास्त्र का व्यापक अर्थों में व्याख्या प्रस्तुत है । इसमें विश्व के प्रचलित सभी धर्मों तथा नैतिक शास्त्रीय पद्धतियों से सम्बन्धित तथ्यों को लघु लेखों के रूप में प्रस्तुत किया गया है । इस कृति के माध्यम से पूरे विश्व में प्रचलित किसी भी प्रकार की धार्मिक सूचनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है । इसमें विषयों को प्रकरणों के अनुसार अनुवर्णिक अनुक्रम में व्यवस्थित किया गया है । अनुक्रमणिका के अन्तर्गत विषय अनुक्रमणिका, विदेशी नामों की अनुक्रमणिका, तथा योगदान करने वाले विद्वानों की पूर्ण सूचनाओं का उल्लेख है । विषय अनुक्रमणिका-बहुत विस्तृत एवं व्यापक हैं । प्रधान शीर्षकों के अधीन सम्बद्ध उक्तियों को एक साथ लाने का भी प्रयास किया गया है ।

प्रस्तुत विश्वकोश के प्रथम खण्ड से लेकर अनुक्रमणिका-तेरहवें खण्ड के संकलन में कुल बीस वर्षों का समय लगा । प्रथम खण्ड को पूरा करने में ही छः वर्ष लग गया था। इसमें प्रथम खण्ड से लेकर बारहवें खण्ड में अंकित - शीर्षकों का वर्णानुक्रम इस प्रकार

निम्न है–

खण्ड - 1 A से Art

खण्ड - 2 Arthur से Bunyan

खण्ड - 3 Burial से Confessions

खण्ड - 4 Confirmation से Drama

खण्ड - 5 Draviding से Fichte

खण्ड - 6 Fiction से Hyksos

खण्ड - 7 Hymns से Liberty

खण्ड - 8 Life से Mulla

खण्ड - 9 Mundas से Phrygians

खण्ड - 10 Pits से Sacrements

खण्ड - 11 Sacred से Sufaid

खण्ड - 12 Suffering से Zwingli

खण्ड - 13 Index Volume

इस प्रकार यह अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश, धर्म-दर्शन, नैतिक एवं आचारशास्त्र तथा दर्शन के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित तथ्यपरक सूचनाओं के विशाल संग्रह एवं उनके वैज्ञानिक प्रस्तुति के कारण यह एक बहुमूल्य कृति है ।

11. Encyclopaedia of Religions / Maurice A. Canney.-Delhi : Nag Publishers, 1976, 397 p.

धर्मशास्त्र के क्षेत्र में यह कृति एक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश है। मौरिस ए. कैनी ने इसके सम्पादन का कार्य किया है जो इसके विषय के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान रहे हैं। सन् 1976 में इसे नाग प्रकाशन दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित किया गया है । यह एक खण्डीय विशिष्ट विश्वकोश है तथा इसके संकलन में कुल 397 पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

इस कृति की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें विश्व के सभी धर्मों से सम्बन्धित तथ्यपरक सूचनाओं को अंग्रेजी वर्णमाला के क्रम में 'A' से 'Z' तक व्यवस्थित किया गया है । इसके संकलनकर्त्ता के मन में इसके रचना का विचार तुलनात्मक धर्म के कारण आया क्योंकि इस दृष्टिकोण से पूर्व में निर्मित अनेक विश्वकोश, विशिष्ट विश्वकोश तथा शब्दकोशों में इस तरह के कुछ प्रविष्टि का अभाव सा महसूस किया जाता था ।

इंस प्रकार इस अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश के रचना की प्रेरणा डा. जेम्स हेस्टंग्स और उनके धर्मशास्त्र एवं नैतिकशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश से मिली। चूँकि डा. हेस्टंग्स द्वारा

निर्मित विश्वकोश को केवल ग्रन्थालयों में उपयोग किया जा सकता है, जबकि इस एक खण्डीय विश्वकोश को सामान्य पाठक, विद्यार्थी तथा शोधकर्ता अपने नीजी उपयोग हेतु इसका आसानी से क्रय कर सकते हैं ।

यद्यपि इसकी विषय वस्तु गम्भीर एवं विद्वतपूर्ण हैं तथा अनेक ऐसे नये शीर्षकों को इसमें सम्मिलित किया गया है जिसे पहले किसी सन्दर्भ कृति में नहीं देखा गया था ।

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ग्रन्थालयों के लिए प्रस्तुत कृति एक उत्तम सन्दर्भ सामग्री है ।

12. **Encyclopaedia of Philosophy / George Wilhelm Friedrich Hegel; tr. by Gustav Emil Mueller.-New York : Philosophical Library, 1959, 287 p.**

प्रस्तुत कृति दर्शनशास्त्र की एक अन्तर्राष्ट्रीय विषय विश्वकोश है । इसके रचनाकार जॉर्ज विल्हेम फ्रेडेरिक हेगेल हैं तथा अनुवादक गुस्ताव एमिल मुलर हैं। यह एक खण्डीय विश्वकोश है तथा इसकी भाषा अंग्रेजी है । इसे सन् 1959 में दार्शनिक ग्रन्थालय, न्यूआर्क के सहयोग से प्रकाशित किया गया है । इसके संकलन में कुल 287 पृष्ठों का उपयोग किया गया है ।

अंग्रेजी माध्यम से दर्शनशास्त्र के अध्यापन, अध्ययन एवं शोध में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए यह एक उपयोगी सन्दर्भ स्रोत है क्योंकि इसमें दर्शनशास्त्र के सभी शाखाओं के सम्बन्ध में सूचनाओं का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत है ।

13. **The Encyclopaedia of Philosophy / Paul Edwards; Editor. New York : The Macmillan Company and the Free Press, 1967. (8 Vols)**

प्रस्तुत कृति "दर्शनविश्वकोश" दर्शनशास्त्र का एक अन्तराष्ट्रीय विश्वकोश है तथा इसके सम्पादक पॉल एडवर्ड हैं। इस विश्वकोश में प्राच्य एवं पाश्चात्य दोनों दार्शनिक विचारों का समावेश है तथा इसको कुल आठ खण्डों में प्रकाशित किया गया है । इन आठ खण्डों का शीर्षक क्रम निम्नवत हैं–

खण्ड	**शीर्षक**
खण्ड - 1	A से Byzantine;
खण्ड - 2	Cabala से Entropy;
खण्ड - 3	Epictetus से Hilbert;
खण्ड - 4	Hinduism से Logic;
खण्ड - 5	Logic से Orobio;

खण्ड - 6 Orphism से Psychologism;

खण्ड - 7 Psychology से Spitrito;

खण्ड - 8 Spranger से Zubire;

इसके अतिरिक्त दर्शनशास्त्र के इस प्रसिद्ध विश्वकोश के अन्त में अनुक्रमणिकाओं का उल्लेख किया गया है जिससे इसमें निहित वांछित सूचना खोजने में पाठकों को बहुत अधिक सहायता मिलती है ।

अंग्रेजी भाषा के माध्यम से दर्शनशास्त्र के अध्ययन, अध्यापन एवं शोध में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए यह एक अत्यन्त उत्तम स्रोत है ।

14. Encyclopaedia of Indian Philosophies / edited by Karl H. Potter.-Delhi : Motilal Banarasidas, 1977, 1-5 Vols.

प्रस्तुत विश्वकोश भारतीय दर्शन से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण विषय विश्वकोश है। इसमें भारतीय दर्शन से सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य को संकलित किया गया है । इस पूरे विश्वकोश को कुल पाँच खण्डों में प्रकाशित किया गया है तथा इसके प्रत्येक खण्ड में भारतीय दर्शन से सम्बन्धित अलग-अलग क्षेत्रों को संकलित किया गया है । इसके खण्ड प्रथम से लेकर खण्ड पंचम तक के विषय शीर्षक निम्नवत हैं–

Volume - 1 - Bibliography

Volume - 2 - The Traddition of Nyaya Vaisesika up to Gangesa

Volume - 3 - Advaita Vedant- Part - 1

Volume - 4 - Sankhya, and

Volume - 5 - The Philosophy of Grammarians - Part-1, Part-2 Harold G. Coward and K. Kunjunni Raja.

प्रस्तुत विश्वकोश के प्रत्येक खण्ड के मुख्य सम्पादक Karl H. Potter हैं, जबकि सम्पादक एवं सहसम्पादक अलग-अलग हैं । इस विश्वकोश के प्रत्येक खण्ड का ISBN अलग-अलग आवंटित है, जबकि इसके पूरे सेट का ISBN : 81-208-0307-8 से अंकित है।

भारतीय दर्शन में रूचि रखने वाले अध्येताओं, विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की सुविधा के लिए इसके प्रत्येक खण्ड में विस्तृत अनुक्रमणी को भी प्रस्तुत किया गया है । इसमें प्रत्येक खण्ड के प्रारम्भिक पृष्ठों में विषय सूची, प्राक्कथन एवं अन्य सूचनाओं का विवरण अंकित है ।

15. Encyclopaedia of Indian Philosophy / Subodh Kapoor; Editor.-New Delhi : Cosmo Publications, 2002. (7 Vols.)

इस विश्वकोश को कोशमो प्रकाशन, नई दिल्ली के सहयोग से सन् 2002 में प्रकाशित किया गया है । इस विश्वकोश में भारतीय दर्शनशास्त्र के विभिन्न शाखाओं जैसे भारतीय दार्शनिक, दर्शनशास्त्र के ख्यातिलब्ध विद्वान, ऋषी, विचारक, आचार्य एवं महान

धार्मिक विचारकों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करायी गयी है । इतना ही नहीं, बल्कि इसमें निहित भारतीय दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित विभिन्न - दार्शनिक विचार-धाराओं एवं उनके उत्तरोत्तर विकास के सम्बन्ध में भी महत्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख किया गया है ।

इस प्रकार प्रस्तुत कृति भारतीय दर्शनशास्त्र के विषय में गहन रूचि रखने वाले पाठकों के लिए एक पूर्ण सन्दर्भ कृति है । यद्यपि इसे अंग्रेजी भाषा में संकलित किया गया है । फिर भी अंग्रेजी भाषा की सामान्य ज्ञान रखने वाले पाठक गण भी आसानी से इसका अधिकाधिक उपयोग कर सकते हैं ।

16. Encyclopaedia of Indian Philosophy / Vraj Kumar Pandey - New Delhi : Anmol Publications, 2007 (2 Vols).

प्रस्तुत "Encyclopaedia of Indian Philosophy" भारतीय दर्शनशास्त्र का एक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश है तथा अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली के सहयोग से इसे प्रकाशित किया गया है । इस विश्वकोश में भाषा का माध्यम अंग्रेजी है तथा यह दो खण्डों में संकलित है ।

इसके प्रथम खण्ड में पाँच अध्यायों के अन्तर्गत भारतीय दर्शन के अलग-अलग क्षेत्रों जैसे–वैदिक दर्शन, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन, प्राचीन हिन्दू दर्शन संस्कार दर्शन आदि से सम्बन्धिथ तथ्य परक सूचनाओं का उल्लेख किया गया है ।

इसके द्वितीय खण्ड में कुल नौ अध्यायों के अन्तर्गत भारतीय दर्शन के शेष क्षेत्रों का व्याख्या प्रस्तुत है। इसमें प्रथम अध्याय से लेकर नवें अध्याय के अन्तर्गत "भक्ति दर्शन', "धार्मिक विश्वास के दर्शन", "सुफी दर्शन", "भारतीय मुसलीम सम्प्रदाय दर्शन", "सीख दर्शन"; "भारतीय दार्शनिक", "सामाजिक सुधार-आन्दोलन के दर्शन," "आधुनिक राजैतिक दार्शनिक", "आधुनिक दार्शनिक" जैसे शीर्षकों का विस्तृत विवेचन किया गया है ।

पाठकों द्वारा इसका अधिकाधिक उपयोग किया जा सके । इस हेतु इसके प्रथम खण्ड में ग्रन्थ सन्दर्भ सूची तथा अनुक्रमणी का उल्लेख पृष्ठ सं. 282 तथा 283-287 पर अंकित है, जबकि इसके द्वितीय खण्ड में ग्रन्थ सन्दर्भ सूची एवं अनुक्रमणी का विवरण पृष्ठ सं. 327-330 तथा 331-336 पर अंकित है ।

भारतीय दर्शनशास्त्र के अध्ययन, अध्यापन तथा शोध कार्यों में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए यह कृति बहुत ही उपयोगी सन्दर्भ कृति है ।

17. Encyclopaedia of Vedic Philosophy / Subodh Kapoor; Editor.- New Delhi : Cosmo Publication, 2002. 2750 .p.

"वैदिक दर्शन विश्वकोश" को आचार्य सुबोध कपूर ने सम्पादित किया है तथा कोशमो प्रकाशन, नई दिल्ली के सहयोग से इसे प्रकाशित किया गया है । इसकी भाषा अंग्रेजी है ।

यह विश्वकोश वैदिक दर्शन से सम्बन्धित विस्तृत ज्ञान के सम्बन्ध में विविध लघु लेखों के रूप में सूचनाओं को उपलब्ध कराता है । उपयोग कर्ताओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इसे कुल नौ खण्डों में प्रकाशित किया गया है ।

इसमें वेद और दर्शन के विभिन्न शाखाओं के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रस्तुत करने का विशेष प्रयास किया गया है । साथ ही साथ, इसमें ग्रन्थ सन्दर्भ सूची के अतिरिक्त क्रास सन्दर्भ का भी उल्लेख किया गया है ।

18. Encyclopaedia of Vedic Philosophy / P.R.P. Sharma.-New Delhi : Anmol Publications Pvt. Ltd., 2007. viii; 312 p.

प्रस्तुत कृति वैदिक दर्शन का एक अद्यतन विश्वकोश है जिसकी भाषा अंग्रेजी है तथा इसे अनमोल प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है । इस महत्वपूर्ण विश्वकोश में इसके रचनाकार ने वैदिक दर्शन को सुविधा की दृष्टिकोण से चार अलग-अलग अध्यायों में विभाजित करके लघु एवं बृहद् लेखों के रूप में अद्यतन सूचनाओं को प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है।

इस विश्वकोश के प्रथम-अध्याय में "वैदिक दर्शन" नामक शीर्षक द्वितीय अध्याय में "प्राचीन हिन्दू दर्शन एवं वेद" नामक शीर्षक, तृतीय अध्याय में "वेदान्त दर्शन एवं वेद" नामक शीर्षक तथा चतुर्थ अध्याय में "वैदिक दार्शनिकों" नामक शीर्षक का उल्लेख किया गया है ।

इस प्रकार प्रस्तुत कृति वैदिक दर्शन के अध्ययन, अध्यापन एवं शोध में रूचि रखने वाले भारतीय उपयोक्तओं के साथ ही साथ अंग्रेजी माध्यम के उपयोक्ताओं के लिए भी यह एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत है ।

19. Encyloppaedia of Vedanta Philosophy / Subodh Kapoor; Editor - New Delhi : Cosmo Publications, 2002, 1650 p.

प्रस्तुत कृति वेदान्त दर्शन का अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश है तथा इसके सम्पादक आचार्य सुबोध कपूर हैं। यह विश्वकोश वेदान्त दर्शन के सभी शाखाओं से सम्बन्धित विशाल साहित्य को एक ही स्थान पर प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास है ।

इस प्रकार यह रचना वेदान्त दर्शन के अध्ययन, अध्यापन एवं शोध में रूचि रखने वाले उपयोक्ताओं के लिए एक अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ कृति है । यद्यपि इसकी भाषा अंग्रेजी है, फिर भी अंग्रेजी भाषा की सामान्य ज्ञानकारी रखने वाले पाठक भी इसके उपयोग से अपना ज्ञान वृद्धि कर सकते हैं । इसमें विस्तृत ग्रन्थ सन्दर्भ सूची तथा अनुक्रमणी का भी उल्लेख किया गया है।

20. **Encyclopaedia of Vedanta / P.R.P. Sharma - New Delhi : Anmol Publications, 2007.324 p.**

प्रस्तुत रचना "वेदान्त विश्वकोश" को सन् 2007 में अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित किया गया है तथा यह एक खण्डीय विश्वकोश है इसके रचनाकार आचार्य पी.आर.पी. शर्मा हैं।

यह विश्वकोश अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित है तथा इसमें संकलित साहित्य के अन्तर्गत वेदान्त को विशेष स्थान दिया गया है । इसमें आत्मा, ब्राह्मण तथा विश्व के अवधारणाओं का दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । इसमें वेदान्त से सम्बन्धित साहित्य को कुल छः अध्यायों में जैसे–वैदिक दर्शन, वेदान्त दर्शन, पूर्व मीमांसा-अद्वैत एवं वेदान्त के अन्य सम्प्रदाय, वेदान्त - जीवन के उच्च मूल्य, वेदान्त के दार्शनिक एवं गुरू एवं शंकराचार्य आदि शीर्षक के अन्तर्गत लघु एवं दीर्घ लेखों के रूप में तथ्य परख सूचनाओं का उल्लेख है ।

21. **Companion Encyclopaedia of Hindu Philosophy / Subodh Kapoor; Editor.- New Delhi : Cosmo Publications, 2002. 587 p.**

इस विश्वकोश को भारतीय वाङ्मय के परम्परा में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। क्योंकि इससे पूर्व हिन्दू दार्शनिक सिद्धान्तों अथवा पद्धतियों को लेकर इस प्रकार के विश्वकोश का अभाव सा प्रतीत होता रहा । इस कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें हिन्दू दार्शनिक गुढ़ता के स्थान पर दार्शनिक अवधारणाओं के सैद्धान्तिक पहलुओं का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन प्रस्तुत किया गया है ।

प्रस्तुत रचना उन अध्येताओं के लिए एक अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ कृति है जो दार्शनिक समस्याओं के समाधान में भारतीय दार्शनिक सिद्धान्तों अथवा विचारों का उपयोग करते हैं । इस विश्वकोश को कुल 587 पृष्ठों में संकलित किया गया है तथा इसे अंग्रेजी में प्रकाशित किया गया है ।

22. **Encyclopaedia of Upanishad and its philosophy / Subodh Kapoor; Editor.-New Delhi : Cosmo Publications, 2002. (5 Vols.)**

प्रस्तुत कृति "उपनिषद दर्शन विश्वकोश" का सम्पादक आचार्य सुबोध कपूर हैं तथा कोशमो प्रकाशन, नयी दिल्ली के सहयोग से इसे प्रकाशित किया गया है । यह कुल पाँच खण्डों में उपलब्ध है तथा इसकी भाषा अंग्रेजी है ।

यह विश्वकोश उपनिषद दर्शन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे-मौलिक अवधारणाओं, इतिहास, दर्शन, शिक्षा, सिद्धान्त एवं उपनिषदिय सैद्धान्तिक विचारों के सम्बन्ध में अद्यतन सूचना प्रस्तुत है ।

उपयोगकर्त्ताओं की सुविधा के लिए इसमें विस्तृत ग्रन्थ सन्दर्भ सूची, अनुक्रमणी

तथा क्रौस - रीफरेन्स का भी उल्लेख किया गया है । इसके संकलन में कुल 1650 पृष्ठों का उपयोग किया गया है ।

23. Encyclopaedia of Upanishads/Ravi Narayan Pandey-New Delhi :Anmol Publications, Pvt. Ltd., 2007 vii; 336 p.

प्रस्तुत रचना ''उपनिषद् विश्वकोश'' अंग्रेजी भाषा में आचार्य रविनरायण पाण्डेय द्वारा सम्पादित है तथा अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली के सहयोग से इसे प्रकाशित किया गया है । यह एक खण्डीय विश्वकोश है ।

इस विश्वकोश की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें उपनिषद के अद्योपान्त सारे शीर्षकों का उल्लेख किया गया है । यद्यपि इसमें वर्णित लेखों का रूप संक्षिप्त है, फिर भी वे सभी लेख बहुत ही सारगर्भित हैं।

पाठकों द्वारा इसका अधिकाधिक उपयोग किया जा सके इस हेतु इसमें अनुक्रमणी एवं आवश्यक निर्देशों का भी उल्लेख किया गया है । यह कुल 336 पृष्ठों में संकलित है ।

24. Encyclopaedia of Vedas / P.R.P. Sharma. - New Delhi : Anmol Publications Pvt. Ltd., 2007. vii; 264 p.

भारतीय वैदिक वाङ्मय के क्षेत्र में प्रस्तुत कृति ''वेद विश्वकोश'' को अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है । इसमें संकलित साहित्य का विवेचन अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया गया है । इस विश्वकोश की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें क्रमशः छः अध्यायों के अधीन अलग-अलग शीर्षकों जैसे 'भूमिका' 'वैदिक साहित्य', 'ऋग्वेद', 'यजुर्वेद, 'सामवेद', एवं अथर्ववेद के साथ ही साथ एक विस्तृत ग्रन्थ सन्दर्भ सूची एवं अनुक्रमणी का भी उल्लेख किया गया है ।

वेदविद्या के विभिन्न शाखाओं में रूचि रखने वाले उपयोक्ताओं के ज्ञान हेतु प्रस्तुत विश्वकोश के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों के साथ ही साथ वैदिक वाङ्मय के सभी शाखाओं से सम्बन्धित विवेकपूर्ण तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है ।

25. Encyclopaedia of Tantra / Sandhu Shantideva. - New Delhi : Cosmo Publiations, 1999. (Five Volumes).

प्रस्तुत कृति ''तन्त्र विश्वकोश'' तन्त्र शास्त्र का एक विशिष्ट विश्वकोश है तथा इसे कोशमों प्रकाशन, नई दिल्ली के सहयोग से सन् 1999 में पाँच खण्डों में प्रकाशित किया गया है । इसकी भाषा अंग्रेजी है ।

तन्त्रशास्त्र के इस सन्दर्भ कृति की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें तन्त्र वाङ्मय के सम्बन्ध में आद्योपांत विवरण प्रस्तुत है । उदाहरण स्वरूप इसके ''तन्त्र'' शब्द का संस्कृत भाषा में अर्थ से लेकर तन्त्र निर्माण रचनाकाव्य तक के ऐतिहासिक यात्रा का

उल्लेख किया गया है । इसके साथ ही साथ, इसमें पंचगव्य के उपयोग, कुण्डलीनि जागरण के आवश्यक नियमों आदि पर भी प्रकाश डाला गया है ।

इसमें संकलित तन्त्र साहित्य के विशालता के कारण इसे अलग-अलग कुल पाँच खण्डों में प्रकाशित किया गया है । हिन्दू तन्त्रशास्त्र के अतिरिक्त इसमें बौद्ध तन्त्र के उपर भी प्रकाश डाला गया है ।

अंग्रेजी भाषा की ज्ञान रखने वाले पाठकों के लिए यह कृति तन्त्रशास्त्र का एक बहुमूल्य सन्दर्भ स्रोत है।

26. **Encyclopaedia of Indian Mythology / Swami Ram Shanker Das.- New Delhi : Anmol Publications Pvt.Ltd., 2007. vii; 356 p.**

प्रस्तुत कृति में भारतीय देवी-देवताओं तथा पौराणिक कथाओं से सम्बन्धित कहानियों का बृहत् संकलन प्रस्तुत किया गया है । इसमें प्रारम्भिक पृष्ठों के अतिरिक्त कुल 356 पृष्ठों में विषय से सम्बन्धित तथ्यों को कुल सोलह अध्यायों के माध्यम से अंग्रेजी भाषा में व्याख्या प्रस्तुत की गयी है ।

इस विश्वकोश की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें ऋग्वेद से लेकर मूर्तिकला के काल तक की सम्पूर्ण साहित्य को लेखक ने बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है । साथ ही साथ, इसमें पौराणिक कथाओं तथा भारतीय साहित्य के सम्बन्ध में विशाल सन्दर्भों का भी उल्लेख किया गया है ।

इसमें प्रथम अध्याय से लेकर सोलहवें अध्याय तक वर्णित शीर्षकों का विवरण इस प्रकार निम्नवत है :-

भूमिका, युग, ग्रह, हिन्दू जाति, हिन्दू धर्म में कर्म, मन्त्र, ज्योतिष, पौराणिक ग्रन्थ, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत गीता, पौराणिक राजतन्त्र, प्राचीन भारत के विदेशी जनजाति, प्राचीन भारत के पौराणिक चरित्र, हिन्दू पौराणिक कथाओं सम्बन्धित ग्रन्थों तथा भारतीय अस्त्र-शस्त्रों" आदि से सम्बन्धित विशद् विवेचन प्रस्तुत है ।

इस प्रकार इस कृति में वर्णित विशाल साहित्य के सम्बन्ध में निहित तथ्यों से स्पष्ट है कि यह एक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ कृति है ।

27. **Encyclopaedia of Indian Music / Krishnananda Vyasdeva Ragsagar.-Delhi : Pratibha Prakashan. 2008 (2 Vols.)**

प्रस्तुत कृति "Encyclopaedia of Indian Music" संगीत रागकल्पद्रुम विश्वकोश का अंग्रेजी रूपांतरण है । इसे प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली के सहयोग से दो खण्डों में प्रकाशित किया गया है। यह संगीत विश्वकोश भारतीय सङ्गीतशास्त्र का एक आधुनिक विश्वकोश है। इसके संकलन में कुल 1270 पृष्ठों का उपयोग किया गया है ।

इस विश्वकोश की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि भारत में प्रचलित सभी तरह के संङ्गीत विद्याओं को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । उदाहरणार्थ, संस्कृत, संगीत, हिन्दी संगीत, हिन्दूस्तानी, गुजराती, मराठी, करनाटिक, तेलगू, बांग्ला, उड़िया, उर्दू, अरबी, पेगूअन के साथ ही साथ अंग्रेजी संगीत को भी इसमें सम्मिलित किया गया है ।

इस प्रकार प्रस्तुत कृति संगीत विद्या में रूचि रखने वाले अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ ग्रन्थ है ।

28. Encyclopaedia of Indian Literature / Sahitya Academy.-New Delhi. Sahitya Academy, 1988.

प्रस्तुत विश्वकोश ''इनसाईक्लोपिडीया ऑफ इण्डियन लिटरेचर'' को साहित्य अकादमी के एक महत्वपूर्ण परियोजा के अधीन प्रारम्भ-किया था तथा अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश में सभी भाषा के भारतीय साहित्य को मुख्य रूप से उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण प्रयास किया गया है ।

इस कृति की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें भारतीय संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त सभी भारतीय साहित्य के सम्बन्ध में उपलब्ध विस्तृत सूचनाओं को लघु लेखों के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

यद्यपि इसे अंग्रेजी भाषा में संकलित किया गया है, परन्तु अंग्रेजी भाषा की सामान्य जानकारी रखने वाले पाठकगणों के लिए यह एक अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ स्रोत है ।

29. Encylopaedia of Sanskrit Literature / Mamta Pandey.-New Delhi : Anmol Publications Pvt. Ltd., 2008 (Two volumes)

यह विश्वकोश संस्कृत साहित्य का अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित एक अद्यतन अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश है तथा यह दो खण्डों में प्रकाशित है । इस कृति की सबसे मुख्य विशेषता यह है कि इसमें संस्कृत भाषा एवं साहित्य से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्रस्तुत किया गया है ।

इसके प्रथम खण्ड में कुल छः अध्यायों के अन्तर्गत अग्रलिखित शीर्षकों जैसे– 1.ईश्वर की भाषा-संस्कृत, 2. प्रथम संस्कृत साहित्य - ऋग्वेद, 3. हिन्दू धर्म के सिद्धान्तः, भागवद गीता, 4. संस्कृत श्रेन्यग्रन्थ- शकुन्तला का उल्लेख किया गया है । जबकि दूसरे खण्ड में कुल तीन अध्यायों के अन्तर्गत प्रथम शीर्षक के रूप में सर्वकालीन कहानियाँ-पंच तन्त्र, द्वितीय में ''नैतिक शिक्षा की कहानियाँ-हितोपदेश'' एवं तृतीय में संस्कृत शब्दों की परिभाषावली का उल्लेख किया गया है । साथ ही साथ इन दोनों खण्डों के अन्त में ग्रन्थ सन्दर्भ सूची एवं अनुक्रमणी भी अंकित है ।

इस प्रकार संस्कृत भाषा एवं साहित्य का यह ग्रन्थ एक उपयोगी सन्दर्भ कृति है।

30. **Encyclopaedia of Educational Philosophy / Prem Chand Yogi - New Delhi : Crescent Publishing Corporation, 2008 (5 Vols)**

प्रस्तुत सन्दर्भ कृति शिक्षा दर्शन का एक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश है तथा इसे क्रिसेन्ट प्रकाशन, नई दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित किया गया है । यह कुल पाँच खण्डों में प्रकाशित है तथा इसमें भाषा का माध्यम अंग्रेजी है ।

इस प्रकार यह विश्वकोश अपने इन पाँच खण्डों के द्वारा शिक्षा दर्शन पर विविध लेखों के माध्यम से तथ्यपरक सूचनाओं से भरपूर है । इसमें वर्णित खण्डानुसार शीर्षकों का क्रम निम्नवत है–

खण्ड		शीर्षक
प्रथम	–	शैक्षिक दर्शन का भूमिका
द्वितीय	–	शैक्षिक दर्शन का इतिहास
तृतीय	–	शैक्षिक दर्शन का विकास
चतुर्थ	–	शैक्षिक दर्शन, एवं
पंचम	–	शिक्षा के दार्शनिक आधार ।

इसके प्रत्येक खण्ड के अन्त में ग्रन्थ सन्दर्भ सूची एवं अनुक्रमणिका का भी उल्लेख किया गया है जिससे इसके उपयोग कर्त्ताओं को बहुत सुविधा मिलती है ।

31. **Encyclopaedia of Buddhism / G.P. Malasekhara; Editor- Ceylon : Govt. Press, 1960. 152 p.**

प्रस्तुत कृति बौद्ध धर्म का एक अन्तर्राष्ट्रीय विषय विश्वकोश है तथा इसे आचार्य जी.पी. मालशेखर ने सम्पादित किया है । यह विश्वकोश सन् 1960 में सरकारी प्रेस, श्रीलंका से प्रकाशित हुआ है तथा यह एक खण्डीय विश्वकोश है ।

इस विश्वकोश की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें बौद्ध धर्म के विषय में सम्पूर्ण साहित्य का विवरण प्रस्तुत है । इस विश्वकोश के संकलन में कुल 152 पृष्ठों का उपयोग किया गया है ।

यद्यपि इसकी भाषा अंग्रेजी है फिर भी बौद्ध धर्म में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए यह कृति अत्यन्त उत्तम सन्दर्भ स्रोत है ।

32. **Encyclopaedia of Buddhist Tantra / ShivShankar Tiwary.-New Delhi : Anmol Publications Pvt.Ltd., 2009 305 p.**

सन् 2009 में प्रकाशित यह कृति बौद्ध तन्त्र का एक खण्डीय विषय विश्वकोश है तथा इसे अंग्रेजी भाषा में अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित किया गया है । इसमें कुल 305 पृष्ठों का उपयोग हुआ है । इसमें बौद्धतन्त्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण

साहित्य को कुल नौ अध्यायों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है। इसमें बौद्धतन्त्र के जिन शीर्षकों का अध्यायीकरण किया गया है । उसकी विवरण इस प्रकार है–

बौद्ध धर्म के पूर्व भारत में धार्मिक सिद्धान्त; बौद्ध धर्म की उत्पत्ति; महायान बौद्ध सम्प्रदाय का विकास; बौद्ध धर्म के रहस्य; बौद्ध धर्म के अन्तर्गत ईश्वरवाद; बौद्धधर्म के आचारनीति. भारतीय धर्म में तन्त्र का अर्थ; बौद्ध तन्त्र-एक संक्षिप्त परिचय, एवं बौद्धतन्त्र के प्रकार, पद्धतियाँ एवं सम्प्रदाय ।

इस प्रकार प्रस्तुत विश्वकोश के माध्यम से बौद्ध तन्त्र के अनेक विशेषताओं के साथ ही साथ भारत में बौद्ध तन्त्र के इतिहास एवं बौद्ध तन्त्र के सम्पूर्ण वाङ्मय के विषय में अद्यतन सूचना प्राप्त किया जा सकता है । बौद्ध तन्त्र में रूचि रखने वाले जिज्ञासुओं के लिए यह एक उपयोगी सन्दर्भ कृति है।

33. Encyclopaedia of Buddhist Art and Architecture /Shiv Sanskar Tiwari. - New Delhi : Anmol Publications Pvt. Ltd., 2009. 293 p.

"इनसाइक्लोपिडिया ऑफ बुद्धिस्ट आर्ट एण्ड आरचीटेक्यर" को अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित किया गया है तथा यह एक खण्डीय विषय विश्वकोश है। इसकी भाषा अंग्रेजी है तथा इसके रचनाकार शिवशंकर तिवारी है ।

इस विश्वकोश में बौद्ध कला एवं शिल्प विद्या सम्बन्धित विस्तृत साहित्य को संकलित किया गया है । इसके संकलन में कुल 293 पृष्ठों का उपयोग किया गया है । इसमें बौद्ध कला एवं शिल्प विद्या से सम्बन्धित साहित्य को कुल बारह अध्यायों के अधीन विवरण प्रस्तुत किया गया है जिसमें बौद्ध कला एवं शिल्पविद्या के सम्बन्ध में भारत में नहीं बल्कि पूरे एशिया महादेश में जहाँ कहीं भी इस तरह के शाक्ष्य अथवा स्रोत है, उन सभी सूचनाओं को इसमें विशेष स्थान दिया गया है।

□□

पंचम अध्याय

सुभाषित संग्रह सूचना स्त्रोत

(Information Sources of the Good Verses)

1. भूमिका एवं अर्थ :

सुभाषित, सूक्त सूक्ति, सदुक्ति, सुवचन इत्यादि समान शब्दों द्वारा एक विशिष्ट काव्य प्रकार की ओर संकेत किया जाता है । लौकिक व्यवहार में न्याय, आभाणक, मुहावरे इत्यादि द्वारा विचारों की वैचित्र्यपूर्ण अभिव्यक्ति होती है। ठीक उसी प्रकार साहित्यकारों की रचनाओं में पद्य या गद्य वाक्यों में जब चित्ताकर्षक विचार रखे जाते हैं, तो उसे सुभाषित कहा जाता है । ऐसे सुभाषितों का व्याख्यानों एवं लेखों में उपयोग करने से उनमें रोचकता बढ़ती है । यही कारण है कि कई वक्ता या लेखक ऐसे सुभाषितों का संग्रह स्वेच्छा पूर्वक करते हैं । अर्थात् ''कर्त्तव्यो हि सुभाषितस्य मनुजैरावश्यक संग्रह 'जैसे इस प्रसिद्ध सुभाषित में भी सुभाषितों को कंठस्थ करने का सन्देश दिया गया है । इसलिए कि सुभाषितों के यथोचित प्रयोग से वक्ता या लेखक सब प्रकार के लोगों को वस में कर सकता है । अर्थात् ''अज्ञान ज्ञान वतोप्यनेन हि वशीकर्तु समर्थों भवेत् ।''

2. सुभाषित के लक्षण :

साहित्यकारों ने महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक, चम्पू, नाटक इत्यादि साहित्य के प्रकारों के तथा उनके अवांतर उपभेदों के लक्षण बताए हैं, परन्तु सुभाषित का लक्षण किसी शास्त्रकार ने नहीं किया है । ''नूनं सुभाषित-रसोऽन्यरसातिशायी'' इस वचन में भी सुभाषित रस का निर्देश किया गया है कि यह रस अन्य रसों से श्रेष्ठ कहा गया है ।

3. सुभाषितों के प्राचीन एवं अर्वाचीन संग्रह–

सुभाषितों के जो अन्यान्य प्राचीन एवं अर्वाचीन संग्रह प्रकाशित किये गये हैं उनमें देवस्तुति, राजस्तुति, अन्योक्ति, नवरस, नायक-नायिका का सौंदर्य वर्णन, ऋतु वर्णन मूर्खनिन्दा, पंडित प्रशंसा, सत्काव्यस्तुति, कुकाव्यनिन्दा, सामान्य नीति, राजनीति इत्यादि विविध विषयों पर पुराण, रामायण, महाभारत, पंच महाकाव्य, प्रसिद्ध स्मृति ग्रन्थ, नाटक, मुक्तककाव्य इत्यादि ग्रन्थों से चुने हुए श्लोकों का और वैचित्र्यपूर्ण गद्यवचनों का संग्रह मिलता है। इन पद्यों या गद्यों को आप्तवचन सा प्रामाण्य तत्वतः नहीं है, परन्तु अनेक विद्वान ऐसे सुभाषितों को आप्त वाक्यवत् उद्धृत भी करते हैं।

4. सुभाषित विषयों का प्रतिपादन :

प्रतिभाशाली लेखक या वक्ता के द्वारा सुभाषित विषयों का प्रतिपादन आवेश में या वर्णन के ओध में, उनमें सूचित उत्कट अनुभव के कारण अनायास ही व्यक्त होते हैं । व्यवहार में तो कभी-कभी छोटे-छोटे बालकों के मुख से सुभाषित निकल आते हैं तथा ऐसे सुभाषित प्रौढ़ों द्वारा स्वीकृत अथवा ग्रहण करने योग्य होते हैं । इसीलिए कहा भी गया है कि "वालादपि सुभाषितं ग्राह्याम् ।" अर्थात् सारे ही वेदवचनों को आप्तवचन का प्रामाण्य है, तथापि उनमें भी अनेक ऐसे वाक्य है जिनका सुभाषितों की पद्धति से उपयोग होता है, जैसे–

नायमात्मा बाणहीनेन लभ्यः ।

अहमिन्द्रो न पराजिग्ये ।

स्वर्गकामो यजेत ।

मातृदेवो भव, पितृ देवो भव ।

यानि अस्माकं सुचरितानी

तानि त्वयोपास्यानी नो इतराणि,

इत्यादि।

पुराणों, महाभारत एवं रामायण में वर्णित सुभाषितों के स्वतन्त्र संग्रह अब तक प्रकाशित किये जा चुके हैं । विश्व प्रसिद्ध सुभाषित संग्रहों में 7वीं सदी के भर्तृहरि द्वारा विरचित नीतिशतक, वैराग्यशतक तथा शृंगार शतक में कुछ सुभाषित पूर्वकालीन ग्रन्थों से संकलित किये गये हैं । यह भी सम्भव है कि कुछ सुभाषित पद पूर्व अज्ञात कवियों के काव्यों से संकलित किये गये होंगे तथा कुछ स्वयं भर्तृहरि द्वारा विरचित होंगे । सुभाषित संग्रहात्मक ग्रन्थों का एक विशेष गुण यह कि उनमें अनेक अज्ञात कवियों के इधर उधर विखरे पड़े मनोहर स्फूट पद्य सुरक्षित रहे तथा साथ ही साथ कुछ कवियों के नाम भी प्रसिद्ध होते गये । उदाहरणार्थ भोजराज के सभाकवियों का चित्रण, नाम तथा पद्य सूक्तिग्रन्थों के कारण ही अब तक विद्यमान है ।

इसी प्रकार एक अज्ञात कर्तृक एकमात्र सुभाषित के कारण उपलब्ध भास नाटकों का ज्ञान हुआ अन्यथा वे सारे नाटकों के सम्बन्ध में अब तक कोई भी जानकारी न होती।

5. प्राचीन सुभाषित संग्रह :

सुभाषित- प्रथम सुभाषित के सम्बन्ध 12वीं सती में बंगाल के मालदा जिले के पं. विद्याधर का नाम सबसे पहले आता है, जिसमें वे 1739 सुभाषित श्लोकों को संकलित किये हैं ।

सदुक्ति कर्णामृत—संकलनकर्ता श्रीधर दास इसमें श्लोकों की संख्या 2380 है तथा इसे 13वीं शती में संकलित किया गया है ।

सूक्तिमुक्तावली—संकलित द्वारा जल्हण । ये देवगिरी (महाराष्ट्र) के यादववंशी 13वीं शती के राजा कृष्ण के हस्तिवाहिनी पति थे तथा इन्हीं के नाम पर भानुकवि ने यह संग्रह बनाथा है ।

प्रसन्न साहित्य रत्नाकर—इसके संकलन कर्ता आचार्य नन्दन पण्डित हैं तथा इसे 15वीं शती में संकलित किया गया है ।

सार्ङ्गधरपद्धति—इसके संकलनकर्ता आचार्य शार्ङ्गधर है तथा इसे 19वीं शती में संकलित किया गया है । इसमें कुल श्लोकों की संख्या 4616 है ।

सुभाषितावली—इस सुभाषित संग्रह के संकलनकर्ता एक काश्मीर निवासी आचार्य बलदेव है । इसमें कुल श्लोकों की संख्या 3528 है तथा इसे 15वीं शती में संकलित किया गया है ।

पद्यावली—इस सुभाषित संग्रह के संकलनकर्ता आचार्य रूप गोस्वामी है तथा इसमें कष्णपरक 386 श्लोकों का संग्रह है ।

सूक्ति रत्नहार—इसके संकलनकर्त्ता कलिंगराय हैं तथा इसे 19वीं शती में संकलित किया गया है ।

सूक्ति रत्नाकर—इस सुभाषित संग्रह को 13वीं शती में आचार्य सिद्ध चन्द्रमणि द्वारा संकलित किया गया है ।

प्रस्ताव रत्नाकर—इस सुभाषित संग्रह को आचार्य हरिदास ने 16वीं शती में संकलित किया है ।

सुभाषित हारावली—इसके संकलनकर्ता आचार्य हरिदास है ।

सूक्ति सुन्दर—यह सुभाषित संग्रह आचार्य सुन्दरदेव 17वीं शती मे संकलित किया गया है ।

पद्यतरंगिणी—इस संग्रह के संकलनकर्ता व्रजनाथ हैं।

पद्यवेणी—इस सुभाषित संग्रह को 17वीं शती में आचार्य वेणीदत्त ने संकलित किया है ।

पद्यरचना—इस सुभाषित संग्रह को 17वीं शती में आचार्य लक्ष्मणभद्र अंकोलकर द्वारा संकलित है । इसमें श्लोकों की संख्या 756 है ।

पद्यामृत तरंगिणी—इस सुभाषित को 17वीं शती में आचार्य हरि भास्कर द्वारा संकलित किया गया है तथा इसके श्लोकों की कुल संख्या 301 है ।

श्लोक संग्रह—इस सुभाषित संग्रह को 17वीं शती में पं. मणिराम दीक्षित ने संकलित किया है तथा इसमें कुल श्लोकों की संख्या (1606) है।

श्रृंगारालाप—इस सुभाषित ग्रन्थ में श्रृंगारमय एक सहस्त्र से अधिक श्लोकों का संग्रह है । इसे 16वीं शती में संकलित किया गया है । इसमें कुल एक हजार से अधिक

श्लोकों को सम्मिलित किया गया है तथा इसमें सम्मिलित 238 श्लोक दशावतार से सम्बन्धित हैं ।

विद्याधर सहस्त्रक—इस ग्रन्थ के संकलनकर्ता एक मिथिलानिवासी पं. विद्याधर मिश्र है ।

पदमुक्तावली—इस ग्रन्थ में दो संकलनकर्ताओं आचार्य घाटी राम तथा गोविन्दभट्ट ने योगदान किये हैं ।

सुभाषित सुधानिधि—इस सुभाषित ग्रन्थ को 14वीं शती में आचार्य सायणाचार्य ने संकलित किया है तथा इसमें श्लोकों की कुल संख्या 11181 है ।

पुरूषार्थ सुधा निधि—इस सुभाषित ग्रन्थ में महाभारत, पुराणों, तथा उपपुराणों के सुभाषितों का संकलन व्यवस्थित है तथा इसके संकलनकर्ता आचार्य सायणाचार्य है।

पद्यावली—पद्यावली शीर्षक से तीन सुभाषित ग्रन्थ विद्यमान हैं तथा इन तीनों के संकलनकर्त्ता अलग-अलग मुकुन्दकवि, विद्याभूषण तथा रूप गोस्वामी हैं ।

प्रस्तावचिन्तामणि—इसे आचार्य चन्द्रचूड़ ने संकलित किया है ।

प्रस्तवतरंगिणी—इसके संकलकर्त्ता श्रीपाल हैं।

प्रस्तावमुक्तावली—इसके संकलनकर्त्ता आचार्य केशव भट्टी हैं।

प्रस्ताव संग्रह—इस सुभाषित संग्रह के संकलनकर्त्ता राम शर्मा हैं ।

प्रस्तावना—इस सुभाषित ग्रन्थ के संकलनकर्ता साहित्य सेन है ।

सुभाषित कौस्तुभ—इस सुभाषित संग्रह के संकलनकर्त्ता श्री वेकंटाध्वरी हैं।

सुभाषितावली—इस कृति के संकलन कर्त्ता श्री सकल कृति हैं ।

सुभाषित रत्नकोश—इस कृति के संकलनकर्त्ता श्री कृष्णभट्ट हैं ।

सुभाषित रत्नावली—इस सुभाषित संग्रह के संकलनकर्त्ता श्री उमा महेश्वर भट्ट हैं ।

सार संग्रह—इस कृति के संकलनकर्त्ता श्री शम्भूदास हैं।

सार संग्रह सुधार्णव—इस सुभाषित कृति के संकलनकर्त्ता श्री भट्टगोविन्दजित् हैं।

सुभाषितनीति—इस कृति के संकलनकर्त्त वेंकटनाथ हैं।

सुभाषित पदावली—इसके संकलनकर्त्ता श्री निवासाचार्य हैं।

सुभाषित मंजरी—इसके संकलनकर्त्ता चक्रवर्ती वेकंटाचार्य हैं।

सुभाषित सर्वस्व—इसके संकलनकर्त्ता महामहोपाध्याय आचार्य गोपीनाथ कविराज हैं।

सूक्तिवारिधि—इस सुभाषित कृति के संकलनकर्त्ता श्री पेटुमभट्ट हैं।

सूक्ति मुक्तवली—इस कृति के संकलनकर्त्ता श्री विश्वनाथ हैं ।

सूक्तावली—इस कृति के संकलनकर्त्ता आचार्य लक्ष्मण हैं।

सुभाषित सुरद्रम—इस शीर्षक से सुभाषित ग्रन्थों के दो अलग-अलग कृतिसंकलित गये हैं जिनको केलाड़ी वसवप्यानायक तथा खण्डेराय वसवयतीन्द्र के द्वारा संकलित किया गया है ।

सुभाषित रत्नाकर—इस शीर्षक से सुभाषित संग्रहों के चार अलग-अलग कृति प्रकाशित किये गये हैं; जिनके संकलनकर्त्ता मुनिवेदाचार्य, कृष्ण उमापति तथा के.ए. भाटवडेकर हैं।

सुभाषित रंगसार—इस कृति के संकलनकर्ता श्री जगन्नाथ हैं।

सभ्यालंकरण- इति कृति के संकलनकर्ता श्री गोविन्दजित् हैं ।

वुध भूषण—इस सुभाषित संग्रह के संकलनकर्ता छत्रपति संभाजी अर्थात् शिवाजी महाराज के पुत्र हैं ।

सभ्यभूषण मंजरी—इस कृति के संकलनकर्ता श्री गौतम हैं ।

पद्यतरंगिणी—इस सुभाषित संग्रह के संकलनकर्ता श्री व्रजनाथ हैं ।

6. जैन साहित्य के सुभाषित संग्रह—

जैन संस्कृत साहित्य के सुभाषित संग्रह प्राय धार्मिक तथा नैतिक सदाचार एवं लोकव्यवहार पर आधारित हैं । उदाहरणार्थ,

रत्नसन्दोह–संकलनकर्ता अमितगति । भव्य जन-कण्ठाभरण, अर्हद्दास कृत । सूक्तिमुक्तवली काव्य-सोमप्रभकृत । विवेकपादप तथा विवेक कलिका-संकलकर्ता नरेन्द्र प्रभ।

सज्जन चित्तवल्लभ-मल्लिषेण कृत। श्रृंगार-वैराग्य तरंगिणी-सोमप्रभकृत । उद्देश्य तरंगिणी-राजशेखरकृत । कर्पूर प्रकट-हरिसेनकृत । अन्योक्ति शतक - दर्शन विजय कृत। अन्योक्ति मुक्तावली-हंस विजय गणितकृत । धनदशक तत्र-धनराजकृतथा दृष्टान्तशतक-तेज सिंह कृत ।

उपर्युक्त वर्णित ये सुभाषितग्रन्थ एकर्तृक है, अर्थात् इनके एक के अलावा दूसरे-कवियों के काव्यों को सम्मिलित नहीं किया गया है ।

इसी प्रकार श्री शंकराचार्य द्वारा विरचित "विवेक चूड़ामणि" का स्वरूप अध्यात्मपरक सुभाषित संग्रह का एक प्रमुख उदाहरण है । एक अन्य श्रेण्यकृति "भामनी विलास" जो जगन्नाथ पंडित राज द्वारा विरचित है में उनके श्रृंगार करूण, शांत रसमय तथा अन्योक्तिपरक सुभाषितों का संग्रह मिलता है। सुश्लोकलाघव में महाराष्ट्र के अनेक ऐतिहासिक संतों की प्रशंसा वैशिष्ट्यपूर्ण शैली में की है । इसमें सम्मिलित श्लोकों की संख्या 500 सौ से अधिक है।

गाँधी जी की अंग्रेजी सूक्तियों का पद्यानुवाद करके डा. चिन्तामणराव देशमुख ने गाँधी सूक्ति मुक्तवली नामक सुभाषित ग्रन्थ लिखे हैं। अब तक एक कवि आधारित अथवा अनेक कवियों के सुभाषितों को भिन्न-भिन्न भाषाओं एवं देशों में प्रकाशित किये जा चुके हैं। इसमें शंकराचार्य कृत समत्वगीत तथा श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत ''मन्दोर्मिमाला'' प्रमुख हैं। संस्कृत के आधुनिक विद्वान-काशीनाथ पाण्डुरंग परब द्वारा सम्पादित ''सुभाषितरत्न भण्डागार'' एक महत्वपूर्ण सुभाषित संग्रह माना जाता है । इसमें सात प्रकरणों में दस हजार से अधिक विविध विषयों पर प्राचीन कवियों द्वारा रचित श्लोकों का संकलन प्रस्तुत है। इस कृति के कुल आठ खण्डों को प्रकाशित किया जा चुका है ।

7. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण सुभाषित संग्रह एवं विश्वकोश :

महासुभाषित - संग्रह : (Maha-Subhasita-Samgraha)/Ludwick Sternbach; ed.by S. Bhaskaran Nair.-Hosiarpur : Viskeshwaranand Vedic Research Institute, 1974-, Multi volumes.

प्रस्तुत ग्रन्थ ''महा सुभाषित संग्रह'' संस्कृत के यूरोपिय विद्वान लूडविक स्टेरनबैक द्वारा रचित एक अमूल्य कृति है । उनके द्वारा निर्धारित योजना के अन्तर्गत इस संग्रह में कुल 18000 सुभाषितों को संकलित करके बीस खण्डों में प्रकाशित करने की योजना थी। इसके प्रथम खण्ड का संकलन सन् 1966 में प्रारम्भ हुआ तता यह प्रथम खण्ड सन् 1974 में प्रकाशित हआ । इस प्रकार इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड से लेकर - चतुर्थ खण्ड तक के प्रकाशन का कार्य लूडविक स्टेरनबैक के योगदान से पूर्ण हुआ तथा पंचमखण्ड के.वी. शर्मा के सम्पादकत्व में प्रकाशित किया गया जबकि इसका छठवाँ एवं सातवा खण्ड एस. भास्करन नायर के सम्पादन में प्रकाशित किया गया है । इस सुभाषित ग्रन्थ को निर्मित करने में जिन स्रोतों को आधार बनाया गया है, उनको तीन मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है, जैसे–इसमें प्राथमिक स्रोतों का संकेत हिन्दी वर्णमाला के (अ) अक्षर से इंगित किया गया है। द्वितीय श्रेणी के स्रोत को हिन्दी वर्णमाला के (आ) अक्षर से तथा भारत से सम्बन्धित अन्य स्रोतों को (इ) अक्षर से प्रस्तुत किया गया है । इसमें निहित सुभाषितों के अंग्रेजी अनुवाद तथा उसके अनुवादकों का अन्तमें कोष्ठक में उल्लेख किया गया है। अनुवाद से सम्बन्धित ग्रन्थपरक-सूचनाओं के लिए इसके जगह-जगह पर संक्षिप्त विवरण अंकित है।

इस सुभाषित्र ग्रन्थ के प्रत्येक खण्ड में पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखकर कुछ महत्वपूर्ण सूचियों एवं अनुक्रमणियों को भी निर्मित किया गया है वे इस प्रकार हैं–

1. इसमें निहित सुभाषितों के स्रोतों के ग्रन्थपरक सूचना तथा इनके अनुवादों के स्रोतों का संक्षिप्त सूची निर्मित है।

2. लेखक एवं स्रोत अनुक्रमणी-इस अनुक्रमणी से इस ग्रन्थ में निहित सुभाषितों के लेखकों एवं स्रोतों को खोजने में सुविधा होती है।

3. छंद, अलंकार एवं श्लोक अनुक्रमणी–इस अनुक्रमणी से पाठकों को इस ग्रन्थ में सन्दर्भित छन्दो एवं अलंकारों की जानकारी मिलती है । त्याज्य संन्दर्भों को इसमें इटालिक्स में प्रस्तुत किया गया है ।

4. सामूहिक विषय अनुक्रमणी-महासुभाषित संग्रह के सभी खण्डों के पूर्ण होने पर एक सामूहिक विषय अनुक्रमणी को निर्मित करने की योजना थी ।

इस प्रकार इस महासुभाषित संग्रह में संकलित 18000 सुभाषितों में से क्रम संख्या 01 से लेकर 1873 सुभाषितों को प्रथम खण्ड में देवनागरी वर्णमाला (अ) से (अन्वे) के अन्तर्गत वर्णित किया गया है । तदनन्तर शेष सुभाषितों का क्रम आगे के खण्डों में विन्यसित हैं। इसके साथ ही साथ इसके प्रत्येक खण्ड में कुछ आवश्यक सूचियों एवं अनुक्रममणियों का भी उल्लेख किया गया है, जैसे–

Index of Authors;

Index of Sanskrit Meters, and

Addenda and Corrigenda.

इस प्रकार 18000 सुभाषितों का महासुभाषित संग्रह संस्कृत वाड्मय के विद्यार्थियों के साथ ही साथ संस्कृत के अतिरिक्त अन्य यूरोपीय भाषा की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों एवं अन्य पाठकों के लिए भी यह महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्त्रोत है। इसके प्रत्येक खण्ड की जील्द बन्दी बहुत अच्छी तरह से की गयी है।

शिक्षा-मञ्जूषा (SHIKSHA-MANJUSHA) सुभाषित कोश / सम्पादक वेद प्रकाश शास्त्री एवं शशिकान्त पाण्डेय - नई दिल्ली : नीता प्रकाशन, 2002, 712 पृ.

प्रस्तुत ग्रन्थ शिक्षा-मन्जूषा सुभाषित कोश में विविध ग्रन्थों से संकलित 2121 सुभाषितों का संग्रह है, जिनको रोमन लिपि में रूपान्तरित कर हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनूदित किया गया है । इसके प्रत्येक सुभाषित के नीचे उसका विषय भी संकेतार्थ लिख दिया गया है । जैसे, ओऽम् अर्थात आदि गुरू परमेश्वर, गुरू, माता-पिता, शिष्य, राष्ट्र संस्कार, संस्कृति, परिवेश, राजनीति आदि विषयों से सुभाषितों के अलावा त्याज्य, निन्दनीय तथा प्रशंसनीय विषयों के सुभाषितों का भी इसमें संग्रह है । साथ ही साथ शिक्षा के विषय में सम्बन्धित अनेक सुभाषित विशेष रूप से संकलित है ।

प्रस्तुत कोश ग्रन्थ को तैयार करने में वेदों, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, पुराणों, महाकाव्यों, नाटकों तथा सूक्ति संग्रहों से भी सहायता ली गयी है। इस प्रकार 2121 सुभाषितों का संग्रह 2121 बहुमूल्य रत्नों की खान है ।

स्वध्यायशील विद्वानों तथा संस्कृत वाड्मय के विद्यर्थियों के लिए यह बहुत उपयोगी ग्रन्थ है । इसे अन्त्याक्षरी के लिए उपयुक्त सूची पत्र के रूप में भी पाठकों द्वारा

प्रयोग किया जा सकता है । इसमें संकलित सुभाषितों का विवेचन 13 अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है । साथ ही साथ, संस्कृत वर्णमाला का अंग्रेजी रूपान्तर, सन्दर्भ ग्रन्थ एवं उनकी संकेत सूची का भी इसमें उल्लेख किया गया है ।

नैतिक-मञ्जूषा (शैक्षिक मूल्य) / वेद प्रकाश शास्त्री; सम्पादक — नई दिल्ली : नीता प्रकाशन, 2009. xx, 742 पृ.

इस सन्दर्भ ग्रन्थ में लगभग 2100 सुभाषितों को अनेक ग्रन्थों से संग्रहित कर वर्णानुक्रम में विन्यसित किया गया है । इस नैतिक मञ्जूषा में व्यवहारिक पक्ष पर विशेष बल-दिया गया है । हमारा व्यवहार किससे कैसा होना चाहिए और कैसा नहीं तथा उसके साधन क्या हैं? जैसे इन्हीं भावों को इन सुभाषितों में प्रस्तुत किया गया है।

इसकें अन्तर्गत संकलित सुभाषितों के अर्थ हिन्दी में देने के साथ ही साथ अंग्रेजी में भी दिये गये है जिससे अंग्रेजी जानने वाले पाठक भी इसका उपयोग आसानी से कर सकते हैं । नीतिशब्द का बहुत विस्तृत अर्थ है । मानव का किसी के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए यही बात नीति कहलाती है । इस ग्रन्थ में गुरू-शिष्य, पति-पत्नी, गृह सदस्यों, राजा-प्रजा, राजकर्मचारियों, विभिन्न वर्णों तथा आश्रमों आदि का परस्पर तथा प्राणिमात्र और राष्ट्र के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए इन्हीं विषयों से सम्बन्धित 2100 सुभाषितों को इस ग्रन्थ में संग्रहित किया गया है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में निहित सुभाषितों का संग्रह वेदों से लेकर नवीनतम ग्रन्थों से किये गये हैं ।

इस प्रकार सुभाषितों के अध्ययन में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों एवं विद्वानों के लिए यह एक बहुमूल्य कृति है । साथ ही साथ यह अन्त्याक्षरी के लिए भी एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ कृति हैं ।

विश्व संस्कृत सूक्ति कोश / ललित प्रभ सागर - मथुरा : भाषा भवन, 2000. (तीन खण्डों में)।

यह एक विषय विश्वकोश है जिसमें संस्कृत साहित्य के सूक्तियों के भण्डार को हिन्दी भाषा में रूपान्तरित करके कोश क्रम में प्रस्तुत किया गया है । साहित्य की विराटता में सूक्तियों की व्यापकता सहज स्वाभाविक है । शायद ही ऐसा कोई विषय हो जिससे सम्बन्धित सूक्तियाँ संस्कृत में न मिलती हों । अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष की पृथक्-पृथक् धाराओं को सम्पादित करते हुए उनपर मार्मिक सूक्तियों की संरचना संस्कृत साहित्य की अन्यन्य विशेषता है । जीवन में हर कदम पर मार्ग प्रशस्त करने के लिए इन सूक्तियों की उपयोगिता विवाद मुक्त है ।

सूक्ति वह है जो सद्विचार का प्रतिनिधित्व करे और सदाचार का प्रवर्तन । संस्कृत साहित्य में ऐसी सूक्तियाँ कदम-कदम पर ज्योतिर्मय हैं। इन सूक्तियों के व्यवस्थापन हेतु

सूक्तिकोश को तीन खण्डों में विभाजित किया गया है जो निम्नवत है–

प्रथम खण्ड–"अ" से "त";
द्वितीय खण्ड–"थ" से "भ";
तृतीय खण्ड–"म" से "ह" ।

इस प्रकार यह विश्वकोश संस्कृत साहित्य के विद्यार्थियों के साथ ही साथ-सभी श्रेणी के पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ कृति है ।

बृहद् विश्व सूक्तिकोश (Encyclopaedia of Quotations)/ श्याम बहादुर वर्मा–नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 2000. (तीन खण्ड) ।

प्रस्तुत विश्वकोश को सन् 2000 में प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है । लेखक ने इस विश्वकोश में महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय सूक्तियों का वृहत संकलन प्रस्तुत किया है । इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें क्रमशः संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं जैसे हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी, पंजाबी, सिंधी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बांग्ला, उड़िया, असमिया, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम के साथ ही साथ अंग्रेजी, अरबी, फारसी, चीनी, जापानी, यूनानि, लैटिन, फ्रेंच, जर्मन, रूसी आदि की सूक्तियों का भी समुचित प्रतिनिधित्व है ।

इस विश्वकोश में संकलित सामग्रियों के विशालता के कारण इसे तीन खण्डों में प्रकाशित किया गया है तथा इसके प्रथम खण्ड में सूक्तियों का विन्यसन 'अ' अक्षर से लेकर 'थ' अक्षर तक प्रस्तुत किया गया है । इसी प्रकार इसके द्वितीय खण्ड में सूक्तियों का विन्यसन 'द' अक्षर से लेकर "यौ" अक्षर तक व्यवस्थित है । जबकि इसके तृतीय खण्ड में सूक्तियों का व्यस्थापन 'यौ' अक्षर से प्रारम्भ होकर 'ज्ञ' अक्षर पर समाप्त हुआ है ।

उपयोक्ताओं द्वारा इसका अधिकाधिक उपयोग हो सके । इस हेतु इसके प्रत्येक खण्ड में परिशिष्ट के रूप में सन्दर्भ अनुक्रमणिका का भी उल्लेख किया गया है । इन अनुक्रमणिकाओं का क्रम भी वर्णानुक्रम में व्यवस्थित हैं । इसके अन्तर्गत सभी सूक्ति स्रोतों अर्थात् उद्धृत लखकों तथा लेखक नाम से सम्बन्धित ग्रन्थों का, पत्र-पत्रिकाओं आदि का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है ।

इस प्रकार यह "बृहद् विश्व सूक्तिकोश" कुल तीन ख़ण्डों में विभाजित लगभग 1700 पृष्ठों में संकलित है । प्रत्येक खण्ड के प्रारम्भ में दी गयी विषयानुक्रमणिका का उपयोग करके यत्र-तत्र विकीर्ण विविध शीर्षकों में से पाठक अपनी रूचि के विषय सम्बन्धित सभी-शीर्षकों का उपयोग करने में समर्थ हो सकते हैं । अपनी इसी विशेषता के कारण यह विश्व सूक्ति कोश एक मात्र सर्वजनोपयोगी एवं दुर्लभ सन्दर्भकृति है।

❑❑

षष्ठ अध्याय

वाङ्मयसूची

(Bibliography)

1. भूमिका एवं अर्थ-

संस्कृत एवं प्राच्य भारतीय साहित्य में वाङ्मय शब्द को साहित्य शब्द के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत संचित ज्ञान-राशि के समस्त भण्डार को वाङ्मय कहा जाता है। क्योंकि इसके अन्तर्गत रचनात्मक एवं रसात्मक साहित्य तथा अतिरिक्त ज्ञान एवं विज्ञान से सम्बन्धित समस्त विधाएँ परिगणित होती हैं । इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा में भी साहित्य एवं वाङ्मय दोनों के लिए एक ही शब्द लिटरेचर (Literature) का प्रयोग किया जाता है।

जबकि अंग्रेजी पद "विबिलयोग्राफी" का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1645-50 में लुइस जैकब डी सेन्ट चार्ल्स (Lowis Jacob de Saint Charles) ने अपनी पुस्तक विब्लियोग्राफिया परसियाना (Biblographia Persiana) में किया था । विब्लियोग्राफी शब्द ग्रीकभाषा के दो पदों (Biblion) विब्लियोंन एवं (Grapheen) ग्राफीयेन से मिलकर बना है जिसका अर्थ है ग्रन्थ एवं लिखना अर्थात् "ग्रन्थ लिखना" होता है । कालान्तर में एक फ्रांसीसी विद्वान पोलार्ड (Pollard) ने विब्लियोग्राफी शब्द का अभिप्राय "पुस्तकों के विषय में लिखने" से जोड़कर देखा तथा जर्मनी के विख्यात वाङ्मय सूचीकार (F. Ebert) एफ. एबर्ट ने बिब्लियोग्राफी शब्द को परिभाषित करते हुए कहा कि "यह वह विज्ञान है जो साहित्यिक उत्पादनों से सम्बन्धित होता है।"

समाज के साथ-साथ बिब्लियोग्राफी पद के मूलभूत धारणा में परिवर्तन होने के कारण विख्यात वाङ्मय सूचीकारों ने "बिब्लियोग्राफी" शब्द को भिन्न-भिन्न रूपों में परिभाषित किये हैं । सर वाल्टर डब्लू. ग्रेग के अनुसार, वाङ्मय सूची का तात्पर्य यह है कि इसमें ग्रन्थों अथर्वा पुस्तकों का अध्ययन ठोस वस्तु के रूप में किया जाता है । अस्तु वाङ्मय सूची साहित्यिक प्रलेखों के संचार का विज्ञान होता है ।"

थियोडोर बेस्टर मैन (Thedore Besterman) के अनुसार "वाङ्मयसूची ग्रन्थों की सूची होती है जिसे किसी एक निश्चित सिद्धान्त के अनुसार व्यवस्थित किया गया होता है।" लुइस शोर्स (Louis Shores) के अनुसार, "वाङ्मयसूची लिखित, मुद्रित एवं अन्य विधियों से निर्मित किये गये परम्परागत रीति रिवाजों एवं सभ्यताओं के अभिलेखों की एक तालिका

होती है। जिसके अन्तर्गत ग्रन्थों, धारावाहिक प्रकाशनों, पाण्डुलिपियाँ, चित्रों, मानचित्रों; फिल्में एवं अन्य रूपों को सम्मिलित किया जा सकता है ।

अरूनडेल इजडेल के परिभाषा के अनुसार, "वाङ्मयसूची एक कला है और साथ ही विज्ञान भी है"' इसका कलात्मक पक्ष ग्रन्थों का अभिलेख करने में निहित होता है जबकि वैज्ञानिक पक्ष ग्रन्थों के निर्माण एवं उनके अभिलेख को प्रस्तुत करने की सीमा में निहित होता है ।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि बिब्लियोग्राफी शब्द का प्रयोग तीन रूपों में किया गया है–

1. विज्ञान;
2. कला;
3. किसी तकनीक का उत्पादन ।

जबकि वर्तमान समर्य में विब्लियोग्राफी शब्द का प्रयोग केवल दो ही रूपों में किया जाता है, जैसे पहला-ग्रन्थों की एक सूची निर्धारण करने की कला एवं दूसरा तालिका का नाम ।

2. वाङ्मयसूची का महत्व (Importance of Bibliography) :

ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक वाङ्मयसूचियाँ विद्वता एवं पाण्डित्य की धरोहर होती हैं। ज्ञान के ये दोनों क्षेत्र विश्व के पाण्डित्य परम्परा में अपना विशेष महत्व रखते हैं। क्रमबद्ध वाङ्मय सूची एक कला होती है जो इसके प्रस्तुतीकरण में निहित होती है। ग्रन्थालय विवरणों को प्रविष्टियों में प्रस्तुत करने हेतु व्यवस्थित करना एवं उन प्रविष्टियों को किसी निश्चित क्रम में उपयोग हेतु निर्मित करना वाङ्मय सूची की कला को प्रस्तुत करता है। जबकि विश्लेषणात्मक वाङ्मयसूची जो विवरणात्मक वाङ्मयसूची होती है उसे विज्ञान कहते हैं।

वाङ्मयसूची के व्यवहारिक पक्ष को ध्यान में रखते हुए इसे विज्ञान अथवा कला की संज्ञा देना उतना महत्व नहीं रखता जितना कि ग्रन्थाध्यक्षों एवं शोधकर्ताओं के लिए यह एक सन्दर्भ उपकरण के रूप में वाङ्मयात्मक जानकारी उपलब्ध कराने के लिए अधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी होता है । डा. एस. आर. रंगनाथन ने प्रलेख वाङ्मयसूची के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया है कि "वाङ्मयसूची प्रमुख रूप से ग्रन्थों की आत्मा अर्थात् विषय वस्तु एवं विचार धारा से सम्बद्ध होता है ।" वर्तमान युग में साहित्य उत्पादन की प्रचुरता के कारण "सूचना विस्फोट का युग" के नाम से जाना जाता है जिसके फल स्वरूप यह सम्भव नहीं है कि ज्ञान की अनेक शाखाओं के विकास के लिए एवं ज्ञान वर्धन के लिए आवश्यक सूचना एवं सूचना स्रोतों की पूर्ण जानकारी हो । इस दृष्टिकोण से वाङ्मय सूची की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है।

3. वाङ्मयसूची के उद्देश्य एवं कार्य (Objectives and Functions of Bibliography) :

1. वाङ्मयसूची का प्रथम उद्देश्य उपयोग कर्ताओं को वांछित पाठ्य सामग्रियों को मुद्रित रूपों में उपलब्ध है अथवा नहीं का पता लगाने अथवा उसकी वस्तु स्थिति को जानने में सहायता करना होता है ।

2. वाङ्मयसूची का दूसरा मुख्य उद्देश्य ग्रन्थालयों में कृतियों के चयन (Book Selection) के स्रोत के रूप में करना होता है ।

3. वाङ्मयसूची से ग्रन्थों के ग्रन्थपरक विवरण का सत्यापन एवं उपलब्धी अधिक सरल हो जाता है ।

4. ग्रन्थालयों में इसकी सहायता से उपयोक्ताओं द्वारा वांछित सामग्रियों की विषयानुसार तालिका निर्मित करने में सहायता मिलती है ।

5. लघु स्तरीय ग्रन्थालयों में वाङ्मयसूची की सहायता से संकलित ग्रन्थों की सूचीकरण एवं वर्गीकरण करने में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है । उदाहरण के लिए भारतीय राष्ट्रीय वाङ्मयसूची में संकलित प्रविष्टियों से सम्बन्धित डी.डी.सी. एवं सी.सी. द्वारा निर्मित वर्गांक भी दिया रहता है ।

6. अध्ययन, अध्यापन एवं शोध आदि गतिविधियों में रूचि रखने वाले अध्येताओं को उनकी अभिरुचि के अनुसार पूरे राष्ट्र अथवा विश्व में प्रकाशित सूचनाओं से अवगत कराया जाता है ।

4. वाङ्मयसूची एवं इसके विभिन्न प्रकार (Bibliography and its Various Types) :

वाङ्मयसूचियों को सामान्यतया तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है–

1. क्रमबद्ध अथवा परिगणात्मक वाङ्मयसूची;
2. विश्लेषित अथवा आलोचनात्मक वाङ्मयसूची; एवं
3. ऐतिहासिक वाङ्मयसूची।

क्रमबद्ध अथवा परिगणात्मक वाङ्मयसूची के अनेक प्रकार निधार्रित किये गये हैं जो कि इस प्रकार निम्नवत हैं–

i) सार्वभौमिक वाङ्मयसूची;
ii) राष्ट्रीय वाङ्मयसूची;
iii) व्यापारिक वाङ्मयसूची;
iv) चयनात्मक या वर्णनात्मक वाङ्मयसूची;
v) अलभ्य पुस्तकों की वाङ्मयसूची;

vi) छद्म नाम वाङ्मयसूची;

vii) सामायिकी वाङ्मयसूची;

viii) शोध प्रबन्धों की वाङ्मयसूची;

ix) विषय वाङ्मयसूची;

x) लेखक वाङ्मयसूची; एवं

xi) वाङ्मय सूचियों की वाङ्मयसूची ।

इसी तरह से विश्लेषित अथवा आलोचनात्मक वाङ्मयसूची के दो प्रकार निर्धारित किये गये हैं जो कि इस प्रकार हैं–

i) वर्णनात्मक वाङ्मयसूची, एवं

ii) मूल पाठ वाङ्मयसूची ।

ऐतिहासिक वाङ्मयसूची के अन्तर्गत ग्रन्थों को कला की दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। ऐतिहासिक वाङ्मयसूची का प्रमुख सम्बन्ध लेखन-कला एवं लेखन सामग्री के विभिन्न अवयवों से होता है। इससे उक्त काल के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के इतिहास एवं मानव सभ्यता के विकास का पता चलता है ।

प्रस्तुत अध्याय में क्रमबद्ध वाङ्मयसूची के प्रकार के अन्तर्गत केवल कुछ ही प्रकारों के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन-प्रस्तुत है ।

5. वाङ्मयसूची का मूल्यांकन (Evaluation of Bibiography) :

वाङ्मयसूचियों के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित जाँच विन्दुओं के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए ।

प्रमाणिकता–संकलित ग्रन्थ प्रमाणिक एवं शुद्ध होना चाहिए । इसका निर्धारण प्रकाशकों, वितरकों, लेखकों एवं अन्य उत्तरदायित्व कर्त्ताओं की प्रतिष्ठा अथवा प्रसिद्धि योग्यता एवं अनुभव के द्वारा की जा सकती है।

विषय क्षेत्र–वाङ्मयसूची के विषय क्षेत्र को जानने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तरों द्वारा जानकारी प्राप्त की जा सकती है । जैसे–संकलनकर्त्ता के अनुसार कार्य का उद्देश्य क्या है ? वाङ्मयसूची सामयिक है, चयनित है, पूर्वव्यापी है या विस्तृत है ? विषय, भाषा, स्थान एवं समय की क्या सीमाएँ हैं ?

व्यवस्थापन–वाङ्मयसूची के निर्माण में व्यवस्थापन प्रक्रिया सबसे महत्वपूर्ण पहलु है। अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वाङ्मय सूचियों में व्यवस्थापन की प्रक्रिया इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे वांछित सूचना अथवा तथ्य आसानी से प्राप्त की जा सके। वाङ्मय सूचियों में व्यवस्थापन अथवा विन्यसन निम्नलिखित प्रकार का हो सकता

है–

i. लेखक, विषय या भौगोलिक क्षेत्र के द्वारा वर्णानुक्रमानुसार;

ii. कालक्रमानुसार व्यवस्थापन;

iii. वर्गीकृत विन्यसन;

iv. अनुवर्णिक वर्गीकृत व्यवस्थापन;

v. शब्दकोशीय व्यवस्थापन; एवं

vi. प्रकाशन वर्ष के अनुसार व्यवस्थापन ।

प्रविष्टियाँ एवं उसमें वर्णित तथ्य–

वाङ्मयसूचियों में निर्मित प्रविष्टियों में निम्नलिखित सूचनाएँ अवश्य होनी चाहिए, जैसे–लेखक, सहायक लेखक, आख्या, संस्करण, ग्रन्थमाला, खण्डों की संख्या, प्रकाशकीय विवरण एवं सार आदि ।

संशोधन और अद्यतन-वाङ्मयसूचियों में दी गयी सूचनाओं को नवीन रखने के लिए एक निश्चित अन्तराल के बाद संशोधन किया जाना चाहिए ।

विशेषताएँ–वाङ्मयसूची की विशेषताओं को अन्य उपलब्ध वाङ्मयसूचियों से तुलना के द्वारा पता किया जा सकता है । प्राक्कथन एवं भूमिका का अध्ययन करने से विशेषताओं एवं त्रुटियों के बारे में अन्दाज किया जा सकता है ।

भौतिक स्वरूप–वाङ्मयसूची के भौतिक स्वरूप के अन्तर्गत ग्रन्थ की जिल्दबन्दी, कागज, मुद्रण तथा मुद्रित सामग्रियों के अक्षर स्पष्ट है अथवा नहीं आदि सूचनाओं को महत्व देना चाहिए ।

6. राष्ट्रीय वाङ्मयसूची (National Bibliographics) :

राष्ट्रीय वाङ्मयसूची का विषय सीमा देश अथवा राष्ट्र तक सीमित रहता है। इसमें एक राष्ट्र में प्रकाशित सभी भाषाओं के तथा सभी विषयों में प्रकाशित ग्रन्थों को सूचीबद्ध करती है । प्रत्येक देश अथवा राष्ट्र में वहाँ के राष्ट्रीय ग्रन्थालयों या इसके द्वारा निर्धारित अन्य ग्रन्थालयों में डी. बी. एक्ट अथवा कॉपीराइट अधिनियम या आई.पी.आर. एक्ट के अनुसार ग्रन्थों की जो प्रतियाँ प्राप्त होती हैं । उसी के आधार या इनको निर्मित की जाती है । राष्ट्रीय वाङ्मयसूचियों में अधिकांशतः पत्र-पत्रिकाओं के प्रथम अंक, सरकारी प्रलेखों एवं ग्रन्थों आदि की पाठ्य सामग्री की सूचना दी होती है ।

7. राष्ट्रीय वाङ्मयसूची की उपयोगिता :

राष्ट्रीय वाङ्मयसूची का मुख्य उद्देश्य एवं कार्य सम्बन्धित राष्ट्र के उपयोग के लिए पूर्ण वाङ्मयात्मक सूचना उपलब्ध कराना होता है । इसकी सहायता से निम्नांकित सूचना प्राप्त की जा सकती है।

i. वाङ्मय सूची की सहायता से किसी भी राष्ट्र के बौद्धिक एवं साहित्यिक विकास के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है ।

ii. इसके द्वारा भावी पीढ़ी को शोध एवं विकास के कार्यों में पूर्ववर्ति साहित्य का ज्ञान होता है ।

iii. ग्रन्थालयों एवं सूचना केन्द्रों में ग्रन्थों के चयन में यह बहुत उपयोगी होता है।

iv. इसकी सहायता से किसी ग्रन्थ में अंकित मूल्य की सत्यता की जाँच भी की जा सकती है ।

v. राष्ट्रीय स्तर पर सार्वभौमिक ग्रन्थात्मक नियंत्रण में राष्ट्रीय वाङ्मय सूची एक महत्वपूर्ण उपकरण का कार्य करता है । कम्प्यूटर एवं सूचना प्रद्यौगिकी की आगमन से पूरे विश्व में राष्ट्रीय वाङ्मयसूचियों का उपयोग तो बढ़ा है परन्तु अभी भी कुछ ऐसे देश हैं, जिनमें राष्ट्रीय वाङ्मयसूचियाँ प्रकाशित नहीं की जाती हैं। इस प्रकार के सूचियों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है–

1. सामायिक राष्ट्रीय वाङ्मयसूची,
2. पूर्वव्यापी राष्ट्रीय वाङ्मयसूची ।

भारत में सामयिक राष्ट्रीय वाङ्मयसूची का अभाव है फिर भी भारतीय राष्ट्रीय वाङ्मयसूची सामायिक राष्ट्रीय वाङ्मय सूची के कार्य को कुछ सीमा तक पूर्ण करती है। परन्तु इसमें कुछ क्षेत्रों के प्रलेखों को अभी भी सम्मिलित नहीं किया जाता है तथा इसका प्रकाशन एक निश्चित अन्तराल पर न होकर कुछ विलम्ब से हो पाता है ।

8. भारतीय राष्ट्रीय वाङ्मयसूची (Indian Natonal Bibliography - INB) :

1. **भारतीय राष्ट्रीय वाङ्मयसूची, त्रैमासिक, अक्टूबर 1957 दिसम्बर 1963; मासिक जनवरी 1964 केन्द्रीय सन्दर्भ ग्रन्थालय, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकता, 1959-वार्षिक संचयी अंक, 1958-62 की पंचवर्षीय संचयी अनुक्रमणिका ।**

आई. एन. बी. भारत की राष्ट्रीय वाङ्मयसूची है तथा इसका प्रकाशन भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता के सहोदर संगठन केन्द्रीय सन्दर्भ पुस्तकालय कोलकता द्वारा सन् 1958 से प्रकाशित की जार रही है । यह राष्ट्रीय वाङ्मयसूची राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकता में 1954 के ग्रन्थ प्रदान अधिनियम (डिलीवरी ऑफ बुक्स एक्ट) एवं संशोधित अधिनियम 1956 के अधीन प्राप्त होने वाली ग्रन्थों पर आधारित है तथा इसे सामायिक भारतीय प्रकाशनों का प्रमाणिक-वाङ्मयात्मक अभिलेख के रूप में स्थान प्राप्त है।

इस राष्ट्रीयवाङ्मय सूची के प्रथम अंक का प्रकाशन सन 1958 में किया गया जिसका विमोचन हिमायु कबीर (वरिष्ठ सचीव, केन्द्र सरकार) के द्वारा सम्पन्न हुआ था। सर्व

प्रथम प्रकाशित अंक अक्टूबर से दिसम्बर 1957 त्रैमासिक अंक था । यह राष्ट्रीय वाङ्मयसूची सन् 1963 तक वार्षिक संचयित खण्डों के साथ त्रैमासिक के रूप में प्रकाशित होती चली आयी । तत्पश्चात् 1964 से 1967 तक इसके त्रैमासिक स्वरूप को परिवर्तित करके इसे मासिक कर दी गयी । इसी प्रकार 1958 से 1962 तक के प्रकाशित वार्षिक खण्डों की पंचवर्षीय संचयी अनुक्रमणिका भी प्रकाशित की गयी है । 1968 से 1970 के बीच इसका कोई अंक प्रकाशित नहीं हो पाया, परन्तु 1971 से 1977 के बीच मासिक अंकों का प्रकाशन कुछ विलम्ब से होने के कारण 1978 से 1983 के मासिक अंकों के स्थान पर दो वार्षिक खण्डों का प्रकाशन किया गया । पुनः छः वर्षों के बाद सन् 1984 में मासिक अंकों का प्रकाशन पुनः शुरू कर दिये गये ।

1958 से 1967 तक के संस्कृत खण्डों की संचयित अनुक्रमणिका को दो खण्डों में प्रकाशित किया गया है । इस प्रकार यह बहुभाषीय राष्ट्रीय वाङ्मयसूची है, जिसमें अनेक भाषाओं के ग्रन्थों को सूचीबद्ध किया जाता है । आई. एन. बी. भारत में प्रकाशित ग्रन्थों एवं अन्य सूचना सामग्रियों की वर्गीकृत वाङ्मयसूची है तथा इसको अद्यावधि मासिक रूप में प्रकाशित किया जाता है तथा इसके बारह मासिक अंकों को मिलाकर वार्षिक संचयी खण्ड प्रकाशित की जाती है ।

आई. एन.बी. में निम्नलिखित सूचना स्रोतों को सम्मिलित नहीं किया जाता है–

1. मानचित्र;
2. सामयिकी तथा समाचार पत्रों के प्रथम अंक को छोड़कर अन्य अंक;
3. पाठ्य-पुस्तकों की कुंजीयों;
4. क्षणिक पठनीय सामग्री;
5. संगीत स्वर लिपि, तथा
6. सस्ते उपन्यास ।

सन् 1972 के अन्त तक आई एन. बी. दो भागों में प्रकाशित होती रही तथा प्रत्येक भाग के दो अनुभाग थे जिनको जनवरी 1973 से एक में मिला दिया गया है । वर्तमान में आई एन.बी. के वर्गीकृत भाग में डी.डी.सी. के वर्गों के अनुसार प्रविष्टियों को व्यवस्थित किया जाता है, जबकि प्रत्येक प्रविष्टियों के नीचे दाहिनी तरफ द्वि-बिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के द्वारा भी वर्णांक निर्मित भाग में प्रविष्टियों को वर्गीकरण संख्या से व्यवस्थित किया गया है तथा कृतियों का पूरा विवरण, जैसे-लेखक का नाम, शीर्षक, प्रकाशक का नाम, प्रकाशन वर्ष प्रकाशन स्थान, पृष्ठ संख्या, आकार, ग्रन्थमाला तथा मूल्य का उल्लेख किया गया है । अंग्रेजी के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं के ग्रन्थों से सम्बन्धित सूचना रोमन लिपि में प्रस्तुत किया गया है । जबकि संस्कृत भाषा की ग्रन्थों के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया गया है।

इसी प्रकार इस वाङ्मय सूची के दूसरे अनुभाग में वर्णानुक्रम पद्धति पर आधारित दो प्रकार की अनुक्रमणिकाओं का उल्लेख किया गया है जिसमें पहला लेखक एवं आख्या से सम्बन्धित अनुक्रमणिका है तथा दूसरा विषय से सम्बन्धित अनुक्रमणिका है ।

आई.एन.बी. को विस्तृत एवं अद्यतन रखने हेतु केन्द्रीय सन्दर्भ ग्रन्थालय, कोलकता को राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकता के साथ विलय किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है क्योंकि राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकता द्वारा राष्ट्रीय वाङ्मय सूची के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसके वर्तमान कमियों को आसानी से दूर किया जा सकता है ।

2. भारतीय साहित्य का राष्ट्रीय वाङ्मयसूची (National Bibliography of Indian Literature), 1901-53, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी, 1962-74 (4 खण्डीय)।

भारतीय साहित्य के इस राष्ट्रीय वाङ्मयसूची में पन्द्रह भारतीय भाषाओं एवं अंग्रेजी में प्रकाशित 60,000 ग्रन्थों के प्रविष्टियों को इसमें सूचीबद्ध किया गया है । इसमें प्रविष्टियों को रोमन लिपि में अंकित किया गया है तथा ग्रन्थों का वर्गीकरण डी.डीसी. पर आधारित है। ग्रन्थों से सम्बन्धित प्रविष्टियों को इसमें भाषा के आधार पर विभाजित किया गया है। तत्पश्चात् डी.डी.सी. के अनुसार विषयों को व्यवस्थित किया गया है । प्रत्येक विषय में ग्रन्थों के लेखक के नाम से वर्णानुक्रमानुसार प्रविष्टियों को व्यवस्थित किया गया है । इसके प्रत्येक खण्ड में चार भाषाओं के ग्रन्थों को सूचीबद्ध किया गया है तथा प्रत्येक खण्ड के अन्त में अनुक्रमणिका का उल्लेख किया गया है ।

इस चयनित राष्ट्रीय वाङ्मयसूची की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें भारतीय लेखकों की कृतियों के साथ ही साथ भारत से सम्बन्धित विश्व के किसी भाग में प्रकाशित ग्रन्थों को भी सम्मिलित किया गया है । सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी से सम्बन्धित प्रकाशित ग्रन्थों को ही इसमें सूचीबद्ध किया गया है । यद्यपि इसमें पत्र-पत्रिकाओं एवं अन्य प्रकार के पाठ्य सामग्रियों को सम्मिलित नहीं किया गया है ।

इसमें बीसवीं सदी के मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान के सभी ग्रन्थकारों तथा उनके रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, परन्तु कुछ ग्रन्थकारों के रचनाओं को इसमें उचित स्थान नहीं मिल पाया है ।

3. विषयपरक वाङ्मयसूचियाँ (Subject Bibliographies)

विषय परक वाङ्मयसूची में किसी विषय से सम्बन्धित ग्रन्थों, लेखों एवं अन्य सूचना सामग्रियों के सूची को व्यवस्थित क्रम में दिया रहता है । विषय परक वाङ्मयसूचियों की सहायता से पाठकों को किसी विषय के सम्बन्ध में आवश्यक वाङ्मयात्मक सूचनाएँ आसानी से प्राप्त हो जाती हैं।

9. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित विषयपरक वाङ्मयसूचियों के प्रमुख उदाहरण–

1. Bibliographie Vedique / Louis Renou. - Paris, 1931.

प्रस्तुत वाङ्मयसूची वैदिक साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय वाङ्मयसूची है तथा इसे फ्रांस के लुइस रेनू ने फ्रेंच भाषा में संकलित किया है । इस विषयपरक वाङ्मयसूची में वैदिक साहित्य से सम्बन्धित प्रकाशित ग्रन्थों को तालिकाबद्ध किया गया है ।

2.1 Vedic Bibliography / R.N. Dandekar.-Poona : Bhandarkar Oriental Research Institute, 1986. (Four Vols).

प्रस्तुत कृति विषय वाङ्मयसूची का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है तथा पूर्व में भारतीय विद्या के एक ख्यातिलब्ध फ्रेंच विद्वान लुई रेनु द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्य का यह एक नवीन उपलब्धि है । इस कृति में लेखक ने सन 1930 से 1945 के मध्य वेद एवं वेद से सम्बन्धित विभिन्न शाखाओं के प्रकाशित ग्रन्थ एवं ग्रन्थेत्तर सामग्रियों के प्रविष्टियों को व्यवस्थित करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है। यह विषय वाङ्मयसूची भण्डारकर ओरियन्टल शोध संस्थान पूना के सौजन्य से कुल चार खण्डों में प्रकाशित किया गया है तथा इसके प्रत्येक खण्ड में वेद एवं वेद से सम्बन्धित विभिन्न शाखाओं के प्रकाशित सामग्रियों को तालिका बद्ध किया गया है।

इसके प्रथम खण्ड में कुल पैंतीस सौ प्रविष्टियों को व्यवस्थित किया गया है जिनको कुल एक्कीस अध्यायों एवं 168 उपभागों में विभाजित किया गया है । इस प्रकार इस प्रथम खण्ड में वेदशास्त्र के जिन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है वे इस प्रकार निम्नांकित हैं–

1. ऋग्वेद;	6. ब्राह्मन्स;	11. वैदिक काल;
2. अथर्ववेद;	7. उपनिषद्,	12. शब्द कोश;
3. शामवेद;	8. वेदाङ्ग;	13. वैदिक शब्दों का अध्ययन;
4. यजुर्वेद;	9. वैदिक साहित्य;	14. भाषा वैज्ञानिक अध्ययन;
5. धर्मशास्त्र;	10. दर्शनशास्त्र;	15. वैदिक अवधारणाओं का अध्ययन
16. सामाजिक अध्ययन;		17. इतिहास
18. वाङ्मयसूची	19. जीवनी	20. संकलन, इत्यादि ।

इस खण्ड के अन्त में पृष्ठ संख्या (369) पर लेखक अनुक्रमणिका सूची तथा पृष्ठ संख्या (387) पर शब्द अनुक्रमणिका सूची संलग्न है ।

2.2. Vedic Bibliography / R.N. Dandekar.- Poona : Bhandarkar Oriental Research Institute, 1978. (Volume- 2nd)

परन्तु रचना वैदिक वाङ्मय सूची का दूसरा खण्ड है तथा इसमें भी वैदिक साहित्य से सम्बन्धित कुल एक्कीस विषयों में प्रकाशित ग्रन्थ एवं ग्रन्थेत्तर पाठ्य सामग्रियों की विस्तृत

प्रविष्टियों को विषयानुसार सूची बद्ध किया गया है । इन प्रविष्टियों को संकलित करने में कुल (760) पृष्ठों का उपयोग हुआ है । भण्डारकर ओरियन्टल शोध संस्थान, पूना द्वारा सन् 1978 में प्रकाशित किया गया है तथा इसके अन्त में पृष्ठ संख्या 721 से 746 तक लेखक अनुक्रमणिका सूची तथा पृष्ठ संख्या 747 से 760 तक शब्द अनुक्रमणिका सूची वर्णित है ।

2.3. Vedic Bibliography / R.N. Dandekar. Poona : Bhandarkar Oriental Research Institute, 1973. (Vol. - 3rd).

यह खण्ड वैदिक वाङ्मयसूची का तृतीय खण्ड है तथा इसमें वैदिक साहित्य से सम्बन्धित प्रकाशित ग्रन्थ एवं ग्रन्थेत्तर पाठ्य सामग्रियों के प्रविष्टियों को तालिकाबद्ध करने में (1082) पृष्ठों का उपयोग हुआ है तथा खण्ड के प्रारम्भ में प्राथमिक सूचनाओं को कुल चौबीस पृष्ठों में अलग से प्रस्तुत किया गया है । इस खण्ड को सन् 1973 में प्रकाशित किया गया है।

2.4. Vedic Bibliograhpyy . R.N. Dandekar.-Poona : Bhandarkar Oriental Research Institue, 1985. (Volume- 4rth).

यह खण्ड इस विषय वाङ्मयसूची का अन्तिम और चौथा खण्ड है तथा इसमें वेद एवं वेद से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्यों को संकलित कर कुल (1532) पृष्ठों में प्रविष्टियों को प्रस्तुत किया गया है । इस खण्ड के अन्त में पृष्ठ संख्या 1333 से 1396 तक लेखक अनुक्रमणिका सूची तथा 1397 से 1432 तक शब्द अनुक्रमणिका सूची संलग्न है । इस खण्ड को सन् 1985 में भण्डारकर ओरियन्टल शोध संस्थान, पूना से प्रकाशित किया गया है ।

इस प्रकार यह कृति प्राच्य भारतीय विद्या के विषय वाङ्मयसूची का एक सर्वोत्तम उदाहरण है ।

3. Bibliography of Indology : Kolkata : National Library, 1952.

यह राष्ट्रीय ग्रन्थालय, कोलकता की एक परियोजना के अन्तर्गत इसे 1952 में शुरू किया गया था जिसके अन्तर्गत 56 खण्डों में एक वृहत् पूर्व कापी वाङ्मय सूची को तालिकाबद्ध एवं मुद्रित करना था । विशेष रूप से भारतीय संस्कृति के एक पक्ष के प्रकाशनों के इसके प्रत्येक खण्ड में शामिल करने की योजना थी । साथ ही साथ, भारतीय संस्कृति के अन्य पक्षों को भी इसमें प्रकाशित करने की योजना थी, जो इस प्रकार निम्नवत हैं–

1. सम्बन्धित विषय की संक्षिप्त रूप रेखा तथा उसके अध्ययन के विकास का विवरण प्रदान करना ।

2. विषय से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थों की सूची में सम्मिलित करना तथा उक्त ग्रन्थ किस ग्रन्थालय में उपलब्ध है उसका विवरण देना ।

3. विषय के व्यावहारिक अध्ययन हेतु-सभी सहायक सामग्रियों का जानकारी देना।

4. प्रत्येक सूचीबद्ध पुस्तक का वाङ्मयात्मक प्रविष्टि प्रस्तुत करना तथा ।

5. सन्दर्भ अनुक्रमणिका प्रस्तुत करना ।

अब तक राष्ट्रीय ग्रन्थालय, कोलकता द्वारा प्रकाशित वाङ्मयसूचियों का विवरण निम्नवत है–

Indian Anthropology–1960
Indian Botany-1961

Part I : 1964.

उपर्युक्त वाङ्मयसूचियों में ग्रन्थ एवं ग्रन्थेतर पाठ्य सामग्री के शीर्षकों को भी सम्मिलित किया गया है । संस्कृत भाषा एवं साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास, मध्यकालीन भारतीय इतिहास तथा आधुनिक भारतीय इतिहास से सम्बन्धित कृतियों के संकलन का कार्य गतिशील है । आई.सी.सी. आर., नई दिल्ली द्वारा अब तक इस वाङ्मयसूची के दो खण्ड

1. Arts - 1966

2. History and Culture - 1970

मुद्रित हो चुके हैं तथा शेष खण्डों का प्रकाशन भी प्रतिक्षारत हैं ।

4.1 Annual Bibliography of Indology / Maya Malviya; Compiler.- Allahabad : Ganganath Jha Kenalriya Sanskrit Vidyapeeth, 1974. (2 Vols.)

प्रस्तुत कृति के अन्तर्गत भारतीय विद्या से सम्बन्धित प्रकाशित ग्रन्थ एवं ग्रन्थेतर पाठ्य सामग्रियों को संगठित एवं एकत्रित करके डा. गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद द्वारा भारतीय विद्या के वार्षिक वाङ्मयसूची के नाम से सन् 1969 से 1974 के मध्य दो खण्डों में प्रकाशित किया गया है । इस वाङ्मयसूची की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें भारतीय विद्या से सम्बन्धित प्रकाशित महत्वपूर्ण शोध लेखों, ग्रन्थों एवं सम्मेलन कार्यवाहियों को सम्मिलित किया गया है । इसमें प्रविष्टियों के संकलन का कार्य बहुत सावधानी पूर्वक सम्पन्न किया गया है।

लुई रेनु तथा रा. ना. दाण्डेकर द्वारा प्रकाशित वैदिक वाङ्मसूची वैदिक साहित्य के लिए उत्तम वाङ्मयसूची है । परन्तु इसी प्रकार कुरू क्षेत्र-विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित "प्राच्य ज्योति" इस क्षेत्र के शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण सूचना स्तोत्र होते हुए प्राच्य विद्या के सभी क्षेत्रों को इसमें उचित प्रनिधित्व नहीं मिल पाया तथा कुछ वर्षों के बाद इसके प्रकाशन को बन्द कर दिया गया । फिर भी उचित समय एवं आवश्यक संसाधनों की कमी के बाद भी भारतीय विद्या के वार्षिक वाङ्मयसूची (Annual Bibliography of Indology) के प्रथम खण्ड सन् 1969 में प्रकाशित हुआ।

इस प्रकार भारतीय विद्या के इस वार्षिक वाङ्मयसूची के प्रथम खण्ड में भारत अथवा विश्व के किसी भी देश में प्राच्य भारतीय विद्या से सम्बन्धित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध लेखों, समीक्षाएँ, टिप्पणियों एवं ग्रन्थों से सम्बन्धित सूचनों को इसमें तालिका बद्ध किया गया है । इंस कार्य हेतु कुल 253 पत्रिकाओं को उपयोग किया गया है।

वाङ्मयसूची के इस खण्ड में प्रविष्टियों को चौबीस भागों में विषयानुसार वर्गीकृत करके प्रस्तुत किया गया है जबकि लेखकों अथवा ग्रन्थकारों के लिए वर्णानुक्रम में अलग से अनुक्रमणिका सूची संलग्न किया गया है । इस वाङ्मयसूची के संकलन में कुल (268) पृष्ठों का उपयोग हुआ है । इस खण्ड के अन्त में पृष्ठ संख्या 233 से 262 तक लेखक अनुक्रमणिका सूची व्यवस्थित है, जबकि पृष्ठ संख्या 263 से 268 तक शब्द अनुक्रमणिका सूची का उल्लेख किया गया है।

4.2. **Annual Bibliography of Indology / Maya Malviya; Complier.-Allahabad; Ganganath Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeeth, 1977. (Volume-2).**

भारतीय विद्या के वार्षिक वाङ्मयसूची के इस दूसरे खण्ड में प्राच्य विद्या से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य के उन सामग्रियों को सम्मिलित किया गया है, जिनको प्रथम-खण्ड में शामिल करना सम्भव नहीं था । इसमें प्रविष्टियों को ग्यारह भागों में वर्गीकृत करके प्रस्तुत किया गया है । इस खण्ड का कुल पृष्ठ संख्या (872) है । इसमें भारतीय विद्या के जिन विषयों के ग्रन्थों एवं ग्रन्थेत्तर पाठ्य सामग्रियों को तालिकाबद्ध किया गया है, उनका विवरण इस प्रकार निम्नवत है–पुरातत्व इतिहास एवं भूगोल; कला; बौद्धधर्म; जैनधर्म; भाषाएँ; साहित्य; दर्शनशास्त्र; धर्म एवं पौराणिक कथायें; विज्ञान; सामाजिक विज्ञान एवं स्मृति ग्रन्थों, शब्दकोशों, विवरणपंज्जिकाओं एवं वाङ्मयसूचियों की सूचियाँ ।

Annual Bibliography of Indlogy के इस दूसरे खण्ड को डा. गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पत्रिका के पूरक खण्ड के रूप में सन् 1976 में प्रकाशित किया गया है तथा इसी खण्ड को "The Journal of the Ganganath Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeeth, Allahabad" नामकरण किया गया है । खण्ड के अन्त में पृष्ठ संख्या 769-786 तक स्मृति ग्रन्थों, शब्दकोशों, पंज्जिकाओं एवं वाङ्मयसूचियों की विस्तृत सूची, पृष्ठ संख्या 787 से 867 लेखक अनुक्रमणिका तक सामान्य अनुक्रमणिका सूची प्रस्तुत है ।

इस प्रकार यह कृति संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के अध्ययन एवं शोध में रूचि रखने वाले अध्येताओं के लिए एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत है ।

5. **बृहद हिन्दी ग्रन्थ सूची / यशपाल महाजन; सम्पादक–दिल्ली : भारतीय ग्रन्थनिकेतन, 1965 ।**

भारतवर्ष में हिन्दी में प्रकाशित पाँच सौतीस प्रकाशकों की चौबीस हजार कृतियों की यह एक विस्तृत वाङ्मयसूची है तथा यह हिन्दी प्रकाशनों की एक महत्वपूर्ण

वाङ्मयसूची है। इसके अतिरिक्त हिन्दी कोष, हिन्दी साहित्य आलोचना ग्रन्थसूची, हिन्दी उपन्यासकोष तथा हिन्दी आलोचना कोष जैसे हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण वाङ्मयसूचियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

6. **हिन्दी विब्लियोग्राफी या हिन्दी साहित्य सारिणी । पीताम्बर नरायण शर्मा; सम्पादक. होशियारपुर : विश्वेश्वरानन्द इन्स्टीट्यूट, 1971-74, (दो भाग) ।**

प्रस्तुत वाङ्मयसूची में 1964 तक के हिन्दी प्रकाशनों को तालिकाबद्ध किया गया है । परन्तु वर्तमान परिवेश में यह सूची 36 वर्ष पुरानी हो चुकी है । फिर भी यह एक महत्वपूर्ण कृति है ।

7. **भारतीय साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोश / गंगा राम गर्ग — दिल्ली : मित्तल प्रकाशन, 1986 ।**

प्रस्तुत कृति भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण वाङ्मय सूची है तथा इसको कुल सात खण्डों में संकलित किया गया है । इसके प्रथम खण्ड के दो भागों में संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश के ग्रन्थकारों एवं उनके ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है । साथ ही साथ उन विदेशी ग्रन्थकारों का भी उल्लेख किया गया है जिनके द्वारा भारतीय साहित्य के विकास में योगदान किया गया है ।

इसी प्रकार इसके खण्ड दो एवं तीन में तमिल एवं कन्नड़ भाषा के ग्रन्थकारों एवं ग्रन्थों से सम्बन्धित विवरण प्रस्तुत किया गया है । जबकि खण्ड चार, पाँच, छः सात में तेलगू, मलयालम, असमियाँ, गुजराती के ग्रन्थकारों एवं उनके ग्रन्थों से सम्बन्धित सूचनों का उल्लेख प्रस्तुत है ।

8. **Bibliography of Religion /Jamshedji E. Saklatwalla. Bombay : Allen Press, 1922. xviii, 142 p.**

प्रस्तुत कृति धर्मशास्त्र विषय से सम्बन्धित विषय वाङ्मयसूची का एक प्रमुख उदाहरण है तथा इसमें सन् 1922 तक के धर्मशास्त्र के प्रकाशित ग्रन्थों को तालिकाबद्ध किया गया है ।

9. **Bibliographical Survey of Adaita Vedanta and Literature / R. Thangaswami.–Madras : University of Madras, 1980. (Sanskrit Series No. 36)**

अद्वैत वेदान्त एवं प्राच्य साहित्य से सम्बन्धित यह कृति विषय वाङ्मयसूची का एक प्रमुख उदाहरण है तथा इसको मद्रास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा संस्कृत ग्रन्थमाला क्रम 36 के रूप में सन् 1980 में प्रकाशित किया गया है।

10. **The Encyclopaedia of Indian Philosophies-Bibliography of Indian Philosophies/Karl H. Potter.-Delhi : Motilal Banarasidas, 1970. (Vol. 1).**

प्रस्तुत कृति मुख्य रूप से तो दर्शनशास्त्र का एक विश्वकोश है, परन्तु इसके प्रथम खण्ड में भारतीय दर्शनशास्त्र के विभिन्न शाखाओं के सम्बन्ध में विस्तृत वाङ्मयात्मक सूचनाएँ प्रस्तुत-किये गये हैं।

11. **Bibliography of Indian Books. - Varanasi : Indian Bibliographic Centre, 1969. (Annual).**

इस वाङ्मय सूची में भारतीय विद्या से सम्बन्धित अंग्रेजी में प्रकाशित ग्रन्थों को ही सूचीकृत करके तालिकाबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है । सरकारी प्रकाशनों, बच्चों के साहित्य तथा विद्यालयों के पाठ्य ग्रन्थों को इसमें सम्मिलित करने पर बल नहीं दिया गया है। लेकिन कुछ सीमा तक सरकारी प्रलेखों के अन्तर्गत भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को इसमें तालिका बद्ध किया गया है ।

12. **Indological Studies and South Asia : Bibliography.-Kolkata : National Library, 1988.**

यह वाङ्मय सूची राष्ट्रीय पुस्तकाल, कोलकाता द्वारा सन् 1988 में प्रकाशित हुआ है तथा इसमें दक्षिण एशिया तथा भारतीय विद्या से सम्बन्धित राष्ट्रीय पुस्तकालय में संगृहीत ग्रन्थों पर आधारित निर्मित प्रविष्टियों को तालिकाबद्ध रूप में प्रस्तुत की गयी है ।

13. **Guide to Indian Periodical Literature.-Gurgaon, 1964.**

यह कृति हरियाणा के गुड़गाँव से भारतीय पत्रिकाओं के त्रैमासिक अनुक्रमणिकाकरण के रूप में प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ है । इसमें विशेष रूप से सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी से सम्बन्धित सामयिकियो को तालिकाबद्ध किया गया है तथा इसी के आधार पर इसका वार्षिक संचयी अंक को भी प्रकाशित किया जाता है ।

14. **Indian Periodicals in Print/H.N. D. Gandhi; Compiler.–Delhi : Vidya Mandal, 1973. (Two Volumes).**

यह ग्रन्थ भारतीय सामयिकों की विस्तृत वाङ्मय सूची है तथा भारत में प्रकाशित किये जाने वाली सभी भाषाओं एवं विषयों की कुल लगभग 16500 सामयिक पत्रिकाओं को इसके प्रथम खण्ड में सूचीबद्ध किया गया है । इसी प्रकार इसके दूसरे खण्ड में प्रकाशनों के स्थान तथा पत्र पत्रिकाओं के विषयानुसार अनुक्रमणिका सूची को व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत किया गया है ।

15. **A Bibliography of Sanskrit Works on Astronomy and Mathematics/ S.N. Sen et al.-New Delhi : N.C. H.S., 1966. (pt-1.).**

प्रस्तुत कृति नक्षत्र विज्ञान एवं गणित विषय से सम्बन्धित संस्कृत में प्रकाशित ग्रन्थों

की एक विषय वाङ्मयसूची है तथा इसे सन् 1966 में नई दिल्ली से प्रकाशित किया गया है । इस वाङ्मयसूची में सन् 1966 तक या इससे पूर्व प्रकाशित ग्रन्थों के प्रविष्टियों को व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत किया गया है ।

16. **Bibliography of Alankara Sastra/Radha Vallabh Tripathi.-Delhi : Pratibha Prakashan, 2002. 64p.**

प्रस्तुत कृति संस्कृत साहित्य के विषय वाङ्मयसूची का एक प्रमुख उदाहरण है तथा इसे सन् 2000 में दिल्ली के प्रतिभा प्रकाशन से प्रकाशित किया गया है । इसमें प्रविष्टियों को प्रस्तुत करने में कुल (64) पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

यह कृति संस्कृत साहित्य में अध्ययन, अध्यापन एवं शोध में रूचि रखने वाले अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ स्रोत हैं ।

17. **Bibliography of Sanskrit Drama / Radha Vallabh Tripathi and Nil Kantha Das.-Delhi : Pratibha Prakashan, 1999, 72 p.**

यह कृति संस्कृत नाटकों से सम्बन्धित विषय वाङ्मयसूची का एक उदाहरण है तथा इसे सन् 1999 में दिल्ली के प्रतिभा प्रकाशन से प्रकाशित किया गया है । इसमें प्रविष्टियों के प्रस्तुतीकरण में कुल (72) पृष्ठों का उपयोग हुआ है । इसमें संस्कृत नाटकों से सम्बन्धित 1999 से पूर्व प्रकाशित ग्रन्थों, शोधलेखों तथा सम्मेलनकार्यवाहियों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है ।

18. **A Bibliography of Sanskrit Language and Literature / Satya Prakash; Editor.-Australia : National Library of Australia, 1927, 296 p.**

प्रस्तुत कृति संस्कृत भाषा एवं साहित्य का एक अन्तर्राष्ट्रीय विषय वाङ्मयसूची है तथा इसे सन् 1927 में अस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित किया गया है। सन् 1927 या उससे पूर्व आस्ट्रेलिया में प्रकाशित संस्कृत भाषा एवं साहित्य के ग्रन्थों से सम्बन्धित प्रविष्टियों को इस वाङ्मयसूची में व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत किया गया है । इसमें कुल (296) पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

19. **Bibliography of Nayaya Philosophy.-Kolkata : National Library, 1993.**

यह कृति न्यायदर्शन शास्त्र से सम्बन्धित विषय वाङ्मयसूची का एक प्रमुख उदाहरण है । इसमें राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकता के संस्कृत, पालि तथा प्राकृत विभाग में संगृहीत न्याय दर्शनशास्त्र के सभी ग्रन्थों का तालिकाबद्ध सूची संलग्न है । इसे राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता द्वारा सन 1993 में प्रकाशित किया गया है।

यह भारतीय दर्शनशास्त्र विशेषकर न्याय दर्शन के अध्येताओं के लिए एक उत्तम वाङ्मयसूची है।

20. **Bibliography of books, papers and other contributions of Dr. V. Raghavan / P.B.- Sen; Compiler.-1968, 370 p.**

21. **Malviyana : Bibliography of Pandit Madan Mohan Malviya / P.N. Kaula; Compiler.-1962, 550 p.**

22. **A Bibliography of Bibliographies/J.G. Barrows.-Michigan : Ann Arbor, 1955, 489 p.**

यह कृति वाङ्मय सूचियों की वाङ्मय सूची है तथा इसमें 15वीं सदी से लेकर 20वीं सदी तक धर्मशास्त्र के क्षेत्र की कृतियों की वाङ्मयसूचियों को सूचीबद्ध किया गया है। अनेक भाषाओं तथा इसाई धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों के वाङ्मय सूचियों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है । इसमें प्रविष्टियों का व्यवस्थापन विषय शीर्षकों तथा प्रकाशनों की तिथि के अनुसार अनुवर्णिक क्रम में प्रस्तुत किया गया है ।

23. **Introduction to the Civilization of India : South Asia : An Introductory Bibliography, 1962.**

यह भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से सम्बन्धित एक अन्तर्राष्ट्रीय विषय वाङ्मयसूची है।

24. **Bibliographies of Theses and Dissertations / Association of Indian Universityes, 1857-1986.**

25. **Bibliographies of dictionaries and encyclopaedias in Indian Languages.-Kolkata : National Library, 1964.**

26. **Bibliographie Boudhique I-xxxi. Paris.**

यह कृति बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय विषय वाङ्मयसूची का एक प्रमुख उदाहरण है तथा इसे फ्रांस की राजधानी पेरिश से प्रकाशित किया गया है । इसमें फ्रेंच भाषा में उपलब्ध बौद्ध धर्म से सम्बन्धित प्रकाशित ग्रन्थों के प्रविष्टियों को प्रस्तुत किया गया है ।

27. **Bibliography of Buddhism / Shinsho Hanayama; Editor.- Tokyo : The Hokuseiodo Press, 1961.**

प्रस्तुत कृति बौद्धधर्म से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय विषय वाङ्मयसूची का प्रमुख उदाहरण है । इस वाङ्मय सूची की मुख्य विशेषता यह है कि इसे जापान के टोकियो शहर में स्थित होकुसेडो प्रेस से सन 1961 में प्रकाशित किया गया है । इसके सम्पादक शिन्शो हानयामा हैं।

इस कृति में सन् 1961 या उससे पूर्व में प्रकाशित बौद्ध धर्म से सम्बन्धित ग्रन्थों या शोध लेखों को जो अंग्रेजी भाषा में मुद्रित थे उनको संकलित करके इस अन्तर्राष्ट्रीय विषय वाङ्मयसूची को निर्मित किया गया है । इसमें बौद्धधर्म से सम्बन्धित संकलित ग्रन्थों को

विषयानुसार व्यवस्थित करके प्रविष्टियों को प्रस्तुत किया गया है । बौद्ध धर्म के अध्येताओं के लिए यह एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत है।

10. हस्तलिखित ग्रन्थों की वाङ्मयसूची एवं विवरण पंज्जिकाएँ (Bibliographies and Descriptive Catalogues of Sanskrit and Indological Manuscripts)-

भारत वर्ष में प्राच्य भाषा एवं साहित्य की अनेक भाषाओं में पाण्डुलिपियों का विशाल भण्डार पड़ा है तथा संस्कृत, पालि एवं प्राकृत भाषा में इनकी संख्या बहुत अधिक है। प्राच्य ज्ञान की प्राप्ति की दृष्टि से इनका बहुत अधिक महत्व है, परन्तु ये एक स्थान पर उपलब्ध न होकर अलग-अलग पूरे विश्व में बिखरे पड़े हैं । विश्व के बहुसंख्य ग्रन्थालयों में इन पाण्डुलिपियों से सम्बन्धित विस्तृत एवं संक्षिप्त वाङ्मयसूची एवं विवरण पंज्जिका निर्मित की गयी हैं, लेकिन एक संगठित संघ सूची का अब भी अभाव महसुश किया जाता है। कुछ हद तक इस क्षेत्र में अभाव को दूर करने के लिए "कैटेलॉगस कैटेलोगोरम" नामक एक विस्तृत वाङ्मयसूची को 1891 से 1903 के मध्य तीन खण्डों में प्रकाशित किया गया है। "कैटेलोगस कैटेलागोरम्" 19वीं शताब्दी के अन्ततक भारत में जिनकी विविध पाण्डुलिपियों की सूचियाँ प्रकाशित हुई उनमें उलिल्खित सभी ग्रन्थों की सर्वकष बृहतक सूची का सम्पादन करने का अपूर्व कार्य डा. थियोडोर आफ्रेट ने प्रारम्भ किया । सन 1891, 1996 और 1903 में इसके प्रथम तीन खण्ड, कैटेलोगस कैटेलागोरम के नाम सेलिपिझिंग (जर्मनी) में प्रकाशित हुए ।

इस कृति की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें भारत तथा यूरोप के ग्रन्थालयों मे उपलब्ध संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध किया गया है ।

न्यू कैटेलोगस कैटेलागोरम (New Catalogus Catalogorum)-

सन् 1935 से डा. थियोडोर आफ्रेट की सूची की सुधारित और संबंधित आवृति सम्पादित करने का कार्य डा. कुनहन राजा और डा.वी. राघवन के नेतृत्व में मद्रास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा प्रारम्भ हुआ तथा इसको न्यू कैटेलोगस कैटेलागोरम का नाम दिया गया । इस प्रकार इसके प्रथम-खण्ड का प्रकाशन-मद्रास विश्वविद्यालय के संस्कृत सीरिज द्वारा सम्पन्न हुआ । इस प्रथम खण्ड के अन्तर्गत केवल अकारादि नामक ग्रन्थों की प्रविष्टियों को व्यवस्थित किया गया है । इस परियोजना को आगे बढ़ाते हुए अब तक कुल 19 खण्ड प्रकाशित किये जा चुके हैं ।

इसी प्रकार पोलमैन द्वारा संकलित Census of Indian Manuscripts in the United Satates and Canada, 1938 भी एक महत्वपूर्ण वाङ्मयसूची है तथा इसे कुल (542) पृष्ठों में प्रकाशित किया गया है।

Catalogus Codiceem Sanskritcorum 1864 में ऑक्सफोर्ड से प्रकाशित Catalogi Codicum Manuscriptorium का आठवाँ भाग भी संस्कृत पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की वाङ्मयसूची है ।

भारत तथा विश्व के अनेक देशों में संस्कृत तथा प्राच्य विद्या से सम्बन्धित शिक्षा संस्थानों, विश्वविद्यालयों, शोध-संस्थानों, ग्रन्थालयों एवं सूचना केन्द्रों द्वारा पाण्डुलिपियों की पृथक-पृथक विवरण पंजिकायें तैयार करायी गयी हैं । उदाहरणार्थ–

1. सरकारी म्यूजीयम, अलवर, राजस्थान।
2. गॉवरनमेन्ट ओरियन्टल मनुस्क्रीप्ट लाइब्रेरी, मद्रास ।
3. गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद ।
4. राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकता ।
5. डा. गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद ।
6. डा. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ।

यद्यपि हस्तलिखित ग्रन्थों को सूचीकृत करने का कार्य संस्कृत जगत के इतिहास में अति प्राचीन है । उन दिनों में प्राचीन राजा, महाराजाओं और मठाधिपतियों ने अपनी-अपनी पद्धति के अनुसार अपने-अपने राज्यों में हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का संचयन करवाये। मुस्लिम कालीन शासनकाल में अनेक स्थानों का विध्वंस तथा राज्य-कर्ताओं की असहिष्णुता एवं असंस्कृता के कारण हस्तलिखित ग्रन्थों के अनेक संग्रह नष्ट कर दिये गये थे । फिर भी जो संग्रह सुरक्षित बचे रहे उन सभी को सूचीबद्ध करना एक राष्ट्रीय महत्व का कार्य माना गया । संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित हस्तलिखित ग्रन्थों के संकलन, सुरक्षा एवं उपयोग हेतु प्राच्य भारतीय विद्वानों के साथ ही साथ पश्चिमी जगत के प्राच्य विद्वानों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान किये हैं। इनमें से एस. जैकोबी, व्ही. फासबोल, जॉन सी. नेसफील्ड, फ्रेडिक लेबीज जैसे प्रमुख पाश्चात्य विद्वान रहे हैं तथा इन पाश्चात्य विद्वानों द्वारा अपनायी गयी पद्धति से इस समस्त गतिविधियों को आगे बढ़ाने वाले भारतीय विद्वानों में म. म. गौरी शंकर हीरा चन्द ओझा, पं. देवीप्रसाद, डा. श्याम सुन्दर दास, डा. पिताम्बर दत्त, डा. प्रबोध चन्द्र, मुनि जिनविजय, राम शास्त्री बागची, आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री, डा. धर्मेन्द्र, पं. राधाकृष्ण, एच. आर. रंगास्वामी अय्यंगार, के. भुजबली शास्त्री, डा. रा. ना., दांडेकर, इत्यादि इन अग्रणी विद्वानों के योगदानों के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है ।

10.1 Catalogus Catalogorum / Theodore Aufrecht.-Germany : Leipzig : Academies of Gottingen, Lipzig, Munich and Vienna, 1903. (03 Volumes).

यह कृति संस्कृत के लेखकों एवं उनके कृतियों के अकारादि पंज्जिका के रूप में विश्व प्रसिद्ध रचना है। मुख्य रूप से यह सन् 1902 तक भारतीय हस्तलिखित ग्रन्थों से

सम्बन्धित प्रकाशित सूचियों एवं विवरण पंज्जिकाओं पर आधारित है तथा यह पूरे विश्व में संस्कृत साहित्य में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ स्रोत है ।

इस कृति को प्रस्तुत करने का पूरा-पूरा श्रेय डा. थियोडोर आफ्रेट को जाता है जिन्होंने अपने लगन एवं कड़ी मेहनत से इस अद्वितीय रचना को तैयार किया है। यह रचना एक प्रकार पूरे विश्व में संकलित एवं सुरक्षित भारतीय पाण्डुलिपियों से सम्बन्धित एक विस्तृत वाङ्मयसूची है, जिसे 1891 से 1903 के मध्य तीन खण्डों में प्रकाशित किया गया है। इस रचना की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें भारत तथा यूरोप के ग्रन्थालयों में संगृहीत संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के हस्तलिखित ग्रन्थों को तालिकाबद्ध किया गया है।

कैटोलोगस कैटेलागोरम (प्रथम खण्ड)- इस अन्तर्राष्ट्रीय वाङ्मयसूची के प्रथम खण्ड के संकलन में लगभग कुल तीस वर्षों का समय लगा । इस प्रथम खण्ड में विश्व के कुल (55) ग्रन्थालयों के हस्तलिखित ग्रन्थों के विवरण पंज्जिकाओं को सम्मिलित किया गया है जिनका विवरण इस प्रकार निम्नवत है–

1. Jones
2. Mack
3. Copenh
4. Peter
5. I.O.
6. W
7. Oxy
8. Camber
9. Paris
10. Hall
11. L
12. Khn
13. K
13. K
14. Kh
15. B
16. Report
17. Ben
18. Lgr
19. Bik
20. Tub
21. Haug
22. Katn
23. Pheh
24. Radh
25. Nw
26. Oudh
27. Np
28. Brl
29. Burnel
30. BL
31. BA
32. Gn
33. Mysore
34. Lahor
35. Bh
36. P
37. Bhk
38. Bhr
39. Poona
40. Kaein
41. Lahor
42. Bonn
43. Jac
44. H
45. Vienna.
46. Taylor
47. Oppert
48. Rice
49. Peters
50. W
51. BP
52. Buhler
53. SB
54. D
55. Suchipattra.

इन सभी विवरणपंज्जिकाओं में सूचीकृत हस्तलिखित ग्रन्थों के शीर्षकों को इस खण्ड में देवनागरी वर्णमाला के क्रम में व्यवस्थित कर पृष्ठ संख्या एक से सात सौ उनहत्तर तक प्रस्तुत किया गया है । इसी प्रकार से इसमें संशोधन एवं विस्तार (Aldidons and Corrections) को पृष्ठ संख्या 770 से 795 पर संलग्न किया गया है।

कैटेलोगस कैटेलागोरम (द्वितीय खण्ड)-

वाङ्मयसूची के इस खण्ड में भारत के विभिन्न ग्रन्थालयों में संगृहीत संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थों तथा उनके ग्रन्थकारों से सम्बन्धिथ सूचनाओं को महत्वपूर्ण प्रविष्टियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है । प्रत्येक प्रविष्टी में हस्तलिखित ग्रन्थ के शीर्षक के साथ ही उसके लेखक तथा उपलब्धि स्थान का संकेत अंकित है ।

इस खण्ड में कुल बीस ग्रन्थालयों के विवरण पंज्जिकाओं को सम्मिलित किया गया है, जो कि इस प्रकार निम्नवत है–

1. ASB	2. Bhau	3. Dāji	
4. BL	5. CS	6. Cuadd	
7. Devipr	8. FL	9. GB	
10. Gold Strucker	11. Govt. Or. Lib. Madras		
12. Hz	13. I O	14. L	15. Lund
16. Oudh XX	17. Peters	18. Rgb	
19. Stein	20. Ulwar	21. Weber.	

इन सभी संक्षिप्तिकरण के पूर्ण विवरण इस कृति के प्रथम भाग में दिये जा चुके हैं। इस खण्ड में भी संस्कृत पाण्डुलिपि ग्रन्थों के शीर्षकों को देवनागरी वर्णमाला के क्रम में पृष्ठ संख्या 1 से पृष्ठ संख्या 185 तक प्रस्तुत किया गया है । जबकि पृष्ठ संख्या (185) से (1237) तक परिशिष्टों का उल्लेख किया गया है । तत्पश्चात अगले दो पृष्ठों में संशोधन से सम्बन्धित-सूचना अंकित है ।

कैटेलोगस कैटेलागोरम् (तृतीय खण्ड)-

तृतीय खण्ड इस वाङ्मयसूची की अन्तिम खण्ड है तथा इस खण्ड में संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचनाओं को देवनागरी के वर्णानुक्रम में व्यवस्थित कर प्रस्तुत किया गया है। निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से इसे और आसानी से समझा जा सकता है–

1. Adyar Library	5. BC	
2. AK	6. Bd	
3. AS	7. Cr. Dr. P.	
4. Ashburner	8. Edinburgh University Library.	
9. HZ	10. IL	11. JL
12. LZ	13. Peters	14. Rep

15. Tb 16. F.W. Thomas

17. Tod 18. Whish.

इस कृति के तृतीय खण्ड में संस्कृत के हस्तलिखित ग्रन्थों के उन शीर्षकों को सूचीकृत किया गया है जिनको प्रथम या द्वितीय खण्ड में सम्मिलित करना सम्भव न हो सका। इसमें शीर्षकों से सम्बन्धित प्रविष्टियों को देवनागरी के वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करके पृष्ठ संख्या एक से लेकर एक सौ उनसठ तक प्रस्तुत किया गया है । जब कि पृष्ठ संख्या (160) से (161) तक संशोधन एवं विस्तार की सूचना वर्णित है । परन्तु इसमें अंकित संशोधन एवं विस्तार के अन्तर्गत इसके तीनों खण्डों में निहित महत्वपूर्ण तथ्यों को विशेष स्थान दिया गया है ।

इस प्रकार यह कृति भारतीय हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थों से सम्बन्धित विभिन्न सूचनाओं को उपलब्ध कराने में केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में एक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय वाङ्मयसूची के रूप में विख्यात है।

10.2. The new catalogus catalogorum : An Alfabetical Register of Sanskrit and Allied Works and Authors/V. Raghavan.-Madras : University of Madras, 1949. (Ninteen Volumes).

"न्यू कैटेलोगस कैटेलागोरम" पूर्व में डा. थियोडोर द्वारा प्रकाशित कैटेलोगस कैटेलागोरम की सुधारित और संवर्धित स्वरूप है । सन् 1935 से इसे सम्पादित करने का कार्य मद्रास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. कुनहन राजा एवं प्रो. वी. राधवन के नेतृत्व में प्रारम्भ हुआ तथा इसके प्रथम खण्ड को मद्रास विश्वविद्यालय के संस्कृत सीरिज के रूप में प्रकाशित किया गया । इस प्रथम खण्ड में केवल अकरादि नामक ग्रन्थों की प्रविष्टियों को व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत किया गया है । इस परियोजना के अन्तर्गत अब तक कुल उन्निस खण्डों को प्रकाशित किया जा चुका है ।

इस प्रकार इस वाङ्मय सूची के कुल तेरह खण्डों को सन् 1949 से लेकर सन् 1991 तक प्रकाशित किया जा चुका है जबकि शेष छ खण्डों सन् 1991 के पश्चात् प्रकाशित किया गया है। इसके प्रथम खण्ड में निर्मित प्रविष्टियों के अन्तर्गत 'अ' से प्रारम्भ होकर 'आ' से समाप्त होने वाले हस्तलिखित ग्रन्थों के शीर्षकों को सम्मिलित करके वर्णानुक्रम में उनको व्यवस्थित किया गया है।

प्रथम खण्ड से लेकर उन्निसवें खण्ड के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के व्यवस्थित क्रम को निम्न तालिका के माध्यम से असानी से समझा जा सकता है–

खण्ड	अक्षर क्रम	पृष्ठ सं.	वर्ष	सम्पादक
1.	अ-आ	380	1949	डा. वी. राघवन
2.	आ-उ	415	1966	,,

3.	उ-क	398	1967	,,
4.	का-कृ	374	1968	,,
5.	कृ-गा	359	1969	,,
6.	गा-च	412	1971	आ.के. कुन्जुन्नी राजा
7.	चा-ञ	389	1973	,,
8.	ट-द	371	1974	,,
9.	दा- न	419	1977	,,
10.	ना-न्वा	317	1978	,,
11.	प - प	220	1983	,,
12.	पा - प्र	308	1988	डा.एन. विजीनाथन
13.	प्र - बा	316	1991	,,

इसी प्रकार इसके शेष खण्डों में 'बा' से लेकर 'ज्ञ' अक्षर के हस्त लिखित ग्रन्थों के शीर्षकों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित कर सम्बन्धित सूचनाओं को प्रस्तुत किया गया है। इसके उपयोग कर्ताओं द्वारा इसके उपयोग के समय अधिक असुविधा न हो इसकेलिए इस वाङ्मय सूची का पूरक खण्ड भी प्रकाशित किया गया है । इस पूरक खण्ड को मद्रास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा सन 1984 में प्रकाशित किया गया है।

इस पूरक खण्ड के अन्तर्गत ABN से लेकर YELLAPPA के शब्दक्रम को वर्णनानुक्रम में सूचीकृत किया गया है । ABN से लेकर YELLAPPA के शब्दक्रम भारत तथा विश्व के विभिन्न ग्रन्थालयों में संगृहीत संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के हस्तलिखित ग्रन्थों के विवरण पंञ्जिकाओं का संक्षिप्त रूप हैं ।

इसके अतिरिक्त इसमें विषय अनुक्रमणिकासूची, प्रकाशन-विवरण, ग्रन्थमाला, प्रकाशन स्थानों, संस्थाओं तथा संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित पत्रिकाओं से सम्बन्धित विस्तृत सूची संलग्न है ।

अतः यह रचना निश्चित रूप से संस्कृत के अध्येताओं के लिए एक सर्वोत्तम सन्दर्भ स्रोत हैं ।

11. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थों के विवरणपंज्जिका का संक्षिप्त परिचय-

वर्तमान संस्कृत विश्वविद्यालय का सरस्वती भवन ग्रन्थालय संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के संग्रह के लिए केवल भारत में नहीं अपितु पूरे विश्व में

विख्यात है क्योंकि कुल संगृहीत पाण्डुलिपियों की संख्या 1,11,132 है जिनको सन् 1791 से लेकर 1950 तक देश के विभिन्न भागों से संस्कृत के कर्मठ तथा मूर्धन्य विद्वानों ने स्वयं जा जाकर सर्वेक्षण एवं संग्रह कराया है ।

इस प्रकार सरस्वती भवन ग्रन्थालय में कुल 1,11,132 हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ संगृहीत हैं। इन पाण्डुलिपियों के अधिकाधिक उपयोग हेतु एक बहुखण्डीय संस्कृत ग्रन्थानाम हस्तलिखित विवरण पंजिका को तेरह खण्ड तथा इकतीस भागों में प्रकाशित किये जा चुके हैं। इन विवरण पंज्जिकाओं में कुछ खण्डों के चार भाग, कुछ के तीन भाग, कुछ के दो भाग तथा खण्ड दस एवं तेरह एक खण्डीय विवरण पंज्जिका है । इन विवरण-पंज्जिकाओं में हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध करने के लिए कुल बारह विन्दुओं को आधार बनाया गया है जिनका विवरण इस प्रकार निम्नवत है–

क्रम संख्या;आख्या या शीर्षक; लेखक या टीकाकार; पत्रसंख्या विवरण; आकार; पंक्ति संख्या; अक्षर संख्या, पाण्डुलिपिकी स्थिति; आधार, लिपिकाल; पूर्ण । अपूर्ण विवरण एवं विशेष टिप्पणी ।

इसमें प्रत्येक हस्तलिखित ग्रन्थ को कुल बारह विन्दुओं में बाँटकर उनका परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। क्रम सं., आख्या या शीर्षक खाने में हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का शीर्षक केवल संस्कृत में ही वर्णित हैं, जबकि अन्य खानों में सूचनाएँ हिन्दी में भी अंकित है, लेकिन-अंतिम खाना "विशेष विवरण" के अन्तर्गथ उपलब्ध सूचना संस्कृत भाषा में ही उल्लिखित हैं । इन इकतीस भागों में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत समस्त हस्तलिखित ग्रन्थों को विषयानुसार व्यवस्थित करके निम्नवत क्रम में प्रकाशित किया गया है–

विषय	खण्ड/भाग
1. वेद, उपनिषद्	1/4
2. कर्म काण्ड	2/4
3. धर्मशास्त्र	3/2
4. पुराणेतिहास और गीता	4/2
5. स्तोत्र साहित्य	5/4
6. तन्त्र शास्त्र	6/3
7. सांख्ययोग, पूर्वमीमांसा तथा वेदान्त दर्शन	7/2
8. न्याय-वैशेषिक दर्शन	8/2
9. ज्योतिषशास्त्र	9/2
10. व्याकरण शास्त्र	10./1

11. साहित्यशास्त्र 11/2
12. जैन दर्शन, भक्ति सम्प्रदाय,
आयुर्वेद, कामशास्त्र आदि 12/2
13. वेद, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र,
तथा पुराणेतिहास 13/1

संस्कृत हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के विवरणपंज्जिकाओं का खण्ड एवं भाग नुसार विस्तृत विवेचन–

1. संस्कृत ग्रन्थानाम हस्तलिखित विवरणपंज्जिका (खण्ड-1 , भाग-1)

इस विवरणपंज्जिका में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत वेद एवं उपनिषद के कुल (4443) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है। इसमें कुल (406) पृष्ठों का उपयोग किया गया है तथा इस भाग का मूल्य रू. 230/-मात्र है ।

2. विवरणपंज्जिका (खण्ड-1 , भाग-2)

इस भाग के अन्तर्गत सरस्वती भवन में संगृहीत वेद एवं उपनिषद से सम्बन्धित कुल (1184) हस्तलिखित ग्रन्थों के सम्बन्ध में परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा इस प्रथम खण्ड के द्वितीय भाग के अन्त में प्रथम खण्ड के प्रथम भाग तथा द्वितीय भाग दोनों में तालिकाबद्ध पाण्डुलिपियों से सम्बन्धित आख्या अनुक्रमणिका को अकारादि क्रम में व्यवस्थित किया गया है।

3. विवरणपंज्जिका (खण्ड-1 , भाग-3)

प्रथम खण्ड के इस तीसरे भाग में सरस्वती भवन में संगृहीत वेदशास्त्र के कुल (3465) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण उपलब्ध कराया गया है तथा इसके संकलन में कुल 360 पृष्ठों का उपयोग किया गया है। यह सुपर रायल आकार में प्रकाशित किया गया है तथा इसका मूल्य रूप 56=00 मात्र है ।

4. विवरणपंज्जिका (खण्ड-1 , भाग-4)

यह भाग प्रथम खण्ड का अन्तिम भाग है तथा इसके अन्तर्गत सरस्वती भवन में संगृहीत वेदशास्त्र के उन पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है, जिनको पूर्व के तीन भागों में स्थान नहीं मिल पाया था । इन पाण्डुलिपियों की कुल संख्या (2792) है तथा इसका मूल्य रू. 54=00 है । इसमें कुल 356 पृष्ठों का उपयोग किया गया है।

प्रथमखण्ड के दूसरे भाग के समान ही इस भाग में तृतीय एवं चतुर्थ भाग के अन्तर्गत सूचीबद्ध पाण्डुलिपियों के शीर्षकों का आकारादि क्रम से अनुक्रमणिका सूची संलग्न है ।

5. विवरणपंज्जिका (खण्ड-2, भाग-1)

सरस्वती भवन में संगृहीत कर्मकाण्ड के पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण इस भाग में उलिल्खित है । इसमें संकलित पाण्डुलिपियों की संख्या (3365) है तथा इसके संकलन में कुल 306 पृष्ठों का उपयोग किया गया है । इसका मूल्य रू.-200/= निर्धारित है ।

6. विवरणपंज्जिका (खण्ड-2, भाग-2)

विवरण पंज्जिका के इस भाग में सरस्वती भवन में संगृहित कर्मकाण्ड विषय के कुल (1703) पाण्डुलिपियों के परिचयात्मक विवरणों का उल्लेख किया है तथा इसमें कुल 220 पृष्ठों का प्रयोग हुआ है तथा इस भाग का मूल्य रू. 150/- है । इसके अन्त में प्रथम तथा इसमें संकलित पाण्डुलिपियों का आख्यानुसार अकारादि क्रम में अनुक्रमणिका भी संलग्न है ।

7. विवरणपंज्जिका (खण्ड-2, भाग-3)

इस भाग में भी कर्मकाण्ड विषय के पाण्डुलिपियों का ही परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है । इसके संकलन में कुल 384 पृष्ठों को उपयोग किया गया है तथा इसका मूल्य रू. 60=00 है इसमें कुल पाण्डुलिपियों की संख्या (4259) है ।

8. विवरणपंज्जिका (खण्ड -2, भाग-4)

इस खण्ड दो के अन्तिम भाग चार में कर्मकाण्ड विषय से सम्बन्धित पाण्डुलियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें संकलित पाण्डुलिपियों की कुल संख्या (4494) है । इसके अन्त में भाग तीन एवं इसमें उल्लिखित पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के अनुसार अकारादि क्रम में अनुक्रमणिका सूची का भी उल्लेख किया गया है । इसमें कुल पृष्ठों की संख्या 400 है तथा इसका मूल्य रू. 70=00 है ।

9. विवरणपंज्जिका (खण्ड-3, भाग-1)

इस विवरण पंजिका के प्रथम भाग में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत धर्मशास्त्र विषय के पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण अंकित है तथा इसमें कुल-पाण्डुलपियों की संख्या-(2432) है। इसके संकलन में कुल 256 पृष्ठों का उपयोग किया गया है। इसका द्वितीय संस्करण अभी यन्त्रस्थ है ।

10. विवरणपंज्जिका (खण्ड-3, भाग-2)

सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत धर्मशास्त्र विषय से सम्बन्धित हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण अंकित है तथा खण्ड तीन एवं इसमें तालिकाबद्ध सभी हस्तलिखित ग्रन्थों को उनके शीर्षकों के आधार पर अकारादि क्रम में अनुक्रमणिका भी प्रस्तुत है । इसमें तालिकाबद्ध पाण्डुलिपियों की कुल संख्या (2659) है तथा इसमें कुल 320 पृष्ठों का उपयोग किया गया है । इस भाग का मूल्य रू. 60=00 है ।

11. **विवरणपंजिका (खण्ड-4, भाग-1)**

यह विवरण पंजिका चतुर्थ खण्ड का प्रथम भाग है तथा इसमें सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत पुराणेतिहास एवं गीता के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें तालिकाबद्ध पाण्डुलिपियों की संख्या (3105) है तथा इसके संकलन में कुल 326 पृष्ठों का उपयोग किया गया है। तथा इसका मूल्य मात्र रू. 6=25 है । इस भाग के अन्त में इसमें संकलित पाण्डुलिपियों का उनके शीर्षकों के अनुसार वर्णानुक्रम में अनुक्रमणिका सूची भी व्यवस्थित है ।

12. **विवरणपंज्जिका (खण्ड-4, भाग-2)**

इस भाग में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत पुराणेतिहास एवं गीता के शेष पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध करके उनका परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस भाग की कुल पृष्ठ संख्या 472 है तथा इसका मूल्य रू. 70=00 है ।

इस भाग में तालिकाबद्ध पुराणेतिहास एवं गीता से सम्बन्धित कुल पाण्डुलिपियों की संख्या (4078) है तथा इसके अंतिम भाग में संकलित पाण्डुलिपि को उनको शीर्षकों के आधार पर वर्णानुक्रम में अनुक्रमणिका भी संलग्न है । इसका जिल्दबन्दी बहुत मजबूत हैं तथा यह सुपर रायल आकार का है ।

13. **विवरणपंज्जिका (खण्ड - 5, भाग-1)**

यह विवरण पंजिका खण्ड पंचम का प्रथम भाग है तथा इसमें सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत स्तोत्रों के कुल (3552) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है । इस भाग के संकलन में कुल 320 पृष्ठों का उपयोग किया गया है तथा इसका मूल्य रू. 7=25 है ।

14. **विवरणपंज्जिका (खण्ड - 5, भाग-2)**

इस पंचम खण्ड के भाग दो में भी सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत स्तोत्र के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध किया गया है तथा प्रत्येक पाण्डुलिपि का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस भाग में स्तोत्र के कुल (2950) हस्तलिखित ग्रन्थों को संकलित किया गया है । इस विवरण पंज्जिका के अन्त में भाग एक एवं इसमें शामिल किये गये पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के अनुसार-वर्णानुक्रम में पृष्ठ संख्या 1 से 58 तक अनुक्रमणिका भी प्रस्तुत है । इसमें कुल 318 पृष्ठों का उपयोग हुआ है तथा इसका मूल्य भी मात्र रू 7= 25 है ।

15. **विवरणपंज्जिका (खण्ड - 5, भाग-3)**

पंचम खण्ड के इस तृतीय भाग में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत (4940) स्तोत्र के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचययात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है । इन

सभी पाण्डुलिपियों के परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत करने में इसमें कुल 488 पृष्ठों का उपयोग हुआ है तथा इसका मूल्य रू. 72 = 00 है ।

16. विवरणपंज्जिका (खण्ड - 5, भाग - 4)

यह भाग विवरण पंज्जिका के पंचम खण्ड का अन्तिम भाग है तथा इसमें स्तोत्र के शेष हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है। इसमें कुल (3017) पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध किया गया है । इस भाग के अन्त में भाग तीन एवं इसमें सूचीबद्ध पाण्डुलिपियों को उनके शीर्षकों के आधार पर वर्णानुक्रम में पृष्ठ संख्या 01 से लेकर 88 अनुक्रमणिका भी व्यवस्थित है। इसमें कुल 392 पृष्ठ हैं तथा इसका मूल्य रू. 72=00 है ।

17. विवरणपंज्जिका (खण्ड-6, भाग-1)

विवरण पंज्जिका के इस भाग में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत-तन्त्रशास्त्र विषय से सम्बन्धित हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण अंकित है तथा इस प्रथम भाग में तन्त्रशास्त्र के कुल (2862) पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध किया गया है तथा इस भाग में इन (2862) पाण्डुलिपियों के शीर्षक के आधार पर वर्णानुक्रम में पृष्ठ संख्या 01 से 42 तक अनुक्रमणिका भी संलग्न है । इस भाग का कुल पृष्ठ संख्या 298 है तथा इसका मूल्य रू. 180/=00 है ।

18. विवरणपंज्जिका (खण्ड 6, भाग - 2)

प्रस्तुत विवरण पंज्जिका खण्ड 6 का दूसरा भाग है तथा इसमें तन्त्रशास्त्र के कुल (3849) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है तथा इसमें (3849) पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध करने में कुल 252 पृष्ठों का उपयोग हुआ है । इस भाग का मूल्य रू. 50=00 मात्र है ।

19. विवरणपंज्जिका (खण्ड-6, भाग-3)

प्रस्तुत विवरण पंज्जिका खण्ड-6 का तृतीय भाग है तथा इसमें सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत तन्त्रशास्त्र से सम्बन्धित कुल (2336) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है । इस भाग के अन्त में इसमें तथा दूसरे भाग में तालिकाबद्ध कुल हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के अनुसार वर्णानुक्रम में पृष्ठ संख्या 1 से 93 तक अनुक्रमणिका व्यवस्थित है । इस भाग का कुल पृष्ठ संख्या (344) है तथा इसका मूल्य रू. 64=00 मात्र है ।

20. विवरणपंज्जिका (खण्ड 7, भाग - 1)

प्रस्तुत विवरण पंज्जिका खण्ड सप्तम का प्रथम भाग है तथा इसमें सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत तीन विषयों वेदान्त दर्शन, मीमांसा तथा सांख्ययोग के पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है । इस भाग में कुल 366 पृष्ठों का उपयोग हुआ है तथा इसका मूल्य रू. 70=00 मात्र है ।

इस विवरण पंजिका के अन्त में इसमें संकलित तीनों विषयों के पाण्डुलिपियों को उनके शीर्षकों के आधार पर वर्णानुक्रम में पृष्ठ संख्या, (1-23, 24-29 तथा 30-33) तक अनुक्रमणिका सूची भी प्रस्तुत है । इस प्रकार इस भाग में कुल (3540) पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध किया गया है।

21. विवरणपंज्जिका (खण्ड-7, भाग - 2)

यह सूची खण्ड सप्तम का दूसरा भाग है तथा इसमें सरस्वती भवन ग्रन्थालय के मीमांसा दर्शन एवं वेदान्त दर्शन के शेष हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण अंकित है। इसमें कुल (2597) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध किया गया है तथा उनके परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत करने में कुल (264) पृष्ठों का उपयोग किया गया है।

इस भाग के अन्त में इसमें सूचीबद्ध पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के आधार पर वर्णानुक्रम में पृष्ठ सं. (1-21) वेदान्त दर्शन तथा (23-26) तक मीमांसा दर्शन से सम्बन्धित अनुक्रमणिका को व्यवस्थित किया गया है। इस भाग का मूल्य रू. 50/= मात्र है।

22. विवरणपंज्जिका (खण्ड - 8, भाग - 1)

यह विवरण पंज्जिका आठवाँ खण्ड का प्रथम भाग है तथा इसमें सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत न्याय-वैशेषिक-दर्शन से सम्बन्धित हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है । इसमें कुल (4146) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के आधार पर वर्णानुक्रम में निर्मित अनुक्रमणिका सूची पृष्ठ संख्या (1-28) पर वर्णित है।

23. विवरणपंज्जिका (खण्ड-8, भाग-2)

प्रस्तुत विवरण पंज्जिका खण्ड आठ का द्वितीय भाग है तथा इसमें न्याय-वैशेषिक दर्शन के कुल (4023) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है । पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के आधार पर इस भाग के अन्त में वर्णानुक्रम में पृष्ठ संख्या (348-365) पर अनुक्रमणिका सूची संलग्न है । इसमें कुल पृष्ठों की संख्या 372 है तथा इसका मूल्य रू. 224=00 है ।

24 विवरणपंज्जिका (खण्ड - 9, भाग-1)

प्रस्तुत विवरण पंज्जिका नवमखण्ड भाग एक में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत ज्योतिष शास्त्र के कुल (3641) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण का उल्लेख किया गया है । इस भाग में ज्योतिषशास्त्र के इन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध करने में कुल (374) पृष्ठों का उपयोग किया गया है ।

इस भाग के अन्त में इसमें संकलित पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के आधार पर वर्णानुक्रम में निर्मित अनुक्रमणिका सूची पृष्ठ संख्या 1 से लेकर 36 पर संलग्न है । इसे सन् 1963 में प्रकाशित किया गया है।

25. विवरणपंज्जिका (खण्ड-9 , भाग-2)

विवरणपंजिका के इस भाग में भी सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत ज्योतिष शास्त्र के शेष हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है । इसमें ज्योतिशशास्त्र के कुल (3781) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध किया गया है। इसमें कुल पृष्ठों की संख्या 400 है तथा इसका मूल्य रू. 66=00 मात्र है ।

इस भाग के अन्त में इसमें संकलित पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के आधार पर वर्णानुक्रम में पृष्ठ संख्या 1 से 11 पर अनुक्रमणिका सूची को संलग्न किया गया है तथा इस भाग को सन् 1992 में प्रकाशित किया गया है ।

26. विवरणपंज्जिका (खण्ड - 10)

प्रस्तुत हस्तलिखित विवरण पंज्जिका दशम खण्ड है तथा यह एक खण्डीय विवरण पंज्जिका है । इस दशम खण्ड में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत व्याकरण शास्त्र के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण अंकित है। इस खण्ड में व्याकरणशास्त्र के कुल (2521) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध किया गया है तथा इसे सन् 1964 में प्रकाशित किया गया है । इसके संकलन में कुल (260) पृष्ठों का उपयोग किया गया है।

इस खण्ड के अन्त में इसमें तालिकाबद्ध पाण्डुलिपियों के शीर्षकों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित कर पृष्ठ संख्या एक से लेकर अठारह तक अनुक्रमणिका सूची संलग्न है ।

27. विवरणपंज्जिका खण्ड-11 भाग-1)

प्रस्तुत विवरण पंज्जिका एकादश खण्ड का प्रथम भाग है तथा इसमें सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत साहित्य शास्त्र के संस्कृत हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरणों का उल्लेख किया गया है । इस भाग में तालिकाबद्ध पाण्डुलिपियों की संख्या कुल (3816) है तथा इसके अन्त में वर्णानुक्रम में इनमें संकलित पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के आधार पर पृष्ठ संख्या 1 से 25, 26-28 तथा 29 से 30 तक साहित्य ग्रन्थ अनुक्रमणिका सूची, कोश ग्रन्थ अनुक्रमणिका सूची तथा छन्दोग्रन्थ अनुक्रमणिका सूची भी संलग्न है ।

इस भाग के संकलन में कुल 394 पृष्ठों का उपयोग हुआ है तथा इसे सन् 1964 में प्रकाशित किया गया है ।

28. विवरणपंज्जिका (खण्ड - 11 भाग्य-2)

यह विवरण पंज्जिका एकादश खण्ड का दूसरा भाग है । इस भाग में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत साहित्य शास्त्र के शेष हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को तालिका बद्ध करके उनके सम्बन्ध में परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है । इसमें संकलित कुल पाण्डुलिपियों की संख्या (3406) है तथा इस भाग को सन् 1996 में प्रकाशित किया गया

है। इसके संकलन में कुल (324) पृष्ठों का उपयोग किया गया है । यह विवरण पंञ्जिका भी सुपर रायल आकार में प्रकाशित है तथा इसका मूल्य रू. 200/=00 मात्र है ।

प्रथम भाग के समान ही इस भाग के अन्त में इसमें संकलित संस्कृत साहित्यशास्त्र के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के शीर्षकों के आधार पर वर्णानुक्रम में पृष्ठ संख्या (297) से लेकर (317) तक अनुक्रमणिका सूची संलग्न है।

29. विवरणपंञ्जिका (खण्ड-12, भाग1)

प्रस्तुत भाग विवरणपंञ्जिका के बारहवें खण्ड का प्रथम भाग है तथा इसमें सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत प्राच्य भारतीय विद्या के विभिन्न विषयों जैसे जैन दर्शन, भक्ति सम्प्रदाय, आयुर्वेद, कामशास्त्र, शिल्पशास्त्र संगीत शास्त्र, नीतिशास्त्र, धनुर्वेद विद्या, पंजी ग्रन्थ, प्रशस्ति ग्रन्थ, चित्र ग्रन्थ तथा देशी भाषाओं के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का परिचयात्मक विवरण है । इसमें संकलित कुल पाण्डुलिपि ग्रन्थों की संख्या (1650) है। इस भाग को सन् 1965 में प्रकाशित किया गया है तथा इसमें कुल (334).पृष्ठों का उपयोग हुआ है । इस भाग का मूल्य रू. 8=00 मात्र है ।

इस भाग के अन्त में इसमें संकलित हस्तलिखित ग्रन्थों के शीर्षकों के आधार पर वर्णानुक्रम में निर्मित आनुक्रमणिका सूची पृष्ठ संख्या एक से लेकर सैतालीस तक व्यवस्थित है। इस भाग का मूल्य रू. 8=00 मात्र है ।

30. विवरणपंञ्जिका (खण्ड-12, भाग-2)

इस भाग में भी सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत प्राच्य भारतीय विद्या से सम्बन्धित विभिन्न विषयों जैसे–जैन दर्शन, भक्ति सम्प्रदाय, आयुर्वेद, कामशास्त्र, शिल्पशास्त्र, संगीतशास्त्र नीतिशास्त्र, धनुर्वेद विद्या, पंजीग्रन्थ, प्रशस्तिग्रन्थ, चित्र ग्रन्थ तथा देशी भाषाओं के शेष हस्तलिखित पाण्डुलिपि ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है । इसके संकलन में कुल (368) पृष्ठों का उपयोग हुआ है तथा इस भाग का मूल्य रू. 200=00 मात्र है । इसको सन् 1996 में प्रकाशित किया गया है ।

इस भाग के अन्त में इसमें संकलित कुल (3323) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों में शीर्षकों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित कर पृष्ठ संख्या 232 से 360 पर अनुक्रमणिका सूची संलग्न है ।

31. विवरणपंञ्जिका (खण्ड-13)

प्रस्तुत विवरणपंञ्जिका सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थों के विवरण पंञ्जिका का अन्तिम खण्ड है तथा इसमें प्राच्य भारतीय विद्या के कुल एक्कीस विषयों के कुल (5264) हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण अंकित है। एक प्रकार से यह क्रमिक विवरण पंञ्जिका का पूरक खण्ड है । इस खण्ड की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसके 20वें अध्याय में प्रकीर्णग्रन्थों की सूची के अन्तर्गत कुल सतरह हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, पुस्तक सूची अथवा प्रकीर्णपत्रों को तालिका बद्ध किया गया है जो

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में संस्कृत माध्यम से शोध अथवा अध्ययन में रूचि रखने वाले अध्येताओं के लिए बहुत उपयोगी है।

इस खण्ड के अन्त में इसमें संकलित हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के शीर्षकों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित कर पृष्ठ संख्या एक से लेकर एकहत्तर तक वर्णित है । इस खण्ड को सन् 1987 में प्रकाशित किया गया है तथा इसका मूल्य रू.76 = 00 मात्र है । यह खण्ड भी पहले के सभी भागों की तरह सुपर रायल आकार में प्रकाशित है ।

12. अन्य ग्रन्थालयों एवं शोध संस्थानों में संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थों की विवरणपंज्जिकायें–

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत संस्कृत पाण्डुलिपियों के लिए जिस तरह से विस्तृत विवरणपंजिका निर्मित किया गया है ठीक वैसे ही भारत के अन्य संस्कृत संस्थानों एवं ग्रन्थालयों में संगृहीत पाण्डुलिपियों हेतु एक खण्डीय से लेकर बहु खण्डीय तक अनेक विवरण-पंज्जिकाओं को निर्मित किया जा चुका है जिनका विवरण इस प्रकार निम्नवत है–

1. हस्तलेख संस्कृत ग्रन्थ विवरण / विराज मोहन एवं जगदीशचन्द्र; सम्पादक-कलकत्ता : संस्कृत कालेज, 1963, 144 पृ.।

2. हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थ सूची । नागरी प्रचारिणी सभा.-वाराणसी : नागरी प्रचारिणी सभा.-वाराणसी : नागरी प्रचारिणी सभा, 1974। (चार खण्डों में) ।

3. संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थ सूची/भुवनेश्वरी पीठ.-गोंडल : भवनेश्वरी पीठ, 1960, 120 पृ. ।

4. नेपाल राजकीय वीर पुस्तकालय, काठमाण्डू हस्तलिखित पुस्तकनाम वृहत् सूचीपत्रम्, 2018 वि.सं. (1960-64) (नौ खण्डों में) ।

5. प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण / बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् - पटना : बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, 1958. (चार भागों में) ।

6. दरभंगाराज - हस्तलिखित ग्रन्थनाम सूचीपत्रम । कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय - दरभंगा : का.सि.सं. वि.वि., 1969, xv; 175 p.

7. Descriptive Catalogue of Manuscripts.-Poona : Bhandarkar Oriental Research Institute, 1949. (19 Volumes).

8. Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in Central Library of Mumbai University, 1944, 877 p.

9. Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts/Ambalal P. Shah; Editor.–Ahmedabad : L.D. Institute of Indology, 1963. (4 Vols.)

10. Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the collection of Sanskrit College of Calcutta, 1963. (2 Volumes).

11. Descriptive Catalogues of Sanskrit Inscriptions/Pushendra Kumar.-Delhi : Nag Publishers, 1998. (Seven Volumes).

12. Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Deccan College Post-graduate and Research Institute. Poona : Deccan College, 1964. (Multi Volumes)

13. Descriptive Catalogue Sanskrit Manuscripts of Gujarat Vidya-Shabha Collection.-Gujarat : Gujarat Vidyasabha, 1964. (2 Vols.).

14. Descriptive Cotalogue of Sanskrit Manuscripts in the Osmaniya University Library.-Hyderabad : Sanskrit Academy, 1964. 328 p.

15. Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in the Rajsthan Orietal Research Institute.-Jodhpur, 1973 (2 Vols.)

16. Catalogue of Printed Books and Manuscripts in Sanskrit belonging to Central Library of Ariatic Society of Bengal. Calcutta. Baptist Mission, Press, 1904. (Multi volumes).

17. A Catalogue of Manuscripts in Akhil Bharatiya Sanskrit Parishad.-Lucknow. (Multi Volumes).

18. Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts of the Adyar Library and Research Centre.-Madras : Adyar Library and Research Centre, 1968. (Multi Volumes).

विशेषकर इस हस्तलिखित विवरणपंज्जिका में पाण्डुलिपियों की तालिका बद्ध सूची प्रस्तुत करने के लिए कुल तेरह विन्दुओं को उपयोग में लाया गया है जिनका विवरण निम्नवत है–क्रम संख्या / आगम संख्या; शीर्षक; लेखक; टीकाकार; आधार; लिपि; आकार; पत्र संख्या विवरण; पंक्ति संख्या; अक्षर संख्या; विस्तार; स्थिति एवं आयु तथा अतिरिक्त विवरण के आधार पर प्रत्येक पाण्डुलिपि से सम्बन्धित सूचना को अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

19. अखिल भारतीय संस्कृत परिषद, लखनऊ के हस्तलिखित विवरण पंज्जिका :

इस पंज्जिका संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के कुल उन्रिस विषयों के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों से सम्बन्धित परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है । इस विवरण पंज्जिका में प्रत्येक पाण्डुलिपि के शीर्षकों को अंग्रेजी के साथ ही साथ संस्कृत अथवा हिन्दी में भी प्रस्तुत किया गया है । इसी प्रकार इसके अन्तिम खाने अतिरिक्त विवरण वाले स्तम्भ में अंकित सूचना को हिन्दी एवं अंग्रेजी में प्रस्तुत किया गया है।

इस विवरण पंज्जिका में भी हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को तालिकाबद्ध करने के लिए कुल चौदह विन्दुओं का उपयोग किया गया है जो इस प्रकार निम्न हैं–

1. क्रम संख्या एवं विषय;	7. लिपि
2. आगम संख्या;	8. आकार

3. शीर्षक;
4. लेखक;
5. टीकाकार;
6. आधार;
9. पत्र संख्या विवरण
10. पक्ति संख्या
11. अक्षर संख्या
12. विस्तार
13. स्थिति एवं आयु
14. अतिरिक्त विवरण ।

इसके प्रत्येक खण्ड के अन्त में लेखक एवं आख्या अनुक्रमणिका का उल्लेख किया गया है ।

20. प्राचीन भारतीय लिपिमाला (The Palacography of India) / राय बहादुर पं. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा.—नई दिल्ली : मुंशीराम मनोहर, 1894, तृतीय पुर्नसंस्करण 1971, 1994 LXXVP.

यह कृति संस्कृत साहित्य एवं भारतीय प्राच्य विद्या का एक अमूल्य निधि है, क्योंकि प्राचीनकालीन भारत के गौरवशाली तथा शृंखलाबद्ध इतिहास के सम्बन्ध में इसके माध्यम से पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । इसवी सन् 1784 में सर विलियम जोन्स के नेतृत्व में कलकत्ता में ऐशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल नाम के समाज के स्थापना काल से ही इतिहास, शिल्प तथा साहित्य आदि के शोध के लिए सही अन्वेषण प्रारम्भ हुआ ।

इस ग्रन्थ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें भारत वर्ष में लिखने की प्रचार की प्राचिनता से लेकर लेखन सामग्री के तक के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्रस्तुत किया गया है । इसके साथ ही साथ इसमें प्राचीन काल से भारत में प्रचलित कुल पन्द्रह लिपियों, चौंतीस भारतीय संवतों तथा चौरासी लिपिपत्रों का भी उल्लेख किया गया है ।

इस कृति के संकलन में कुल (284) पृष्ठों का उपयोग हुआ है जिसमें पृष्ठ संख्या 199 के बाद 1 से 85 पृष्ठों पर लिपिपत्रों से सम्बन्धित सारणी संलग्न हैं। इन लिपिपत्रों में दिये हुए अक्षरो तथा अंकों का समय निर्णय करने में जिन लेखादि में निश्चित संवत मिले उनके तो वही संवत दिये गये हैं, परन्तु जिनमें संवत का कोई उल्लेख नहीं मिला उनके लिए लिपियों के आधार पर ही उनका काल निर्धारण किया गया है।

संस्कृत साहित्य एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित पाण्डुलिपियों के अध्ययन एवं शोध में रूचि रखने वाले अध्येताओं के लिए यह कृति निश्चित रूप से एक अमूल्य निधि हैं ।

□□

सप्तम अध्याय

जीवनी स्रोत
(Biographical Sources)

1. भूमिका-

जीवनी स्रोतों में किसी विषय अथवा क्षेत्र से सम्बन्धित महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन एवं उनसे सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्राप्त किये जा सकते हैं । शब्दकोशीय परिभाषा के अनुसार जीवनी स्रोत किसी व्यक्ति विशेष की सम्पूर्ण जीवन का लेखा-जोखा है। इसके अन्तर्गत महान पुरुषों, वैज्ञानिकों, राजनीतिज्ञों, विशेषज्ञों, साहित्यकारों, योद्धाओं, समाज वैज्ञानिकों तथा धर्मगुरुओं को शामिल किया जा सकता है । ऐसे व्यक्तियों के विषय में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा को शांत करने के लिए सभी प्रकार के ग्रन्थालयों एवं सूचना केन्द्रों में जीवनी स्रोतों की आवश्यकता पड़ती है ।

ऑक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शेनरी के अनुसार जीवनचरित का अभिप्राय पुरूषों के जीवन के इतिहास से है । लुइस शोर्स के अनुसार, "जीवनी स्रोत महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन की संक्षिप्त रूप रेखा से लेकर पूर्ण सूचना प्रदान करने वाली वर्णानुक्रम में व्यवस्थित एक निर्देशिका है ।"

2. जीवनी स्रोतों का कार्य एवं क्षेत्र :

इन स्रोतों में महत्वपूर्ण व्यक्तियों की जन्मतिथि, योग्यताएँ, कार्यक्षेत्र, विशेषता, पता तथा देहावसान आदि के सम्बन्ध में विस्तृत सूचना प्राप्त होती है। सन्दर्भ के ये स्रोत उद्यत सन्दर्भ स्रोत होते हैं। इन स्रोतों के उपयोग द्वारा जिन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो सकते हैं, उनका विवरण इस प्रकार निम्नवत है-

1. किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का पूरा नाम क्या है ?
2. उसके माता-पिता कौन हैं ?
3. वह व्यक्ति कितनी शिक्षा प्राप्त किया है ?
4. वह व्यक्ति जीवन पर्यन्त किन-किन पदों पर सुशोभित रहा है ?
5. वह कहाँ-कहाँ निवास किया है ?
6. वह व्यक्ति विशेष द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या तथा उनके शीर्षक क्या हैं ?

इस प्रकार के जीवनी स्रोतों को महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जन्म दिवसों तथा विशेष अवसरों

पर भाषण देने अथवा लेख प्रस्तुत करने में बहुत अधिक सहायता मिलती है । कभी-कभी ऐसी कृतियों में अनुक्रमणिका के साथ ही साथ ही अनेक छाया चित्रों को भी व्यवस्थित किया गया होता है ।

3. जीवनी स्त्रोतों के विभिन्न प्रकार :

जीवनी स्त्रोतों के विभिन्न प्रकारों के अन्तर्गत सूचना के अनेक रूपों को जैसे विश्वकोश, शब्दकोश, निर्देशिकाएँ, हस्तलिखित ग्रन्थों, पचांग, सामाचारपत्रों एवं सामयिक प्रकाशनों तथा जीवनीकोशों को सम्मिलित किया जा सकता है । परन्तु ग्रन्थालयों में पाठकों द्वारा किसी व्यक्ति विशेष के बारे पूछे गये प्रश्नों के आधार पर इसे दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे–

1. किसी व्यक्ति विशेष के सम्बन्ध में सामान्य सूचना, तथा
2. किसी व्यक्ति विशेष के सम्बन्ध में विस्तृत सूचना ।

किसी व्यक्ति विशेष के सम्बन्ध में तात्कालिक जीवनी सन्दर्भ स्त्रोतों की सहायता से उतर प्रदान किये जाते हैं । इनमें जीवनीकोश, कौन क्या है ? तथा निर्देशिकाओं को सम्मिलित किया जा सकता है । जबकि किसी व्यक्ति विशेष के सम्बन्ध में जीवनपरक विस्तृत सूचना प्रदान करने के लिए उद्यत सन्दर्भ स्त्रोतों के अतिरिक्त जीवनी परक अन्य सन्दर्भ एवं सूचनास्त्रोतों का भी उपयोग किया जाता है । इनमें अद्यतन जीवनीकोश, राष्ट्रीय जीवनीकोश तथा अन्य मुद्रित साहित्य को सम्मिलित किया जा सकता है ।

4. जीवनी स्त्रोतों की प्रमुख विशेषताएँ :

1. विषय विशेष से सम्बन्धित जीवनी-स्त्रोतों में विषय विशेषज्ञों के बारे में विस्तृत सूचना उपलब्ध होती है, जबकि सामान्य कोश में सूचनाएँ न के बराबर मिलती है ।
2. राष्ट्रीय जीवनी कोश में किसी देश विशेष के व्यक्तियों के सम्बन्ध में विस्तृत सूचना उपलब्ध होती है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय जीवनीकोश में इसका अभाव रहता है ।
3. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के जीवनीकोशों में सभी देशों के व्यक्ति विशेषों के सम्बन्ध में विस्तृत सूचना को न देकर उस देश के महत्वपूर्ण व्यक्तियों को विशेष स्थान दिया जाता है जहाँ से ये प्रकाशित होते हैं ।
4. किसी राज्य के एक निश्चित क्षेत्रों के अन्तर्गत व्यक्ति विशेषों से सम्बन्धित जीवनपरक सूचनाएँ स्थानीय प्रकाशनों में अधिक विस्तृत रूप में उपलब्ध रहती हैं ।

5. समाचार पत्र तथा सामायिक साहित्य भी महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन परक सूचना एवं योगदानों से सम्बन्धित विवरण उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत हैं।
6. स्वर्गवासी महान आत्माओं से सम्बन्धित जीवनी परक सूचनाओं के लिए विश्वकोश भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है ।

5. जीवनी स्रोतों के मूल्यांकन के जाँच बिन्दु :

निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर जीवनी स्रोतों से सम्बन्धित उपलब्ध विभिन्न सन्दर्भ कृतियों के मूल्यांकन का कार्य सम्पन्न किया जाता है· ।

1. प्रामाणिकता—जीवनी स्रोतों में दी गयी सूचना सत्य एवं प्रामाणिक होनी चाहिए। इसका पता जीवनी स्रोतों के सम्पादक अथवा उनके उत्तरदायित्व कर्ताओं की योग्यताओं एवं अनुभव आदि के आधार पर निश्चित किया जाता है ।

2. विषय-क्षेत्र—जीवनी परक सन्दर्भ स्रोतों के विषय क्षेत्र की पूर्ण जानकारी निम्नांकित प्रश्नों के उत्तरों की सहायता से की जा सकती है—प्रस्तुत सन्दर्भ कृति के विषय की सीमायें क्या हैं ? इसमें निहित सूचना का भौगोलिक सीमा क्या है ? इसमें निहित सूचना किसी विषय विशेष से सम्बन्धित हैं अथवा नहीं ? निहित सूचना समकालीन हैं या अनुदर्शी है ?

3. संकलन-पद्धति—संकलन पद्धति से यह पता लगाया जाता है कि जीवनी कोशों में जिन महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवनपरक सूचनाओं एकत्रित करने का आधार क्या है? अर्थात् सूचनाओं का संकलन प्राथमिक स्रोतों पर आधारित है या द्वितीयक सूचना स्रोतों पर आधारित है ।

4. भौतिक आकार—जीवनी सन्दर्भ स्रोतों का मूल्यांकन करते समय उसके भौतिक आकार पर भी विचार किया जाता है । जैसे कृति में उपयोग की गयी कागज की गुणवत्ता, सुन्दर छपाई, तथा मजबूत जिल्दबन्दी आदि ।

5. विन्यसन—विन्यसन की अनेक विधियाँ उपलब्ध होने के कारण जीवनी स्रोतों में ग्रन्थकारों के नामों के वर्णानुक्रम, विषयों के अनुसार-अथवा कालक्रमानुसार प्रविष्टियों को व्यवस्थित किया जाता है । ऐसे कृतियों के अन्त में पाठकों के उपयोगार्थ अनुक्रमणिकाओं का भी उल्लेख किया गया होता है ।

6. प्रतिपादन शैली—जीवनी स्रोतों से सम्बन्धित सन्दर्भ ग्रन्थों की प्रतिपादन शैली की माध्यम से यह पता किया जाता है कि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित केवल सामान्य सूचनाओं को संकलित किया गया है या उनसे सम्बन्धित विस्तृत सूचनाओं को विशेष महत्व दिया गया है।

7. विशेषताएँ—जीवनी स्रोतों के व्यक्तियों की जीवनी के अतिरिक्त उनके सम्बन्ध में अंकित अन्य सूचनाओं पर भी विचार किया जाता है । महत्वपूर्ण व्यक्तियों की छायाचित्रों, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची तथा मल्टी मीडिया को विशेषताओं के अन्तर्गत सम्मिलित किया जा सकता है ।

8. संशोधन एवं अद्यतन—पूर्व प्रकाशित जीवनी स्रोतों में समय-समय पर संशोधन करके इसके अद्यतन प्रतियों को प्रकाशित किया जाना चाहिए । इससे जीवनीकोश, जीवनी विश्वकोश एवं जीवनी निर्देशिकाओं में नई-नई प्रविष्टियों को सम्मिलित किया जा सकता है तथा इस प्रकार के स्रोतों को और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है ।

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णित बिन्दुओं के आधार पर विभिन्न प्रकार के जीवनी स्रोतों के प्रामाणिकता एवं उपयोगिता के आधार पर छोटे से लेकर बड़े पुस्तकालयों में इनका अधिग्रहण किया जाना चाहिए ।

6. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख जीवनी स्रोत :

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित विभिन्न विषयो में वैदिकाल से लेकर अब तक अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध विद्वानों ने संस्कृत के प्रचार, प्रसार एवं निरन्तर विकास में योगदान करते रहे हैं । परन्तु इस क्षेत्र में राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मानक जीवनी विश्वकोश अथवा जीवनी कोश का अब भी अभाव महसुस किया जाता है। यद्यपि प्राच्य विद्या के कुछ प्रमुख भारतीय विद्वानों के साथ हीसाथ कुछ विदेशी विद्वानों ने भी इस अभाव को कुछ हद तक पूरा करने का प्रयास किये हैं । इस श्रेणी में भारतीय प्राच्य विद्या के एक विद्वान लेखक डा. श्रीधर भास्कर वर्णेकर का नाम पहले आता है । आपने "संस्कृत वाङ्मय कोश" नामक एक तीन खण्डीय ग्रन्थ का सम्पादन किया है जो वास्तव में एक भारतीय विश्वकोश है । इस वाङ्मय कोश के ग्रन्थकार खण्ड में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के लेखकों के जीवन एवं उनके कृतियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सूचनाएँ संकलित है।

1. **संस्कृत वाङ्मय कोश (ग्रन्थकार खण्ड) / श्रीधर भास्कर वर्णेकर; सम्पादकः-कोलकता : भारतीय भाषा परिषद, 1988**

इस स्रोत में संस्कृत के बृहत साहित्य को समृद्ध करनेवाले उन सारे ग्रन्थकारों के योगदानों तथा उनके जीवनी एवं विषयक्षेत्रों के सम्बन्ध में ग्रन्थात्मक सूचना दी गयी है। इस कृति को सन् 1988 में प्रथम बार प्रकाशित किया गया है ।

1988 के संस्करण में संस्कृत साहित्य एवं प्राच्य विद्या के ग्रन्थकारों की कुल 2700 प्रविष्टियों के माध्यम से जीवनी परक सूचनाएँ दी गयी हैं । इतना ही नहीं इस ग्रनथकार खण्ड में पूर्व पीठिका के रूप में संस्कृत वाङ्मय दर्शन के नाम से समस्त संस्कृत वाङ्मय के अन्तरंगों का दिग्दर्शन कुल बारह प्रकरणों में किया गया है । प्रविष्टियाँ लेखकों के मुख्य नाम के अनुसार वर्णानुक्रम में विन्यसित हैं।

इस प्रकार कुछ कमियों के बाद भी यह संस्कृत वाङ्मय कोश का ग्रन्थकार खण्ड संस्कृत साहित्य के विद्वान लेखकों की जीवनी एवं उनके कृतियों के सम्बन्ध में सूचना प्राप्ति के उद्देश्य से महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत है ।

2. काशी की पाण्डित्य परम्परा / बलदेव उपाध्याय - वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1983, 638 पृ.

प्रस्तुत कृति आचार्य पं. बलदेव उपाध्याय द्वारा विरचित संस्कृत वाङ्मय के क्षेत्र में एक अमूल्य धरोहर है । इसमें प्राचीन विद्या नगरी काशी के मध्य युगीन (1200 ई. से 1750 ई.) एवं अर्वाचीन (1750 से 1950 ई.) तक के संस्कृत विद्वानों की प्रमाणिक जीवनी तथा उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की जानकारी एवं साढ़े सात सौ वर्षों का काशी के विद्वानों के साहित्यिक अवदान से सम्बन्धित सूचना प्राप्त होती है । इस कृति में चुने गये संस्कृत विद्वानों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है ।

प्रथम श्रेणी में उन विद्वानों को सम्मिलित किया गया है जिनके लिए वाराणसी अध्ययन स्थली एवं अध्यापन स्थली दोनों ही रही हैं ।

द्वितीय श्रेणी में उन विद्वानों को सम्मिलित किया गया है, जिन्होंने संस्कृत के शास्त्रीय विषय का समुपार्जन तो काशी में किये परन्तु भारत के अन्य प्रान्तों में जाकर उस ज्ञान के समुचित वितरण में अपना जीवन बितायें ।

तृतीय श्रेणी के अन्तर्गत उन विद्वानों को सम्मिलित किया गया है, जिन्होंने संस्कृतशास्त्रों का अध्ययन तो काशी के बाहर किया, लेकिन अध्यापन के लिए काशी को अपना कार्यस्थली चूने ।

इसमें वर्णित तीन श्रेणियों का नामोल्लेख पूर्व पीठिका अवतरणिका एवं उत्तर पीठिका के रूप में सम्बोधित हैं। इसके पूर्वपीठिका में संस्कृत शास्त्र के मध्ययुगीन विद्वानों से लेकर नागेशभट्ट (महावैयाकरण) तक के सभी संस्कृत विद्वानों की संक्षिप्त जीवनी एवं उनके कृतियों से सम्बन्धित सूचना प्रस्तुत किया गया है । इसमें निहित उत्तरपीठिका को दो खण्डों में विभाजित किया गया है तथा प्रथम खण्ड के संस्कृत के पारम्परिक विद्वानों के जीवनियों एवं उनके योगदानों का वर्णन है, जबकि द्वितीय खण्ड में छः विद्वान सन्यासियों के तथा छः अंग्रेज संस्कृत विद्वानों के जीवनचरित एवं उनके उपलब्धियों पर विस्तृत सूचना प्रस्तुत है। इस प्रकार इस कृति में संस्कृत शास्त्र के महत्वपूर्ण विद्वानों के वर्णित सूचना अद्यतन न होते हुए भी संस्कृत जगत के उपयोक्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण सूचना स्रोत है ।

3. भारतवर्षीय प्राचीन चरित्र कोश विद्यानिधि सिद्धेश्वर शास्त्री, (चित्रांक)- पूना : भारतीय चरित्र कोश मण्डल, 1964।

प्रस्तुत कृति जीवनी कोश का एक प्रमुख उदाहरण है तथा इसमें वैदिककाल से लेकर सन् 1964 के पूर्व तक संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध महत्वपूर्ण पात्रों के नामों के आधार पर वर्णानुक्रम में निर्मित प्रविष्टियों को व्यवस्थित करके प्रस्तुत किया गया है ।

इस सन्दर्भ कृति की प्रभुत्व विशेषता यह है कि इसमें श्रुति, स्मृति, पुराण, सूत्र, वेदांग, उपनिषद्, बौद्ध एवं जैन साहित्य में निर्दिष्ट व्यक्तियों, विद्वानों के सम्बन्ध में जीवनी परक सूचनाओं के साथ ही साथ उनके योगदानों से सम्बन्धित सूचना प्रदान किया गया है।

यद्यपि यह कृति अद्यतन न होते हुए भी उपयोग की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण जीवनी स्रोत है ।

4. चरित्र कोश : वेद, पुराण और इतिहास से आये विभिन्न चरित्रों एवं ग्रन्थों का हिन्दी में प्रामाणिक पहला कोश / चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा- नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1983 . 555 पृ. सं.

यह एक जीवनीकोश है तथा इसके सम्पादक श्री नरायण चतुर्वेदी हैं। इस चरित्रकोश में संकलित प्रविष्टियाँ वैदिक वाङ्मय में योगदान करने वाले ग्रन्थकारों, लेखकों एवं अन्य विद्वानों के जीवनपरक सूचनाओं एवं उनके योगदानों को विशेष महत्व दिया गया है। इसमें वेदों, उपनिषदों, पुराणों और इतिहासों में आये अनेक ऋषि-मुनियों, महात्माओं, राजाओं, महापुरूषों, कवियों, ग्रन्थ कर्त्ताओं, नदियों एवं पहाड़ों आदि के नामों से सम्बन्धित निर्मित प्रवृष्टियों का एक विशाल सूची संलग्न है ।

इसे प्रकार से यह एक विगतकालीन विषय जीवनी कोश है। इसमें संकलित प्रविष्टियों के अन्तर्गत महापुरूषों, संस्कृत नाटकों तथा काव्यों के पात्रों के नामों का संक्षिप्त परिचय भी प्रस्तुत किया गया है । पुराने नामों के सन्दर्भ जानने की दृष्टिकोण से यह एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत है ।

इसमें प्रविष्टियों का विन्यसन हिन्दी वर्णमाला के क्रम में व्यवस्थित हैं तथा इसके अन्त में दो परिशिष्टों को संलग्न किया गया है ।

ग्रन्थ का भौतिक स्वरूप अच्छा है । जिल्द मजबूत है तथा छपाई में उत्तम गुणवत्ता वाला कागज का उपयोग हुआ है । परन्तु यह स्रोत अद्यतन न होते हुए भी उपयोग के लिए महत्वपूर्ण कृति है ।

5. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार / शंकर लाल शास्त्री-जयपुर : राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, 2004. 490 + पृ..

प्रस्तुत कृति एक लघु विषय जीवनी कोश का एक प्रमुख उदाहरण है । इसमें राजस्थान के लगभग 42 संस्कृत कृतिकारों से सम्बन्धित जीवन परक सूचनाओं एवं उनके योगदानों से सम्बन्धित प्रविष्टियों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है ।

ग्रन्थ के प्रस्तावना में राजस्थान की संस्कृत साधना की पृष्ठभूमि जिसमें संस्कृत के प्रमुख कृतिकारों का विस्तृत जीवनी परक सूचनाएँ प्रविष्टियों के रूप में समायोजित हैं। इसके साथ ही साथ, इसके परिशिष्ट खण्ड में अन्य संस्कृत विद्वानों के जीवनीपरक सूचनाओं को आकारादि क्रम से दिया गया है।

संस्कृत में रूचि रखने वाले उपयोक्ताओं के लिए कुछ कमियों के बाद भी यह महत्वपूर्ण स्रोत हैं ।

6. **उज्जयिनी का विलक्षण विभूतियाँ / रमेश निर्मल - मुम्बई : अन्विति प्रकाशन, 2005. 234 पृ.**

यह एक सामान्य कृति है परन्तु इसमें निहित सूचना के कारण यहाँ पर इसे स्थान देना आवश्यक प्रतीत होता है क्योंकि इसमें अनादी उज्जयिनी के कतिपय सारस्वत विभूतियों का जीवन परिचय तथा उनके द्वारा किये गये योगदानों से सम्बन्धित सूचना प्रदान की गयी है ।

इस कृति में उज्जैन के कुल पन्द्रह महान विभूतियों के सम्बन्ध में उनके जीवनी तथा अन्य उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत है । इसमें पं. सूर्यनारायण व्यास पहली विभूति हैं जबकि डा. श्यामसुन्दरनिगम को पन्द्रहवें विभूति के रूप में स्थान दिया गया है । इन पन्द्रह विभूतियों के अतिरिक्त उज्जैन के गौरवशाली व्यक्तियों को प्रस्तुत कृति के ग्रन्थमाला के अगले दो भागों में दो अलग-अलग शीर्षकों के अन्तर्गत जैसे "संस्कृति का सूर्य : उज्जैन" तथा "आधुनिक उज्जयिनी के गौरव" नामक ग्रन्थ में सम्मिलित किया गया है ।

प्रत्येक प्रविष्टियों में जानकारी विस्तृत है तथा उज्जैन के विलक्षण विभूतियों से सम्बन्धित सूचना के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं ।

7. **आधुनिक उज्जयिनी के गौरव / रमेश निर्मल - मुम्बई : अन्विति प्रकाशन, 2005, 274, 274; xvip.**

यह कृति उज्जयिनी पुस्तक माला के 11वें पुष्प के रूप में मुम्बई के अन्विति प्रकाशन से प्रकाशित है । इसमें उज्जैन से जुड़ी उन विशिष्ट विभूतियों के जीवनीपरक सूचनाओं के साथ ही साथ उनके द्वारा किये गये योगदानों का भी विवरण प्रस्तुत है ।

• इसमें उज्जैन के कुल 105 महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवनी परक सूचनाओं के साथ ही साथ उनके साधना सन्दर्भों को सम्मिलित किया गया है। इस ग्रन्थ में उज्जैन के जिन सारस्वत विद्वानों को सम्मिलित किया गया है या तो उनका जन्म उज्जैन या मालवांचल में हुआ है अथवा जिन्होंने अपनी शिक्षा, दीक्षा अथवा कर्मभूमि के रूप उज्जयिनी या मालवा में अपने जीवन का महत्वपूर्ण अंश व्यतीत किया है।

यद्यपि प्रस्तुत ग्रन्थ सन्दर्भ स्रोत नहीं है फिर भी उज्जयिनी के विविध विलक्षण व्यक्तित्व के लिए यह एक महत्वपूर्ण सूचना स्रोत है ।

8. **Who's who of Indian Writers.-New Delhi : Sahitya Academy, 1961.**

यह कोश विषय जीवनीकोश का एक उदाहरण है तथा इसमें अंग्रेजी सहित सभी भारतीय भाषाओं के उत्तरोत्तर विकास में जिन ग्रन्थकारों ने अपना साहित्यिक योगदान दिया

है उन सभी ग्रन्थकारों की जीवनीपरक सूचना दी गयी है । इसका प्रथम प्रकाशन सन् 1961 में सम्पन्न हुआ था तथा इसका द्वितीय संस्करण सन् 1995 में प्रकाशित हुआ है ।

इस जीवन चरित कोश में कुल 6000 की संख्या में भारतीय लेखकों से सम्बन्धित प्रविष्टियों को प्रस्तुत किया गया है तथा प्रत्येक प्रविष्टि में ग्रन्थकारों के नाम, साहित्यिक नाम, शैक्षिक उपाधियाँ, वर्तमान पद, मातृभाषा तथा निवास का पता से सम्बन्धिथ सूचनाएँ अंकित हैं । यह कृति कुछ खामियों के बाद भी भारतीय भाषाओं एवं साहित्य से सम्बन्धित लेखकों की जीवनीपरक सूचना हेतु एक महत्वपूर्ण स्रोत है ।

9. Dictionary of Jain Biography- Arrah : Library of Jaina Literature, 1917. (Pt. 1A).

यह एक जीवनी कोश है तथा इसमें जैन साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान करने वाले विभूतियों के जीवनीपरक सूचनाओं को प्रस्तुत किया गया है । इसमें केवल 1917 तक के जैन विद्वानों, लेखकों तथा जैन मुनियों को ही सम्मिलित किया गया है ।

प्रत्येक प्रविष्टि में जीवनी परक सूचनाओं की संक्षिप्त जानकारी दी गयी है । इस कृति को जैन साहित्य ग्रन्थालय, आरा, विहार द्वारा सन् 1917 में प्रकाशित किया गया है। यह कृति अद्यतन नहीं है, फिर भी जैन साहित्य के पूर्व विभूतियों के जीवनीपरक सूचना के लिए एक उत्तम स्रोत है ।

10. संस्कृत वाङ्मय में नारी—एक परिचयात्मक कोश /सिप्रा बैनर्जी—अम्बाला छावनी : आई. बी. ए. पब्लिकेशन, 2002. (तीन खण्डीय)।

यह कोश निबंधात्मक जीवन चरितकोश का प्रमुख उदाहरण है तथा इसमें मात्र भारतीय प्राचीन नारियों का परिचय नहीं अपितु स्त्रीलिंग के सभी चेतन जीव, मूर्त और अमूर्त का उल्लेख प्रविष्टियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

इस जीवन चरित कोश में ऋग्वेद से लेकर भविष्यपुराण तक के सुदीर्घ काल की यात्रा में नारी के विविध रूपों के साथ ही साथ जीवनीपरक सूचनाओं को अधिक महत्व दिया गया है । यह कृति कुल 1700 पृष्ठों तथा तीन खण्डों में संकलित है । इसके प्रथम खण्ड में सम्मानित सम्मिलित नारियों के नाम देवनागरी के वर्णानुक्रम में पृष्ठ संख्या 86 से 526 पर वर्णित है ।

इस जीवन चरित्रकोश के द्वितीय खण्ड में शेष नामों को वर्णानुक्रम में "च" अक्षर से "भौ" अक्षर तक व्यवस्थित किया गया है । जबकि इसके तृतीय खण्ड में शेष सम्मानित नारियों को उनके नामों तथा योगदानों को वर्णानुक्रम में निर्मित प्रविष्टियों का व्यवस्थापन "य" अक्षर से प्रारम्भ होकर 'ह्री" अक्षर पर समाप्त हुआ है ।

इसका भौतिक स्वरूप बहुत अच्छा है । जिल्दबन्दी मजबूत एवं टिकाऊ है, छपाई स्पष्ट है तथा उत्तमकोटी के कागज का उपयोग किया गया है ।

यह ग्रन्थ केवल एक जीवन चरितकोश ही नहीं बल्कि संस्कृत वाङ्मय में अंकित नारी के उत्कर्ष एवं उनके द्वारा किये गये योगदानों आदि की सूचना प्रदान करने हेतु एक अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ स्रोत है ।

11. **National Biographical Dictionary of India / Jagadish Sharan Sharma; Compiler.-New Delhi : Sterling Press, 1972.**

यह एक भारतीय राष्ट्रीय जीवनीकोश है तथा इसमें भारत के विभिन्न प्रान्तों के लगभग 5000 महान विभूतियों के जीवनीपरक सूचनाओं को संकलित करके प्रविष्टियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है । प्रविष्टियों में प्रत्येक व्यक्ति के नाम, जन्म-तिथि, व्यवसाय, राष्ट्रीयता, प्राप्त उपाधियाँ, शिक्षा तथा महत्वपूर्ण उपलब्धियों में व्यवस्थित किया हुआ है।

यद्यपि यह राष्ट्रीय जीवनी कोश अद्यतन नहीं है फिर भी भारत के ऐतिहासिक विभूतियों से सम्बन्धित संक्षिप्त सूचना के स्रोत के रूप में एक सर्वोत्तम कृति है । डा. जगदीश शरण शर्मा द्वारा इसको संकलित किया गया है, तथा 1972 में स्टरलिंग प्रेस, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।

12. **Dictionary of National Biography / S.P. Sen; Editor. - Kolkata : Institute of Historical Studies, 1972-74. (Four Volumes).**

यह भारत का प्रथम बहुखण्डीय राष्ट्रीय जीवनीकोश है तथा इसके प्रधान सम्पादक श्री एस.पी. सेन हैं । इस राष्ट्रीय बहु खण्डीय जीवनीकोश के रचना में राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकता में उपलब्ध विशाल संग्रह का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । इस राष्ट्रीय जीवनी कोश के सम्पादन के पिछे इसका मुख्य उद्देश्य उन्नीसवीं सदी से लेकर देश के स्वतन्त्र होने तक जिन भारतीय विभूतियों ने भारत को एक सबल राष्ट्र के रूप में खड़ा करने का प्रयास किये उनकी जीवनीपरक सूचनाओं एवं योगदानों को उनके कुलनामों के अनुसार वर्णानुक्रम में इसमें व्यवस्थित किया गया है ।

इस तरह सन् 1800 से 194 7 तक के अवधि के लिए कुल 1400 भारतीय विभूतियों के जीवनी परक सूचनाओं इसमें को प्रविष्टियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसका पूरक भाग चार खण्डों में प्रकाशित हुआ है । पूरक भाग 1947 से 72 के मध्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान करने वाले गौरवशाली व्यक्तियों की जीवनिया भी वर्णित हैं।

इसमें प्रत्येक प्रविष्टि के अन्त में प्रविष्टियों में संकलित स्रोतों की सूचना के साथ ही साथ जीवनी लिखने वाले विद्वानों के नाम भी अंकित है ।

भारत में स्थित सभी प्रकार के ग्रन्थालयों में ऐसे सन्दर्भ स्रोतों को संग्रह में सम्मिलित किया जाना नितांत आवश्यक है।

13. **Biographical Dictionary of Puranic Personages / Akshya Kumari Devi.- Calcutta : Vijaya Krishna Brothers, n.d. 8; 72 p.**

14. **Encyclopaedia of World Great Educational Philosophers/M.K. Singh.- New Delhi : Alfa Publications, 2008. (2 Vols).**

यह एक विषयागत जीवनी विश्वकोश है तथा इसमें केवल विश्व के प्रख्यात शिक्षादार्शनिकों से सम्बन्धित जीवनीपरक सूचनाओं पर आधारित प्रविष्टियों को व्यवस्थित किया गया है । इसमें विश्व के कुल 36 महान शिक्षा दार्शनिकों से सम्बन्धित जीवनी परक सूचनाओं एवं उनके योगदानों को दो खण्डों के माध्यम से लिपिबद्ध करके प्रस्तुत किया गया है । इसका प्रथम प्रकाशन सन् 2008 में हुआ । इसके प्रथम खण्ड में प्रविष्टियों को अध्याय एक से बीसवें अध्याय तक तथा द्वितीय खण्ड में एकीसवें अध्याय से 36वें अध्याय तक अंकित है । इनमें कुल 816 पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

इसका भौतिक आकार अच्छा है, जिल्दबन्दी टिकाउ है तथा छपाई में उत्तम गुणवत्ता वाले कागज का प्रयोग किया गया है । विश्वके महान शिक्षा दार्शनिकों के सम्बन्ध में सूचना कि लिए यह सर्वोत्तम कृति है ।

□□

अष्टम अध्याय

भौगोलिक स्रोत
(Geographical Sources)

1. भूमिका-

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में उपलब्ध भौगोलिक सूचना स्रोतों की संख्या आधुनिक विषयों की तुलना में न के बराबर हैं । परन्तु इस बात को भी अस्वीकृत नहीं किया जा सकता है कि अखण्ड भारत को पूरे विश्व में एकीकृत राष्ट्र के रूप में सर्वोच्य स्थान दिलाने में संस्कृत एवं प्राच्य ग्रन्थों की भूमिका सर्वोपरी रही है ।

भारत धर्म, संस्कृति, साहित्य तथा सभ्यता के लिए एशिया में ही नहीं अपितु पुरे विश्व में विख्यात है । भारत में स्थित विभिन्न तीर्थस्थानों, पवित्र नदियों, एवं विश्वविख्यात अनेक धार्मिक स्थलों जैसे गिरजाघर, गुरूद्वारा, मन्दिरों, जैन मन्दिरों एवं बौद्धमठों से सम्बन्धित सूचनाओं का उल्लेख सबसे पहले ग्रन्थों अथवा हस्तलिखित पाण्डुलिपियों से प्राप्त किये गये हैं । उदाहरण स्वरूप भारत में स्थित चारों धाम यात्रा, कुम्भ स्नान, गंगासागर स्नान, कैलाशमान सरोवर यात्रा । प्राचीन भारतीय संस्कृति में सामाजिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में चार आश्रम, चार वर्ग, चार वेद, तथा चारों धाम से सम्बन्धित उपलब्ध प्राचीन भारतीय साहित्य के परिणामस्वरूप पूरे विश्व के लोगों में भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं पौराणिक स्थिति की जानकारी जैसे दार्शनीय स्थल, पवित्र तीर्थ स्थान कौन-कौन से हैं तथा कहाँ स्थित है आदि की जिज्ञासा बढ़ती चली गयी । इसी के फल स्वरूप भौगोलिक स्रोतों का आविर्भाव हुआ जिनमें विभिन्न प्रकार की प्राथमिक सूचना स्रोतों को भौगोलिक सूचना से सम्बन्धित प्रश्नों के उतर प्रदान करने हेतु विभिन्न रूपों में विभिन्न प्रकार के भौगोलिक सन्दर्भ स्रोतों का आविर्भाव हुआ है ।

2. भौगोलिक सूचनास्रोतों के क्षेत्र, परिभाषा एवं प्रकार–

भौगोलिक प्रश्नों से सम्बन्धित उत्तरों को अनेक प्रकार के सूचना स्रोतों से प्राप्त किया जा सकता है लेकिन भौगोलिक सूचना के प्राप्ति के लिए जिन मानक सन्दर्भ स्रोतों का उल्लेख मिलता है उसमें वाङ्मय सूचियाँ एवं अनुक्रमणिकाएँ, विश्वकोश, शब्दकोश, सांख्यकीय स्रोत, जीवनचरित स्रोत एवं भौगोलिक स्रोत प्रमुख हैं ।

3. भारत के प्रसिद्ध मन्दिरों एवं तीर्थस्थलों से सम्बन्धित भौगोलिक स्त्रोत :

1. कल्याण-तीर्थांक वार्षिक विशेषांक गोरखपुर : गीता प्रेस, 1957, 704 पृ.

यह कृति गोरखपुर के गीता प्रेस, द्वारा सन् 1957 में कल्याण पत्रिका के तीर्थांक वार्षिक विशेषांक के रूप में प्रकाशित है। इसमें धार्मिक एवं पौराणिक महत्वों के लगभग 1800 तीर्थ स्थलों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है । साथ ही साथ पुराण प्रसिद्ध तीर्थों का शास्त्रोक्त महात्म्य, 21 प्रधान गणपति क्षेत्रों, 108 दिव्य शिव क्षेत्रों, 274 पवित्र शैव क्षेत्रों, 12 ज्यार्तिलिङ्गों, 108 दिव्य विष्णु स्थानों, 108 वैषण देशों, 108 दिव्य शक्ति स्थानों, 51 शक्तिपीठों एवं 12 प्रधान देवी विग्रहों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाओं का विस्तार से उल्लेख किया गया है ।

इसमें तीर्थयात्रियों के लिए आवश्यक पालनीय नियमों के अन्तर्गत पञ्चदेवों की पूजन विधि, विष्णु, शिव आदि के ध्यान, तीर्थयात्रा की विधि, प्रधान - प्रधान तीर्थों एवं प्रसिद्ध विग्रहों की स्तुतियाँ भी वर्णित हैं। इसमें भारत के तीर्थस्थलों से सम्बन्धित सूचनाओं के प्रस्तुती में आठ दुर्लभ मानचित्रों, 34 रंगीन एवं पाँच सौ से ऊपर सादे स्थल चित्रों का उपयोग किया गया है । इस कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसके अध्ययन मात्र से पवित्र भारत भूमि के विभिन्न भागों का महत्व, वहाँ की विशेषताओं के ज्ञान, राष्ट्रीयता एवं पारस्परिक एकता के भाव जागृत होते हैं ।

यह स्रोत भारत के तीर्थस्थलों का भ्रमण करने वाले तीर्थयात्रियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा इसमें वर्णित तीर्थयात्रा, तीर्थदर्शन एवं तीर्थों में अवगाहन के महत्व के कारण भारत के प्रत्येक ग्रन्थालयों में इसके अद्यतन प्रतियों को अधिग्रहीत किया जाना आवश्यक है ।

2. तीर्थभारतम् / श्रीधरभास्कर वर्णेकर - मध्य प्रदेश : दतिया : पीतांबरा पीठ संस्कृत् परिषद, 1983.

यह ग्रन्थ प्राच्य विद्या के प्रख्यात विद्वान डा. श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा प्रणीत है तथा इसमें सम्पूर्ण भारत के सुप्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र, तत्रस्थ देवता, तथा बुद्ध, शंकर, महावीर इत्यादि अवतारों के साथ ही साथ विवेकानन्द, दयानन्द, महात्मा गाँधी जैसे महापुरुषों का स्तवन प्रस्तुत है ।

इसमें सभी स्तुति पद्य संगीत प्रधान हैं और कवि ने उनके रागों का निर्देश चलन स्वरों के साथ प्रत्येक भक्ति के साथ में प्रस्तुत किया है तथा वर्तमान में यह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है ।

भारतीय तीर्थ यात्रियों के लिए यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है ।

3. **त्रिस्थलीसेतु : / श्रीभट्टोजिदीक्षित; श्री नागेश भट्ट एवं सुरेश्वराचार्य- वाराणसी : प्रकाशन संस्थान, सं. सं. वि. वि., 144 पृ.**

यह ग्रन्थ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के सरस्वती भवन-ग्रन्थमाला के 65 पुष्प के रूप में प्रकाशित है । श्री भट्टोजिदीक्षित द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में तीर्थ विधि का विशेषकर काशी, प्रयाग तथा गया प्रभृति तीर्थों की विशेष महिमा वर्णित है। त्रिस्थली सेतु : शीर्षक के अन्तर्गत दो अन्य ग्रन्थों का भी उल्लेख किया गया है जैसे–

1. तीर्थेन्दुशेखर :–श्री नागेश भट्ट द्वारा प्रणीत इस कृति में तीर्थों के अधिकारी आदि के निर्णय के अनन्तर-प्रयाग, काशी तथा गया आदि तीर्थों की विधि का विचार वर्णित है ।

2. काशीमृतिमोक्ष विचार–यह ग्रन्थ श्री सुरेश्वराचार्य द्वारा प्रणीत है तथा इसें काशी, वाराणसी, अविमुक्तक, अन्तर्गृह नामक चार क्षेत्रों के परिमाण का निर्णय से सम्बन्धित तथ्य प्रस्तुत किया गया है । साथ ही साथ उन-उन क्षेत्रों में मृत्यु होने से सारूप्य, सालोक्य, सायुज्य, सान्निध्य रूप मुक्तियों के मिलने का विधान है ।

विषय की दृष्टि से ग्रन्थ का सम्बन्ध हिन्दू धर्मशास्त्र से है परन्तु इसमें निहित हिन्दू धर्म के पवित्र तीर्थ स्थलों की विशेष सूचनाओं के कारण पौराणिक एवं भौगोलिक रूप में भी एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है ।

4. **काशीखण्ड / करूणापति त्रिपाठी; सम्पादक–वाराणसी : सं.सं.वि.वि., (चार भागों में).**

यह कृति पुराणेतिहास विषय के अन्तर्गत सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के गंगानाथ झा ग्रन्थमाला के 13वें पुष्प के रूप में कुल चार भागों में प्रकाशित है । साथ ही साथ इस ग्रन्थमाला में श्री रामानन्दाचार्य की "रामानन्दि" संस्कृत व्याख्या तथा पण्डित श्री नरायणपति त्रिपाठी की नरायणी हिन्दी-व्याख्या भी प्रकाशित हुआ है ।

इस ग्रन्थ के चार भागों में प्रकाशित श्लोकों की पदानुक्रमणी तैयार कर "काशी खण्ड परिशिष्टम" के नाम से अलग से प्रकाशित है जिसमें कुल पृष्ठों की संख्या 220 है।

5. **काशी-महात्म्य/ स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती - वाराणसी : सं.सं. वि.वि., 280 पृ.**

यह ग्रन्थ पुराणेतिहास विषय के अन्तर्गत सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के विश्वविद्यालय रजत जयंती ग्रन्थमाला के 23वें पुष्प के रूप में प्रकाशित है। इस ग्रन्थ में काशी अर्थात् वाराणसी के पुराण प्रसिद्ध महात्म्य के वर्णन के साथ-साथ काशी में स्थित विभिन्न शिवलिङ्गो तथा पुन्यक्षेत्रों का धार्मिक तथा पौराणिक दृष्टिकोण से वर्णन प्रस्तुत है।

इसके साथ ही साथ इसमें काशी अथवा वाराणसी क्षेत्र में कर्तव्याकर्तव्य आदि विषयों का विस्तृत विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है । इसमें कुल 280 पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

6. **काशी यात्रा / श्री नरायण पति त्रिपाठी; सम्पादन द्वारा श्री करूणा पति त्रिपाठी-वाराणसी : सं.सं.वि.वि., 72 पृ.**

यह कृति पुराणेतिहास विषय के अन्तर्गत सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के अन्तर्गत विश्वविद्यालय रजत जयन्ती ग्रन्थमाला के 16वें पुष्प के रूप में प्रकाशित है । इस ग्रन्थ को अपनी विशिष्ट भूमिका एवं परिशिष्ट के साथ आचार्य श्री करूणापति त्रिपाठी ने सम्पादित किया है तथा इसके प्रणयन श्री नरायणपति त्रिपाठी ने किया है ।

इस पौराणिक कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें काशी की अनेकानेक यात्राओं का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है । इसमें कुल 72 पृष्ठों का उपयोग किया गया है तथा इसका द्वितीय संस्करण शीघ्र प्रकाशनाधीन है ।

7. **काशी या बनारस / बाल मुकन्द वर्मा - वाराणसी : ब्रह्मनाल, 1930, 95पृ.**

काशी या बनारस के भ्रमण का कार्यक्रम तैयार करने वाले यात्रियों के द्वारा इसकी बहुत अधिक प्रशंसा हुई थी । इसमें प्राचीन काशी अथवा आधुनिक वाराणसी में स्थित पर्यटन के विविध क्षेत्रों की सविस्तार व्याख्या दी गयी है ।

इसे सन 1930 में ब्रह्मनाल, वाराणसी से प्रकाशित किया गया है तथा इसमें कुल 95 पृष्ठों का उपयोग हुआ है । वर्तमान में यह ग्रन्थ अपर्याप्त है । फिर भी वाराणसी पर यह एक महत्वपूर्ण स्रोत है ।

8. **Guide to Benares / India. Ministry of Transport. Tourist Division.-New Delhi : Manager of Publication, 1957. 24 p. plates;' illust.**

प्रस्तुत ग्रन्थ मार्गदर्शिका का एक प्रमुख उदाहरण है । इसमें वाराणसी से सम्बन्धित पर्यटन की दृष्टिकोण धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा भौगोलिक स्थलों एवं यहाँ के निवासियों के सम्बन्ध में सविस्तार सूचना प्रस्तुत है । यह 1957 में भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित हुआ है तथा इसमें छायाचित्रों एवं मानचित्रों को भी प्रस्तुत किया गया है ।

इस मार्गदर्शिका में वाराणसी से सम्बन्धित सूचनाएँ अंग्रेजी में वर्णित है तथा 1960 तक विदेशी पर्यटकों के बीच यह बहुत लोकप्रिय था ।

9. **वाराणसी पर्यटन : विविध आयाम (Dimension of Tourism in Varanasi)/ प्रेमशंकर द्विवेदी एवं अन्य; सम्पादक-वाराणसी : कला प्रकाशन, 1999, 156 पृ.**

इस ग्रन्थ में काशी अथवा वाराणसी के विविध धार्मिक, सांस्कृतिक, कलात्मक, पुरातात्विक एवं पर्यटन, विषयक विभिन्न आयामों से सम्बन्धित प्रामाणिक सूचना दी गयी है । इसके सम्पादक डा. प्रेमशंकर द्विवेदी है तथा कला प्रकाशन, वाराणसी से इसे सन् 1999 में प्रकाशित किया गया है ।

वाराणसी के विविध आयामों के सम्बन्ध में यह एक महत्वपूर्ण भौगोलिक सूचना स्रोत है ।

10. केदार खण्ड / वाचस्पति द्विवेदी एवं अन्य :—वाराणसी : सं. स. वि.वि., 1991 (चार भागों में) ।

प्रस्तुत ग्रन्थ पुराणेतिहास विषय के अन्तर्गत सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा गंगानाथ झा ग्रन्थमाला के 17वें पुष्प के रूप में कुल चार भागों में प्रकाशित किया गया है । स्कन्द पुराण के माहेश्वर खण्ड के अन्तर्गत समविष्ट इस केदार खण्ड को वाचस्पति द्विवेदी की हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है ।

पौराणिक दृष्टिकोण से श्री केदारखण्ड से सम्बन्धित सूचनाओं के लिए यह एक अत्यन्त उपयोगी स्रोत हैं।

11. **Kedar Matha and Badri Narayan (A Pilgrim's diary) / Syster Nivedita.- Calcutta : Udbothan Office, 1921. 86 p.; illust.**

यह ग्रन्थ एक मार्गदर्शिका न होकर एक प्रकार से एक तीर्थयात्री के यात्रा वृत्तांत के रूप में प्रकाशित है । इसमें लेखक ने अपने केदार मठ तथा बद्रीनारायण तक सम्पूर्ण यात्रा का सविस्तार व्याख्या प्रस्तुत की है तथा इसे कलकत्ता के उद्बोधन कार्यालय से सन 1921 में प्रकाशित किया गया है । इसमें चित्रों सहित कुल 86 पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

यह ग्रन्थ वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

12. **कैलाश-मानसरोवर यात्रा साक्षात् शिव से संवाद / तरूण विजय-देहरादून : ऋत्विक प्रकाशन, 1994, 118 पृ.।**

इस ग्रन्थ के लेखक एवं छायाकार श्री तरूण विजय हैं जो एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पत्रकार होने के साथ ही साथ तीर्थयात्रा विकास समिति दिल्ली राज्य के अध्यक्ष एवं सिन्धु दर्शन अभियान, लद्दाख के संयोजक भी रह चुके हैं ।

इस ग्रन्थ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें कैलाशमान सरोवर यात्रा के सम्पूर्ण प्रकरणों को दुर्लभ छायाचित्रों के माध्यम से सजीव एवं अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से वर्णन प्रस्तुत किया गया है । इस ग्रन्थ में भारत के पूर्व प्रधान मंत्री माननीय श्री अटल

विहारी पाजपेयी जी के छायाचित्र के साथ उनका सन्देश भी प्रकाशित है। इसमें कैलाशमान सरोवर यात्रा के वृत्तान्तों का उल्लेख ॐ नमः शिवाय तथा ॐ से प्रारम्भ हुआ है । साथ ही साथ पृष्ठं 118 पर कैलाश मानसरोवर क्षेत्र का एक विहंगम दृश्य, राक्षसताल एवं मानसरोवर के उपर मध्य में स्थित श्री कैलाश पर्वत के दुर्लभ दृश्यों का उपग्रह द्वारा खीचा गया चित्र संकलित है । ग्रन्थ के अन्त में कैलास पर्वत, मानसरोवर झिल तथा भारत एवं तिब्बत में आने वाले विभिन्न स्थानों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाओं को मानचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है ।

यह ग्रन्थ सन् 1994 में देहरादून के ऋत्विक प्रकाशन से प्रकाशित है तथा इसमें कुल 118 पृष्ठों का उपयोग हुआ है । इसका छपाई बहुत सुन्दर है तथा छपाई के उपयोग में लाया गया कागज बहुत ही उच्च गुणवत्ता वाला है ।

यह कृति भौगोलिक सन्दर्भ स्रोत की श्रेणी में सम्मिलित हो न होकर भी कैलाश मान सरोवर यात्रा से सम्बन्धित सूचनाओं के ज्ञान हेतु एक उत्तम सूचना स्रोत हैं ।

13. यात्रा : कैलाश मानसरोवर, वद्रीनाथ, केदारनाथ / विद्यानन्द सरस्वती; सम्पादक–नैनीताल : गीता सत्संग, 1960, 41; 40 पृ.।

यह ग्रन्थ मार्गदर्शिका का एक प्रमुख उदाहरण है तथा इसे सन् 1960 में गीता सत्संग, नैनीताल से प्रकाशित किया गया है । इसके सम्पादक विद्यानन्द सरस्वती हैं तथा इसमें कुल 40 से अधिक पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

इसमें लेखक ने बड़े ही सजीव ढंग से वद्रीनाथ, केदारनाथ तथा कैलाश मानसरोवर से सम्बन्धित पर्यटन के सम्पूर्ण सूचनाओं को प्रस्तुत किया है ।

यह इस समय अद्यतन नहीं है फिर भी कैलास मानसरोवर पर महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

14. विश्वदर्शनम् / हंसराज अग्रवाल–लुधियाना : शक्ति प्रकाशन माडल टाउन, 1968, 55पृ.।

यह ग्रन्थ मार्गदर्शिका के रूप में सन् 1968 में लुधियाना के शक्ति प्रेस माडल टाउन से प्रकाशित है । इसमें ग्रन्थकार ने विश्व में प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों एवं क्षेत्रों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाओं को व्यविस्थत क्रम में प्रस्तुत किया है । इसमें कुल 55 पृष्ठों का उपयोग हुआ है तथा इसके ग्रन्थकार श्री हंसराज अग्रवाल हैं।

यह ग्रन्थ अद्यतन नहीं है फिर भी इसमें विश्व से सम्बन्धित दर्शनीय स्थानों की सूचना निहित होने के फलस्वरूप यह एक अत्यन्त उपयोगी सूचना स्रोत है ।

15. भारतेर पुण्यतीर्थ/विमला चरण लाहा.–कलिकता : प्राच्यवाणि मन्दिर, 1944, 67 पृ. ।

यह ग्रन्थ भारतवर्ष में स्थित पवित्र हिन्दू तीर्थ स्थानों पर आधारित है । इसके ग्रन्थकार पश्चिम बंगाल के प्रख्यात प्राच्य विद्या के विद्वान विमल चरण लाहा है । यह ग्रन्थ

सन् 1944 में कोलकता के प्राच्यवाणि मन्दिर से बांगला भाषा में प्रकाशित है । इसमें कुल पृष्ठों की संख्या 67 हैं ।

भारत के पवित्रतीर्थ स्थलों पर यह एक दुर्लभ स्रोत हैं ।

16. **Holy places of India /Bimal Charan Law.-Calcutta : Geographical Survey Society, 1940, vi, 58 p.**

यह ग्रन्थ 1940 में कलकत्ता के भौगोलिक सर्वेक्षण समाज द्वारा प्रकाशित है तथा यह विमल चरण लाहा द्वारा प्रणीत है । इसमें भारत के सम्पूर्ण हिन्दू, बौद्ध एवं जैन तीर्थस्थलों के सम्बन्ध में आवश्यक सूचनाओं को व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत किया गया है। भारत के तीर्थस्थलों के विवरणों को इसमें अंग्रेजी में प्रस्तुत किया गया है तथा इसमें कुल 58 पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

17. **The Sacred Complex of Kashi : a microcosm of Indian Civilization/ L.P. Vidyarthi, Makhhan Jha and B.N. Saraswati.-Delhi : Concept Publishing Company, 1979, 319 p.**

यह ग्रन्थ काशी अथवा वाराणसी के धार्मिक भौगोलिक, पर्व एवं त्योहार, वेला, जलवायु एवं एक प्रमुख तीर्थ स्थल से सम्बन्धित सूचनाओं के जानकारी हेतु एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इसमें वाराणसी अथवा काशी से सम्बन्धित सूचना की जानकारी चाहने वाले तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए काशी की धार्मिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा पौराणिक सूचाओं को कुल सात अध्यायों में वर्णित किया गया है ।

इस ग्रन्थ की भाषा अंग्रेजी है तथा इसमें कुल 319 पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

18. **हिमालय दर्शन / कृष्ण नरायण गोस्वामी : - दिल्ली : आत्मा राम एण्ड सन्स, 1963, 183 पृ.।**

यह कृति मार्गदर्शिका का एक प्रमुख उदाहरण है तथा इसमें ग्रन्थकार ने हिमालय के धार्मिक, पौराणिक तथा भौगोलिक महत्व से सम्बन्धित सूचनाओं का सविस्तर व्याख्या प्रस्तुत किया है । यह ग्रन्थ सन् 1963 में दिल्ली के आत्मा राम एण्ड सन्स के द्वारा प्रकाशित है तथा हिमालय से सम्बन्धित सूचनाओं के प्रस्तुती में कुल 183 पृष्ठों का उपयोग हुआ है ।

भौगोलिक दृष्टिकोण से हिमालय पर यह ग्रन्थ एक महत्वपूर्ण सूचना स्रोत है परन्तु यह अद्यतन नहीं है।

19. **भारतभ्रमण / साधुचरण प्रसाद – बम्बई : खेमराज श्रीकृष्णदास, 1909. (पाँच खण्डों में)।**

यह कृति भारत पर एक मार्गदर्शिका के रूप में सन् 1909 पाँच खण्डों में प्रकाशित हुआ है तथा यह बम्बई के खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन से प्रकाशित है ।

इसमें भारत भ्रमण से पूर्व भारत के विभिन्न प्रान्तों के पर्यटन सम्बन्धी आवश्यक सूचनाओं जैसे भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं जलवायु की विस्तृत जानकारी अलग-अलग कुल पाँच खण्डों में प्रस्तु की गयी है । इस कृति के ग्रन्थकार साधुचरण प्रसाद है तथा वर्तमान में इस ग्रन्थ का अद्यतन संस्करण उपलब्ध नहीं है ।

20. भारतानुवर्णनम् / गणपतिशास्त्री टी.त्रिवेन्द्रम् (ग्रन्थकार)–1925, 2; 99 पृ. ।

यह ग्रन्थ गणपतिशास्त्री द्वारा प्रणीत "भारतानुवर्णनम्" संस्कृत भाषा में प्रकाशित भौगोलिक सूचना का एक महत्वपूर्ण प्राचीन स्रोत है । इसे 1925 ई. सन् में प्रकाशित किया गया है तथा इसमें कुल 99 पृष्ठों में सम्पूर्ण भारतवर्ष के धार्मिक, पौराणिक, भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं से सम्बन्धित तथ्यों का सविस्तार वर्णन किया गया है ।

भारत से सम्बन्धित संस्कृत में प्रकाशित-भौगोलिक स्रोत के रूप में यह एक महत्वपूर्ण कृति है ।

21. यात्रा के पन्ने / राहुल सांस्कृत्यायन - देहरादून : साहित्य सदन, 1952, 440 पृ.।

यह ग्रन्थ सन् 1952 में देहरादून के साहित्य सदन से प्रकाशित है तथा इसके लेखक राहुल-सांस्कृत्यायन हैं । इसमें लेखक ने किसी स्थान विशेष की यात्रा के सम्बन्ध में न लिखकर अपने सम्पूर्ण यात्रा से सम्बन्धि कुछ अंशों को ही प्रस्तुत किया है। यह ग्रन्थ एक प्रकार से यात्रा वृत्तांत का प्रमुख उदाहरण है ।

इसके अध्ययन से जिज्ञासु पाठकों को तत्कालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति के साथ ही साथ भौगोलिक परिवेश की जानकारी मिलती है ।

22. हुएन सांग का भारत भ्रमण; ठाकुर प्रसाद शर्मा (सुरेश) द्वारा अनुवादित-प्रयाग : इण्डियन प्रेस लिमिटेड, 1929, 708 पृ.।

इस ग्रन्थ में प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएनसांग के भारत भ्रमण की सम्पूर्ण वृत्तांत वर्णित है। यह ग्रन्थ सन 1929 में प्रयाग के इण्डियन प्रेस लिमिटेड द्वारा अनुवादित रूप में प्रकाशित है तथा इसके अनुवादक ठाकुर प्रसाद शर्मा (सुरेश) हैं। इसमें कुल 708 पृष्ठों का उपयोग हुआ है । इसमें हुएनसांग के समय में भारत में बौद्धमत तथा भगवान बुद्ध के प्रति जनता के हृदय में कितनी श्रद्धा थी, आदि की सूचनाएँ वर्णित है । इसमें उस समय के भारत में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दशाओं की विस्तार से विवेचना प्रस्तुत की गयी है ।

इसमें अंकित तत्कालीन भारत के विभिन्न स्थानों के नामों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है तथा उनके पुराने नामों के आगे (कोष्ठक) में आधुनिक नामों का उल्लेख भी है ।

यह कृति प्राचीन भारत के भौगोलिक सूचनाओं के साथ ही साथ इतिहास के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के लिए एव महत्वपूर्ण सन्दर्भ स्रोत है।

23. सम्पूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल/जगमोहन नेगी एवं अन्य–नई दिल्ली : तक्षशिला प्रकाशन, 1977, 319 पृ.

यह ग्रन्थ भारत के सम्पूर्ण सांस्कृतिक पर्यटन स्थल से सम्बन्धित एक मार्गदर्शिका के रूप में प्रकाशित है । इसमें भारत से सम्बन्धित पर्यटन के विभिन्न क्षेत्रों एवं स्थानों के सूचनाओं को कुल पाँच खण्डों में प्रस्तुत किया गया है । प्रथम खण्ड में भारत परिचय के अन्तर्गत पर्यटन मानचित्र, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिह्न एवं राष्ट्रीय गान का वर्णन है, जबकि शेष चार खण्डों में पर्यटन केन्द्रों से सम्बन्धित सूचनाओं के वर्णन के साथ उत्तर, पूर्व, पश्चिम एवं दक्षिण के पर्यटन मानचित्रों के अतिरिक्त अन्य आवश्यक सूचनाओं को संकलित किया गया है ।

यह पुस्तक भ्रमण करने वाले पर्यटकों के साथ ही साथ सभी श्रेणी के पाठकों के लिए भी उपयोगी है ।

24. Megasthanis Indicis / F.A. Schuvanbeck.-Bonnae, Publications, 1846. ix; 194 p.

इस ग्रन्थ में मौर्यकालीन भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भौगोलिक तथ्यों पर आधारित महत्वपूर्ण सूचनाएँ संकलित हैं। यह मौर्यकालीन भारतीय शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के एक यूनानी राजदूत मेगस्थनीज के द्वारा प्रणीत ग्रन्थ है जिसमें तत्कालीन भारत से सम्बन्धित तथ्यों को अनुक्रमणिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है ।

यह ग्रन्थ एफ. ए. स्वानबेक द्वारा संकलित है तथा सन् 1846 में प्रकाशित है तथा इसमें कुल पृष्ठों की संख्या 194 है तथा इस समय यह अति दुर्लभ ग्रन्थ है ।

25. Guide to Taxila /John Marshall.-Delhi : Managaer of Publications, 1936. 154 p.; xxv plates.

यह ग्रन्थ भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के प्रकाशन विभाग से 1936 में तक्षशिला पर आधारित एक मार्गदर्शिका के रूप में प्रकाशित है । इसमें पर्यटन की दृष्टिकोण से तक्षशिला के विभिन्न पहलुओं जैसे प्राचीन काल में पूरे विश्व में एक प्रसिद्ध उच्चशिक्षा केन्द्र, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं, तथा भारत एवं विश्व के किसी भी स्थान से यहाँ पहुँचने के क्या-क्या साधन है, आदि की आवश्यक सूचनाओं को इस दुर्लभ ग्रन्थ में वर्णन प्रस्तुत है।

इसमें सूचनाएँ अंग्रेजी में वर्णित है तथा कुल 154 पृष्ठों में संकलित है। इस ग्रन्थ के लेखक जौन मार्शल हैं।

26. भारत के बौद्ध तीर्थ / भारत-पब्लिकेशन डिवीजन - दिल्ली : मैनेजर प्रेस, 1956. सचित्र; 107 पृ.।

यह भारत सरकार के प्रकाशन विभाग, दिल्ली से सन् 1956 में प्रकाशित है तथा भारत में स्थित बौद्ध तीर्थों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्यों के माध्यम से इसमें जानकारी प्रदान की गयी है । विश्व के अनेक देशों के बौद्ध धर्मावलम्बी भारत में स्थित बौद्ध तीर्थ स्थलों के दर्शन के लिए आते रहते हैं । इस दृष्टिकोण से यह ग्रन्थ एक महत्वपूर्ण सूचना स्रोत है तथा इसमें आवश्यक सूचनाओं के साथ ही साथ छाया चित्रों को भी प्रस्तुत किया गया है ।

27. Guide to Sanchi / John Marshall.-Delhi : The Manager of Publiation, 1955. xiii; 168 p.

यह ग्रन्थ अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध पर्यटन स्थल साचिस्तूप जो मध्य प्रदेश में स्थित है से सम्बन्धित एक एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शिका के रूप में सन् 1955 में भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से प्रकाशित है । इस मार्ग दर्शिका में सांचिस्तूप तथा सांचि से सम्बन्धित पर्यटन सूचनाओं को कुल 168 पृष्ठों के माध्यम से अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत की गयी है। इसके ग्रन्थकार जौन मार्शल है ।

यद्यपि यह ग्रन्थ दुर्लभ है परन्तु सांचि से सम्बन्धित सूचनाओं के दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण स्रोत है ।

4. भारत के राष्ट्रीय भौगोलिक कोश-

1. National Geographical Dictionary of India / Jagadish Sharan Sharma.- Delhi : Sterling Press, 1972.

इस भौगोलिक कोश में भारत के भौगोलिक स्थानों की संक्षिप्त सूचना प्रदान किया गया है। प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत की सांस्कृतिक धरोहरों, वर्तमान भारत के सामाजिक एवं राजनैतिक विप्लव एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति के लम्बे संघर्ष से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाओं की जानकारी उपलब्ध कराने की उद्देश्य से लेखक ने इसे संकलित किया है । इसमें वर्णित महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थानों की सूचना के साथ ही साथ इसमें महत्वपूर्ण विभूतियों के जन्म-स्थान, सम्बन्धित स्थान की संस्कृति एवं सामाजिक पृष्ठभूमि आदि भी वर्णित है ।

इस कोश में सूचीकृत प्रविष्टियाँ वर्णानुक्रम में विन्यसित हैं । प्रत्येक प्रविष्टि में स्थान राज्य पुर्नसंगठन आयोग के प्रतिवेदन एवं नये-नये राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों पर आधारित मानचित्र के अनुसार प्रस्तुत किये गये हैं । प्रविष्टियों में स्थानों की वर्तनियों में एकरूपता के लिए भारत सरकार द्वारा प्रकाशित गजेटियर में प्रयुक्त समकालीन वर्तनियों की सहायता ली गयी है तथा इसमें वर्तनियों के लिए अन्तनिर्देश भी उल्लिखित हैं।

इस भौगोलिक कोश के अन्त में एक अनुक्रमणिका का उल्लेख है जिसमें स्थान एवं व्यक्तियों के नाम एवं अन्य आवश्यक सूचनाओं को वर्णानुक्रम में प्रस्तुत किया गया है । यह कोश भारत से सम्बन्धित विभिन्न स्थानों की भौगोलिक सूचना की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक अत्यन्त उपयोगी सूचना स्रोत है

5. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया-

(Imperial Gazetteer of India)

यह गज़ेटियर सर्वप्रथम सन् 1881 में कुल नौ खण्डों में प्रकाशित किया गया था। तत्पश्चात सन् 1882 में इसके अनुसंगिक खण्ड "द इण्डियन एम्पायर : इटस हिस्ट्री, पीपुल एण्ड प्रोडक्स" की शीर्षक के नाम से प्रकाशित किया गया । इम्पीरियल गज़ेटियर का द्वितीय संस्करण को 1885-87 में कुल चौदह खण्डों में प्रकाशित किया गया । जबकि इसके नवीन संशोधित संस्करणों को 1907-1909 में कुल 26 खण्डों में प्रकाशित किया गया। इसके नव संशोधित संस्करणों में राष्ट्रीय खण्डों के अतिरिक्त राज्यों को एक इकाई के रूप में प्राविन्सियल ग्रन्थमाला तथा जिला गज़ेटियर ग्रन्थमाला को यूनिट बनाकर प्रान्तें एवं अधिकांश जिलों के गज़ेटियर प्रकाशित किये गये । यह कृति भारत एवं यहाँ के निवासियों एवं भौगोलिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए एक विस्तृत एवं प्रामाणिक सूचना स्रोत हैं ।

इस गज़ेटियर के संशोधित संस्करण को 1965-78 की अवधि में "गज़ेटियर ऑफ इण्डिया : इण्डियन यूनियन" के नाम से चार खण्डों में भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग से प्रकाशित किया है । इन चार खण्डों में चार अलग-अलग शीर्षकों का उल्लेख है, जैसे–

प्रथम खण्ड - कन्ट्री एंड पीपुल;

द्वितीय खण्ड - हिस्ट्री एण्ड कल्चर;

तृतीय खण्ड - इकोनोमिक स्ट्रकचर एण्ड एक्टिभिटिज,

चतुर्थ खण्ड - एउमिनिस्टटरेशन एण्ड पब्लिक वेलफेयर ।

यह भौगोलिक कोश भारत के विभिन्न राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों की प्रामाणिक भौगोलिक सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए एक अत्यन्त उपयोगी सूचना स्रोत है । इसके प्रत्येक खण्ड में वर्णित अध्यायों में लेख के अन्त में पुस्तक सूची का उल्लेख है तथा आवश्यकतानुसार आँकड़े एवं मानचित्र भी दिये हुए हैं तथा प्रत्येक खण्ड के अन्त में वर्णानुक्रम में व्यवस्थित एक विस्तृत अनुक्रमणिका सूची संलग्न है ।

6. अन्य भौगोलिक स्त्रोत–

अयोध्या, काशी अथवा वाराणसी एवं मथुरा के धार्मिक एवं पौराणिक महत्व के भौगोलिक स्रोत–

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के उपलब्ध साहित्यों में उपर्युक्त वर्णित स्थानों को धार्मिक एवं पौराणिक दृष्टिकोण से विशेष स्थान दिया गया है । इन स्थलों से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य भारत एवं विश्व के अनेक ग्रन्थालयों में यत्र-तत्र संगृहत हैं। शोध कर्ताओं एवं जिज्ञासु पाठकों को आवश्यकता पड़ने इन साहित्यों को खोजने में अधिक समय लग जाता है जिससे शोध कार्य प्रभावित होने का भय बना रहता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इन पौराणिक एवं धार्मिक महत्व के स्थलों से सम्बन्धित विभिन्न ग्रन्थालयों में उपलब्ध-भौगोलिक हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थों की स्थानानुसार एक संक्षिप्त पुस्तकसूची यहाँ पर प्रस्तुत की गयी है।

अयोध्या-

इस पवित्र स्थान से सम्बन्धित उपलब्ध हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थों के विवरणों को भारतीय हस्तलिखित ग्रन्थों के प्रकाशित विवरण पंज्जिकाओं जैसे कैटेलोगस कैटेलागोरम, न्यू कैटेलागस कैटोलागोरम एवं सं.सं.वि.वि. के द्वारा प्रकाशित संस्कृत ग्रन्थानाम् विवरण पंज्जिका के पुराणेतिहास एवं गीता खण्ड से संकलित किया गया है ।

कैटेलोगस कैटेलागोरम के प्रथम खण्ड में अयोध्या से सम्बन्धित सूचीकृत हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण–

1. अयोध्या खण्ड
2. अयोध्या महात्मा
3. रामायण अयोध्याकाण्ड
4. रामाधारकृत रामायण पर द्वितीय ग्रन्थ-Oudh vi, 4.
5. रामार्चन पद्धति-रामांनन्दा - Oudh Xiv, 92.
6. रामार्चन पद्धति-रामानुजा-Oudh Xiv, 22
7. वैष्णवमताब्जभास्कर-रघुवर चरण-Oudh xiv, 92
8. रामानन्दा-Oudh Xv, 122.

न्यूकैटेलाग्रास कैटेलागोरम के प्रथम खण्ड में सूचीकृत अयोध्या से सम्बन्धित हस्तलिखित ग्रन्थों के विवरण-

1. अयोध्या क्षेत्र महिम वर्णन-रूद्रयामलम्, विकानेर, 1259
2. अयोध्या क्षेत्र संकल्प-अडयार I (87 a) पृ.

3. अयोध्याखण्ड

4. अयोध्या जी स्तवन-जैन, JASB 1908 p. 409 (no. 6808)

5. अयोध्यातीर्थ वर्णनम् PUL II p. 150.

6. अयोध्यामहात्यम् - इलाहाबाद, Bori, Adyar.

सं. सं. वि. वि. के सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहित अयोध्या से सम्बन्धित पौराणिक हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची–

1. अयोध्याकाण्डम् - 7/630
2. अयोध्या खण्डम् - 7/482
3. अयोध्या महात्म्यम्
4. रामक्षेत्र महात्म्यम
5. रामजन्म
6. रामजन्मागम संग्रह
7. रामजन्मोत्सववववर्णनम्
8. रामबालचरितम्
9. रामजन्म नवमी व्रत कथा
10. रामार्चन पद्धति
11. रामार्चन चन्द्रिका
12. रामजन्म गाथा
13. रामाद्यवतार कथा
14. रामाश्वमेध
15. सत्योपाख्यानम्
16. सत्यतपो पाख्यानम्
17. श्री जानकी भाष्य (ब्रह्मसूत्र परभाष्य)
18. रूद्रयामलम्

मुद्रित ग्रन्थ सूची-

1. सर्वदेश वृतांत संग्रह / महेश ठक्कुर; सम्पादन द्वारा सुभद्र झा.-पटना : विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1962 ।

2. अयोध्या का इतिहास / सीताराम.-प्रयाग : हिन्दुस्तान एकेडेमी, 1932, 10, 288 पृ.

3. रूद्रयामलम्

काशी अथवा वाराणसी-

संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रकाशित विवरण पंज्जिकाओं में कैटेलोगस कैटेलागोरम, न्यू कैटेलोगस कैटेलागोरम, तथा सं.सं. वि. वि. द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित विवरण पंज्जिका के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थालयों ने भी अपने अपने हस्तलिखित विवरण पंज्जिकाएँ प्रकाशित किये हैं । इन विवरण पंज्जिकाओं में काशी अथवा वाराणसी से सम्बन्धित सूचीकृत संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थों के शीर्षकों को एकत्रित करके व्यवस्थि क्रम में यहाँ पर प्रस्तुत किया गया है ।

कैटेलोगस कैटेलागोरम-(भाग-1) 1 0 5 p.

1. काशीप्रकरण
2. काशी प्रकाश
3. काशी प्रघट्टक
4. काशीमरणमुक्ति विचार
5. काशी महात्म्य
6. काशी महात्म्य कौमुदी
7. काशी रहस्य
8. काशी महात्म्य संग्रह
9. काशी मुक्ति प्रकाशिता
10. काशी मोक्ष
11. काशी मोक्ष निर्णय

कैटेलोगोस कैटेलागोरम (भाग-II) 2 0-2 1 P.

1. काशी खण्ड
2. काशी महात्म्य
3. काशी मोक्ष निर्णय
4. काशी विश्वनाथ स्तोत्र
5. काशी स्तोत्र ।
6. काशीस्थ गोरेमुख विवादाधिकारि प्रश्नानां कम्पनी काशी पाठशालास्थ पण्डितव्रतिदत्तोतराणां च संग्रहः ।

कैटेलोगस कैटेलागोरम- (भाग-I) 565 p.

1. वाराणसी महात्म्य ।
2. वाराणसी तीर्थ महात्म्य ।

न्यू कैटेलोगस कैटेलागोरम (खण्ड-4), 1968 ।

1. काशी कल्प लतिका ।
2. काशी कारिका ।
3. काशी केदार महात्म्य ।
4. काशी क्षेत्र निर्णय ।
5. काशी क्षेत्र यात्रा ।
6. काशी क्षेत्र संकल्प ।
7. काशी क्षेत्रस्य प्रार्थना ।
8. काशीखण्ड ।
9. काशी खण्ड कथा ।
10. काशी खण्डकथा केली ।
11. काशी खण्ड कथा भूषण ।
12. काशी खण्ड कथा संग्रह ।
13. काशी खण्ड चम्पू ।
14. काशी खण्ड महात्म्य ।
15. काशी खण्ड रहस्य ।
16. काशी खण्ड संग्रहः ।
17. काशी खण्ड सार संग्रह श्लोक ।
18. काशी खण्ड सारोद्धारः ।
19. काशी खण्डानुक्रमणिका ।
20. काशी खण्डोक्त पद्यावली
21. काशी गंगा स्नान विधि
22. काशी तत्व ।
23. काशीत्व कौमुदी ।
24. काशीतत्व दीपिका ।
25. काशी तत्व प्रकाशिका ।
26. काशी तत्व प्रकाशिका ।
27. काशी सारोद्धारः ।
28. काशीतत्व विचार ।
29. काशीतत्व विवेक ।

30. काशीपुर महिम वर्णनम् ।
31. काशी पुराण ।
32. काशीपुर्यष्टक
33. काशी प्रकरण
34. काशी प्रकाश ।
35. काशी प्रद्यटक
36. काशी प्रदक्षिणा ।
37. काशी प्रादुर्भाव ।
38. काशी मंगलस्तोत्र
39. काशी मरणफल
40. काशी मुक्ति विचार ।
41. काशीमरण विचार ।
42. काशी महात्म्य ।
43. काशी महात्म्य स्तोत्र ।
44. काशी मुक्ति प्रकाशिका ।
45. काशी मुक्ति विवेक ।
46. काशी मूल रहस्य ।
47. काशी मृतिमोक्ष निर्णय ।
48. काशी मोक्ष निर्णय ।
49. काशी मोक्ष प्रकाश ग्रन्थ ।
50. काशी यात्रा ।
51. काशी यात्राक्रम ।
52. काशी यात्रादिश्लोका ।
53. काशी यात्रानुवर्णन ।
54. काशी यात्रा पद्धति ।
55. काशी यात्रा प्रकरण ।
56. काशी यात्रा प्रकाश ।
57. काशी यात्रा प्रकाशिका ।
58. काशी यात्रा प्रशंसा ।
59. काशी यात्रा प्रात्युपाय ।
60. काशी यात्रा विधि ।

61. काशी यात्रा श्लोक ।
62. काशीरत्न माला ।
63. काशी रहस्य ।
64. काशी रहस्य कथा भूषण ।
65. काशी रहस्य प्रकाश ।
66. काशी रहस्य संग्रह ।
67. काशी रहस्य सार संग्रह ।
68. काशीराज ।
69. काशीराज चरित्र वर्णन ।
70. काशीराज संहिता ।
71. काशीवर्णन ।
72. काशीवासिनां देशाचार ।
73. काशी विधि ।
74. काशी विवेक ।
75. काशी विश्वनाथ स्तुति ।
76. काशी विश्वनाथ स्तोत्र ।
77. काशी विश्वनाथ मंगल स्तोत्र ।
78. काशी विश्वनाथाष्टक ।
79. काशी विश्वेश्वर स्तुति ।
80. काशीविश्वश्वरादि स्तोत्र ।
81. काशी विहार पुष्करिणी ।
82. काशी सार या काशी सारोद्धार ।
83. काशी सार महात्म्य ।
84. काशीसार शतक ।
85. काशीसार संग्रह ।
86. काशी सेतुः ।
87. काशीस्तवः ।
88. काशीस्तुति ।
89. काशी स्तोत्र ।
90. काशी स्मरण ।
91. काशी स्वरूपनिर्णय ।
92. काशीस्थ गंगा महिमा ।
93. काशीस्थित चन्द्रिका ।

संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थानाम विवरण पंञ्जिका (खण्ड-4 ; भाग-1)

1. काशी केदार महात्म्यम् ।
2. काशी खण्डम् ।
3. काशी खण्डम् सटीकम्।
4. काशी खण्ड कथा संग्रह : ।
5. काशी खण्ड टीका ।
6. काशीखण्डों प्याख्यानम् ।
7. काशीमरण फलम् ।
8. काशी महातम्यम् कौमुदी।
9. काशी महात्म्यम् ।
10. काशीमहात्म्यवर्णनम् ।
11. काशी महात्म्य संग्रह ।
12. काशी महात्म्य सार ।
13. काशी मुक्ति प्रकाशिका ।
14. काशी मुक्ति विवेकः ।
15. काशी मृति मोक्ष निर्णय ।
16. काशी सारः ।
17. काशी सारोद्धार ।
18. काशी स्थिति चन्द्रिका ।
19. काशीस्वरूप कथनम् ।

संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थानाम विवरण पंञ्जिका (खण्ड-4 ; भाग-II)

1. काशी केदार महात्म्यम
2. काशी क्षेत्र महात्म्यम्
3. काशी खण्डम्
4. काशी खण्डम् सटीकम्
5. काशी खण्डम् सव्याख्यानम्
6. काशी खण्ड कथा संग्रह
7. काशी खण्ड टीका
8. काशी खण्ड व्याख्या
9. काशीखण्डानुक्रमणिका

10. काशी खण्डे क्षेत्रतीर्थवर्णनम्
11. काशी तत्वम्
12. काशी तत्त्व विचारः
13. काशी तत्व विवेक संग्रहः
14. काशी देव यात्रा विवरण
15. काशी भक्ति सुधारर्णवः
16. काशी महिमा
17. काशी महात्म्यम्
18. काशी महात्म्यम् सविवरणम्
19. काशी महात्म्यम् सविवरणम्
20. काशी महात्म्य कौमुदी
21. काशी यात्रा ।
22. काशीयोगः
23. काशी रहस्यम्
24. काशी रहस्यम् सटीकम् ।
25. काशी रहस्य व्याख्या सेतुः ।
26. काशी वर्णनम् ।
27. काशी स्थित चन्द्रिका ।

संस्कृत हस्तलिखितग्रन्थानाम् विवरण पंज्जिका (खण्ड - 4; भाग-1)

1. वाराणसी रहस्यम् ।

संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थानाम विवरण पंज्जिका–(खण्ड-4; भाग II)

1. वाराणसी महिमा ।
2. वाराणसी महात्म्यम् ।
3. वाराणसी रहस्यम् ।

भारत के राष्ट्रीय ग्रन्थालय, कोलकता में काशी अथवा वाराणसी से सम्बन्धित संगृहीत मुद्रित ग्रन्थों की सूचियाँ–

1. E/O 954 A1 51-All about Benares. Containing a sketch from the Vedic days to modern time.
2. E/O 9/15. 4250084 R. 126. Banaras/ Raghubir Singh.
3. E. 915.4 In 26. Indian Science Congress. Banaras hand-book.
4. E 915.4 192v Varanasi / Rajbali Pandey, 1969.

5. E 915.4 Sa 71. Kashi : myth and reality/Baidyanath Saraswati.
6. E. 915.4 M 681 Banaras/ S.N. Mishra.
7. E 915.4 c 349 Banaras and Sarnath/ P.M. Chakravorty.
8. E 915.4 c.17 Banaras Strong hold of hinduism / Charles Philips Cape.
9. E 915.4 H 298 h (1). Banaras the Sacred City / E. B. Havell.
10. E 915.4 M 348 Benares La ville Sainte/ Jean Marques Riviere.
11. E 915.4 Se 71 - Banaras.
12. E 915.4 W 125 The Varanasi Guide book/ Paul Wagner.
13. E 915.425 0084 W 693 Banaras / Henry Wilson.
14. E 915.4 Sa 58m My Kashi-Badri / R. Shankaran.
15. E 915.4 V 669s The Sacred Complex of Kashi / Lalita Prasad Vidyarthi.
16. E. 954 M. 691B Banaras in transition (1738-95) / Kamala Prasad Mishra.
17. E 954.25 C 899 Culture and Power in Banaras (1800-1980)
18. E 954 Sa 59 be Banaras and the East India Company (1764-1795) / Surya Prakash Sanyal.
19. 167. B. 2 Historial notes on the Rajghat Plateau / Sir A. Colvin.
20. 179. A. 37. Life and work in Benares/ G. Kenedy, 1844.
21. 162.G.8 Journal of a route to Nagpoe / D.R. Leckie.
22. 162. G. 84 Smiling Benares /K.S. Muthiah & Comp.
23. 160. A. 19 (20) Benares and its antiquitiecs/ Mathew Atmore Sherring.
24. 162. G. 317. Benares and Sarnath / A Sadashiv Altekar.
25. 162. G. 48. Banares / Ram Lochan Singh.
26. 162. G. 143 A Handbook of Banaras / Arthure Parkar.
27. 162. G. 313 Holi Varanasi and Lumbini /S.M. Veerappan.
28. 211. K. 15 (1) Benares / James Princep.
29. 162. G. 183 The Holy city (Benares) / Rajani Ranjan Sen.
30. J.S. 954.03 D. 296 Vizier Alikhan or massacre of Banaras (1795-1890) / Sir John Francis Davis.
31. V.C. 954 A 179 Benares : Past and present / Ananta Sadashiv Altekar, 1943.
32. E. 294.54 Ec51 Banaras the city of Light /Dianna L. Eck.
33. E/O 301. 4430954 S. 64 Rajput Clan-settlements in Varanasi / Rambali Singh.
34. E/O 330. 954 Un 3 Var Servey of Varanasi / Union Bank of India.
35. E/O 954.250084 K 527 Banaras sacred city / Ashok Khanna, 1988.
36. E/O 378.54 B 43 Report of the BHU Inquiry committee to his highness the Chancellor-Delhi /BHU, Varanasi, 1946.

37. E/O 016/615538 B22 A descriptive Catalogue of manuscripts on Ayurveda in BHU./BHU Library, Varanasi.
38. E/O 614.0954 B22 Report of the Department of social Preventive Medicines/ College of Medical Science, BHU. Varanasi.
39. E/O 401.09425 Si 53 Bilingaulism and language maintenance in Banaras or Banarasi boli/ Beth Lee Simon.
40. E 378. 54 Su 728 BHU-(1916-1982) / V.A. Sundram.
41. E 378.54 Su 72 BHU- Symposium/ V.A. Sundram.
42. 162. G. 13 The Sacred city of Hindus / Mathew Atmore Sherring.
43. 162.G. 305 Banaras-holycity-Kashi/ S.H. Ali.
44. 172. C. 35 Selections from the Duncan records/ A. Shakespeare, 1873.
45. 169. F. 57 Speeches and writing of Pandit Madan Mohan Malviya (1919-)/ Madan Mohan Malviya.
46. 172.4 575 BHU (1905-1935)/V.A. Sundram.
47. E 915.425 Si64 Geography of tourism and recreation/ Sachidanand Singh, 1986.
48. E 301.209542 K 96 The Artisans of Banaras popular Cultue and identity, Nita Kumar, 1988.
49. E/O 352.054 D 262 Microlened Political elite; a study of the special background of Varanasi / Vijay Ranjan Datta, 1973.
50. E/O 915.40084 K 179 Portraits, the people of Varnasi / Tadayuki Kawahito, 1975.
51. E/O 730.954 G 959 Gupta Culture / BHU, Bharat Kala Bhavan Varanasi.
52. E/O 301-2095-425 T 549 Benares texts et Photographes/ Pierre Toutain, 1951.
53. 954 R./ 211r. The rebel nawab of Oudh : revolt of Vizier Alikhan, 1799, 1990.
54. 162, G. 33 The Banaras Guide book with sketch map of City and Suburbs by an old resident, Banaras, 1875.

मथुरा

कैटेलोगस कैटेलागोरम के प्रथम भाग में मथुरा से सम्बन्धित सूचीकृत हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण—पृ. 425

1. मथुरामहिमन्
2. मथुरामहात्म्य
3. मथुरामहात्म्य-बल्लभाचार्य ।
4. मथुरामहात्म्यसंग्रह ।
5. मथुरासेतु - अनन्तदेव ।

कैटेलोगस कैटेलागोरम के द्वितीय भाग में मथुरा से सम्बन्धित हस्तलिखित सूचीकृत ग्रन्थ का विवरण पृ. 97 ।

1. मथुरामहात्म्य

संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थानाम विवरण पंज्जिका (खण्ड-4 ; भाग 1) में मथुरा से सम्बन्धित सूचीकृत हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण–

1. मथुरामहात्म्यम् ।
2. मथुरामहात्म्यम् सचित्रम् ।
3. मथुरा महात्म्य संग्रहः ।

संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थानाम विवरणपंज्जिका का खण्ड 4 ; भाग-II)

1. मथुरामहात्म्यम् ।
2. मथुरासेतु ।

मथुरा से सम्बन्धित मुद्रित ग्रन्थ–

Uttar Pradesh Insformation Directorate Lucknow. Mathura.–Lucknow : Manager of Publication, 1955, ii, 34p. : maps.

❑❑

नवम अध्याय

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख शासकीय प्रलेख एवं शोध पत्र-पत्रिकाएँ : महत्त्व एवं सूचना स्रोत

(Government Documents and Important Research Journals/Serial of Sanskrit and Oriental Learnings : Importance and Information sources)

1. भूमिका-

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या साहित्य के इतिहास में शासकीय प्रलेख की अवधारणा सांस्कृतिक विरासत के रूप में प्राप्त हुयी है, क्योंकि वैदिक काल से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी तक के इतिहास जानने के लिए अनेक राजाओं द्वारा निर्मित करवाये गये स्तूप, मन्दिर, गुफा, तालाब एवं बावड़ी आदि पर लगाये हुए स्तम्भों तथा मूर्तियों के आसनों पर खुदे हुए अनेक लेख, मन्दिर एवं मठ के अर्पण की हुई सम्पत्ति के दानपत्र के उल्लेख, कुटुम्ब सम्बन्धी आवश्यक विषयों, राजकीय आदेशों, तथा धर्म के नियमों को सुवर्ण पत्रों पर खुदवाये जाने का उल्लेख मिलता है। सोना बहुमूल्य होने के कारण चांदी के पत्रों पर भी लेख खुदवाये जाते थे । परन्तु ताम्बा सभी अन्य धातुओं में सबसे अधिक लेखन सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता था । राजाओं तथा सामन्तों की तरफ से दान अथवा आदेश की सनदें ताम्बे पर खुदवाकर दी जाती थी और अबतक दी जाती है जिनको दानपत्र, ताम्रपत्र, ताम्र शासन या शासन पत्र कहते हैं। दानपत्रों के अतिरिक्त कोई राजाज्ञा अथवा स्तूप, मठ आदि बनाये जाने के लेख खुदवायी जाती थी । इतना ही नहीं राजकीय आदेशों से ताम्रपत्रों पर कभी-कभी पुरी पुस्तकें तक को खुदवायी जाती थी । सभ्यता के विकास के साथ ही साथ शासकीय प्रलेखों के आधार सामग्री के रूप में धातु के स्थान पर ताड़पत्र एवं भूर्जपत्र का उपयोग होने लगा । परन्तु कागज के आविष्कार के फल स्वरूप शासकीय प्रलेखों की प्रकाशन में पूरे विश्व में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज की गयी ।

2. महत्व-

पूरे विश्व में शासन को ही सबसे बड़ा प्रकाशक का स्थान प्राप्त होता है। शासकीय प्रकाशन जैसे प्राचीन काल में अनेक दृष्टिकोणों से उपयोगी एवं महत्वपूर्ण होते थे ठीक वैसे

ही वर्तमान विश्व में भी शासकीय प्रकाशन अनेक दृष्टिकोणों एवं उद्देश्यों के कारण उपयोगी एवं महत्वपूर्ण होते हैं। शासकीय प्रलेखों में क्षणिक नियताकालिकें, पुस्तकें, अनेक प्रकार के आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक, वित्तीय, अनुसन्धान, समितियों तथा आयोगों के प्रतिवेदन इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है । शासकीय प्रलेखों के अन्तर्गत राज्यों, स्थानीय निकायों एवं स्वायतशासी संस्थाओं के प्रकाशन को भी सम्मिलित किया जाता है। ऐसे शासकीय प्रलेखों को "भूरा साहित्य" (Grey Literature) के नाम से जाना जाता है।

3. परिभाषाएँ (Definitions)-

जिन प्रलेखों के प्रकाशनों के मुद्रण से सम्बन्धित व्यय को शासकीय निकाय वहन करते हैं, उन्हें शासकीय प्रलेख कहते हैं । इस प्रकार शासकीय प्रलेखों को प्रकाशित करने वाली शासकीय निकायों के विभिन्न इकाइयों जैसे न्याय पालिका, अनुसन्धान संस्थान, आयोगों, समितियों, वित्तीय संस्थानों, केन्द्र एवं राज्य सरकारों के अधीन कार्यरत संगठनों एवं कार्यालयों को सम्मिलित किया जा सकता है। उपयोग की दृष्टि से शासकीय प्रलेखों को तीन रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो इस प्रकार निम्नवत है–

1. शासन के प्रशासनिक अभिलेख;
2. अनुसंधान सम्बन्धी अभिलेख,
3. शासन से सम्बन्धित गुप्त अभिलेख.

शासकीय प्रलेखों की भौतिक स्वरूप किसी पुस्तक, नियतकालिक; प्रतिवेदन या शूक्ष्मरूपों (Microforms) में हो सकता है । शासन सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों को सम्पन्न करने में शासकीय प्रलेखों का उपयोग करना पड़ता है । जिसके लिए शासकीय प्रलेखों के सभी प्रकाशनों की जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ हस्तपुस्तिका, निर्देशिकाएँ एवं अन्य उपकरणों से परिचित होना आवश्यक होता है । शासकीय प्रलेखों की सहायता से सरकारी तन्त्रों को सूचना उपलब्ध कराने के साथ ही साथ आम नागरिकों को भी एक निश्चित सीमा तक सरकारी गतिविधियों से सम्बन्धित सन्दर्भ एवं सूचना सेवा प्रदान करने में बहुत सहायता मिलती है ।

4. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख शासकीय प्रलेख–

1. यूनेस्को वर्ल्ड मिमोरी रजिस्टर (The record of Outstanding documentary heritage from the all parts of the Word is procured in the memory of the World Register of Unesco, e.g. Some Indological Manusripts also included in it.

2. Catalogue of the Library of India Office, Vol.-II; Part -1, Sanskrit Books, London, 1897.

3. Catalogue of the Library of India Office, Vol.-II; Part-1, Sanskrit Books, Section I (A-G). London, 1938.

4. Catalogue of the Library of India Office, Vol.-II; Part-1, Sanskrit Books Section-II (H-Krshna-lilamrta). London, 1951.

5. Catalogue of the Library of India Office, Vol.-II; Part-1, Sanskrit Books, Section-III (Krsnalilamrta-R). London, 1955.

6. Catalogue of the Sanskrit, Pali and Prakrit Books in the Library of British Museum. London.

1. 1876-1892, C. Bendall, 1893.

2. 1892-1906, L.D. Barnett, 1908.

3. 1906-1928, L.D. Barnett, 1928.

7. Census of the exact sciences in Sanskrit / David Pingree (CESS) Series. A Volume-3 (ca to na). American Philosophical Library, Philadelphia, 1976.

8. National Commission for the compilation of History of Science in India.-New Delhi.

1. Bibliography of Sanskrit works on Astronomy and Mathematics by S.N. Sen, A.K. Bag and S. Rajeshwar Sharma.

9. Bibliotheque Nationale, Department des Manuscripts.

Catalogue Sommaire des manuscripts Sanskrit et Palis par A. Cabton. Paris.

Ier Facicule- Manuscripts-Sanskrit-1907.

IIe Fascicule-Manuscripts-Palis- 1908

IIIe Fascicule - Catalogue Sommaire des Manuscripts Indienne par A. Cabaton. 1912.

10. Duncan's Report to the British Government for opening the Government Sanskrit College of Benares.

11. Government of India. Ministry of Human Resource Development. Sanskrit Commission-1956-Report. Delhi : Manager of Publications, 1958.

12. Government of India. Ministry of Culture. National Mission for Manuscripts sponsored Project under Indira Gandhi National Center for Arts. New Delhi.

13. University Grants Commisson Report on C.D.C. for Sanskrit Education.

14. India. State Governments. Directorate of Sanskrit Education Report.

15. India. State Government. Reports of the Sanskrit Education Boards.

16. India . Uttarakhand State Government. Sanskrit as a second State Language-Reports.

17. Government of Inidia's Report on Sanskrit Year-2000 towards promotion of Children literature in Sanskrit.

18. Annual Report on Sanskrit Indian Epygraphy / Govt. of India.-Delhi. Manager of Publication.–

19. Imperial Library, Calcutta. A handlist of the Sanskrit Manuscripts in the Imperial Library, Calcutta. (In this list (410) Sanskrit Manuscripts quoted by the Library Numbers).

20. Indian Museum, Calcutta. A handlist of 11286 Sanskrit Manuscripts in the Indian Museum, Calcutta. (Presently this all manuscripts are stored and preserved in the Asiatic Society of Bengal Library, Calcutta).

21. Govt. of Orissa, State Musuem. Descriptive catalogue of Sanskrit Manuscripts - Vol. 1- Smrti Mss.–Bhuvaneshwar, 1958.

22. Corpus Inscriptionum Indicarum Vol.-4,/Government of India.-New Delhi : Archaelogical Department, 1955.

23. Catalogue of Sanskrit, Pali, and Prakrit Books-Supplement-1947-1980 / National Library, Kolkata, 1988.

24. A Compiled List of Sanskrit Documents preserved in the Foreign Offical Document Section of the National Library, Kolkata.

25. A Compiled List of Sanskrit Documents Preserved in the Indian Official Document Section of the National Library, Kolkata.

26. Reports of the Cultural Exchange Programme of Government of India, Ministry of External Affairs for Promotion of Sanskrit Language and Literature at International level.

27. Conferences, Seminars and Committees Reports of the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi.

28. National and International Standards of translations, transliterations and transcriptions for Sanskrit works from Devanagari script to Roman Script and other Languages.

5. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के शासकीय प्रलेखों की 'ई' एवं डिजिटल संस्करण-

कम्प्यूटर एवं संचार प्रद्यौगिकी के आगमन से पूरे विश्व में शासकीय प्रलेखों को डिजिटली एवं ईलैक्ट्रॉनिकली प्रकाशित किया जाने लगा है । परन्तु संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में शासकीय प्रलेखों की ऑन लाइन, डिजिटल अथवा इलैक्ट्रानिक संस्करणों की संख्या बहुत ही न्यून है । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्व के सभी देशों में शासन सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक निर्णय करने में विभिन्न प्रकार के सूचनाओं की आवश्यकता पड़ती है, जिसे इन्टरनेट एवं आनलाइन माध्यमों से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है ।

शासन सम्बन्धित कार्यों के सम्पादन में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या की भूमिका अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में बहुत ही सीमित है । फिर भी भारतीय परिवेश में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के शासकीय प्रलेख की डिजिटल संस्करण ब्रिटिश कालीन शासन के प्रारम्भिक चरणों में देखने को मिलता है । उस समय इंग्लैण्ड के संस्कृत विद्वानों द्वारा वाराणसी के प्रसिद्ध संस्कृत के आचार्यों एवं पंडितों द्वारा वेदमन्त्रों के सही उच्चारणों को पढ़वाकर संग्रहण के दृष्टिकोण से अनेक आडियो रिकार्ड तैयार कराया गया । शासकीय प्रलेखों की डिजिटल संस्करणों को संस्कृत में अधिकाधिक रूपों में प्रकाशित करने में केन्द्र एवं राज्य सरकारों की महत्वपूर्ण भूमिका है । परन्तु इसके लिए भारत के प्रत्येक राज्यों में हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के साथ ही साथ संस्कृत में भी सरकारी क्रियाकलापों एवं गतिविधियों से सम्बन्धित दस्तावेजों को ईलैक्ट्रानिक एवं डिजिटल रूपों में विकसित करना समीचीन प्रतीत होता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यूनेस्को का वर्ल्ड मिमोरी रजिस्टर संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के डिजिटल प्रलेख का एक प्रमुख उदाहरण है क्योंकि इसमें भारत के अनेक प्राचीन पाण्डुलिपियों को प्रलेखित किया गया है । राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार द्वारा अखिल भारतीय आकाशवाणी एवं दूरदर्शन प्रसारण सेवा के द्वारा समाचारों को संस्कृत भाषा में प्रसारण सेवा भी शासकीय प्रलेख की डिजिटल संस्करण का ही एक रूप है ।

इसी प्रकार भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संस्कृत आयोग-1956 के सम्पूर्ण प्रतिवेदन को इन्टरनेट पर उपलब्ध कराया गया है । परन्तु इस क्षेत्र में शासकीय प्रलेखों की डिजिटल प्रतियों की संख्या में वृद्धि हेतु केन्द्र एवं राज्य सरकारों के सभी विभागों में हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के साथ ही साथ संस्कृत में भी इन्टरनेट अथवा आनलाइन के माध्यम से उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है ।

6. संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के मुद्रित एवं ईलैक्ट्रॉनिक संस्करण-

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या की क्षेत्र में मुद्रित संस्कृत पत्रकारिता का पुष्पन-पल्लवन 19वीं सदी के अन्तिम चरण से प्रारम्भ हुई । भारतवर्ष में संस्कृत पत्रकारिता का सर्वप्रथम

शुरूआत 1866 ई. में वाराणसी में "काशी विद्यासुधानिधि" नामक पत्र से प्रारम्भ हुआ। यह संस्कृत शास्त्र से सम्बन्धित ऐतिहासिक पत्रिका सन् 1866 में वाराणसी के राजकीय संस्कृत पाठशाला से प्रकाशित हुई । इस पत्रिका के फलस्वरूप धीरे-धीरे संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार तथा प्रकाशन की गति में तेजी आने लगी । "काशी विद्यासुधानिधि" के प्रकाशन के ठीक दसवें वर्ष 1876 में इसे स्थगित होने के बाद 1887 से 1977 तक यह एक नये शीर्षक "पण्डित पत्रिका" के नाम से प्रकाशित होती रही तथा सन् 1942 में पुनः "पण्डित पत्रिका" शीर्षक को परिवर्तित करके "सरस्वती सुषमा" शीर्षक के नाम से अद्यावधि प्रकाशित होती है । कुछ अन्य प्रारम्भिक संस्कृत पत्रिकाओं में "विद्योदय" एवं "संस्कृत चन्द्रिका" नामक पत्रिकाएँ जो क्रमशः लाहौर, कलकत्ता तथा शोलापुर से प्रकाशित होना प्रारम्भ हुए । भारतीय संस्कृत पत्रकारिता को एक नयी दिशा प्रदान करने में इन संस्कृत पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही । "विद्योदय" संस्कृत पत्रिका का प्रकाशन 1871 से 1914 तक लाहौर में ऋषिकेश भट्टाचार्य के सम्पादकत्व में सम्पन्न होता रहा, परन्तु कुछ समय बाद पं. ऋषीकेश भट्टाचार्य लाहौर का त्याग कर स्थायी निवास के निमित कलकत्ता चले गये और वहीं से इस संस्कृत पत्रिका "विद्योदय" का प्रकाशन होने लगा । संस्कृत के नियतकालिक संस्कृत साहित्य का उदगम स्थल काशी या वाराणसी से ही एक अन्य संस्कृत पत्रिका–"पूर्णमासी" अथवा 'प्रत्यकर्मनन्दिनी" नामक शीर्षक से सत्यव्रत सामंश्रमी के सम्पादकत्व में 1876 से प्रकाशित होना प्रारम्भ हुई ।

संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की परम्परा काशी से उत्पन्न होकर धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारतवर्ष में इसके महता को स्वीकार किया जीने लगा । इसी क्रम में जयपुर की संस्कृत परम्परा में वहाँ के कुछ संस्कृत विद्वानों द्वारा सर्वप्रथम सन् 1904 में "संस्कृत रत्नाकर" नामक संस्कृत पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया जो सन् 1949 तक जयपुर से प्रकाशित होती रही । जब 1950 में यह संस्कृत पत्रिका जयपुर से अन्यत्र स्थानान्तरित हो गयी। ठीक इसके दो वर्ष बाद सन् 1952 में एक अन्य संस्कृत पत्रिका "भारती" नामक शीर्षक से पुनः प्रारम्भ हुई । जो अद्यावधि प्रकाशित होती है । यह मासिक पत्रिका है । सन् 1980 में संस्कृत अकादमी की स्थापना के बाद से राजस्थान में संस्कृत साहित्य के विकास में एक नयी कड़ी के रूप में "स्वरमंगला" नामक संस्कृत पत्रिका को प्रकाशित किया जाता है ।

इसी प्रकार विहार के संस्कृत परम्परा में विहार से प्रकाशित होने वाले संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में सर्वप्रथम सन् 1905 में "मिथिलामोद" नामक संस्कृत पत्रिका को मिथिलांचल से प्रकाशित किया गया । इसी क्रम में सन 1918 में पटना से "मित्रम्" नामक संस्कृत पत्रिका प्रकाशित हुई । सागर विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. उपाधि के लिए श्रीराम गोपाल मिश्र ने संस्कृत पत्रिका का इतिहास नामक शोध प्रबन्ध लिखा है, जो विवेक प्रकाशन, दिल्ली से 1980 में प्रकाशित भी है । इस शोध प्रबन्ध में 19वीं एवं 20वीं सदी के उदित एवं प्रायः सभी नियत कालिक संस्कृत पत्रिकाओं का सविस्तार उल्लेख किया गया है। श्री

रामगोपाल मिश्र के अनुसार 19वीं शताब्दी में कुल संस्कृतशास्त्र के पत्रिकाओं की संख्या 54 थी और 20वीं शताब्दी में यह संख्या बढ़कर 166 हो गयी । संस्कृत में दैनिक पत्रक प्रकाशित करने का साहस त्रिवेन्द्रम की जयन्ती और पूणे की संस्कृति के सम्पादकों ने भी किया था । कांचीवरम् के प्रतिवादि भयंकर मठ के अधिपति अनन्ताचार्य ने अपनी "मंजुभाषिणी" नामक मासिक पत्रिका अपने मठ का मत प्रचार करने के उद्देश्य से चलायी थी । मद्रास के आर. कृष्णम्माचार्य की सहृदया का उद्देश्य पौरस्य एवं पाश्चात्य विद्याओं का समन्वय करना था । इसी प्रकार अयोध्यावासी काली प्रसाद त्रिपाठी ने अपना "संस्कृतम्" नामक साप्ताहिक संस्कृति नियत कालिक चलायी थी ।

संस्कृत केवल धार्मिक व्यवहार की ही भाषा नहीं बल्कि एक अखिल भारतीय भाषा होने के कारण प्रायः भारत के सभी प्रदेशों के प्रमुख शहरों से संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होना उल्लेखनीय है । आधुनिक युग के राजकीय, सामाजिक, आर्थिक व्यवहारों में एवं यांत्रिक जीवन में आवश्यक आशय व्यक्त करने के लिए प्राचीन संस्कृत साहित्य में न मिलने वाले अनेक नवीन संस्कृत शब्दों का प्रचार इन संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा सम्भव हो सका है । इतना ही नहीं इन सभी संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में आधुनिक संस्कृत साहित्य का बहुत सारा उत्कृष्ट अंश यथावसर प्रकाशित होता रहा । अभी भी अनेक श्रेष्ठ संस्कृत नियत कालिकों में यथावसर प्रकाशित कथा, उपन्यास, खण्ड काव्य, नाटक आदि का यथोचित संकलन करना तथा उसके जिज्ञासुओं तक उपलब्ध करवाना एक महत्वपूर्ण कार्य है ।

आधुनिक संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के प्रादुर्भाव के कारण संस्कृत गद्य साहित्य में महान परिवर्तन हुआ है । प्राचीन संस्कृत लेखकों की क्लिष्ट लेखन शैली समाप्त होकर सरल सुबोध लेखन शैली प्रचलित हुई है तथा पुराने मुद्रित ग्रन्थों में संधियुक्त मुद्रण के अतिरेक से उत्पन्न दुर्वाचनीयता दोष को दूर करने में संस्कृत नियतकालिक साहित्य का महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

आधुनिक संस्कृत नियतकालिक वाङ्मय के विकास में संस्कृत के अनेक लब्धप्रतिष्ठ भारतीय विद्वानों में विद्यावाचस्पति अप्पा शास्त्री राशिवड़ेकर, रा. ना. दाण्डेकर, वेंकट राघवन, गुरूप्रसाद शास्त्री, दीनानाथ शास्त्री, चिन्ताहरण चक्रवर्ती, आर. कृष्णभट्टाचार्य, पं. मदन मोहन मालविय जी, म. म. पं. गोपीनाथ कविराज जी के साथ ही साथ यूरोपीय विद्वानों में आर्थर वेनिस एवं आर.टी.एच. ग्रिफिथ स्मरणीय है क्योंकि इन विद्वानों के अमूल्य योगदानों के फलस्वरूप संस्कृत पत्रकारिता को केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में एक नयी ऊँचाई प्राप्त हुई है।

7. पालि एवं बौद्ध वाङ्मय के प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ-

बौद्ध विद्वानों, कवियों एवं दार्शनिकों के द्वारा व्यक्तिगत रूप से ग्रन्थ रचना का कार्य कनिष्क के काल से ही प्रारम्भ हो चुका था। कनिष्क के काल में ही एक बौद्ध विद्वान एवं

कवि अश्वघोष द्वारा रचित ''बुद्ध चरित'' तथा ''सौंदानन्द'' नामक महाकाव्य इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। परन्तु पालि एवं बौद्ध साहित्य में नियतकालिकों के स्वतन्त्र अंकों के प्रकाशन 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रारम्भ हुए।

महाबोधि सोसाइटी, कोलकता के सौजन्य से सर्वप्रथम 1892 में ''महाबोधि'' शीर्षक से पालि एवं बौद्ध साहित्य के प्रथम शोध पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। तदनन्तर भारत में बौद्ध बहुल क्षेत्रों के साथ ही साथ अनेक एशियायी एवं यूरोपीय देशों में पालि एवं बौद्ध वाङ्मय से सम्बन्धित अलग-अलग भाषाओं में अनेक महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा। लन्दन में स्थित पालि टेक्सट्सट सोसाइटी द्वारा सन् 1882 में ही Journal of the Pali Text Society नामक शीर्षक से बौद्ध एवं पालि साहित्य का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका का अंग्रेजी में प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। जैन धर्म तथा प्राकृत साहित्य की भांति ही सन् 1882 से पूर्व बौद्ध धर्म एवं पालि साहित्य के शोधपूर्ण लेखों को Journal of Asiatic Society of Bengal अथवा सम्बन्धित अन्य शोध पत्रिकाओं के अंकों में प्रकाशित किया जाता था।

8. जैन धर्म एवं प्राकृत वाङ्मय के प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ–

जैन धर्म तथा प्राकृत साहित्य संस्कृत का ही एक अभिन्न शाखा है । जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के उपदेशों एवं दर्शन से सम्बन्धित प्रचुर साहित्य प्राकृत में उपलब्ध है । 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कुछ आधुनिक विद्वानों ने प्राकृत साहित्य एवं जैन आगमों का अध्ययन किया जिनमें हर्मन जैकोबी, बेबर पिशल और शूब्रिंग प्रमुख थे। परन्तु जर्मन विद्वान पिशल ने प्राकृत साहित्य की अनेक पाण्डुलिपियों का अध्ययन कर प्रकृत भाषाओं का व्याकरण नामक एक ग्रन्थ की रचना करके एक सराहनीय कार्य किया। इसी प्रकार मुनि जिन विजय जी के सम्पादकत्व में सिंधी सीरीज में प्राकृत साहित्य के अनेक अभिनव ग्रन्थ प्रकाशित हुए । तदनन्तर इस दिशा में अनेक सुयोग्य विद्वानों के योगदानों के फलस्वरूप अनेक सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक तथा साहित्यिक ग्रन्थों के साथ ही साथ जैन धर्म एवं प्राकृत वाङ्मय के अनेक शोधपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं अथवा नियतकालिकों को भी प्रकाशित किया जाता रहा है ।

सन् 1800 से पूर्व तक प्राकृत साहित्य अथवा जैन साहित्य से सम्बन्धित उच्च कोटि के लेखों को प्राकृत साहित्य के किसी स्वतन्त्र पत्रिका अथवा नियतकालिक में प्रकाशित न करके उन्हें भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं या एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल के पत्रिका में अथवा एनल्स आफ भण्डारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में प्रकाशित होते थे । परन्तु समय के साथ-साथ यह महशूस किया जाने लगा कि जैन धर्म तथा प्राकृत साहित्य से सम्बन्धित नियत कालिकों के स्वतन्त्र अंक प्रकाशित किया जाये । इस दिशा में बिहार राज्य के आरा जिला से ''जैनसिद्धान्त भास्कर'' नामक

एक स्वतन्त्र पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इसके अतिरिक्त जैन भवन, कोलकता से जैन पत्रिका प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ । इसी प्रकार जैन साहित्य से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय नियतकालिकों में यूनाइटेड स्टेटस आफ अमेरिका के कैलिफोरनिया से "जीव दया" नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया । जबकि उत्तरी अमेरिका में फेडरेशन आफ जैन असोसिएशन के सौजन्य से "जैन डाइडेस्ट" (Jain Digest) नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकासन प्रारम्भ हुआ । परन्तु जैन धर्म का अंग्रेजी में प्रकाशित प्रथम नियतकालिक "जैनिज्म" (Jainism) शीर्षक से प्रारम्भ किया गया था ।

सन् 1952 में पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी के सौजन्य से जैन विद्या के मासिक पत्रिका "श्रमण" नामक शीर्षक से प्रकाशन प्रारम्भ किया गया जिसकी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें अधिकांश लेख शोधपूर्ण होते हैं । सन् 1893 में प्रथम जैन सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें कोलीन मैकेन्जी नामक विद्वान ने अपना एक महत्वपूर्ण शोध लेख "Accounts of Jains" शीर्षक से प्रस्तुत किया था जिसको 1907 के Journal of the Asiatic Society of Bengal के अंक में प्रकाशित किया गया था ।

9. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या साहित्य के प्रमुख "ई" एवं डिजिटल पत्र-पत्रिकाएँ-

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या साहित्य से सम्बन्धित मुद्रित शोध पत्र-पत्रिकाओं एवं प्रकाशित नियतकालिकों में निहित सूचना को यथाशीघ्र प्राप्त करने में पाठकों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । इस समस्या के समाधान हेतु अनेक शोध एवं सर्वेक्षणीय अध्ययन कराये गये जिसमें यह पाया गया कि कम्प्यूटर एवं संचार प्रद्यौगिकी की सहायता से कम से कम लागत में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के मुद्रित पत्र-पत्रिकाओं के पूराने संस्करणो को डिजिटल करके E-Journals, Online Journals अथवा Digital Journals डेटाबेसों को तैयार करके इन्टरनेट, इन्ट्रानेट या आन लाइन कनेक्टीबिटी के द्वारा विश्व के किसी भी भूभाग में संस्कृत के जिज्ञासु बिना समय गवांये अपनी वांछित सूचना को यथाशीघ्र प्राप्त कर अपने शोधकार्य को नियत समय में पूरा करने में समर्थ हो सकते हैं ।

भारत सरकार के मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय के सौजन्य से संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के "ई" एवं डिजिटल पत्र-पत्रिकाओं को विकसित करने हेतु Jambudvipa Sanskrit and E-journals नामक परियोजना को प्रारम्भ किया गया है । इस दिशा में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के सौजन्य से "संस्कृत विमर्श" नामक ई-पत्रिका को नियमित रूप से प्रकाशित किया जाना एक दूसरा महत्वपूर्ण प्रयास है । इसके अतिरिक्त सम्पूर्णान्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के सौजन्य से "गवाक्ष" नामक संस्कृत ई-पत्रिका का नियमित संस्करण प्रकाशित होता है। इसके साथ ही साथ संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के पत्रिकाओं के ईलैक्ट्रानिक एवं डिजिटल संस्करणों के स्कैन्ड इमेज के अतिरिक्त इनके नवीन

संस्करणों को भी नियमित रूप से प्रकाशित किया जाता है । अध्याय के अन्त में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या साहित्य से सम्बन्धित महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं, धारावाहिकों, अथवा नियतकालिकों के मुद्रित एवं डिजिटल संस्करणों की विस्तृत सूची प्रस्तुत किया गया है जो संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के जिज्ञासुओं के लिए एक अत्यन्त उपयोगी सूचना स्रोत है ।

10. संस्कृतशास्त्र के प्रमुख मुद्रित पत्र पत्रिकाओं एवं धारावाहिकों का विवरण-

1. **''काशी विद्यासुधानिधि''** यह भारतवर्ष की प्रथम संस्कृत पत्रिका है जो सन् 1866 में राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी (वर्तमान में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) से प्रकाशित हुई ।
2. **''पण्डित पत्रिका''** यह राजकीय संस्कृत महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित ''काशी विद्यासुधानिधि'' का परिवर्तित नाम है तथा यह राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी द्वारा इसी नाम से 1857 से 1917 तक प्रकाशित होती रही ।
3. **''सरस्वती भवन ग्रन्थ माला एवं सरस्वती भवन अध्ययन माला''**— राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी द्वारा प्रकाशित ''पंडित पत्रिका'' के स्थान पर 1917 में सरस्वती भवन ग्रन्थ माला एवं अध्ययन माला के रूप में 1941 तक प्रकाशित होती रही ।
4. **''सरस्वती सुषमा''** यह संस्कृत पत्रिका राजकीय संस्कृत महा विद्यालय वाराणसी द्वारा प्रकाशित सरस्वती भवन ग्रन्थ माला एवं अध्ययन माला का परिवर्तित रूप है तथा यह 1942 से अब तक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित हो रही है ।
5. **''प्रत्यकर्मनन्दिनी''**—इस पत्रिका को सन् 1876 में सत्यव्रत सामश्रमी के सम्पादकत्व में संस्कृत भाषा में वाराणसी से प्रकाशित की गयी ।
6. **''विद्योदय''** यह संस्कृत पत्रिका सन् 1871 से 1914 तक लाहौर से ऋषीकेश भट्टाचार्य के सम्पादकत्व में प्रकाशित होती रही तथा 1914 के पश्चात् इसका प्रकाशन कलकत्ता से प्रारम्भ हुआ ।
7. **''संस्कृत रत्नाकर''**—यह संस्कृत पत्रिका सन 1904 से लेकर 1949 तक जयपुर, राजस्थान से प्रकाशित होती रही । तपश्चात् यह अन्यत्र स्थानान्तरित हो गयी ।
8. **''मिथिलामोद''** यह संस्कृत पत्रिका सर्वप्रथम 1905 में विहार के मिथिलांचल से प्रकाशित हुई ।
9. **''मित्रम''**— यह विहार की दूसरी संस्कृत पत्रिका थी जिसे 1918 में पटना से प्रकाशित किया गया ।

10. संगमनी, दारागंज, प्रयाग, (खण्ड-1; 1965-) ।
11. संविद (त्रैमासिक)
    मुम्बई : भारतीय विद्या भवन (खण्ड - 1; 1964-) ।
12. सागरिका
    सागर : सागर विश्वविद्यालय सागर (खण्ड-1; 1963-)।
13. गाण्डीवम
    वाराणसी : सं. सं. वि. वि. (खण्ड-1; 1964-)।
14. विश्वमनीषा
    दरभंगा : कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय (खण्ड-1; 1974-)।
15. विश्व संस्कृतम्
    पंजाब : वि. वे. शोध संस्थान होशियारपुर (खण्ड-1; 1963-)।
16. सुरभारती
    बड़ोदरा : बटोदर संस्कृत महाविद्यालय (खण्ड-1; 1964-)।
17. जयतु संस्कृतम्
    नेपाल (खण्ड-1; 1960-)।
18. दिव्य ज्योति (मासिक)
    शिमला (खण्ड-1; 1958-)।
19. सूर्योदय :
    वाराणसी : जगतगंज : भारत धर्म महामण्डल खण्ड-1; 1981-)।
20. निगमागमचन्द्रिका
    महाराष्ट्र : कोल्हापुर (खण्ड-1; 1952-)।
21. संस्कृत सीजवनम्
    पटना : विहार संस्कृत संजीवन समाज (खण्ड-1; 1986-)।
22. विश्वज्योति
    पंजाब : होशियारपुर (खण्ड-1; 1951-)।
23. संस्कृत विमर्श
    नई दिल्ली : राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (खण्ड-1; 1973-)।
24. अमृतवाणी
    संस्कृत संघ : सेन्ट जोसेफ कालेज (खण्ड-1; 1941-)।
25. गुरूकुल पत्रिका
    हरिद्वारा : गुरूकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय (खण्ड 1; 1958-)।

26. **दूर्वा**
मध्यप्रदेश : मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी (खण्ड-1; 1982-)।

27. **परिशीलम्**
लखनऊ : उ. प्र. संस्कृत अकादमी (खण्ड-1; 1987-)।

28. **पारिजातम्**
कानपुर (खण्ड-1; 1993-)।

29. **प्रणवपारिजात**
कलकत्ता (खण्ड-1; 1978-)।

30. **प्रतिभा**
बिकानेर : शार्दूल संस्कृत विद्यापीठ (खण्ड-1; 1958-)।

31. **प्राची**
वाराणसी : सं.सं.वि.वि. (खण्ड-1; 1950-)।

32. **प्राच्यप्रज्ञा.**
अलीगढ़ : मुसलिम विश्वविद्यालय (खण्ड-1; 1966-)।

33. **मागधम्**
विहार : आरा : एच. डी. जैन कालेज (खण्ड-1; 1967-)।

34. **मेधा**
रामपुर : शासकीय दू. श्री वे. संस्कृत महाविद्यालय (खण्ड-1; 1961-)।

35. **विहार संस्कृत सम्मेलनम्**
विहार (खण्ड-1; 1965-)।

36. **विश्वभारती पत्रिका**
शांति निकेतन : विश्वभारती (खण्ड-1; 1967-)।

37. **विश्वभाषा**
वाराणसी : संस्कृत प्रतिष्ठानम् (खण्ड -1; 1988-)।

38. **विश्वविद्यालय वार्ता**
वाराणसी : सं. सं. वि.वि. (खण्ड-1; 1978-)।

39. **शोधप्रभा**
नई दिल्ली : श्री लालबहादुरशास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ (खण्ड-1; 1970-)।

40. **शोध भारती**
हरिद्वार : गुरूकुल कागंड़ी विश्वविद्यालय (खण्ड-1; 1974-)।

41. सन्देश
वाराणसी (खण्ड-1; 1997-)।

42. सरस्वती सौरभम् गयोदशांक (एक अंक)
(खण्ड-1; 1963-)।

43. सुधर्मा (दैनिक संस्कृत),
मैसूर (खण्ड-1; 1972-)।

44. सुप्रभातम्
वाराणसी (खण्ड-1; 1925-)।

45. सुरभारती
बड़ौदा : सं. महाविद्यालय (खण्ड-1; 1960-)।

46. संस्कृत प्रचारकम्
हिमाचल प्रदेश : शिमला (खण्ड-1; 1954-)।

47. संस्कृत भारती
जयपुर : गोपालजी का रास्ता (खण्ड-1; 1952-)।

48. विश्वभाषा
मुम्बई (खण्ड-1; 1988-)।

49. अजस्त्रा (तैमासिक)
लखनऊ : अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् (खण्ड-1; 1977-)।

50. देववाणी (मासिक)
मुंगर : देववाणी कार्यालय (खण्ड-1; 1960-)।

51. पाटली श्री (त्रैमासिक)
पटना : वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन (खण्ड-1; 1965-)।

52. विद्यार्थी (मासिक)
पटना : - (खण्ड-1; 1978-)।

53. धर्मनीति तत्वम्
पटना (खण्ड-1; 1880-)।

54. मिथिला माण्द (मासिक)।
वाराणसी - (खण्ड-1;)

55. साहित्य सुधा (मासिक)
पटनाः–(खण्ड-1; --)।

56. **परमार्थ सुधा (त्रैमासिक)**
राँची :– (खण्ड-1; 1976-)

57. **वाणी (त्रैमासिक)**
पटना - (खण्ड-1; --)।

58. **मिथिलामिहिर**
दरभंगा–(खण्ड-1; 1986-)।

59. **संस्कृत दर्शनम् (द्वैमासिक)**
मुजफ्फरपुर (खण्ड-1; 1987-)।

60. **सूर्योदय (मासिक)**
विहार : सारण – (खण्ड-1; 1926-)।

61. **संस्कृत संजीवनम्**
पटना–(खण्ड-1; 1940-)।

62. **संस्कृत वैजयन्ती (मासिक)**
पटना : – (खण्ड-1;--)।

63. **दर्शन केशरी**
विहार : सारणः–(खण्ड-1; 1964-)।

64. **शिखरिणी**
राँचीः–(खण्ड-1; 1977-)।

65. **सम्पादक शारदा (मासिक)**
भोजपुर - खण्ड-1; 1913-)।

66. **मागधम् (मासिक)**
आरा – खण्ड-1; 1967-)।

67. **संस्कृत सम्मेलनम् (त्रैमासिक)**
विहार : पटना (खण्ड-1; 1964-)।

68. **विश्व संस्कृत सम्मेलन विशेषांक**
वाराणसी : सं. सं. वि. वि. (खण्ड-1-4; 1978-)।

69. **अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन विशेषांक**
राँची : संस्कृत सेवा संघ (खण्ड-1; 1989-)।

70. **अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन विशेषांक**
सीवान : संस्कृत सेवा संघ (खण्ड-1; 1992-)।

71. 42वाँ अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन विशेषांक वाराणसी : सं. सं. वि.वि. (खण्ड-1; 2005-)।

72. 42 वाँ अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन स्मृति विशेषांक वाराणसी : सं. सं. वि. वि. (खण्ड-2; 2005-)।

73. मनोरमा (संस्कृत पत्रिका)
बेहरामपुर - (खण्ड -1; --)।

74. मलयमारूत
तिरूपतिः केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ (खण्ड-1; --)।

75. सहृदयः
श्रीरंगम् : - (खण्ड-1;--)।

76. संबोधि
अहमदाबाद–(खण्ड-1;--)।

77. "श्री" (संस्कृत पत्रिका)
श्रीनगर : काश्मीर (खण्ड-1;--)।

78. संस्कृत संदेश नेपाल : काठमाण्डू (खण्ड 1 ,--)।

79. राष्ट्रीय चेतना विशेषांक
नई दिल्ली : श्री ला. ब. शा. सं. वि.पी. (खण्ड -1;--)।

80. शब्द तत्व विमर्श विशेषांक
नई दिल्ली : श्री ला. बा. शा. सं. वि.पी. (खण्ड-1;--)।

81. संस्कृत वर्ष विशेषांक
नई दिल्ली : श्री ला. ब. शा. सं. वि. पी. (खण्ड-1;--)।

82. पंचम विश्व संस्कृत सम्मेलन विशेषांक
वाराणसी - (खण्ड -1;--)।

83. महस्विनी (छमाही)
तिरूपति : राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठम्
(खण्ड-1; 1999-)।

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के अंग्रेजी में प्रकाशित प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ-

84. Journal of Allahabad University Studies. Allahabad : Allahabad University (Vol. 1; 1925) (Note : Sanskrit Section appeared in the Ist and 2nd Volume of this Journal in 1940-41)

85. Indian thought of Sanskrit Literature. Allahabad. (Vol. 1; 1907-)

86. Sanskrit Research.
Poona : The Oriental Book Supplying Agency (Vol. 1; --)

87. Sanskrit Sahitya Parishad
Calcutta : S.S.P. (Vol.1; 1840-)

88. Sanskrit Journal Sahridaya.
Srirangam : Sri Van Villas Press, (Vol. 1;--)

89. Sukti Sudha
Varanasi (Vol. 1; 1905-)

90. Sanskrit Bharati.
Varanasi (Vol. 1; 1324-) (Year is mentioned in Bengali year)

91. Piyusha Patrika.
Ahmedabad (Vol. 1; 1853) Year is metioned Saka.

92. Satpatha.
Jaipur (Vol. 1; 1932-)

93. Sanskrit Ratnakar
Jaipur : Sanskrit Sahitya Sammelan
(Vol. 1; 1933-)

94. Amarbharati.
Varanasi : Government Sanskrit College (Vol.1; 1934-)

95. Manas Patrika.
Banaras Copy (Vol. 1; 1905-)

96. Journal of Ganganath Jha Research Institute.
Allahabad : GJRI (Vol. 1; 1943-)

97. Sriman Maharaj Sanskrit Mahavidyalaya Patrika.
Mysore. (Vol. 1; 1925-)

98. Brahmavidya
Calcutta (Vol. 1; 1319-) Year is given in Bengaliera.

99. Journal of Sri Venketeshwara Research Institute Tamil Nadu : Tirupati
(Vol. 1; 1940-)

100. Sanskrit Pratibha
New Delhi : Sahitya Academy (Vol.1; 1959-)

101. The Adyar Library Bulletin (Brahm-Vidya).
Madras : Adyar (Vol. 1; 1937-)

102. Bharatiya Vidya Bhawan.
Bombay (Vol. 1; 1939-)

103. Manjoosha
Calcutta (Vol. 1; 1935)

104. Journal of Amamalai University
Annamalai Nagar (Vol1; 1932-)

105. Journal of Tanjore Saraswati Mahal Library Tanjore (Vol. 1; 1940-)

106. Journal of the Travancore University Oriental Manuscripts Library.
Trivendrum (Vol.1; 1945-)

107. Our Heritage
Calcutta : Sanskrit College (Vol. 1; 1953-)

108. Chandi.
Allahabad (Vol. 1; 1943-)

109. Bharati Sanskrit (Monthly)
Jaipur (Vol. 1; 1950-)

110. Val Sanskritam.
Bombay (Vol. 1; 1964-)

111. Vishvavesh Anand Indological Journal.
Panjab : Hoshiyarpur (Vol. 1; 1963-)

112. Vishva Sanskritam.
Panjab : Hoshiyarpur (Vol.1; 1963-)

113. The Vikram.
Ujjain : Vikram University (Vol. 1; 1957-)

114. Journal of Vedic Studies.
Lahor : (Vol. 1; --)

दर्शनशास्त्र के प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ–

115. The Philosophical Quarterly.
Madras (Vol. 1; 1925-)
116. Review of Philosophy and Radigion.
Poona (Vol-1; 1930-)
117. Indian Philosophical Review.
118. Indian Philosophy and Culture of Vairova Research Institute.
119. Darshan International.
Moradabad (Vol. 1; 1961-)
120. Darshan Traimasik
Varanasi (Vol-1; 1954-)
121. मित्रगोष्ठी
वाराणसी (खण्ड-1; 1826-)
122. श्री अरविन्द कर्मधारा
दिल्ली अरविन्द आश्रम (खण्ड-1; 1970-)
123. देशिका सुधा
प्रयाग : वेदान्त देशिक सेवासंघ (खण्ड-1; 1968-)
124. Indian Philosophical Quarterly.
Poona : University of Poona (Vol.-1; 1973-)
125. Research Journal of Philosophy.
Ranchi : Ranchi University (Vol.-1; 1965-)
126. Bulletin of Rma Krishna Mission Institute of Culture .
Kolkata (Vol.-1;--)
127. Divya Jyoti.
128. Mountain Path.
129. Journal of Indian Council of Philosophical Research.
New Delhi (Vol-1;--)
130. Philosophy and Social Action.
131. Research Journal of Philosophy and Social Science.
132. Path way to God.
133. Yoga and Total Health.

दर्शनशास्त्र के प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाएँ :

134. British Journal of Philosophy of Science (Uk).
135. Ethics (USA)
136. History of religions (USA).
137. Journal of Philosophy (USA).
138. Mind (UK).
139. Philosophy : East and West (USA).
140. Philosophical Quarterly (UK).
141. Review of Metaphysics (USA)

योग एवं मीमांसा के प्रमुख पत्र पत्रिकाएँ :

142. Yoga Mimamsa
    Bombay (Vol.-1; 1924-)
143. मीमांसा प्रकाश
    पूणे (खण्ड-1; 1936-)
144. Journal of the Yoga Institute.
    Santacruz (Vol.1; 1954-)

धर्मशास्त्र के प्रमुख शोध पत्रिकाएँ, धारावाहिक एवं पत्र-पत्रिकाएँ :

146. Theosophy in India. Banaras (Vol.-1; 1903-)
147. Savita (Veda Sansthan) Ajmer (Vol.-1; 1946-)
148. कल्याण
    गोरखपुर : गीता प्रेस (खण्ड-1; 1931-)
149. वेद वाणी
    वाराणसी (खण्ड-1; 1947-)
150. Journal of Dharm (Quarterly).
    Banglore (Vol-1; 1947-)
151. अन्नदापुष्पांजलि
    वाराणसी : अन्नपूर्णा मन्दिर (खण्ड-1; 1977-)
152. गीता धर्मः
    वाराणसी : गीता प्रचार मन्दिर (खण्ड-1; 1935-)

153. गीता संगीत
इलाहाबाद (खण्ड-1; 1973-)

154. श्रीरामानन्द सन्देश
अहमादाबाद : रामानन्द सन्देश कार्यालय (खण्ड-1; 1959-)

155. राष्ट्र धर्म
लखनऊ (खण्ड-1; 1964-)

156. वेदोधारिणी ।
दिल्ली : वेदोधारिणी सभा (खण्ड-1; 1985-)

157. व्रजगंधा
मथुरा : रामाश्रय कृष्णापुरी (खण्ड-1; 1985-)

158. श्री कबीर शांति सन्देश
वाराणसी : कबीर रोड (खण्ड-1; 1977-)

159. सनातनशास्त्रक.
कलकत्ता (खण्ड-1; 1373-)-अवधि बांग्ला में अंकित है ।

160. सत्यानन्दम्
कलकत्ता : सत्यानन्द देवायतन (खण्ड-1; 1988-)

161. सन्देश
वाराणसी (खण्ड-1; 1977-)

162. सविता (मासिक पत्रिका)
अजमेर : वेद संस्थान (खण्ड-1; 1949-)

163. हिन्दू विश्व
नई दिल्ली : विश्व हिन्दू परिषद (खण्ड-1; 1965-)

164. Hindu Spiritual Magazine.
(Vol.-1; 1906-)

165. The Journal of the Sri Sankaragurukulam.
Srirangam (Vol.1; 1939-)

166. Kailash : Journal of Himalayan Studies.
Nepal : Kathmandu (Vol.1; 1973-)

167. मानव धर्म
नई दिल्ली (खण्ड-1; 1984-)

168. वेद-प्रदीप
बम्बई (खण्ड-1; 1985-)

169. गुरूकुल पत्रिका
हरिद्वार : गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (खण्ड -1; 1948-)

170. The Sikh Review.
Calcutta (Vol.-1; 1952-)

पुराणशास्त्र के प्रमुख धारावाहिक एवं शोध पत्रिकाएँ :

171. Puranam.
Varnasi : Kashi Raj Fort Ramnagar (Vol.1; 1959-)

172. Puran Buletin.

173. नैमिषीयम्
सीतापुरः पौराणिक तथा वैदिक अध्ययन एवं अनुसन्धान संस्थान (खण्ड-1; 1980-) ।

ज्योतिषशास्त्र के प्रमुख धारावाहिक एवं शोधपत्रिकाएँ :

174. ज्योतिष कल्प.
लखनऊ : अमिनाबाद (खण्ड-1; 1970-)

175. ज्योतिष-मार्तण्ड
जयपुर : वापुनगर (खण्ड-1; 1968-)

176. अन्तरिक्ष खगोल विज्ञान ज्योतिष मथुरा (खण्ड-1; 1979-) ।

आयुर्वेदशास्त्र के प्रमुख धारावाहिक एवं शोध पत्रिकाएँ :

177. Journal of Ayurveda Hindu System of Medicine.
Calctutta (Vol.1; 1924-)

178. आयुर्वेद रहस्य
सौराष्ट्र : गोण्डल (खण्ड-1; 1914-)

179. आयुर्वेद भारती (बंगला)
कलकत्ता (खण्ड-1; 1961-)

180. आयुर्वेदलोक (त्रैमासिक)
गुजरात : जामनगर (खण्ड-1; 1964-)

181. आयुर्वेदालोक
कलकत्ता (खण्ड-1; 1961-)

182. धान्वन्तरीयम
गोरखपुर (खण्ड-1; 1975-)

पाण्डुलिपि विज्ञान, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति, भारतीय तथा प्राच्य विद्या के प्रमुख धारावाहिक एवं शोध पत्रिकाएँ :

183. Manuscript Journal (Sarda)
Bombay (Vol-1; 1940-)

184. Indian Linguistics
Poona Deccan College (Vol-1; 1931-)

185. Journal of Indological Research Institute.
Dwarka : Saradapeeth Pradipa (Vol-1; 1961-)

186. Bharatiya Sanskriti.
Bangalore (Vol.-1; 1954-)

187. Journal Of Indian History.
Trivendram : University of Kerela (Vol.-1; 1923-)

188. Memories of the Royal Asiatic Society Calcutta (Vol. 4; 1941-)

189. The Journal of Asiatic Society.
Calcutta (Vol. 1; 1841-)

190. Journal of the Royal Asiatic Society of Bengal.
Calcutta (Vl.-1; 1905-)

191. Indian Historical Quarterly.
Delhi (Vol. 1; 1925-)

192. पूर्णिमा (त्रैमासिक)
नेपाल (खण्ड-1;--)

193. The Journal of Oriental Research Madras. Madras (Vol.-4; 1927--)

194. Annals of the Bhandarkar Institute .
Poona (Vol.-1; 1918-)

195. Indian Antiquary - A journal of Oriental Research.
Bombay (Vol.-1; 1872-)

196. Journal of the American Oriental Society.
U.S.A.: Conneticut (Vol.-1; 1850-)

197. All Indian Oriental Conference.
Panjab: Hosiarpur (Vol.-1; 1920-)

198. Calcutta Oriental Journal.
Calcutta (Vol-1; 1933-)

199. The Poona Orientalist.
Poona: Oriental Book Agency (Vol.-1; 1936-)

200. Annals of Oriental Research University of Madras.
Madras (Vol.-1; 1936-)

201. Journal of the Kerela University Oriental Research Institute and Manuscript Library. Trivendraum (Vol.-1; 1945-)

202. Journal of the Oriental Institute of M.S. University. Baroda (Vol. 1; 1951-)

203. Pragna (प्रज्ञा)
वाराणसी : का. हि. वि. वि. (खण्ड-1; 1957-)

बौद्ध धर्म एवं पालि साहित्य के प्रमुख धारावाहिक एवं शोध पत्रिकाएँ :

204. Journal of Indian Buddhist Studies.
Japan: University of Tokio (Vol-1; 1952-)

205. Maha Bodhi.
Calcutta (Vol.-1; 1892-)

206. Tibet Journal.
Tibet: - (Vol. 1;--)

207. श्रमण विद्या.
वाराणसी : सं. सं. वि.वि. (खण्ड-1; 1988-)

208. प्रजासत्ताक (साप्ताहिक) सं.बी.सी. काबालें चन्द्रपुर (मराठी)।

209. श्रावस्ती (मासिक), श्रावस्ती (हिन्दी)।

210. धर्मदूत - महाबोधिसोसाइटी, सारनाथ, वाराणसी, (हिन्दी)।

212. Journal of the Pali Text Society. London: Pali Text Society (Vol.-1; 1882-)

213. महावोधि
वाराणसी : सारनाथ (खण्ड-1; - -)

जैन धर्म तथा प्राकृत साहित्य के प्रमुख मुद्रित पत्र-पत्रिकाएँ :

214. जैन सिद्धान्त भास्कर,
विहार : आरा :– (खण्ड-1; 1921-)

215. तीर्थकरं
इन्दौर : – (खण्ड-1; 1970-)

216. श्रमण
वाराणसी : पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान
(खण्ड-1; 1950-)

217. Jain Journal
Kolkata : Jain Bhawan (Vol. 1; - -)

218. Jainism (Ist English Jain Journal)
(Vol. 1;–)

219. Jain Digest (Quarterly)
North America : Federation of Jain Association (Vol. 1; - -)

220. अनेकान्त (त्रैमासिक)
नई दिल्ली : वीर सेवा मन्दिर (खण्ड-1; 2008-)

221. प्राकृत विद्या (छमाही)
नई दिल्ली : श्री कुन्द भारती ट्रस्ट
(खण्ड-1; 1998-)

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या साहित्य से सम्बन्धित प्रमुख ''ई'' एवं डिजिटल पत्र-पत्रिकाओं का विवरण :

222. Jambuduipa Sanskrit Text and E-Journals.
223. E-magazin on Indian Languages Sanskrit, Pȧli, Prakrit and other Indian Languages.
224. Kamat Research Database List of Indian Journals.
225. Gurukulam E-journals.
226. Indian Periodicals of E-Publications Online Journals.
227. E-Journal of Buddhist Ethics.

228. Sanskrit Vimarsha E-Journal.
New Delhi; RSS (Vol.-1;--)

229. Gawakesh E.- Magazin
Varanasi : SSVV (Vol. 1--)

230. E-Journal of American Oriental Society.

231. Spiritual Emagazines...

232. http://www.inbuds.net.

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. प्राचीन भारतीय लिपिमाला / राय बहादुर पं. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, मुंशीराम मनोहर लाल, नई दिल्ली, 1971, 150-155 पृ.।

2. सूचना एवं सन्दर्भ के प्रमुख स्त्रोत / एस.एम. त्रिपाठी एवं जे. एन. गौतम, वाई. के. पब्लिशर्स, आगरा, 2005. 302-303 पृ.

3. काशी की पाण्डित्य परम्परा / आचार्य बलदेव उपाध्याय, विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1983 ।

4. संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास/राम गोपाल मिश्र, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 1980।

5. संस्कृत वाङ्मय कोश (ग्रन्थकार खण्ड)/श्रीधर भास्कर वर्णेकर, भारतीय भाषा परिषद, कोलकता, 1988, 266-267 पृ.

7. 20वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य को बिहार का अवदान / ब्रज मोहन तिवारी, आदित्य बुक सेन्टर, दिल्ली, 2002 ।

8. जयपुर की संस्कृत परम्परा / देवर्षि कलानाथ शास्त्री, हंसा प्रकाशन, जयपुर, 2000 ।

9. प्रकाशन सूची / सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2008 ।

10. पालि साहित्य का इतिहास / भरत सिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1949 ।

11. जैन साहित्य का बृहद इतिहास / मोहन लाल मेहता, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1964. प्राक्कथन ।

12. प्राकृत साहित्य का इतिहास / जगदिश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1961. भूमिका ।

□□

दशम अध्याय

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख भारतीय ग्रन्थालय, प्रकाशन प्रतिष्ठान एवं विश्व संस्कृत पुस्तक मेला-एक विहंगम अवलोकन

(Popular Indian Libraries, Famous Indian Publishers and the World Book Fair of Sanskrit and Oriental Learnings : A Birds eye View)

1. भूमिका (Introduction)-

प्राचीन भारत वर्ष के जितने शिक्षा केन्द्र थे उनमें नालन्दा महाविहार का नाम अन्यतम था । एक बौद्ध विश्वविद्यालय होने के कारण इसमें बौद्ध धर्म, दर्शन इतिहास, निरूक्त, न्याय आदि शास्त्रों के अध्ययन के साथ ही साथ ब्राह्मण तथा अन्य धर्म, दर्शन आदि शास्त्रों की भी यहाँ ऊँची से ऊँची स्तर की पढ़ाई होती थी तथा इस शिक्षा केन्द्र में तीन विशाल ग्रन्थालय थे । इसके अतिरिक्त प्राचीन कालीन भारत के अन्य प्रान्तों में भी पारम्परिक शिक्षा के अध्ययन एवं अध्यापन की व्यवस्था संचालित होती थी । प्राचीन भारत वर्ष में काशी (वर्तमान वाराणसी), नालन्दा, तक्षशिला, कश्मीर एवं मगध संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के अध्ययन एवं अध्यापन के प्रमुख केन्द्र के रूप में विकसित थे । वलभी विश्वविद्यालय, विक्रमशीला वि.वि. जगदल वि.वि. एवं ओदन्तपुरी वि.वि. इसके प्रमुख उदाहरणों में सम्मिलित किया जा सकता है । जातक युग में काशी (वर्तमान वाराणसी) वेद विद्याओं के अध्ययन एवं अध्यापन के लिए विख्यात थी । बोधिसत्व द्वारा संचालित काशी के विद्यालय में सौराष्ट्रों से आये हुए ब्राह्मण और क्षत्रिय कुमार वैदिक साहित्य का अध्ययन करते थे । इसी प्रकार कश्मीर में कुछ आचार्यों के घर पर भी विद्यालय थे । मन्दिरों में बड़े-बड़े विद्यालय होते थे । राजा अवन्ति वर्मा के मन्त्री शूर ने महोदय में महोदय स्वामी की प्रतिष्ठा की थी तथा उस मन्दिर में राम उपाध्याय वैयाकरण को व्याख्याता बनाया । विद्यार्थियों के रहने के लिए मठों का निर्माण होता था । कल्हण द्वारा रचित साहित्य में ''यशकर'' नामक एक ब्राह्मण राजा को मठ निर्माता के रूप में दर्शाया गया है । इन मठों में रहकर अध्ययन करने

वाले विद्यार्थियों को ग्रन्थालय की सुविधा भी दी जाती थी जिनमें वैदिक साहित्य के विभिन्न हस्तलेखों को संग्रह किया जाता था ।

बौद्ध शिक्षण संस्थाओं के प्रसिद्ध प्रवर्तक गौतम बुद्ध थे । प्राचीन भारत वर्ष में हिन्दू धर्म एवं वैदिक साहित्य के साथ ही साथ बौद्ध धर्म तथा बौद्ध साहित्य का अध्ययन एवं अध्यापन अपने चरमोत्कर्ष पर था। नालन्दा महाविहार विश्वविद्यालय, नालन्दा तथा तक्षशिला विश्वविद्यालय, तक्षशिला इसके स्पष्ट प्रमाण हैं ।

प्राचीन भारत में जैन साहित्य के अध्ययन एवं अध्यापन के क्षेत्र में जैन धर्म के चौबिसवें एवं अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर से आरम्भ होती है । ऐसे तीर्थकरों का शालाका भवनों में होना सम्भव नहीं था । उनके शिष्य संघ आचार्यों के साथ ही देश-देशान्तर में पर्यटन करते रहे । परन्तु शनैःशनैः जैन मुनियों तथा आचार्यों के लिए गुंफा, मन्दिर तथा तीर्थ क्षेत्र के मन्दिर आदि बनने लगे । इन विद्यालयों का स्वरूप बहुत कुछ वैदिक और बौद्ध संस्कृति के विद्यालयों के अनुरूप ही था । इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन कालीन बहुआयामी भारतीय शिक्षा प्रणाली पूर्णरूपेण विकसित थी जिसकी प्रसिद्धि विश्व के अन्य राष्ट्रों में भी महसूश की गयी थी । परिणाम स्वरूप अनेक विदेशी यात्री, शासक तथा आक्रमणकारी अपने-अपने लक्ष्यों की पूर्ति के लिए यहाँ पर आते गये जिसके कारण प्राचीन काल से चली आ रही भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं ग्रन्थालय व्यवस्था बहुत अधिक प्रभावित हुई । 12वीं शताब्दी में तुर्क आक्रमणकारियों द्वारा नालन्दा महाविहार के विशाल ग्रन्थालय को अग्नि के हवाले किया जाना तथा ब्रिटिश हुकुमत के दौरान भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को लागू किया जाना इसके स्पष्ट प्रमाण हैं । ब्रिटिश शासन स्थापित होने के कुछ ही समय बाद भारत वर्ष में आधुनिक शिक्षा प्रणाली को शुरू किया गया जो किसी भी रूप में भारतीय जनमानस के लिए उपयुक्त नहीं थी । ठीक इससे पूर्व मुगलों की शासन थी, फिर भी संस्कृत आधारित पारम्परिक शिक्षा प्रणाली एवं ग्रन्थों के रख रखाव, उपयोग एवं संरक्षण के लिए ग्रन्थालयों के उपयोग की उत्तम व्यवस्था थी। इस बात की पुष्टि एक विदेशी यात्री बर्नियर के यात्रा वृत्तान्त में स्पष्ट उल्लेख है कि वाराणसी यात्रा के दौरान उसने कवीन्द्राचार्य सरस्वती नामक विद्वान से भेंट किया था जिसके पास एक समृद्ध संस्कृत ग्रन्थालय था जिसमें संस्कृतशास्त्र के विभिन्न विषयों की लगभग दो हजार हस्तलेख ग्रन्थ थे। इसका उल्लेख आचार्य बलदेव उपाध्याय के "काशी की पाण्डित्य परम्परा" नामक ग्रन्थ तथा नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा प्रकाशित हिन्दी विश्वकोश (11) खण्ड में भी अंकित है .।

इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय आधुनिक शिक्षा प्रणाली तथा आधुनिक ग्रन्थालय व्यवस्था में प्राचीन संस्कृत शास्त्रों के ग्रन्थालय संकलनों एवं इनके संरक्षण तथा उपयोग से सम्बन्धित विभिन्न तकनिकों एवं विधियों की भूमिका सर्वोपरी रही है।

2. संस्कृत ग्रन्थालयों के विभिन्न प्रकार-

संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के संकलनों के विकास में योगदान करने वाले ग्रन्थालयों को सामान्य रूप से चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है । जैसे शैक्षणिक संस्कृत ग्रन्थालय (2) विशिष्ट संस्कृत ग्रन्थालय (3) सार्वजनिक संस्कृत ग्रन्थालय एवं (4) निजी संस्कृत ग्रन्थालय ।

संस्कृत ग्रन्थालयों के इन चार श्रेणियों का विस्तृत विवरण निम्नवत है-

(1) शैक्षिक संस्कृत ग्रन्थालय—इस श्रेणी के अन्तर्गत उन सभी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विद्यालय ग्रन्थालयों को सम्मिलित किया जा सकता है जो प्रत्यक्ष रूप से संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित संकलनों के उपयोग, संरक्षण एवं विकास में योगदान करते हैं । सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के सरस्वती भवन ग्रन्थालय, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के केन्द्रीय ग्रन्थालय, गोयनका संस्कृत महाविद्यालय विश्वनाथ पुस्तकालय, प्राच्य विद्या धर्म विज्ञान संकाय विभागीय ग्रन्थालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं रणवीर संस्कृत विद्यालय ग्रन्थालय, का.हि.वि.वि., वाराणसी इस श्रेणी के प्रमुख उदाहरण हैं ।

(2) विशिष्ट संस्कृत ग्रन्थालय—इस श्रेणी के अन्तर्गत संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के शोध संस्थानों एवं सूचना केन्द्रों के उन ग्रन्थालयों को सम्मिलित किया जा सकता है जो प्रत्यक्ष रूप संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के साहित्य के प्रलेखन कार्य संकलन विकास, संरक्षण तथा उपयोग सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों को सम्पादित करते हैं। भण्डारकर ओरियन्टल शोध संस्थान ग्रन्थालय, पूना, विश्वेश्वरा वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, गायकवाड़ ओरियन्टल शोध संस्थान ग्रन्थालय, बड़ौरा, नैमिषारन्य पौराणिक एवं वैदिक शोध संस्थान, सीतापुर, उच्च तिब्बतन शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी एवं पार्श्वनाथ जैन शोध संस्थान, करौंदी वाराणसी के ग्रन्थालय इसके प्रमुख उदाहरण है ।

(3) सार्वजनिक संस्कृत ग्रन्थालय—इसी श्रेणी के अन्तर्गत भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय, दिल्ली सार्वजनिक ग्रन्थालय दिल्ली तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों में राज्य सरकारों द्वारा संचालित सार्वजनिक ग्रन्थालयों को सम्मिलित किया जा सकता है जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से संस्कृत शास्त्रों के ग्रन्थों के संग्रहण, उपयोग एवं संकलन विकास के लिए कटिबद्ध हैं। राष्ट्रीय ग्रन्थालय कोलकता, दिल्ली सार्वजनिक ग्रन्थालय दिल्ली, मुम्बई राजकीय ग्रन्थालय, मुम्बई तथा कन्नेमारा राजकीय ग्रन्थालय, चेन्नई में स्थापित पालि, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग / प्रभाग के साथ ही साथ भारत के सभी प्रान्तों के राजकीय सार्वजनिक ग्रन्थालयों में संस्कृत संकलनों को सम्मिलित किया जा सकता है । उपर्युक्त वर्णित सभी ग्रन्थालय इस श्रेणी के प्रमुख उदाहरण हैं।

(4) निजी संस्कृत ग्रन्थालय—इस श्रेणी के अन्तर्गत संस्कृत के उन सभी ग्रन्थालयों, सूचना केन्द्रों एवं संस्थाओं को सम्मिलित किया जा सकता है जिसका स्वामित्व अथवा नियंत्रण किसी निजी व्यक्ति या संस्था के अधीन संचालित होती है। भारत के राजपरिवारों की ग्रन्थालयों, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों के निजी ग्रन्थालयों, आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों पीठों के ग्रन्थालयों, प्रमुख उद्योपतियों एवं निजी व्यक्तियों द्वारा स्थापित ग्रन्थालयों तथा मठों एवं मन्दिरों के ग्रन्थालयों को इस श्रेणी के अन्तर्गत सम्मिलित किया जा सकता है । नेपाल नरेश राजकीय ग्रन्थालय, नेपाल, काशी नरेश फोर्ट ग्रन्थालृय, रामनगर, वाराणसी, ग्वालियर ग्रन्थालय, कश्मीर, थियोसाफिकल ग्रन्थालय, वाराणसी एवं काशी विश्वनाथ मन्दिर ग्रन्थालय, वाराणसी इस श्रेणी के प्रमुख उदाहरण हैं।

3. संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के प्रसिद्ध ग्रन्थालय :

1. नालन्दा विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, नालन्दा—

प्राचीन भारतवर्ष के जितने शिक्षा केन्द्र थे उनमें नालन्दा महाविहार का स्थान अन्यतम था । इसके अवशेष विहार प्रान्त के राजधानी पटना से प्रायः 55 मील दक्षिण-पूर्व में विस्तृत क्षेत्र के रूप में विद्यमान है। एक बौद्ध विश्वविद्यालय होने के कारण बौद्ध, धर्म, दर्शन इतिहास, निरक्त, न्याय आदि शास्त्रों के अध्ययन के प्रमुख केन्द्र के अध्ययन के साथ ही साथ ब्राह्मण तथा अन्य धर्म, दर्शन आदि शास्त्रों की भी यहाँ ऊँची से ऊँची पढ़ायी होती थी ।

एक चीनी यात्री युवानच्वाङ्ग ने नालन्दा के पुस्तकालय का बड़ा गौरवपूर्ण उल्लेख किया है । तिब्बती विवरणों से भी स्पष्ट होता है कि पुस्तकालयों का एक विशिष्ट क्षेत्र था जिसे धर्म गंज के नाम से पुकारा जाता था, जिसमें रत्नसागर, रत्नोदधि तथा रत्नरंजक नामक तीन विशाल ग्रन्थालय थे । रत्न सागर का भवन नौं मंजिला था जिसमें हजारों ग्रन्थ संगृहित थे। नालन्दा के इस विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थालय में विदेश से आने वाले यात्रियों में चीनी यात्री युवानच्वाङ्ग ने अनेक पुस्तकों का अनुवाद इसी ग्रन्थालय में किया था । तदनन्तर एक अन्य विदेशी इत्सिंग ने भी दस वर्ष निरन्तर परिश्रम कर पाँच लाख श्लोकों के परिणाम के चार सौ संस्कृत ग्रन्थों का संग्रह किया था ।

परन्तु दुर्भाग्यवस 12वीं शताब्दी में तुर्कों के आक्रमण से नालन्दा महा विहार तथा इसके समृद्ध ग्रन्थालय में संगृहित ग्रन्थों की बहुत क्षति हुई थी । इन तुर्क आक्रमणकारियों ने इस ग्रन्थालय के अमूल्य ग्रन्थ रत्नों को आग के हवाले कर दिया जिससे ये सारे वौधिक सम्पदा सदा के लिए भस्म हो गये जिनका उल्लेख मात्र हमें चीनी और तिब्बती ग्रन्थों के माध्यम से प्राप्त होते हैं। शताब्दियों बाद बिहार सरकार के सहयोग से नालन्दा के अतीत

गौरव को पुनर्जिवित करने के उद्देश्य यहाँ नव नालन्दा महाविहार नालन्दा पालि प्रतिष्ठान) की स्थापना सन् 1851 में हुई । यह संस्था एक समृद्ध ग्रन्थालय के साथ ही पालि, बौद्ध धर्म, संस्कृति, इतिहास आदि विषयों के उच्चतम अध्ययन एवं अनुसंधान की दिशा में अग्रसर है । इस शिक्षा केन्द्र में अद्यावधि दस से अधिक एशियायी देशों एवं यूरोपिय देशों के छात्र अध्ययनरत है तथा हाल ही में भारत सरकार द्वारा केन्द्रीय मानित विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित किया गया है ।

2. तक्षशिला विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, तक्षशिला -

तक्षशिला का विश्वविद्यालय एवं इसका ग्रन्थालय महाभारत काल से ही सारे भारत वर्ष में विख्यात था । इस विश्वविद्यालय में शिक्षा पाने के लिए काशी, राजगृह, पंचाल, मिथिला और उज्जयनी प्रदेशों से विद्यार्थी जाते थे । इस विश्वविद्यालय में तीन वेदों के साथ हस्तिसूत्र, धनुर्वेद तथा 18 शिल्पों की शिक्षा दी जाती थी। पाणिनि तथा कौटिल्य ने भी सम्भवतः तक्षशिला विश्वविद्यालय में ही शिक्षा पायी थी । इस विश्वविद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों से सम्बन्धित हस्तलेख ग्रन्थों के उपयोग एवं रख रखाव के लिए एक विशाल एवं समृंद्ध ग्रन्थालय था तथा यह पुरा विश्वविद्यालय पहाड़ियों पर बने हुए थे । इसका प्राकृतिक दृश्य बहुत रमणीय था । महाभारत के आदि पर्व में लिखा है कि राजा जनमेजय ने तक्षशिला पर अधिकार कर लिया था जो पूर्वकाल में भरत के ज्येष्ठ पुत्र तक्ष की राजधानी हैं। जबकि पाश्चात्य विद्वानों के मत में तक्कजाति ने तक्षशिला नगरी स्थापित की थी। राजा कनिष्क के समय तक्षशिला में बौद्ध धर्म का प्रचार चरमोत्कर्ष पर था ।

परन्तु समय के साथ-साथ तक्षशिला का विश्वविद्यालय तथा समृद्ध पुस्तकालय काल कालवित हो गया तथा वर्तमान में इसके अवशेष मात्र देखने को मिलते हैं ।

3. कवीन्द्राचार्य सरस्वती ग्रन्थालय, वाराणसी-

कवीन्द्राचार्य सरस्वती ई. सन् 1832 के आस पास काशी में आकर सदा के लिए यहाँ पर वस गये । काशी में तत्कालीन पंडितों में उनका विशेष आदर था । आप केवल एक सन्यासी ही नहीं थे बल्कि संस्कृत के एक प्रकाण्ड विद्वान भी थे । इनका पुस्तकालय बड़ा विशाल था जिसमें कुल दो हजार दो सौ पुस्तकें हस्तलिखित रूप में विद्यमान थी । उस अतीत काल में जब पुस्तकों की कैटला गिंग प्रणाली प्रचलित नहीं थी, कवीन्द्राचार्य ने अपने पुस्तकालय की हस्तलेख ग्रन्थों का सूचीपत्र तैयार किया था । जिस प्रकार आधुनिक पुस्तकालयों की प्रत्येक ग्रन्थ पर उस महाविद्यालय या विश्वविद्यालय की सील (मोहर या मुद्रा) अंकित रहती है ठीक उसी तरह आज से तीन सौ अट्ठाईस वर्ष पूर्व कवीन्द्राचार्य ने अपनी समस्त हस्तलेख ग्रन्थों के मुख पृष्ठ पर "सर्वविद्यानिधाम कवीन्द्राचार्य सरस्वतीनां पुस्तकम्" यह मुद्रा सील या मुहर अंकित की थी जिससे आज इन ग्रन्थों को पहिचानने में बड़ी सरलता होती है।

कवीन्द्राचार्य सरस्वती सन्यासी थे । अतः इनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था । इन्होंने अपनी कोई गद्दी भी स्थापित नहीं की । अतएव इनकी स्वर्गारोहण के पश्चात् इनका विशाल पुस्तकालय विखर गया अथवा नष्ट हो गया । इनके पुस्तकालय के अधिकांश ग्रन्थों को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने खरीद लिया है जिससे उनकी सुरक्षा हो रही है । कंवीन्द्राचार्य के पुस्तकालय की अनेक हस्तलेख ग्रन्थ ओरियन्टल इन्स्टटीयूट बड़ौदा में विद्यमान हैं जिनकी पहिचान उनके मुख पृष्ठ पर लिखे "सर्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्य सरस्वतीनां पुस्तकम्" इस उल्लेख से होती है ।

गायकवाड़ ओरियन्टल इन्स्टीयूट बड़ौदा ने इन हस्तलेख ग्रन्थों का एक सूचीपत्र कवीन्द्राचार्य सूचीपत्रम् के नाम से गायकवाड़ ओरियन्टल सीरीज संख्या - 17 को बड़ौदा से सन् 1921 में प्रकाशित किया गया था । डा. गंगानाथ झा ने उस सूचीपत्र की भूमिका में लिखा है कि "कवीन्द्राचार्य सन्यासी थे और एक धनी व्यक्ति थे । ऐसी दशा में इनके पुस्तकालय का विशाल एवं समृद्ध होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।"

कवीन्द्राचार्य की कुछ हस्तलिखित पुस्तकें भण्डारकर ओरियन्टल शोध संस्थान पूना में भी सुरक्षित हैं। इस शोध संस्थान में जनार्दन के द्वारा लिखित (1514-1558) तत्वालोक नामक ग्रन्थ का एक हस्तलेख विद्यमान है जिसपर यह वाक्य अंकित है," श्रीमत विद्यानिधान कवीन्द्राचार्य सरस्वतीनां वेदान्त तत्व लोकः ।"

इन उल्लेखों से पता चलता है कि कवीन्द्राचार्य सरस्वती का पुस्तकालय कितना विशाल तथा महत्वपूर्ण था । उनके स्वर्गारोहरण के पश्चात् इनका कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण यह सुसंगठित ग्रन्थालय विखर गया और इसकी हस्तलिखित पुस्तकें पूना, बड़ौदा, विकानेर, जयपुर, जोधपुर तथा कलकत्ता आदि स्थानों पर विखर गयी है। काशी में अध्ययन करने वाले अकिंचन छात्र इसका उपयोग करते थे ।

इस प्रकार कवीन्द्राचार्य सरस्वती अनेक शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान थे तथा वे ग्रन्थ संग्रह करने में विशेष अभिरूचि रखते थे । उनका अनेक दुर्लभ हस्तलेखों से मण्डित पुस्तकालय उनकी वैदुषी तथा नाना शास्त्रों की अभिज्ञता का पर्याप्त सूचक था ।

एक फ्रांसीसी यात्री वर्नियर जब बनारस आया था तब उसने अपने मित्र के पास भेजे गये एक पत्र में लिखा है, "जब मैं गंगा किनारे घूम रहा था तब मैंने बनारस के प्रधान पण्डित को अपने पुस्तकालय में बैठा देखा । यह सन्यासी और भक्त है। बर्नियर के इस उल्लेख से भी इसकी प्रमाणिकता सिद्ध होती है ।

4. सरस्वती भवन ग्रन्थालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

सरस्वती भवन ग्रन्थालय का संक्षिप्त परिचय :

गत शताब्दी के अन्तिम चरण में भी संस्कृत के दुर्लभ ग्रन्थों के हस्तलेखों की खोज का काम ब्रिटिश सरकार के आदेश से किया जाने लगा । काशी राजकीय संस्कृत विद्यालय

(संस्कृत कालेज) में अनेक दुर्लभ हस्तलेखों का संग्रह धीरे-धीरे होने लगा, परन्तु उनके संग्रह की सुव्यवस्था का नितांत अभाव था । 12 जनवरी 1906 ई. को बनारस के तत्कालीन कमिशनर श्री जोनाथन डंकन बेली के निवास स्थान पर आयोजित सभा में निश्चय किया गया कि एक ऐसे पुस्तकालय का निर्माण किया जाय जिसमें राजकीय संस्कृत महाविद्यालय द्वारा संगृहित बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थों को जिज्ञासुजन सुगमता पूर्वक देख सके। इस ग्रन्थालय को प्रिन्स ऑफ वेल्स के काशी आगमन का स्मारक बनाने का भी निश्चय किया गया । तदनुसार 16 नवम्बर 1907 को प्रान्त के सर्वोच्च अधिकारी सर जान हिवेट के द्वारा वर्तमान सरस्वती भवन का शिलान्यास किया गया तथा निर्माण पुरा हो जाने पर डा. वेनिश के शासनकाल में ही 6 फरवरी 1914 को इसका विधिवत उद्घाटन किया गया । उसके पूर्व ही प्रथम पुस्तकालयाध्यक्ष पं. सुधाकर द्विवेदी के अध्यापक पद पर नियुक्त होने के बाद यह रिक्त पद पं. विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी को दिया गया । सरस्वती भवन में हस्तलेखों के विशाल संग्रह करने में द्विवेदी जी का कार्य सदा आदर के साथ स्मरण किया जाता है । इनके बाद म.म. पं. गोपीनाथ कविराज सरस्वती भवन ग्रन्थालय के पूर्ण रूपेण अध्यक्ष हुए तथा इनके अनन्तर पं. नरायण शास्त्री खिस्ते ने यह पद ग्रहण किया ।

सरस्वती भवन ग्रन्थालय–वर्तमान सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व रूप बनारस के तत्कालीन रेजीडेन्ट द्वारा 1791 ई. में स्थापित संस्कृत पाठशाला के साथ ही इस विश्व प्रसिद्ध सरस्वती भवन पुस्तकालय की भी स्थापना हुई थी । श्री डंकन ने इस पाठशाला की स्थापना से होंने वाले लाभों की ओर इंगित करते हुए ईस्ट इण्डिया कम्पनी के तात्कालिक गवर्नर लार्ड कार्नवालिस को जो पत्र लिखा था, उसमें प्रथम लाभ के अन्तर्गत इस पाठशाला की स्थापना से संस्कृत वाङ्मय के अभ्युदय, संरक्षण तथा विकास के साथ-साथ स्पष्ट रूप से पुस्तकालय की स्थापना की ओर संकेत किया था । श्री डंकन के पत्र में प्रस्ताव इस प्रकार से था–

प्रस्तावित पाठशाला की स्थापना से दो प्रकार के लाभ सम्भावित है पहला लाभ अंग्रेज जाति को यह होगा कि यहाँ की हिन्दू जनता यह समझने लगेगी कि उनसे तथा उनके धर्म एवं सिद्धान्तों से कितना स्नेह हम करते हैं; उतना स्नेह उन्हें अपने देशी नरेशों से नहीं प्राप्त है । अतः इससे अंग्रेज उनके प्रीति भाजन बन सकेंगे । यद्यपि बनारस में सदा से व्यक्तिगत पाठशालाओं में अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था रही है, किन्तु जैसी पाठशाला की स्थापना प्रस्तावित की जा रही है, ऐसी पाठशाला यहाँ पहले कभी भी स्थापित नहीं हुई और इसके अभाव में हिन्दू धर्म, कानून, कला एवं विज्ञान सम्बन्धी शास्त्रों का संग्रह एवं उनका ज्ञान प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई हो रही है । इसे दूर करने के लिए ऐसी पाठशाला की स्थायी रूप से स्थापना अत्यन्त समीचीन होगी । इससे इस पाठशाला के आचार्यों तथा विद्यार्थियों द्वारा इन क्षेत्रों में विद्यमान ग्रन्थों का संग्रह एवं संशोधन स्वल्प व्यय

में ही हो सकेगा और इस प्रकार पुरातन महत्वपूर्ण विद्या तथा परम्परा से सम्बन्धित ग्रन्थों का एक ऐसा पुस्तकालय स्थापित होगा, जो सम्प्रति सम्पूर्ण भूमण्डल में विद्यमान नहीं है।

इस प्रकार 1791 ई. में संस्कृत पाठशाला की स्थापना के साथ ही इस पुस्तकालय की स्थापना की ओर भी श्री डंकन की स्पष्ट दृष्टि थी और जब वाराणसी नगरी के कर्णघन्टा मुहल्ले के एक विशाल भवन में इस पाठशाला का श्री गणेश हुआ तो उसके साथ ही इस पुस्तकालय का भी शुभारम्भ हुआ । प्रारम्भ में इस पुस्तकालय के लिए किसी विशेष अधिकारी की नियुक्ति नहीं की गयी और इसके प्रबन्ध ग्रन्थों क प्रतिलिपि एवं संशोधनादि का कार्य श्री डंकन के उपस्थिति प्रस्तावनानुसार पाठशाला समिति के मन्त्री के नियंत्रण में पाठसाला के अध्यापक एवं छात्रों द्वारा चलाये जाते रहे । 1791 ई. से लेकर 1813 ई. तक लगभग 23 वर्षों तक इस पुस्तकालय का कार्य इसी प्रकार से सम्पन्न होता रहा ।

किन्तु कालक्रम से संग्रह में अभिवृद्धि होने से जब पाठशाला के अध्यापकों एवं छात्रों द्वारा पुस्तकालय का कार्य चलना कठिन प्रतीत होने लगा तब 1811 ई. में इसके लिए ग्रन्थाध्यक्ष की नियुक्ति एवं समुचित भवन निर्माण का निर्णय किया गया और इस निर्णय एवं 1813 ई. की वर्ड आख्या (रिपोर्ट) के आधार पर पुस्तकालय में ग्रन्थाध्यक्ष पद एवं दो सहायक पदों का सृजन हुआ । ग्रन्थाध्यक्ष पद का वेतन रू. 100/00 मासिक तथा सहायकों का वेतन रू. 50/- मासिक निर्धारित हुआ तथा पुस्तकालय के प्रथम ग्रन्थाध्यक्ष के रूप में पं. मथुरानाथ शुक्ल की नियुक्ति हुई और कार्य में उनके सहायतार्थ दो सहायक नियुक्त हुए । यद्यपि पुस्तकालय का स्वतन्त्र भवन निर्मित नहीं हुआ और यह अभी भी पाठशाला भवन में ही स्थित था किन्तु स्वतन्त्र ग्रन्थाध्यक्ष तथा सहायकों की नियुक्ति से अब इसका स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित हो गया । 1818 ई. पं. मथुरानाथ शुक्ल के अचानक स्वर्ग वास होने के कारण पाठशाला के तत्कालीन प्रधानाचार्य पं. रामानन्द की देख-रेख में पुस्तकालय के कार्य को चलाने का निर्णय किया गया और सम्भवत : 1914 तक यही व्यवस्था चलती रही । 1818-1914 तक की अवधि में ग्रन्थाध्यक्ष पर स्वतन्त्र रूप से किसी व्यक्ति की नियुक्ति का साधिकार सन्दर्भ प्राप्त नहीं है, किन्तु अन्य स्रोतों से प्राप्त जानकारी से यह ज्ञात होता है कि इस अवधि में श्री यदुनाथ झा, श्री वेचनराम त्रिपाठी, श्री रामनाथ शुक्ल, श्री ढुण्डिराज शास्त्री, म.म. पं. सुधाकर द्विवेदी तथा म.म.पं. विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी प्रभृति विद्वानों ने पुस्तकालय के हस्तलिखित ग्रन्थों के प्रबन्ध का कार्य सम्पादित किया ।

कालान्तर में संस्कृत पाठशाला ने जब संस्कृत महाविद्यालय का रूप ग्रहण किया और विद्या सम्बन्धी इसके क्रिया कलापों से इसकी विश्व में प्रसिद्धि हुई तो आगे चलकर इस संस्कृत महाविद्यालय को 1904 ई. में विश्वविद्यालय का रूप देने का विचार लोकमानस में उत्पन्न हुआ और इसके लिए एक छात्रवास हिन्दू बोर्डिंग हाउस निर्मित कराने की योजा भी बनी । इस सम्बन्ध में यह ज्ञातव्य है कि यद्यपि अनेक कारणों से यह संकल्प

उस समय पूर्ण न हो सका और इसके फलस्वरूप कालान्तर में वाराणसी के स्थान पर प्रयाग में हिन्दू बोर्डिंग हाउस की स्थापना मात्र ही हो सकी । परन्तु इसी सन्दर्भ में यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि 12 फरवरी 1906 ई. को बनारस के तत्कालीन कमिश्नर श्री डंकन बेली के निवास स्थान पर एक सभा आयोजित हुई जिसमें श्री बेली के अतिरिक्त श्रीमान महाराजाधिराज श्री काशी नरेश, बनारस के कलेक्टर श्री रैंडिस, संस्कृत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डा. आर्थर वेनिस माननीय बाबू मोतीचन्द, बाबू चारू चन्द्र विश्वास जो महाराजा विजयानगरम के प्रतिनिधि थे, राजा मुंशी श्री माधो लाल जी तथा काशी के अनेक लब्धप्रतिष्ठ नागरिक उपस्थित थे। इस सभा ने यह निश्चय किया कि यद्यपि संस्कृत महाविद्यालय को संस्कृत विश्वविद्यालय का संकल्प पूर्ण नहीं हो सका है और यदि ऐसा नहीं हो पाता है तो कम से कम एक ऐसे पुस्तकालय का निर्माण कराया जाय, जिसमें बनारस के संस्कृत महाविद्यालय में संगृहीत अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ निधि के संरक्षण की व्यवस्था हो सके तथा ये ग्रन्थ जिज्ञासुओं को सुविधापूर्ण रीति से सुलभ हो सकें। सभा ने यह भी निश्चय किया कि यह पुस्तकालय प्रिंसेज आफ वेल्स के काशी आगमन का स्मारक होगा ।

इस दृष्टि से इस योजना के कार्यान्वय हेतु एक समिति गठित हुई, जिसके मन्त्री राजा मुंशी श्री माधोलाल जी बनाये गये । इस समिति ने देश के विभिन्न विशिष्ट एवं सम्पन्न महानुभावों की सहायता से इस कार्य हेतु कुल 1,21,665 रू. की धन राशि दान स्वरूप एकत्र की । कुल 32 दान कर्ताओं में से 31 दानकर्ताओं के द्वारा यह धन राशि प्राप्त हुए जबकि प्रथम दानकर्त्ता रानी साहिबा श्रीमती दुलहिन राय कुंवर, अवसान गंज में वर्तमान सरस्वती भवन के भवन निर्माण स्थान को ही दान स्वरूप भेंट कर दी। श्रीमान प्रिंस एवं प्रिसंजे ऑफ वेल्स के काशी आगमन के अवसर पर उक्त समिति के मंत्री द्वारा उन्हें प्रस्तावित सरस्वती भवन पुस्तकालय के निर्माण स्थल का निरीक्षण कराया गया तथा यह अनुमति भी प्राप्त की गयी कि इस स्थान पर निर्मित होने वाले पुस्तकालय के नाम के साथ प्रिंसेज ऑफ वेल्स का नाम भी जोड़ा जाय । तदन्तर 16 नवम्बर 1907 को सर जान हिवेट द्वारा वर्तमान सरस्वती भवन पुस्तकालय के भवन का शिलान्यास कार्य सम्पन्न हुआ तथा लगातार सात वर्षों तक संस्कृति तथा संस्कृत के प्रेमी, उदार राजाओं, महाराजाओं, श्रेष्ठ नागरिकों तथा कर्तव्यनिष्ठ राजकीच कर्मचारियों के अनवरत प्रयत्नों के फलस्वरूप इस महान ग्रन्थालय का वर्तमान भव्य भवन 1914 ई. में निर्मित हो गया और इस उद्देश्य की पूर्ति के पीछे सबसे बड़ा प्रयत्न संस्कृत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डा. आर्थर वेनिस का था । 6 फरवरी 1914 ई. शुकवार के शुभ दिवस पर सयुक्त प्रान्त के लेफ्टीनेन्ट गवर्नर महामहिम सर जेम्स स्कोंगी मेस्टन के.सी. एस. आई. की अध्यक्षता में सरस्वती भवन पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ तथा इसका नाम प्रिंसेज आफ वेल्स सरस्वती भवन पुस्तकालय घोषित

हुआ । इस अवसर पर महामहिम गवर्नर को निम्नांकित मानपत्र समर्पित किया गया—

पुण्याहं महदद्य यद् गुरुतरात् साम्राज्यकार्यान्निजात्,
संयुक्तावनिदेशशासकवरो लब्ध्वावकाशं क्षणम् ।
प्रिंसेज - वेल्स - सरस्वतीभवनकस्योद्घाटनाय स्वयं
लेडी मेस्टन-संयुतोऽत्र दयया मेस्टन् प्रभू राजते ॥1॥
सौभाग्यं किमु काशिवासिजनताभालस्थलोल्लेखितं
किं वा भारतखण्डपुण्यनिचयः पाकाभिमुख्यं गतः ।
आहोस्विन्निखिलावनीतलशुभोद्रेको यदत्राचलं
प्रिंसेस- वेल्स- सरस्वतीभवनकं प्रोद्घाटयते श्रीमता ॥2॥
पातालस्य तले प्रयातु विलयं बालिश्यमद्याचिरात्
ज्ञानज्योतिरुदेतु लोकहृदये निस्तन्द्रचन्द्रायितम् ।
प्राक्प्रत्यग्विषयस्थिता बहुविधा विद्याश्चिरायाधुना
मोदान्तं च मिथः समागमसुखं सम्प्राप्यभूमण्डले ॥3॥
ग्रावव्यूहदृढं मनोमलिनताधारावरोधक्षमं,
दुश्चिन्तातितिवाहिनीशतसमुत्तरैकसंसाधनम् ।
एतत् पुस्तकमन्दिरं वितनुतां पौरस्त्यपाश्चात्त्ययोः ।
संभेदे किल विद्ययोः सुखकंर सेतुत्वमत्रेति शम् ॥4॥

विक्रमीये संवत्सरे, 1960
माघे शुक्लपक्षे, 11 शुक्रे

सरस्वती भवन ग्रन्थालय को इस स्वतन्त्र भवन के प्राप्त होने पर 24 अप्रैल 1914 ई. को महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज इसके प्रथम पूर्णकालिक ग्रन्थाध्यक्ष नियुक्त हुए। इसके पूर्व मुद्रित ग्रन्थों का प्रबन्ध क्वीन्स कालेज के ग्रन्थाध्यक्ष के ही अधीन था। सरस्वती भवन ग्रन्थालय में पूर्णकालिक ग्रन्थाध्यक्ष की नियुक्ति के पश्चात् मुद्रित ग्रन्थ भी यहाँ स्थानान्तरित हुए और अब इसके मुद्रित एवं हस्तलिखित दोनों अनुभागों का कार्य श्री कविराज जी के निर्देशन में चलने लगा । इनके कार्यभार ग्रहण करने के समय पुस्तकालय में 3,204 मुद्रित तथा 5,852 हस्तलिखित ग्रन्थ संगृहीत हो चुके थे । श्री कविराज ने ग्रन्थालय को अनेक दृष्टियों से सम्पन्न करने की योजना बनायी और यहाँ से अप्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन तथा अनुसन्धानात्मक प्रकाशन प्रारम्भ हुए । इसके लिए दो ग्रन्थमालाएँ प्रारम्भ हुई-सरस्वती भवन ग्रन्थमाला एवं सरस्वती भवन अध्ययन माला (Saraswati Bhawan Texts Series and Saraswati Bhawani Studies Series) । ग्रन्थालय के इस

कार्य में इस महाविद्यालय के तत्कालीन प्रधानाचार्य डा. गंगानाथ झा का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ तथा इन ग्रन्थमालाओं में अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए ।

1914 ई. से 1948 ई. तक के अवधि में श्री कविराज जी के अनन्तर डा. मंगलदेव शास्त्री, पं. श्री विश्वनाथ झारखण्डी आदि ने ग्रन्थाध्यक्ष पद पर कार्य किया । श्री झारखण्डी के कार्यकाल तक हस्तलिखित ग्रन्थों का प्रबन्ध अलग से एक विद्वान के अधीन रहा । इसके अन्तर्गत हस्तलिखित अनुभाग में महामहोपाध्याय पं. विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी के अनन्तर महामहोपाध्यय पं. नारायण शास्त्री खिस्ते ने यह कार्य सम्हाला । उक्त विद्वानों के अध्यावसाय से 1948 ई. तक सरस्वती भवन ग्रन्थालय में लगभग 30 हजार मुद्रित ग्रन्थ तथा पचास हजार हस्तलिखित ग्रन्थ संगृहीत हो चुके थे । 1948 में इस ग्रन्थालय के महत्व को देखते हुए शासन ने यहाँ के पदों में परिवर्तन तथा परिवर्धन किया । तदनुसार एक मुख्य ग्रन्थाध्यक्ष तथा मुद्रित एवं हस्तलिखित इन दोनों अनुभागों के लिए अलग-अलग एक-एक सहायक ग्रन्थाध्यक्ष के पद शासन द्वारा स्वीकृत किये गये और इसी क्रम में प्रसिद्ध विद्वान डा. सुभद्र झा की नियुक्ति ग्रन्थाध्यक्ष पद पर हुई ।

22 मार्च 1958 ई. को संस्कृत महाविद्यालय ने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में परणित हुआ तथा डा. आदित्यनाथ झा इसके प्रथम कुलपति नियुक्त हुए । विश्वविद्यालय का ग्रन्थालय होने पर सरस्वती भवन के विकास में अत्यधिक अभिवृद्धि हुई और विभिन्न कार्यों हेतु इसमें अनेक पदों का सृजन हुआ । संग्रह में अभूतपूर्व वृद्धि के साथ ही जिज्ञासुओं के लिए वाचन कक्ष आदि की भी व्यवस्था हुई । ग्रन्थ संग्रह हेतु पुष्कल धनराशि के साथ ही साथ अनेक अमूल्य ग्रन्थ संग्रह दान के रूप में प्राप्त हुए और अल्प समय में ही हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थों की संग्रह संख्या में अभूत पूर्व वृद्धि हुई ।

ग्रन्थों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि के कारण सरस्वती भवन ग्रन्थालय में स्थान की कमी का अनुभव होने लगा तथा इस समस्या के समाधान के लिए एक नवीन भवन की आवश्यकता महशूस की जाने लगी । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अपना योगदान देते हुए नवीन भवन के निर्माण हेतु धनराशि स्वीकृत की और मुद्रितानुभाग के विशाल नवीन भवन का शिलान्यास 1963 में तत्कालीन कुलपति श्री सुरतिनरायण मणि त्रिपाठी द्वारा सम्पन्न हुआ तथा यह भवन तीन वर्षों की अवधि में बनकर तैयार हो गया तथा इसका विधिवत उद्घाटन 1966 में सम्पन्न हुआ । इस भवन में मुद्रित ग्रन्थों के संग्रह (स्टैक), वाचनालय कक्ष, पत्र-पत्रिका विभाग, माइक्रोफिल्लिग तथा बाइण्डिग आदि अनुभगों का स्थानान्तरण कर दिया गया ।

डा. सुभद्र झा के अवकाश ग्रहण के पश्चात् भी विभूति भूषण भट्टाचार्य ग्रन्थाध्यक्ष पद पर 1967 में आसीन हुए और 1970 में इनकी नियुक्ति कुलसचिव पद पर हो जाने पर श्री लक्ष्मी नरायण तिवारी ग्रन्थाध्यक्ष नियुक्त हुए तथा उनके सतत प्रयास से ग्रन्थालय

में संचालित होने वाले विभिन्न गतिविधियों में बहुत अधिक वृद्धि हुई । उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम 1973 के प्रवृत्त होने के पश्चात् ग्रन्थाध्यक्ष पद का नामकरण पुस्तकाध्यक्ष हुआ । पहले सरस्वती भवन ग्रन्थालय में उप-पुस्तकाध्यक्ष के दो ही पद स्वीकृत थे परन्तु पंचम पंचवर्षीय योजना में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा एक और उप पुस्तकाध्यक्ष का पद स्वीकृत हुआ । पुस्तकाध्यक्ष और उपपुस्तकाध्यक्ष के इन चार पदों के अतिरिक्त ग्रन्थालय में कर्मचारी वर्ग के 63 अन्य पद स्वीकृत पदों की संख्या के साथ ही कुल 67 पद थे । वर्तमान में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में स्वीकृत पदों की कुल संख्या 84 है ।

श्री लक्ष्मी नरायण तिवारी के अवकाश ग्रहण के पश्चात् डा. विजय नरायण मिश्रा को सरस्वती भवन ग्रन्थालय के पुस्तकाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया । श्री मिश्रा के सेवानिवृत्त होने से लेकर ई. 2000 तक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुछ आचार्यों को ग्रन्थालय प्रभारी का अतिरिक्त दायित्व सौंपा गया इसमें साहित्य विभाग के प्रो. कैलाशपति त्रिपाठी, भाषा विज्ञान के डा. सत्यव्रत शर्मा तथा वेदान्त के विद्वान प्रो. पारशनाथ द्विवेदी प्रमुख थे । फरवरी 2000 ई. में झाँसी विश्वविद्यालय झाँसी के उपपुस्तकाध्यक्ष डा. सूर्यकान्त को पुस्तकाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है।

इस प्रकार वर्तमान में सरस्वती भवन ग्रन्थालय एक सुसंगठित विश्वविद्यालय ग्रन्थालय है और विश्व प्रसिद्ध हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह के अतिरिक्त भारतीय विद्याओं से सम्बन्धित मुद्रित एवं अनेक दुर्लभ ग्रन्थ भी यहाँ संगृहीत हैं। प्रो. राममूर्ति शर्मा के कुलपतित्व काल में www.Sanskrit university varanasi. com के माध्यम से भारतीय विद्या के विश्व प्रसिद्ध दो सौ हस्तलिखित ग्रन्थों के सारांश को अनुवाद एवं लिप्यन्तरण की सहायता से अंग्रेजी में उपलब्ध कराया गया । सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रहों का इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र नई दिल्ली के सौजन्य से माईक्रोकिल्लिंग का कार्य सम्पन्न कर लिया गया है । इसी प्रकार सरस्वती भवन ग्रन्थालय की आधुनिकीकरण प्रक्रिया के अन्तर्गत इसके मुद्रितानुभाग में संगृहीत मुद्रित ग्रन्थों के दस हजार ग्रन्थों के ग्रन्थपरक सूचनाओं को सोल साफ्टवेयर में निवेशित करके यू.जी.सी. के इनप्लिबनेट केन्द्र द्वारा संचालित यूनियन डेटाबेस के माध्यम ग्रन्थों की ग्रन्थपरक सूचनाओं को संस्कृत के जिज्ञासुओं के लिए उपलब्ध कराया गया है ।

अभी हाल ही में यूनेस्को के वर्ल्ड मिमोरी रजिस्टर में अभिनवगुप्त द्वारा विरचित कुछ हस्तलिखित ग्रन्थों को सूचीकृत किया गया है । इनमें से कुछ सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत हैं। इस प्रकार वर्तमान में सरस्वती भवन ग्रन्थालय में अध्ययन सामग्री के रूप में हस्तलिखित संग्रह, मुद्रित संग्रह तथा हस्तलिखित संग्रहों के माईक्रोफिल्मस के साथ-ही साथ कुछ "ई" एवं जिडिटल स्रोतों को भी सम्मिलित किया जा सकता है तथा भारतीय विद्याओं

में अध्ययन एवं अनुसन्धान कार्य को पूर्ण करने में यह ग्रन्थालय एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र है जहाँ अध्ययन सामग्री प्राप्त करने हेतु अखिल विश्व के जिज्ञासु आते हैं ।

5. गोयनका संस्कृत महाविद्यालय विश्वनाथ पुस्तकालय, वाराणसी –

खुरजा के एक उद्योगपति शेठ गौरीशंकर गोयंका बड़े ही विद्याप्रेमी तथा संस्कृत भाषा का प्रचार एवं प्रसार कर कीर्ति अर्जित करने वाले व्यक्ति थे । वे संस्कृत का विधिवत अध्ययन संस्कृत के मान्य पण्डितों से किया करते थे । पण्डित चण्डी प्रसाद शुक्लजी उनके स्थानीय गुरू थे जिनसे वे उपनिषद् तथा वेदान्त का अध्ययन किया करते थे। इन्हीं के उपदेश तथा आग्रह से सेठ जी ने अपने पितामह तथा पिता के नाम संवलित विद्यालय की स्थापना 1926 के जून मास में की । इस विद्यालय का पूरा नाम जोखी राम मटरूमल गोयन- का संस्कृत महाविद्यालय है जिसका अपना एक स्वतन्त्र भवन तथा विशाल पुस्तकालय है।

इस महाविद्यालय का ग्रन्थालय विश्वनाथ पुस्तकालय के नाम से प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थालय में संस्कृत के हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थों के साथ ही साथ उपनिषद् एवं वेदान्त से सम्बन्धित दुर्लभ ग्रन्थों को भी संगृहीत किया गया है । गोयनका संस्कृत विद्यालय के संस्थापक शेठ गौरी शंकर गोयनका ने अच्युत ग्रन्थमाला नामक एक नवीन ग्रन्थमाला का प्रकाशन अपने विद्यालय के द्वारा ही किये । इस ग्रन्थमाला में वेदान्त के प्रसिद्ध तथा दुरूह ग्रन्थों का सरल सुबोध हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किया गया है ।

इस प्रकार इस पुस्तकालय में उपलब्ध संस्कृत तथा प्राच्य विद्या से सम्बन्धित हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थों को संस्कृत के जिज्ञासुओं द्वारा अध्ययन, अध्यापन एवं शोध कार्य के सम्पादन में उपयोग में लाया जाता है ।

6. प्राच्य विद्या धर्म विज्ञान संकाय ग्रन्थालय, का. हि. वि.वि., वाराणसी–

यह ग्रन्थालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्राच्य विद्या एवं धर्मविज्ञान संकाय ग्रन्थालय के रूप में का.हि.वि.वि. वाराणसी द्वारा संचालित एवं नियंत्रित है। संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के मुद्रित एवं हस्तलिखित संग्रहों के लिए यह बहुत प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थालय में संगृहीत संकलनों को का. हि. वि.वि. के इस वेबसाइट WWW.bhu.ac.in के माध्यम से संस्कृत के जिज्ञासु जन उपयोग की सुविधा प्राप्त कर सकते हैं ।

7. रणवीर संस्कृत विद्यालय ग्रन्थालय, का.हि. विश्वविद्यालय, वाराणसी–

यह ग्रन्थालय का0हि0वि0वि0 वाराणसी के नियंत्रण में संचालित श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय कामाच्छा के प्रांगण में स्थित है । सन् 1883 में श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय की स्थापना सदर- ए - रियासत महाराणा प्रताप सिंह के द्वारा की गयी थी । जिसे 24 मई सन् 1914 ई. को महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी के मार्गदर्शन में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय सोसाइटी को हस्तांतरित कर दिया गया । इस विद्यालय के ग्रन्थालय में भारतीय संस्कृति एवं वाङ्मय से सम्बन्धित सरल मुद्रित ग्रन्थों का सुन्दर संकलन है

जिससे पहली कक्षा से लेकर उतरमध्यमा तक के छात्रों को संस्कृत साहित्य के समृद्ध भण्डार से परिचित कराने में बहुत सहायता मिलती है ।

8. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, ग्रन्थालय, दरभंगा, विहार–

बिहार के दरभंगा में 26 जनवरी 1961 संस्कृत की उपयोग, प्रचार-प्रसार तथा शिक्षा को बहुआयामी स्वरूप देने के लिए कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही इसके केन्द्रीय ग्रन्थालय को भी स्थापित किया गया । यह ग्रन्थालय भी संस्कृत शास्त्र के दुर्लभ पाण्डुलिपि ग्रन्थों, मुद्रित ग्रन्थ एवं पत्र-पत्रिकाओं के विशाल संकलन के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त बिहार में 120 संस्कृत महाविद्यालय ग्रन्थालयों के संरक्षक के रूप में भी यह वि.वि. कार्य करता है ।

9. डा. मण्डनमिश्र केन्द्रीय ग्रन्थालय, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली ।

10. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान केन्द्रीय ग्रन्थालय, मानित संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ।

11. श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, श्रीशंकरापुरम्, एरना कुलम् ।

12. कवि कुल गुरू कालीदास संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, रामटेक, महाराष्ट्र–

13. श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, श्री विहार, पुरी, उड़िसा–

14. जगत गुरू रामानन्द चार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, जयपुर, राजस्थान ।

15. राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ग्रन्थालय, तिरूपति, आन्ध्रा प्रदेश–

16. सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, सोमनाथ, गुजरात–

17. महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश–

18. महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्व विद्यालय ग्रन्थालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश ।

19. उतरांचल संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, हरिद्वार, उतरांचल ।

20. पतंजली योगपीठ-दिव्ययोग मन्दिर न्यास ग्रन्थालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड-

21. देवा संस्कृति विश्व विद्यालय ग्रन्थालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ।

उपर्युक्त वर्णित क्रम संख्या 9 से 21 तक के शिक्षण संस्थाओं एवं इनके ग्रन्थालयों की विस्तृत सूचना को गूगल डाट काम या सम्बन्धित संस्था के वेब साईट के माध्यम से उपयोग में लाया जा सकता है ।

4. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रमुख विशिष्ट ग्रन्थालयों का विवरण –

1. ऐशियाटिक सोसाइटी ग्रन्थालय, कोलकता ।
2. भण्डारकर ओरियन्टल शोध संस्थान ग्रन्थालय पूना, महाराष्ट्र ।

3. गायकबाड़ ओरियन्टल शोध संस्थान, बड़ौदा, गुजरात ।
4. अडयारशोध संस्थान एवं ग्रन्थालय, मद्रास ।
5. विश्वेश्वरा वैदिक शोध संस्थान ग्रन्थालय, होशियारपुर, पंजाब।
6. पौराणिक तथा वैदिक अध्ययन संस्थान ग्रन्थालाय, सीतापुर, लखनऊ।
7. पार्श्वनाथ विद्यापीठ ग्रन्थालय, करौंदी, वाराणसी ।
8. उच्च तिब्बतन शिक्षा संस्थान शांतिरक्षित ग्रन्थालय, सारनाथ, वाराणसी ।
9. साहित्य अकादमी ग्रन्थालय, नई दिल्ली ।
10. भारतीय दर्शनपरिषद् ग्रन्थालय, नई दिल्ली ।
11. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ग्रन्थालय, नई दिल्ली ।
12. इण्डिया आफिस ग्रन्थालय, लन्दन, यू.के. ।
13. अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् ग्रन्थालय, लखनऊ ।
14. बिहार संस्कृत अकादमी ग्रन्थालय, पटना ।
15. मिथिला शोध संस्थान ग्रन्थालय, कबराघाट, दरभंगा ।
16. वैशाली प्राकृत जैन एवं अहिंसा संस्थान ग्रन्थालय, वैशाली ।
17. नागरी प्रचारिणी सभा ग्रन्थालय, वाराणसी ।
18. मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी ग्रन्थालय, मध्य प्रदेश ।
19. श्री वेंकटेश्वर शोध संस्थान ग्रन्थालय, तमिल नाडू ।
20. तंजावर सरस्वती महल ग्रन्थालय, तंजावर ।
21. भारतीय दर्शन एवं संस्कृति वैरोवा शोध संस्थान ग्रन्थालय, मथुरा, उ.प्र. ।
22. अरविन्द आश्रम ग्रन्थालय, दिल्ली ।
23. श्री रामकृष्ण परमहंस मिशन संस्थान ग्रन्थालय, कोलकता ।
24. वेद संस्थान ग्रन्थालय, अजमेर, राजस्थान ।

5. सार्वजनिक संस्कृत ग्रन्थालय के रूप में योगदान करने वाले ग्रन्थालयों के प्रमुख उदाहरण –

1. पालि, प्राकृत एवं संस्कृत प्रभाग, राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकता-700027 ।
2. संस्कृत भाषा विभाग, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली ।
3. संस्कृत भाषा विभाग, राजकीय केन्द्रीय ग्रन्थालय, मुम्बई ।
4. संस्कृत भाषा विभाग, कन्नेमारा सार्वजनिक ग्रन्थालय, चेन्नई ।
5. उ. प्र. राजकीय सार्वजनिक ग्रन्थालय, इलाहाबाद ।

6. पं. बंगाल राजकीय सार्वजनिक ग्रन्थालय, कोलकता, तथा

7. अन्य भारतीय राज्यों के अधीन संचालित राजकीय सार्वजनिक ग्रन्थालयों के संस्कृत विभाग/प्रभाग।

6. निजी संस्कृत ग्रन्थालय के रूप में योगदान करने वाले ग्रन्थालयों के प्रमुख उदाहरण -

1. नेपाल नरेश राजकीय ग्रन्थालय, नेपाल ।
2. काशी नरेश फोर्ट ग्रन्थालय, रामनगर, वाराणसी।
3. ग्वालियर नरेश ग्रन्थालय, ग्वालियर, म. प. ।
4. श्री शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों पीठों के अधीन संचालित ग्रन्थालय ।
5. श्री काशी विश्वनाथ ग्रन्थालय, वाराणसी ।
6. थियोसाफिकल ग्रन्थालय, गुरुबाग, वाराणसी ।
7. श्री हरसूब्रह्मधाम न्यास ग्रन्थालय, चैनपुर, भभुआ, बिहार ।
8. श्री गोरखनाथ पीठ ग्रन्थालय, गोरखपुर, उ.प्र. ।
9. बाबा श्री किनाराम आश्रम ग्रन्थालय, वाराणसी ।
10. श्री अवधूत आश्रम ग्रन्थालय, राजघाट, वाराणसी ।
11. श्री रामजन्म भूमि न्यास ग्रन्थालय, अयोध्या, उ. प्र. ।
12. अक्षर धाम मन्दिर न्यास ग्रन्थालय, गुजरात ।
13. माता वैष्णवदेवी मन्दिर न्यास ग्रन्थालय, कटरा जम्मू एवं काश्मीर ।
14. विश्व हिन्दू परिषद् न्यास ग्रन्थालय, नई दिल्ली ।

7. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ग्रन्थों के प्रकाशन में प्रमुख भारतीय प्रकाशन प्रतिष्ठानों की योगादन -

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक पुनर्जागरण का सूत्रपात हुआ था । उसी के अन्तर्गत मुद्रणालयों के प्रचार के फलस्वरूप संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के ग्रन्थों का विराट पैमाने पर प्रकाशन होना प्रारम्भ हुआ । प्रेस एवं पुस्तक रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1867 के लागू होने से पुस्तक प्रकाशन की गतिविधियों को एक नयी दिशा मिल चुकी थी । एक से अधिक पृष्ठों में मुद्रित, साइक्लो स्टाइल अथवा लिथो में छपी ग्रन्थों को इस अधिनियम के अन्तर्गत पुस्तक के रूप में स्वीकृति मिल चुकी थी तथा प्रत्येक मुद्रित ग्रन्थ के प्रथम पृष्ठ पर ग्रन्थ का शीर्षक, लेखक के नाम के साथ ही साथ प्रकाशक का नाम, प्रकाशन का स्थान तथा प्रकाशन के वर्ष को मुद्रित करना अनिवार्य कर दिया गया था।

इसी दौरान दुर्लभ संस्कृत ग्रन्थों की प्रकाशन की योजनाएँ वाराणसी, कलकत्ता तथा मुम्बई में प्रारम्भ की गयी। वाराणसी में स्थित राजकीय संस्कृत-पाठशाला के तत्कालीन प्रधानाचार्य डा. आर्थर वेनिस के शासनकाल में बनारस संस्कृत सीरीज तथा चौखम्बा संस्कृत सीरीज का सार्वजनिक अभ्युदय सम्पन्न हुआ । उन्होंने सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत उपयोगी हस्तलेखों को मुद्रित करने तथा शोध पत्रिका निकालने की योजना बनाई थी। डा. वेनिस ने संस्कृत विद्या के सर्वांगीण उन्नति के लिए चार महत्वपूर्ण कार्यों का शुभारम्भ किया, जिसमें प्रथम कार्य साधो लाल रिसर्च स्कालरशिप की स्थापना को छोड़कर शेष अन्य तीन कार्य सरस्वती भवन टेक्सट्स के प्रकाशन की योजना, सरस्वती भवन स्टडीज के प्रकाशन की योजना, एवं बनारस संस्कृत सीरीज तथा विजयानगरम् संस्कृत सीरीज सीधे तौर पर संस्कृत शास्त्र के ग्रन्थों के प्रकाशन से सम्बन्धित थे।

इसके अतिरिक्त डा. वेनिस काशी के महाराजा विजयानगरम से प्रार्थना कर उनको विजयानगरम संस्कृत सीरीज नामक ग्रन्थमाला प्रकाशित करने की प्रेरणा प्रदान की । महाराजा ने सन् 1890 में अपने विपुल धन से इस सीरीज में संस्कृत के अनेक दुर्लभ ग्रन्थों का प्रकाशन कराया । इन्हीं की प्रेरणा से काशी संस्कृत सीरीज ग्रन्थमाला का शुभारम्भ हुआ। सन् 1893 ई. में चौखम्बा संस्कृत सीरीज नामक नवीन ग्रन्थमाला के प्रादुर्भाव में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

इसी प्रकार सन् 1886 से 1907 तक निर्णय सागर प्रेस मुम्बई ने काव्यमाला शीर्षक के अन्तर्गत लगभग 95 से अधिक संस्कृत ग्रन्थों को प्रकाशित किया । इसके साथ ही साथ छोटे-छोटे काव्य सुमनों के संकलनों को भी गुच्छक नाम से प्रकाशित किये गये जिसके चौदह गुच्छकों में कुल लगभग 128 से अधिक काव्य प्रकाशित किये गये थे। इसी क्रम में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के विश्व स्तरीय निजी प्रकाशक के रूप में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में स्थित गीता प्रेस हिन्दू धर्म के दुर्लभ पुस्तकों के प्रकाशन तथा "कल्याण" पत्रिका के प्रकाशन के लिए विश्व प्रसिद्ध मुद्रणालय के रूप में कई दशकों से कार्यरत हैं। ब्रिटिश कालीन भारत में संस्कृतशास्त्र के ग्रन्थों को संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साथ ही साथ अन्य यूरोपीय भाषाओं जैसे–फ्रेंच एवं जर्मन, आदि में भी प्रकाशन होना प्रारम्भ हुआ। संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के दुर्लभ, शोध एवं सन्दर्भ ग्रन्थों के अंग्रेजी संस्करणों को भारत के प्रान्तिय सरकारों के अधीन स्थापित प्रकाशन विभाग (Government Publications divisions) द्वारा प्रकाशन किया जाता तथा अन्य यूरोपिय भाषाओं के संस्करणों को जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन एवं अन्य यूरोपीय देशों में भी प्रकाशित किया जाना प्रारम्भ हुआ ।

परन्तु संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ग्रन्थ प्रकाशन के क्षेत्र में अखण्ड भारत के स्वतन्त्र होते ही सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रकाशन प्रतिष्ठानों एवं मुद्रणालयों की संख्या में अपार वृद्धि दर्ज की गयी । जिसके परिणाम स्वरूप सरकारी शिक्षण संस्थाओं, शोध संस्थानों,

विश्वविद्यालयों के साथ ही साथ निजी प्रकाशन प्रतिष्ठानों ने भी संस्कृत शास्त्र के ग्रन्थ प्रकाशन को आगे बढ़ाने में सहयोग करना प्रारम्भ कर दिये ।

8. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ग्रन्थों को प्रकाशित करने वाले प्रारम्भिक भारतीय प्रकाशन प्रतिष्ठानों के कुछ प्रमुख उदाहरण -

1. भारत जीवन यान्त्रालय, काशी, वाराणसी, 1818 ।
2. आनन्द वन यन्त्रालय, शिवाला घाट, वाराणसी, 1852 ।
3. बनारस लाइट छापाखाना, बनारस, 1866 ।
4. वाराणसी संस्कृत प्रेस, वाराणसी, 1867 ।
5. अमर यन्त्रालय, वाराणसी, 1884 ।
6. हित चिन्तक प्रेस, काशी, 1900 ।
7. सिद्ध विनायक यन्त्रालय, काशी, 1914।
8. विद्या विलास प्रेस, बनारस, 1921 ।
9. विख्यात मेडिकल हाल मुद्राणालय, वाराणसी, 1949 ।
10. चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1893 ।
11. मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी ।
12. गीता प्रेस, गोरखपुर, गोरखपुर, उ.प्र. ।
13. इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, इलाहाबाद, 1929 ।
14. संस्कृत विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास,
15. जी.एस. प्रेस, मद्रास, 1956 ।
16. वापटिस्ट मिशन प्रेस, कलकत्ता, 1836 ।
17. निर्णय सागर प्रेस, मुम्बई, 1887 ।
18. गुजराती प्रिन्टिगप्रेस, मुम्बई, 1916 ।

9. विश्व संस्कृत पुस्तक मेला -

भारत में विश्व पुस्तक मेले की आयोजन की परम्परा बहुत प्राचीन न होकर 1980 के दसक के लगभग प्रारम्भ हुआ है । तब से प्रत्येक वर्ष भारत के प्रमुख महानगरों में भारत सरकार एवं नेशनल बुक ट्रस्ट के सौजन्य से इस तरह के पुस्तक मेला का आयोजन किया जाता रहा है । इस तरह के पुस्तक मेला के ओजन के पीछे सरकार तथा आयोजकों का सबसे बड़ा उद्देश्य यह होता है कि देश एवं विदेशों के विद्वान, पुस्तक अनुरागी, छात्र समुदाय, शोधार्थियों, ग्रन्थालयीयों तथा अध्यापक वर्ग अद्यतन विभिन्न विषयों में प्रकाशित ग्रन्थों को देखने, जानने अथवा समझने एवं उन्हें क्रय करने की एक उचित अवसर उपलब्ध होता है।

इस प्रकार के राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले के आयोजन से आधुनिक विषयों के प्रकाशित ग्रन्थों के साथ ही साथ संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के प्रकाशित ग्रन्थों को भी उसके अन्तिम उपयोक्ता तथा पहुँचने का एक शसक्त माध्यम प्राप्त होता है ।

सन् 2011 संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रकाशित ग्रन्थों के विश्व व्यापी प्रचार प्रसार एवं उन्नति के लिए एक उपलब्धि पूर्ण वर्ष बन चुका है । क्योंकि 2011 से पूर्व विश्व संस्कृत पुस्तक मेला आयोजित नहीं किये गये । भारत के बेगंलोर महानगर में पहली बार संस्कृत भारती तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के सौजन्य से 7 जनवरी 2011 से लेकर 10 जनवरी 2011 तक प्रथम विश्व संस्कृत पुस्तक मेला का आयोजन हुआ जिसमें संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के कुल 154 निजी एवं सरकारी प्रकाशन प्रतिष्ठानों ने संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के विभिन्न विषयों जैसे वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, व्याकरणशास्त्र, तन्त्र शास्त्र, साहित्यशास्त्र, आयुर्वेदशास्त्र, वेदान्त दर्शन, मीमांसा दर्शन, न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, योग दर्शन, पालि एवं बौद्ध साहित्य, उपनिषद् तथा जैनागम तथा प्राकृत साहित्य के मुद्रित एवं 'इ' रूपों में प्रकाशित पाठ्य ग्रन्थ, शोध ग्रन्थ तथा सन्दर्भ ग्रन्थों को उनके जिज्ञासुओं के सूचनार्थ प्रस्तुत किया गया ।

संस्कृत शास्त्र तथा भारतीय संस्कृति की सम्बाहिका संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ग्रन्थों के अधिकाधिक उपयोग, प्रचार-प्रसार तथा इससे सम्बन्धित अन्य शैक्षिक गतिविधियों के क्रमिक विकास में इस प्रकार से एक नयी परम्परा स्थापित हुई है । विश्व संस्कृत पुस्तक मेले के आयोजन की इस नयी परम्परा को भारत के साथ ही साथ विश्व के अन्य विकसित एवं विकासशील देशों में भी आयोजित किया जाना समीचीन प्रतीत होता है ।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. **उपाध्याय, आचार्य बलदेव, काशी की पाण्डित्य परम्परा, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1983, pp 353 ।**
2. **हिन्दी विश्वकोश, खण्ड-6, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, 1967, pp.331-333 ।**
3. **उपाध्याय, रामजी, प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका वाराणसी, चौखम्बा विद्या भवन, 1991, pp.164-165 ।**
4. **चतुर्वेदी, द्वारका प्रसाद शर्मा, चरित्रकोश : नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1983, pp188।**
5. **हिन्दी विश्वकोश-खण्ड-11. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, 1966, pp 492।**
6. **सिंह, परमानन्द, बौद्ध साहित्य में भारतीय समाज, वाराणसी, हलधर प्रकाशन, 1996, pp24।**
7. **Bhardwaj, Baliram Shastriy. Saraswati Bhawan Purtakalaya, Lucknow. Govt. of U.P., 1960.**

8. Nichollas, George. History of Sanskrit College, Benares, Govt. Press, 1907.

9. रजत जयंती स्मारिका वाराणसी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 1984, pp. 91-98

10. Sketch of the rise and progress of the Benares Pathshalla (University Be-centenary Series-9) Varanasi, SS.VV.,

11. शास्त्री, देवर्षि कलानाथ. जयपुर की संस्कृत परम्परा, जयपुर, हंसा प्रकाशन, 2000 pp. 7-8.

12. त्रिखा, नन्दकिशोर, प्रेस विधि, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1986. pp.17-20

13. शुक्ल, हीरालाल संस्कृत का समाजशास्त्र - स्वतन्त्रता संग्राम और संस्कृत साहित्य, दिल्ली : भारतीय विद्या प्रकाशन, 1989, 127-149 पृ0.

14. दैनिक जागरण, वाराणसी, 2011।

15. राष्ट्रीय सहरा (प्रथम संस्करण), वाराणसी, 2011।

❑❑

एकादश अध्याय

ऑनलाइन संस्कृत शब्दकोश एवं विश्वकोश तथा संस्कृत एवं प्राच्य विद्या साहित्य में इनफ्लिबनेट का योगदान

(Online Sanskrit Dictionaries and Encyclopaedias and the Contributions of Inflibnet in Sanskrit and Oriental Learnings)

1. ऑनलाइन संस्कृत शब्दकोश :

पारम्परिक संस्कृत शब्दकोश या पारिभाषिक संस्कृत शब्दकोश के क्षेत्र में कम्प्यूटर तथा संचार प्रद्यौगिकी की उपस्थिति से एक नये युग का सूत्रपात हुआ है । इसके फलस्वरूप आधुनिक विषयों की भाँति संस्कृत एवं प्राच्य विषयों के उपयोग में सूचना प्रद्यौगिकी का उपयोग दिनोदिन बढ़ता ही जा रहा है । संस्कृत शब्दकोशों के ऑन लाइन संस्करणों की सहायता संस्कृत के जिज्ञासु पाठकों को उनकी वांछित सूचना बहुत कम समय में ही इन्टरनेट के माध्यम से प्राप्त हो जाता है । इसके लिए संस्कृत के कुछ आधुनिक विद्वानों ने ऑन लाइन संस्कृत शब्दकोशों के उपयोग हेतु कुछ महत्वपूर्ण बेबसाइटों को विकसित किये हैं। इनमें से यह http : // www. Sanskrit documents. org/dict/ एक महत्वपूर्ण वेबसाइट है जिसे विश्व के किसी भी भाग में बैठे संस्कृत के जिज्ञासु पाठकगण संस्कृत के शब्दकोशीय सूचना आवश्यकता को आसानी से पूरी कर सकते हैं।

ऑन लाइन शब्दकोश का अभिप्राय यह है कि इसमें संस्कृत के अधिकांश मुद्रित शब्दकोशों को मूलरूप में उपलब्ध न कराकर उनमें निहित पाठ्य सामग्री को डिजिटल अथवा स्कैन्ड रूप में परिवर्तित करके उसे इन्टरनेट, ईमेल अथवा ऑन लाइन सेवा के माध्यम से उपयोक्ताओं को उपलब्ध कराया जाता है । ऑन लाइन संस्कृत शब्दकोशों के उपयोग में कम्प्यूटर पठनीय उपकरणों की सहायता लेनी पड़ती है तथा किसी व्यक्ति अथवा संस्था को इन शब्दकोशों को उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं से सदस्यता लेनी पड़ती है

तथा उनके द्वारा आवंटित पासवर्ड के माध्यम से सदस्य व्यक्ति अथवा संस्था संस्कृत शब्दकोशों के ऑन लाइन संस्करणों का उपयोग करने के लिए अधिकृत हो जाता है ।

1.2 संस्कृत शब्दकोशों के ऑन लाइन संस्करण - इन शब्दकोशों को दो रूपों में उपलब्ध कराया जाता है । पहले के अन्तर्गत संस्कृत के पूर्वप्रकाशित अथवा मुद्रित शब्दकोशों का नवीन डिजिटल प्रति तैयार किया जाता है, जबकि दूसरे श्रेणी के अन्तर्गत पूर्व प्रकाशित अथवा मुद्रित संस्कृत शब्दकोशों को डिजिटल कैमरा अथवा स्कैनर के माध्यम से कम्प्यूटर पठनीय संग्रह माध्यमों में रूपान्तरित कर दिया जाता है । इन दोनों रूपों में उपलब्ध ऑनलाइन संस्कृत शब्दकोशों को बिना इन्टरनेट अथवा ई-मेल की सहायता लिये उपयोग नहीं किया जा सकता है । भाषा की वैज्ञानिकता, भाषा की शुद्धता तथा भाषा की प्रामाणिकता के कारण ही संस्कृत के ऑन लाइन शब्दकोशों का उपयोग भारत के साथ ही साथ विश्व के अन्य देशों में भी तेजी से उपयोग में लाया जा रहा है ।

यही कारण है कि सूचना प्रद्यौगिकी की विभिन्न तकनीकों को विकसित करने में भारत की अन्य भाषाओं की तुलना में संस्कृत भाषा एवं व्याकरण को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक महत्व दिया गया है । ऑन लाइन संस्कृत शब्दकोश परियोजना का प्रथम शुभारम्भ कोलोन विश्वविद्यालय में स्थित तमिल अध्ययन एवं भारतीय विद्या संस्थान सबसे पहले शुरू किया है ।

संस्कृत डोक्यूमेन्टस डॉट ओ आर जी/डिक्ट साइट पर अनेक फाईल्स को विभिन्न प्रारूपों में उपलब्ध कराया गया है जिनकी सहायता से संस्कृत के इन ऑन लाइन संस्करणों को उपयोग में लाया जा सकता है । इन प्रारूपों के अन्तर्गत पोस्ट स्क्रीप्ट (Postscript) पीडीएफ (PDF) एक्स डीवीएनजी (XDVNG), आई टी एक्स (ITX), टेक्स्ट (TEXT) एवं यूनिकोड फॉरमेट (UNICODE FORMAT) को सम्मिलित किया गया है । साथ ही साथ संस्कृत में प्रयोग किये जाने वाले अंकों के लिए अलग से फाईलों की एक पूरी समूह निर्मित करके उसे इस साइट पर प्रस्तुत किया गया है । इस साइट में जाकर Please see Learning tools Section की सहायता इसको उपयोग में लाया जा सकता है ।

जब से संस्कृत ऑन लाइन शब्दकोश परियोजना शुरू हुई है तबसे कम्प्यूटर आधारित संचार के बहुआयामी माध्यमों के फलस्वरूप विश्वके प्राचीनतम भाषा संस्कृत के अध्ययन, अध्यापन तथा शोध की प्रक्रिया में पूरा विश्व समुदाय निरन्तर अग्रसर है। कोलोन डिजिटल लेक्सीकॉन की सहायता से मोनियर विलियम द्वारा प्रणीत संस्कृत अंग्रेजी शब्दकोश के सारे पृष्ठों को ऑन लाइन पद्धति द्वारा उपयोग में लाया जा सकता है । इसके अतिरिक्त कुछ सीमा तक दक्षिण एशिया के कुछ प्रमुख भाषाओं, जैसे तमिल, पहलवी, तथा केपलर प्रणीत संस्कृत शब्दकोश को भी इसके माध्यम उपयोग में लाया जा सकता है । इस सेवा में संस्कृत, तमिल, पहलवी तथा अंग्रेजी शब्दों के दोनों खोजों को समान रूप से

स्वीकृत करने से सम्बन्धित पद्धति को विकसित किया गया है । साथ ही साथ मोनियर विलियम के ऑन लाइन संस्कृत शब्दकोशों में विन्यसित संस्कृत शब्दों के अंग्रेजी में अर्थ प्राप्त करने के लिए खोज की उच्चिकृत विधि को उपलब्ध कराया गया है । इस सेवा के लिए संस्कृत शब्दों को Kyo To, SLP1, या ITRANS में लिप्यन्तर के माध्यम से निवेशित करना पड़ता है, तत्पश्चात् यह देवनागरी यूनिकोड, या हावार्ड की-योटो (Havard Kyeto), या इन्ट्रान्स (Itrans) या रोमन यूनिकोड (Roman Unicode), या रोमन सी एस एक्स (Roman CSX), या रोमन मंजूश्री सी एस एक्स (Roman Manjoo Shree CSX) के प्रारूपों में यह प्रगट होता है । इसी तरह से इसके उच्चखोज विधि में संस्कृत एवं अंग्रेजी शब्दों के अर्थों को यथासम्भव अधिकतम प्रारूपों में प्राप्त करने के उच्चिकृत खोजनीति के प्रयोग का निर्देश उपलब्ध है।

1.3. कोलोन डिजिटल संस्कृत शब्दकोश - इसके द्वारा अन्य ऑन लाइन संस्कृत-अंग्रेजी/जर्मन शब्दकोशों के शब्दों के अर्थ इत्यादि का उपयोग किया जा सकता है । कोलोन विश्वविद्यालय के तमिल भाषा अध्ययन एवं भारतीय विद्या संस्थान द्वारा विकसित ऑन लाइन शब्दकोश के द्वारा संस्कृत शब्दों के अंग्रेजी अथवा जर्मन भाषा में उनके अर्थों को प्रस्तुत किया गया है । रीचार्ड माहोने ने मोनियर विलयम के शब्दकोश का HTML Text Format का प्रारूप तैयार किया है । इसके माध्यम से मोनियर विलियम के अंग्रेजी-संस्कृत शब्दकोश में प्रयुक्त संक्षिप्किरण एवं अन्य चिह्नों आदि की पूरी की पूरी एक ऑन लाइन सूची को भी उपलब्ध कराया गया है ।

अल्प समय में संस्कृत सीखने में मोनियर विलियम तथा शिवराम वामन आप्टे के संस्कृत शब्दकोशों के साथ ही साथ अन्य शब्द कोशों के ऑन लाइन संस्करणों की महत्वपूर्ण भूमिका है । इनमें अजित कृष्णन के मुद्गलकोश आदि का पूरा-पूरा लाभ उठाया जा सकता है । इसी प्रकार लुईस बोन्त ने कोलोन ऑन लाइन शब्दकोश में मोनियर विलियम आंकिक (Digital) शब्दकोश के लिए एक पीसीवेस्ड शब्दकोश तैयार किया है जिसको निम्न बेबसाइट http :// www. members. ams. chello.nl.l. bontes के द्वारा उपयोग में लाया जा सकता हैं । इसके साथ ही साथ इस दूसरे वेबसाइट http : // www. dict.uni-leipzig.de/dictal को कोलोन वर्णन के विकल्प के रूप में उपयोग किया जा सकता है । मोनियर विलियम कृत संस्कृत अंग्रेजी शब्दकोश को श्रीपिडिया एम. डब्लू. के माध्यम से पूरा का पूरा उपलब्ध करा दिया गया है । श्रीपिडिया परियोजना से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए ई-मेल से भी सहायता ली जा सकती है ।

1.4 शिकागो विश्वविद्यालय, शिकागो द्वारा संचालित दक्षिण ऐशिया डिजिटल संस्कृत शब्दकोश परियोजना - इस परियोजना के अन्तर्गत संस्कृत के चार

प्रमुख शब्दकोशों को शामिल किया गया है । इसके अन्तर्गत एक व्यवहारिक संस्कृत शब्दकोश को लिप्यंतरण एवं व्युत्पत्ति सहित तथा आर्थर एन्थोनी मैक्डोनेल के शब्दकोश को भी लिया गया है । इसी प्रकार शेशु कार्थिक तनवीर ने Sanskrit Voice. com के माध्यम से एक विजेट (widget) एवं एक फेसबुक (a Face Book) की सुविधा को उपलब्ध कराया है । यह अपने मूल साइट के माध्यम से उपयोक्ताओं को अंग्रेजी शब्दों अथवा संस्कृति शब्दों के अर्थों को उच्चिकृत खोज की युक्तियों के माध्यम से उपलब्ध कराता है ।

Java-J2 EE Backend के सहायता से मोनियर विलियम प्रणीत संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश के ऑन लाइन संस्करण को Ajax-based Online Interface के माध्यम से भी उपयोग किया जा सकता है । इस पद्धति को सूचना प्रद्यौगिकी विशेषज्ञ चेतन ने विकसित किया है । इसमें लिप्यन्तरण के मदद से कम्प्यूटर आधारित देवानागरी के विभिन्न प्रारूपों में प्रदर्शित करता है । सन्धी इन्जन की सहायता से दो अलग-अलग शब्दों को एक साथ जोड़कर इनको देवनागरी में भी प्रस्तुत किया जा सकता है । इतना ही नहीं इसके उपयोग में पाणिनि के शिवसूत्र पर आधारित प्रत्यहार डिकोडर की भी सहायता ली जा सकती है। जावा आधारित सन्धी परियोजना सोफ्टवेयर के माध्यम से भी संस्कृत शब्दकोशों के ऑन लाइन संस्करणों का उपयोग किया जा सकता है । "पाणिनि व्याकरण के विधियों की भूमिका" नामक प्रकाशित एक लेख में इस सोफ्टवेयर के उपय्रोग का विस्तार से उल्लेख प्रस्तुत है। इस ऑनलाइन जावा आधारित सन्धी साफ्टवेयर में क्लिपबोर्ड क्रिया के द्वारा देवनागरी अथवा ई-लैटीन प्रारूपों में इन शब्दकोशों की प्रतिलिपि तैयार करने में बहुत अधिक सहायता मिलती है ।

आप्टेकृत संस्कृत से अंग्रेजी ऑन लाइन खोजी शब्दकोश को उनके द्वारा प्रणीत व्यवहारिक संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश पर आधारित है । कोलोन ऑन लाइन संस्कृत शब्दकोश पर इसका उच्चिकृत ऑन लाइन संस्करण उपलब्ध है । मोनियर विलियम प्रणीत संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश के ऑन लाइन संस्करण को सीडी के रूप में भी इस वेबसाइट–

WWW. Sudarshana. org

से अल्प लागत में प्राप्त किया जा सकता है अथवा इस दूसरे वेबसाइट WWW. Krishna. com से निःशुल्क रूप से प्राप्त किया जा सकता है ।

1.5 अन्य शब्दकोश अथवा परिभाषिक शब्दकोशों के डिजिटल अथवा ऑनलाइन संस्करण के प्रमुख उदाहरण–

1. डा. कल्याण रमण द्वारा प्रणीत भारतीय भाषाओं के शब्दकोश के ऑनलाइन संस्करण;

2. आन्द्रे सीग्रोरेट के संस्कृत-फ्रेंच शब्दकोश के ऑन लाइन संस्करण को Frasktoo.exe फाईल की सहायता से उपयोग में लाया जा सकता है ।

3. कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर के शब्दों के अर्थों को अंग्रेजी से संस्कृत में अर्थ, सन्दर्भ एवं वाक्य संरचना को श्रीकान्त जमदग्नी ने अपने सङ्गणक संस्कृत शब्दकोश में प्रस्तुत किया है ।

4. गेरार्ड हुएत के संस्कृत-फ्रेंच शब्दकोश के ऑन लाइन संस्करण तथा ऑन लाइन व्याकरण को ई-मेल के माध्यम से भी उपयोग किया जा सकता है ।

5. http: // WWW. Sanskritritreader.de वेबसाइट के द्वारा इंडिक्ट (Indict) नामक एक संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश के डिजिटल संस्सकरण को ऑनलाइन उपयोग किया जा सकता है । इसमें संस्कृत शब्दों या उनके अर्थों को लिप्यन्तरण के साथ उपलब्ध कराया जाता है तथा इसमें पूर्व निवेशित शब्दों के प्रविष्टियों को संशोधित करने, नये शब्दों को जोड़ने तथा पुराने शब्दों को सम्पादित करने की सुविधा उपलब्ध है । इस प्रकार संस्कृत शब्दकोश के इस डेटाबेस को अधिक से अधिक उपयोग में लाया जा सकता है । शब्दों के आवंटन के सम्बन्ध में इसमें कुछ सीमा तक सांख्यकि विवरणों को भी उपलब्ध कराया गया है ।

6. http: // WWW. spoken sanskrit.de यह वेबसाईट संस्कृत के ऑनलाइन हाईपर शब्दकोश का एक नवीन रूप है जिसको क्लाउज ग्लाशोफ ने डिजिटली प्रकाशित किया है । यह अपने उपयोक्ताओं को विकिपिडिंया प्रविष्टियों के रूप में उनके प्रश्नों को निवेशित करने तथा उसका विवेकपूर्ण उत्तर प्रदान करने की सुविधा उपलब्ध कराता है।

इसी प्रकार ऑन लाइन संस्कृत शब्दकोशों एवं अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दकोशों के ऑनलाइन संस्करणों के उपयोग के लिए डिजिटल शब्दकोश विशेषज्ञ यसवन्त मालविया ने एक सर्च इन्टरफेस विकसित किया है । डेलब्रुक प्रणीत संस्कृत-जर्मन शब्दकोश 1888 को स्कैन्ड रूप में (PDF 30 + Mb) तथा इसके ओ.सी.आर. प्रति (MSWOrd8+M6) को पाठकों के निवेदन पर यह अपने वेबसाइट के माध्यम तत्काल उपलब्ध करवाता है ।

ऑन लाइन संस्कृत शब्दकोशों के ई-संग्रहों तथा जर्मन, रसीयन एवं अंग्रेजी भाषा के व्याकरणों से सम्बन्धित डिजिटल संग्रहों को गुगल द्वारा निर्मित न्यूज ग्रूप के इस वेबसाइट–http : // www. groups. google. com/group/nagari
से Circa 4000 MB की सहायता से इसमें निवेंशित शब्दों को देवनागरी फान्ट में पढ़ा एवं उपयोग में लाया जा सकता है । http ://nagari. South india.ru वेबसाइट पर जाकर देवनागरी फान्ट एवं लिप्यन्तरण की सुविधा को निःशुल्क उपयोग किया जा सकता है।

'आक्टोवियन सरवैटोर ने संस्कृत के अध्यात्मिक पदों को लेकर एक ऑन लाइन अध्यात्मिक शब्दकोश के संस्करण को प्रकाशित किया है । पूरे विश्व में फैले संस्कृत के जिज्ञासुओं के लिए इस बेवसाइट से www. multilingualsbooks. com संस्कृत शब्दकोशों के अन्य वेबसाइटों के सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

1.6 अन्य भारतीय भाषाओं के ऑनलाइन शब्दकोश -

ऑनलाइन संस्कृत शब्दकोश के समान ही हिन्दी, मराठी, गुजराती एवं अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनेक ऑन लाइन् शब्दकोशों को निर्मित किया गया है। भारतीय भाषाओं में रूचि लेने वाले जिज्ञासुओं द्वारा शब्दकोशों के इन डिजिटल संस्करणों को इन्टरनेट अथवा ऑनलाइन के माध्यम से उपयोग में लाया जा सकता है ।

1.7 भारत सरकार के राजभाषा शब्दकोश के ऑनलाइन संस्करण -

भारत सरकार एवं राज्य सरकारें विभिन्न प्रकार के सरकारी गतिविधियों एवं क्रियाकलापों के सफल संचालन हेतु ऑनलाइन बहुखण्डीय शब्दकोशों के नवीन संस्करणों को प्रकाशित किये हैं । विकिपिडिया हिन्दी ग्लोशरी इस प्रकार के शब्दकोशों का एक प्रमुख उदाहरण है। इस ऑनलाइन ग्लोशरी के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के शब्दों के अर्थों को उपलब्ध कराता है । शब्द कोश डॉटकाम के माध्यम से हिन्दी, मराठी, तथा गुजराती शब्दकोशों को ऑन लाइन सेवा द्वारा उपलब्ध कराया जाता है । इसके अतिरिक्त इन दो वेबसाइट्स–http :// www. iiit. net/ltre/down loads. html तथा http : // www. iiit.net/ madhvi/de.html से भी सहायता ली जा सकती है । इन ऑन लाइन शब्दकोशों को हिन्दी डिक्सनरी रीड मी फाईल तथा आई. एस. सी. आई.आई. इन्टरफेस (ISCII Interface) के माध्यम से भी उपयोग किया जा सकता है । इसी क्रम में एक और उच्चिकृत इन्टरफेस को अक्षर माला साइट पर विकसित किया गया है ।

भारत के चौदह भाषाओं में उपलब्ध लगभग 5000 सामान्य शब्दों को प्रयोग करके एक बहुभाषिक शब्दकोश के डिजिटल संस्करण को तैयार किया गया है। जिसे ऑन लाइन के द्वारा उपलब्ध करवाया गया है । टी डी आई एल. (TDIL) के साथ मिलकर भारत सरकार की ओर से ऑन लाइन हिन्दी विश्वकोश की परियोजना को इस वेबसाइट http: // www. tail.mit. gov. ongoing-pros.html के रूप में विकसित किया जा रहा है ।

Archive.org वेबसाइट के माध्यम से आई.डब्लू.एच.टी. इन्टरफेस (iwht interface) द्वारा ऑनलाइन हिन्दी विश्वकोश के अन्य दूसरे संस्करणों को भी उपयोग में लाया जा सकता है । इस तरह के हिन्दी-मराठी एवं अंग्रेजी शब्दकोशों के एक वृहद डेटा बेस को रीशोर्स सेन्टर फार इण्डियन लैंग्वेजेज, मुम्बई के द्वारा ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया

है। एक अन्य मराठी-अंग्रेजी शब्दकोश जिसे 1911 में श्रीधर गणेश वाजे प्रकाशित कराया था, को शिकागो विश्वविद्यालय द्वारा ऑनलाइन शब्दकोश परियोजना के अन्तर्गत इस शब्दकोश के डिजिटल संस्करण को ऑन लाइन उपलब्ध कराया गया है। ऑन लाइन शब्दकोश को Molesworth's Digitised Marathi-English Dictionary के वेबसाइट पर उपयोग किया जा सकता है । शब्दकोश डाटकाम के वेबसाइट के माध्यम से सामान्य हिन्दी एवं अंग्रेजी शब्दकोशों के ऑनलाइन संस्करणों को उपलब्ध कराया गया है । इसमें हिन्दी शब्दों के पर्यावाची शब्दों तथा उनके अनुवादों को भी शामिल किया गया है । हिन्दी सीखने वाले जिज्ञासुओं के लिए यह वेबसाइट http : // www.en.bab.la. dictionary/english-hindi. बहुत उपयोगी साइट है । इसमें उपयोगी वाक्यों के साथ ही मुहावरों एवं कहावतों को भी प्रस्तुत किया गया है तथा अधिक से अधिक हिन्दी शब्दों का ज्ञान हो सके इसके लिये इस साइट पर प्रश्नावली तथा कम्प्यूटर आधारित खेलों की पहेलियों को प्रस्तुत किया गया है जिसकी सहायता से हिन्दी सीखने के जिज्ञासु पाठक अपनी हिन्दी शब्दकोश ज्ञान की क्षमता में वृद्धि करने में समर्थ हो सकते हैं ।

यह वेब साइट http : // WWW. gujarati-Lexicon.Com गुजराती शब्दकोश के ऑन लाइन संस्करण का एक महत्वपूर्ण साइट है। इस वेवसाइट के उपयोग द्वारा गुजराती से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से गुजराती के शब्दों एवं उनके अर्थों को पढ़ने के लिए एक उपयोगी इन्टरफेस को इसपर उपलब्ध कराया गया है।

1.8 शिकागो विश्वविद्यालय एवं दक्षिण एशिया ऑन लाइन शब्दकोश परियोजना -

इस परियोजना के अन्तर्गत दक्षिण ऐशिया के अनेक भाषाओं की शब्दकोशों के ऑनलाइन संस्करणों को शिकागो विश्वविद्यालय ने अपनी वेबसाइट के माध्यम इसे उपलब्ध कराता है । इसमें दक्षिण ऐशिया के कुल 16 भाषाओं के शब्दकोशों का डिजिटल संस्करण प्रस्तुत किया है । इस डिजिटल संस्करण में दक्षिण ऐशिया के बलूची, खोवर, परशीयन, तोरवली, बांग्ला, मराठी, उर्दू, राजस्थानी, नेपाली, संस्कृत, हिन्दी, पालि, तमिल, कश्मीरी, पस्थों एवं तुलुगु भाषाओं के शब्दों को सम्मिलित किया गया है । दक्षिण ऐशिया के शेष भाषाओं के ऑन लाइन शब्दकोश या डिजिटल शब्दकोश को इस परियोजना के अगामी संस्करणों में प्रस्तुत करने की योजना है ।

दक्षिण ऐशिया के विभिन्न भाषाओं की इस बृहद ऑन लाइन शब्दकोश परियोजना संयुक्तराष्ट्र के स्नातक, कार्यक्रम तथा अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा कार्यालय के अधीन कार्यरत अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं अध्ययन केन्द्र द्वारा वित्तपोषित है । कोलम्बिया विश्वविद्यालय में स्थित घरमं हिन्दूजा इण्डिक रीसर्च सेन्टर द्वारा डी.डी.एस.ए. के लिए चार संस्कृत शब्दकोश के ऑन लाइन संस्करण को प्रस्तुत किया जा चुका है ।

2. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ऑनलाइन विश्वकोश -

जिस तरह से संस्कृत शब्दकोशों के डिजिटल अथवा ऑनलाइन संस्करण को लेकर भारत की तुलना में विदेशों में बहुत पहले ही अनेक परियोजनाओं को प्रारम्भ कर दिया गया था ठीक वैसे ही संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के विश्वकोश के डिजिटल अथवा ऑनलाइन संस्करण पर विदेशों में कुछ परियोजनाओं को बहुत पहले ही शुरू कर दिया गया था ।

Internet Encyclopaedia of Philosophy डिजिटल अथवा ऑनलाइन विश्वकोश का एक प्रमुख उदाहरण है । भारत में कुछ संस्कृत के आधुनिक विद्वानों ने संस्कृत विश्वकोशों के डिजिटल अथवा ऑन लाइन संस्करण को प्रकाशित कर चुके हैं । इस दिशा में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के सौजन्य से विश्वप्रसिद्ध "वाचस्पत्यम्" संस्कृत विश्वकोश के डिजिटल अथवा ऑनलाइन संस्करण संस्कृत के जिज्ञासुओं के लिए शीघ्र ही उपलब्ध होनें वाला है । साथ ही साथ, भारत तथा विश्व के अनेक देशों में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ सन्दर्भ ग्रन्थों एवं सूचना स्रोतों के डिजिटल संस्करणों को विकसित कर रहे हैं ।

2.1 संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के सन्दर्भ ग्रन्थों के डिजिटाइज्ड एवं स्कैन्ड संस्करणों के कुछ प्रमुख उदाहरण–

A) डिजिटाइज्ड संस्करण :

a. Monier Williams Sanskrit-English Dictionary (Advance Search).

b. Bochtlingk + Schmidt Sanskrit German Dictionary.

c. Bochtlingk & Roth Sanskrit German Dictionary.

d. Apte English-Sanskrit Dictionary.

e. Sanskrit and Temil Dictionaries.

f. MW Infllected forms.

B) स्कैण्ड संस्करणं :

a. Monier Williams Sanskrit-English Dictionary (Pdf-img).

b. Apte English-Sanskrit Dictionary (Pdf-img).

c. MacDonell Sanskrit - English Dictionary (img)

d. Wilson Sanskrit-English Dictionary (img).

e. Boehtlink Sanskrit German Dictionary.

f. Bochtlingk Roth Sanskrit-German Dictionary.

g. Kale Higher Sanskrit Grammar, 1894 (img)

3. इनफ्लिबनेट का योगदान-

इनफ्लिबनेट (Inflibnet) भारत का राष्ट्रीय ग्रन्थालय एवं सूचना नेटवर्क है तथा यह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) का स्वायतशासी अन्तर्विश्वविद्यालयीन केन्द्र है । इसका मुख्य कार्यालय गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात के प्रांगण में स्थित है। यह अपने कार्यों का सम्पादन एकशासी निकाय, परिषद् एवं वित्त समिति के माध्यम से सम्पन्न करता है । इसका कार्यकारी अधिशासी निदेशक होता है ।

यह केन्द्र भारतीय विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों एवं सूचना केन्द्रों के अधीन संगृहीत पाठ्य सामग्रियों के ग्रन्थ परक सूचनाओं को डेटाबेसों के रूप में संग्रहण कर ऑनलाइन प्रसार नेटवर्क के द्वारा सदस्य संस्थाओं के उपयोक्ताओं को उनके अध्ययन, अध्यापन तथा शोध गतिविधियों को यथा समय पूर्ण किया जा सके को लक्ष्य करके इस केन्द्र को यू.जी.सी. द्वारा स्थापित किया गया है ।

3.1 उद्देश्य एवं विभिन्न गतिविधियाँ–

इस केन्द्र का सबसे प्रमुख उद्देश्य यह है कि इसके माध्यम से भारत में स्थित सभी विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों एवं सूचना केन्द्रों के ग्रन्थालयों में संकलित पाठ्य सामग्री को कम्प्यूटर आधारित प्रक्रियाओं द्वारा अधिक से अधिक उपयोक्ताओं द्वारा उपयोग किया जा सके ।

ग्रन्थालय एवं सूचना केन्द्रों का आधुनिकीकरण करना, सूचनाओं को संचार प्रद्यौगिकी की सहायता से स्थानान्तरित करना, तथा आधुनिकीकरण प्रक्रिया से सम्बन्धित विभिन्न तकनीकों एवं प्रविधियों को विकसित करना आदि गतिविधियों को इनफ्लिबनेट परियोजना के मुख्य उद्देश्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया जा सकता है । इस परियोजना को सर्वप्रथम सन 1991 में प्रारम्भ किया गया तथा मई 1996 से इसके द्वारा प्रारम्भ किये गये विभिन्न क्रियाकलापों में बहुत तेजी से विकास हुआ और यहीं से यह केन्द्र यू.जी.सी. का एक स्वतन्त्र स्वायतशासी अन्तर विश्वविद्यालयीन केन्द्र के रूप कार्य कर रहा है।

यह केन्द्र आधुनिक सूचना प्रद्यौगिकी की सभी विधियों एवं प्रकारों के उंपयोग के द्वारा भारत के सभी विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों के ग्रन्थालयों एवं सूचना केन्द्रों को एक राष्ट्रीय नेटवर्क के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास कर रहा है । अर्थात् ग्रन्थालयों के आधुनिकीकरण, यंत्रीकरण तथा ग्रन्थालयों में संकलित सामग्रियों का एक संघीय डेटाबेस विकसित कर शिक्षाविदों, विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों को ऑन लाइन सेवा द्वारा उनके वांछित सूचनाओं को उपलब्ध कराना ही इसका प्रमुख कार्य है । इन गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है।

3.1.1. ग्रन्थालय स्वचालन—इस केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों में भारतीय विश्वविद्यालयों तथा उच्चस्तरीय शोध संस्थानों के ग्रन्थालयों को स्वचालन (Automation) की सुविधा से सुसज्जित करना है जिससे इन ग्रन्थालयों के अन्तर्गत नेटवर्किंग एवं संसाधनों की सहभागिता के द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान करने में सुविधा मिल सकती है । इसके लिए यह केन्द्र यूजीसी के माध्यम से विश्वविद्यालयों को अनावर्ति अनुदान प्रदान करता है । 2010 तक लगभग दो सौ से अधिक भारतीय विश्वविद्यालयों एवं उच्च शोध संस्थानों के ग्रन्थालयों को इस कार्य हेतु अनुदान प्राप्त हो चुका है । भारत में स्थित संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के क्षेत्र से सम्बन्धित विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों, संस्कृत विद्या पीठों के अन्तर्गत सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं अन्य को अनुदान की यह सुविधा दी जा चुकी है ।

3.1.2. सोलसाफ्टवेयर को विकसित करना—भारत के विश्वविद्यालय ग्रन्थालयों एवं सूचनाओं केन्द्रों में संचालित होने वाले विभिन्न सूचना गतिविधियों को एक समन्वित ग्रन्थालय साफ्टवेयर के द्वारा सम्पन्न कराया जा सके को लक्ष्य करके सोल साफ्टवेयर (SOUL Software) को विकसित किया गया है । SOUL Software शब्द Software for University Libraries का संक्षिप्त नाम है । इस साफ्टवेयर के सोल (SOUL) के नाम से शुरू करने के पहले कुछ अन्य नामों पर भी विचार किया गया था, परन्तु यू.जी.सी. के तत्कालीन चेयरमैन प्रो. यशपाल, इनफ्लिबनेट के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. सालगर तथा इनफ्लिबनेट के तत्कालीन निदेशक डा. टी.ए.वी. मुर्थी के द्वारा इस ग्रन्थालय साफ्टवेयर के लिए सोल साफ्टवेयर (SOUL Software) का नाम तय किया गया ।

यह साफ्टवेयर क्लांईट सरभर मोड में MS-SQL पर आधारित विन्डो आपरेटिंग सीस्टम के माध्यम से कार्य करता है । इसकी सहायता से बहुभाषिय डेटाबेस को निर्मित किया जा सकता है तथा इसमें वेब एक्सेस की सुविधा उपलब्ध है । इसमें ग्रन्थालय में सम्पादित किये जाने वाले प्रमुख नैतिक्य कार्यों पर आधारित पाँच मेजर मोड्यूलस Acquisition, Cataloguing, Circulation, OPAC एवं Serials Control को निर्मित किया गया है । इसको सी.सी.एफ. प्रारूप पर आधारित करके विकसित किया गया है तथा MARC 21 से ग्रन्थपरक डेटा के आयात एवं निर्यात के लिए एक उपयुक्त इन्टरफेस की सुविधा दी गयी है। इस साफ्टवेयर में डेटा प्रविष्टियों के दौरान शब्दों के वर्तनी नियंत्रण तथा व्याकरण शुद्धी के लिए कुछ निर्देश फाइलों की सुविधा दी गयी है । अबतक एक सौ से अधिक भारतीय विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों में इसे उपयोग में लाया जा रहा है । इसके प्रारम्भिक संस्करणों में आई. एस. एम. साफ्टवेयर के माध्यम से देवनागरी लिपि के ग्रन्थों के डेटा प्रविष्टि की सुविधा थी परन्तु उन प्रविष्टियों के लिए AACR-II प्रारूप में देवनागरी

लिपि में सूची पत्रकों को प्रिन्ट करने में कठिनाई थी, परन्तु इसके वर्तमान संस्करण बहुत विकसित है ।

3.1.3. संघीय डेटाबेस—यह केन्द्र भारत के सभी विश्वविद्यालयों, मानित विश्वविद्यालयों तथा शोध संस्थानों के ग्रन्थालयों के अधीन संगृहीत सूचना सामग्रियों का एक संघीय संघीय डेटाबेस तैयार करने हेतु सतत प्रयास रत है। इस संघीय डेटाबेस को इसके वेबसाइट http :// www. inflibnet.ac.in पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से उपलब्ध कराया जाता है । इस संघीय डेबाबेस के अन्तर्गत जिन डेटाबेसों को उपलब्ध कराया जाता है, वे इस प्रकार निम्न हैं–

i. ग्रन्थडेटाबेस (Monograph Databases)—इस डेटाबेट में सदस्य संस्थाओं के ग्रन्थालयों के अधीन संगृहीत नये तथा पुराने प्रकार के ग्रन्थों के ग्रन्थपरक सूचनाओं को सोल साफ्टवेयर में निवेशित करने के बाद इसके सीडी प्रति तैयार करके सदस्य ग्रन्थालयों द्वारा इस केन्द्र के मुख्य कार्यालय, अहमदाबाद को उपलब्ध कराया जाता है जहाँ पर इन सीडी में संकलित ग्रन्थ परक सूचनाओं को संघीय डेटाबेस में सम्मिलित कर लिया जाता है। वर्तमान इस डेटाबेस के माध्यम से भारतीय विश्वविद्यालय के ग्रन्थालों के अधीन संगृहीत ग्रन्थों के लगभग साठ लाख के आस-पास ग्रन्थों के ग्रन्थ परक सूचनाओं को उपलब्ध कराया गया है । इन ग्रन्थपरक सूचनाओं में भारत के आधुनिक विश्वविद्यालयों के साथ ही साथ पारम्परिक विश्वविद्यालयों जैसे सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी तथा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं अन्य संस्कृत विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों के संकलनों को भी इसमें शामिल किया गया है । इस डेटाबेस के माध्यम से सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती भवन ग्रन्थालय में संगृहीत लगभग दस हजार के आस-पास मुद्रित ग्रन्थों के ग्रन्थ परक सूचनाओं को उपलब्ध कराया गया है ।

ii. शोध-प्रबन्ध डेटाबेस—इस डेटाबेस के माध्यम से भारत के आधुनिक विश्वविद्यालयों के साथ ही साथ पारम्परिक विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों में संगृहीत विभिन्न विषयों के शोध प्रबन्धों के लगभग डेढ़ लाख से अधिक संख्या में भारतीय शोध छात्रों के लिए ग्रन्थपरक विवरणों के साथ इसे उपलब्ध कराया गया है । शोधकर्त्ताओं द्वारा शीर्षकों के चयन में इससे बहुत अधिक सहायता मिलती है ।

iii. अद्यतन धारावाहिकों तथा शोध पत्र-पत्रिकाओं के संकलनों का डेटाबेस—इस डेटाबेस में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के संकलित 40,000 से अधिक धारावाहिकों के शीर्षक्रों में से 18000 के लगभग शीर्षकों के ग्रन्थपरक-सूचनाओं को उपलब्ध कराया जा चुका है । इस डेटाबेस के माध्यम से विश्वविद्यालय ग्रन्थालयों के मध्य संसाधनों की सहभागिता में बहुत सहायता मिलती है । इस डेटाबेस की सहायता से भारतीय विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं को बहुत कम खर्च में ही उनके शोध विषयों से सम्बन्धित साहित्य आसानी से प्राप्त हो सकता है।

iv. अद्यतन धारावाहिक डेटाबेस–इस डेटाबेस को यह केन्द्र सर्वप्रथम सन् 1998 में प्रारम्भ किया है तथा सन् 2000 तक इसमें भारत के 105 विश्वविद्यालय ग्रन्थालयों में सब्सक्राइब्ड 10500 से अधिक अद्यतन धारावाहिकों को उपयोग हेतु प्रस्तुत किया जा चुका है ।

v. विशेषज्ञ डेटाबेस–इस डेटाबेस के माध्यम से समस्त भारतीय विश्वविद्यालयों में कार्यरत वरिष्ठ संकाय सदस्यों को शामिल किया गया है तथा आवश्यकता पड़ने पर इनसे तत्काल सम्पर्क स्थापित करने में यह डेटाबेस बहुत उपयोगी है । अबतक इसमें कुल 14000 के लगभग विशेषज्ञों के अभिलेखों को उपलब्ध कराया जा चुका है । यह डेटाबेस एलीट तथा पियर ग्रूप अथवा इनविजिबूल कालेज के मध्य सम्पर्क स्थापित करने का एक शसक्त माध्यम है ।

vi. शोध परियोजनाएँ –इनफ्लिबनेट केन्द्र के माध्यम से विभिन्न सरकारी अथवा स्वायशासी संस्थाओं के रूप में कार्यरत पचास से अधिक संगठनों एवं विभागों को शोधकार्य के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध कराया जा चुका है तथा अद्यावधि यह व्यवस्था अग्रसर है।

vii. सूचना के द्वितीयक श्रेणी के धारावाहिकों एवं सी.डी. रोम डेटाबेस– इस केन्द्र ने इस नवीन डेटाबेस परियोजना को सन् 1998 में कुल 300 प्रलेखों के साथ प्रारम्भ किया था जिसके अन्तर्गत सीडी रोम में अनुदानित ग्रन्थ परक डेटाबेस, सारकरण एवं अनुक्रमणीकरण के पत्रिकाओं को जिनको भारत में कम से कम 110 विश्वविद्यालयों में प्राप्त किया जाता है, को सम्मिलित किया गया है । इसकी सहायता से ऊँचे मूल्य के धारावाहिकों को अनावश्यक रूप से अनेक ग्रन्थालयों में क्रय करने तथा तथा उन्हें संगृहीत करने में उत्पन्न स्थान की समस्या से बचा जा सकता है ।

3.1.4. इनफ्लिबनेट केन्द्र द्वारा आयोजित अन्य सेवाएँ–इस केन्द्र द्वारा आयोजित अन्य सेवाओं के अन्तर्गत सी डी रोम आधारित सेवा, कापसैट सेवा, ओ.सी. एल.सी. प्रथम खोज सेवा के ग्रन्थपरक सूचनाओं को सदस्य संस्थाओं के पाठकों को निःशुल्क उपलब्ध करवाना तथा प्रलेख-प्रदाय सेवा (Document Delivery Service) के अन्तर्गत छः भारतीय विश्वविद्यालयों को अधिकृत किया गया है जो इस प्रकार निम्नलिखित हैं–

1. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।
2. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ।
3. पंजाब विश्वविद्यालय, चन्डीगढ़ ।
4. हैदराबाद विश्व विद्यालय, हैदराबाद ।
5. टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस, मुम्बई।
6. इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस, बैंगलूरू।

इनफ्लिबनेट केन्द्र द्वारा अधिकृत किये गये उपर्युक्त छः विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के अधीन प्रलेख प्रदाय सेवा तिव्रगति से संचालित हो रहा है । परन्तु संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के पारम्परिक विश्वविद्यालयों में से किसी एक को इसमें सम्मिलित किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है । इस दृष्टिकोण से सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी अपने 220 वर्षों के संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के ऐतिहासिक धरोहर के साथ ही इस प्रलेख प्रदाय सेवा के लिए अधिकृत किया जाना उचित प्रतीत होता है ।

यह केन्द्र उपर्युक्त वर्णित सेवाओं के अतिरिक्त प्रतिवर्ष भारत में (Caliber) कैलीवर के वार्षिक सम्मेलनों को आयोजित कर विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के ग्रन्थालयों में पुस्तकालय स्वचालन के उपलब्धियों एवं विस्तारों पर ग्रन्थालियों एवं सूचना अधिकारियों को अपने विचारों एवं सुझावों को एक दूसरे के मध्य आदान-प्रदान करने हेतु उचित अवसर प्रदान करता है ।

3.1.5. यू.जी.सी.–इन्फोनेट (UGC-INFONET)-यह परियोजना भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षिक गतिविधियों में सूचना एवं संचार प्रद्यौगिकी का अधिकाधिक उपयोग हो सके के लिए इसे एरनेट इण्डिया तथा इनप्लिबनेट केन्द्र ने प्रारम्भ किया है। यूजीसी-इन्फोनेट एक राष्ट्रीय स्तर का भारतीय शिक्षा के विकास में एक बृहद् संचार नेटवर्क है तथा इसके माध्यम से भारतीय विश्वविद्यालयों में संचालित होने वाले शोध, शैक्षिक तथा अन्य गतिविधियों को ऑनलाइन द्वारा अधिक से अधिक उपयोग किया जा सकता है। यू.जी.सी. के बेबसाइट की सहायता से इससे सम्बन्धित विस्तृत सूचना प्राप्त की जा सकती है। इस साइट का यू.आर. एल. www.ugc.ac.in है ।

❑❑

द्वादश अध्याय

संस्कृत तथा प्राच्य विद्या के प्रमुख विषयगत 'ई' एवं आनलाइन सूचना स्रोत

(Subject based 'e' and online Major Sources of Information of Sanskrit and Oriental Learnings)

1. भूमिका-

कम्प्यूटर, इन्टरनेट एवं सूचना प्रद्यौगिकी के आगमन से विज्ञान, अभियांत्रिकी, गणित एवं सामाजिक विज्ञानों के साथ ही साथ संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के प्रकाशन के क्षेत्र में भी एक नयी दिशा अर्थात् -"ई" प्रकाशन के रूप में प्राप्ति हुई है । 'ई' प्रकाशन का विस्तृत रूप "ईलैक्ट्रानिक प्रकाशन" है । इसके अन्तर्गत ग्रन्थों एवं ग्रन्थेतर पाठ्य सामग्रियों को ईलैक्ट्रानिक विधियों से मुद्रित एवं प्रकाशित किया जाता है । कागज आधारित मुद्रित ग्रन्थों के सभी रूपों को ईलैक्ट्रानिक अथवा डिजिटल रूपों में.प्रकाशित किया जा सकता है । उदाहरणार्थ, आनलाइन शब्दकोश, विश्वकोश, ई-बुक्स, ई-मैगजीन, एवं ई-बुलेटिन आदि को सम्मिलित किया जा सकता है ।

ई-ग्रन्थ मुख्य रूप से ग्रन्थों का डिजिटल रूपांतरण है जिनको ईलैक्ट्रानिक विधियों से संगृहीत किया जाता है तथा उपयोग में लाया जाता है । इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसको उपयोग करने के लिए कम्प्यूटर पठनीय उपकरणों की सहायता लेनी पड़ती है ।

2. 'ई' ग्रन्थ के प्रकार-

यह मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं जैसे किसी विषय से सम्बन्धित एक नयी कृति को डिजिटल अथवा ईलैक्ट्रानिक विधियों के विभिन्न तकनीकों की सहायता लेकर नवीन संस्करण प्रकाशित करना तथा दूसरे रूप के अन्तर्गत पूर्व प्रकाशित कागज अधारित मुद्रित ग्रन्थ को उच्चश्रेणी के डिजिटल कैमरा अथवा स्कैनर की सहायता से स्कैन्ड इमेज तैयार किया जाता है । इस प्रकार इन दोनों प्रकारों के ई-ग्रन्थों के उपयोग एवं संग्रह के लिए कुछ विशेष ईलैक्ट्रानिक विधियों की सहायता लेनी पड़ती है । उदाहरण के लिए इन्हें

एक व्यक्तिगत कम्प्यूटर (PC) या इसी प्रकार का कोई अन्य विधि अथवा ई-ग्रन्थ रीडर की सहायता से इसे पढ़ा अथवा अन्य उपयोग में लाया जा सकता है । कागज आधारित मुद्रित ग्रन्थ सामग्रियों की तुलना में ई-पाठ्यसामग्री बहुत अधिक उपयोगी एवं सूचना प्रद होती है।

3. ई-पाठ्य सामग्री के प्रारूप-

ई-पाठ्य सामग्री के ईलैक्ट्रानिक आरूपों के अन्तर्गत श्रव्य दृश्य सामग्री (**Audio-Visual Objects**), माइक्रोफार्म्स, सीडी रोम, डीवीडी, ई-मेल, फैक्स, इन्ट्रानेट तथा इन्टरनेट को सम्मिलित किया जा सकता है । इन माध्यमों के द्वारा ई-ग्रन्थों के उपयोग एवं उनके आदान-प्रदान बिना किसी बाधा के सम्पन्न किये जा सकते हैं।

4. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में ई-ग्रन्थ प्रकाशन-

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के क्षेत्र में कार्यरत अध्यापक वर्ग, शोधकर्त्ता एवं छात्र समुदाय को उनके द्वारा मांगी गयी सूचनाओं को यथाशीघ्र कैसे उपलब्ध करायी जा सके जिससे कि वे अपने अध्यापन, अध्ययन एवं शोध कार्यों को समय सीमा के अन्दर ही पूरा करने में समर्थ हो सके । इसी को दृष्टिगत करते हुए इस क्षेत्र में ई-ग्रन्थ प्रकाशन के द्वारा संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के अनेक सन्दर्भ एवं सूचना स्त्रोतों को 'ई' रूपों में प्रकाशित किये जा चुके हैं तथा यह प्रक्रिया निरन्तर गतिशील है । इसकी सहायता से संस्कृत में रूचि रखने वाले जिज्ञासुओं को अद्यतन सूचनाओं को त्वरित गति से उपलब्ध करायी जाती है ।

अब तक भारत सहित विश्व के अनेक राष्ट्रों में संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ई-प्रलेखों के कम से कम पचीस के आस-पास वेब साईट्स विकसित किये जा चुके हैं । कुछ वेबसाईट्सट में इन प्रलेखों की सीडी, डीवीडी अथवा अन्य रूपों में इनको प्राप्त करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण ईलैक्ट्रानिक-मेलों से सीधा सम्पर्क हेतु निर्देश भी दिये गये हैं। संस्कृत एवं प्राच्य विद्या से सम्बन्धित विभिन्न वेबसाईट्स में **www.Sanskrit documents. org** एक महत्वपूर्ण वेबसाइट है जिसके उपयोग द्वारा संस्कृत के ई-पाठ्य-सामग्रियों का अधिक से अधिक उपयोग किया जा सकता है ।

5. संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के ई-प्रलेखों के प्रमुख वेबसाइटस एवं यू.आर.एल.स.-

1. **http :// www. india culture.nic.in**
2. **http : // www. sanskritdocuments.org/**
3. **http : // www. Vedamu.org.**
4. **http : // www. atmadharan. com**
5. **http : // www. onlinedarshan.com**
6. **http : // www. ambaa. org.**

7. **http : // www. sanskrit. safire.Com**
8. **http : // www. astrojyoti. Com**
9. **http : // www. muktabodha.org**
10. **http : // svbf. org/**
11. **http : // www. vidyabrikshah. org.**
12. **http : // www. ibiblio. org/ jainism/database.**
13. **http : // www. uwest. edu/sanskrit Canon.**
14. **http : // www. ahobila mutta. org/tamil html.**
15. **http : // geo cities. com/yajurveda/**
16. **http : // www. granthamandiram.com**
17. **http : // www. Vedavid. org/**
18. **http : // www. sanskritlinks. blogspot. com/**
19. **http : // www. ssvv.up.nic.in**
20. **http : // www. icpr. in**
21. **http : // www. ignca. nic.in**
22. **http : // www. sanskrit-lexicon-uni-koeln-de/**

6. फॉक एवं यूजनेट-

'ई' संस्कृत प्रलेखों के रूप में विस्तृत सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए फॉक (FAQ) एवं यूजनेट (USENET) एक शसक्त माध्यम है । फॉक (फ्रीक्वेन्टली आस्कड क्वेश्चन्स फार संस्कृत डाक्यूमेन्टस) का एक संक्षिप्त रूप है । संस्कृत में 'ई' प्रलेखों के वेबसाइट्स भिन्न भिन्न हो सकते हैं तथा यह भी सम्भव नहीं है कि सभी उपयोक्ताओं को संस्कृत ई-प्रलेखों के सभी साइट्स के बारे में पूरी-पूरी जानकारी पहले से ही है । इसलिए संस्कृत के 'ई'–प्रलेखों में निहित वांछित सूचनाओं को त्वरित गति से फॉक एवं यूजनेट के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है । यह एक प्रकार का सहायता उपकरण (Help tool) के रूप में कार्य करता है ।

इस प्रकार संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के उपयोक्ताओं को विभिन्न विषयों से सम्बन्धित 'ई' अथवा डिजिटल प्रलेखों पर आधारित प्रश्नों की एक विस्तृत श्रृंखला में से फॉक अथवा यूजनेट के द्वारा अपने वांछित उतर को प्राप्त करने के लिए कुछ चयनित प्रश्नों को वर्तमान में इन्टरनेट के माध्यम से जिन वेबसाइट्स अथवा यू.आर. एलस. को उपलब्ध कराया गया है उन सभी में फॉक एवं यूजनेट की सुविधा उपलब्ध है, क्योंकि ई-प्रलेखों के अधिकाधिक उपयोग के लिए यह एक शसक्त माध्यम है।

चयनित वाङ्मयसूची (Selected Bibliography)

1. वर्णेकर, श्रीधरभास्कर : संस्कृत वाङ्मय कोश, कलकता, भारतीय भाषा परिषद्, 1987. तीन खण्ड ।
2. उपाध्याय, आचार्य बलदेव : काशी की पाण्डित्य परम्परा, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1983 ।
3. हिन्दी विश्वकोश : खण्ड-6, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, 1967।
4. त्रिपाठी, एस.एम. एवं गौतम, जे. एन. : सूचना एवं सन्दर्भ के प्रमुख स्रोत, आगरा, वाई. के. पब्लिशर्स, 2005 ।
5. त्रिपाठी, एस. एम. : विज्ञानों तथा सामाजिक विज्ञानों एवं मानविकी की वाङ्मय सूचियाँ तथा सूचना स्रोत, आगरा, वाई. के. पब्लिशर्स, 2003।
6. त्रिपाठी, एस.एम. : सूचना एवं सन्दर्भ स्रोत के नवीन आयाम, आगरा, वाई. के. पब्लिशर्स, 1993 ।
7. गुप्ता, पवन कुमार एवं पवन, उषा : सन्दर्भ सेवा एवं सूचना स्रोत, जयपुर, आर. बी. एस. ए. पब्लिशर्स, द्वितीय संस्करण, 1998 ।
8. कौशिक, पूर्णिमा : सन्दर्भ सेवा : सिद्धान्त एवं व्यवहार, जयपुर, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा. लिमिटेड, 2002 ।
9. शर्मा, अजय कुमार : पुस्तकालय सन्दर्भ सेवा, वाङ्मय सूची एवं प्रलेखन, दिल्ली, चेतना प्रकाशन, 1990-91 ।
10. शास्त्री, द्वारका प्रसाद : पुस्तकालय में सन्दर्भ सेवा, वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, 1960 ।
11. शर्मा, चन्द्रकान्त : ग्रन्थालय में सन्दर्भ सेवा, नई दिल्ली, मेट्रो पोलिटन बुक कम्पनी प्रा. लिमिटेड, 1978 ।
12. सुदेश्वरन, के. एस. : सन्दर्भ सेवा : सिद्धान्त और प्रयोग, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1980 ।
13. अग्रवाल, एम. एल. एवं शर्मा, एस. जी. : पुस्तकालय सन्दर्भ सेवा, जयपुर, प्रिन्टवैल, 1994 ।
14. Chakrabarti, Bhubaneshwar : Fundamentals of reference service. Calcutta, World Press, 1985.
15. Mukherjee, A.K. : Reference work and its tools. ed. 3. Calcutta, World Press, 1971.

16. Ranganathan, S.R. : Reference Service. Ed.2. Bombay, Asia Publishing House, 1961.
17. Sharma, Jagadish Sharan and GROVER : Reference Service and Sources of Information, New Delhi, ESS ESS Publications, 1987.
18. Krishna Kumar : Reference Service. New Delhi, Vikas Publishing House Pvt.Ltd., 1987.
19. Grogan, Denis : Science and Technology : an introduction to literature 4rth ed., London Clive Bingley, 1982.
20. Shores, Louis : Basic reference sources, Chicago, American Library Association, 1954.
21. KATZ, Welliam A. : Introduction to reference work, 5th. edn., New York, McGrahill, 1987. 2 Vols.
22. Davinson, Donald : Reference Service, London, Clive Bingley, 1980 .
23. GALVIN, Thomas J. : Problems in Reference Service, New York, Bowker, 1965.
24. MONIER, William M. : A Sanskrit English Dictionary, 1899.
25. NICHOLLAS, George : History of Sanskrit College of Benares, Benaras, Government Press, 1907.
26. SKETCH of the rise and progress of the Benares Path shalla, Varanasi, Sampurnanand Sanskrit Vishravidyalaya.
27. BWARDWAJ, Baliram Shastry : Saraswati Bhawan Pustakalaya, Lucknow, Government of U.P., 1960.
28. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय रजत जयंती स्मारिका, वाराणसी, सं.सं.वि.वि., 1984।
29. उपाध्याय, रामजी : प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, वाराणसी, चौखम्बा विद्या भवन, 1991 ।
30. पाण्डेय, हरिशंकर : प्राकृत रूप रचनाकोश, दिल्ली, न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन, 2001 ।
31. सिंह, परमानन्द : बौद्ध साहित्य में भारतीय समाज, वाराणसी, म. गा. का. वि. पी., 1996 ।

32. मिश्र, रामगोपाल : संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास, दिल्ली, विवेक प्रकाशन, 1980 ।

33. ओझा, राय बहादुर पं. गौरी शंकर हीराचन्द : प्राचीन भारतीय लिपिमाला, नई दिल्ली, मुंशी राम मनोहर लाल, 1971।

34. शुक्ल, हीरालाल संस्कृत का समाजशास्त्र स्वतन्त्रता संग्राम और संस्कृत साहित्य, दिल्ली, भारतीय विद्या प्रकाशन, 1989।

35. तिवारी, ब्रजमोहन : 20वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य को बिहार का अवदान, दिल्ली, आदित्य बुक सेन्टर, 2002।

36. शास्त्री, देवर्षि कलानाथ : जयपुर की संस्कृत परम्परा, जयपुर, हंसा प्रकाशन, 2000।

37. मालवीय, रामचन्द्र : संस्कृत के विद्वान और पंडित, वाराणसी, चौखम्बा प्रकाशन, 1972।

कला प्रकाशन

कला-प्रकाशन
बी. 33/33-ए-1, न्यू साकेत कालोनी
बी. एच. यू., वाराणसी-5

ISBN - 978-93-80467-98-6
9789380467986

मूल्य : 600.00 रूपये

कला-प्रकाशन

बी. 33/33-ए-1, न्यू साकेत कालोनी

बी. एच. यू., वाराणसी-5

ISBN - 978-93-80467-98-6

9 789380 467986

मूल्य : 600.00 रूपये